Front Page Created By - @MadaariMedia

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

दम मदार बेड़ा पार

सवानेह हयात

ज़िन्दा शाह मदार

तदवीन व तरतीब

मौलाना सैय्यद मो0 ज़फ़र मुजीब अरगूनी मदारी

मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर (यू.पी.) इण्डिया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

दम मदार बेड़ा पार

सवानेह हयात

ज़िन्दा शाह मदार

तदवीन व तरतीब

मौलाना सैय्यद मो0 ज़फ़र मुजीब अरगूनी मदारी

मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर (यू.पी.) इण्डिया

नाम किताब	-	सवानेह हयात ज़िन्दा शाह मदार
तदवीन व तरतीब	-	मौलाना सै० मो० ज़फ़र मुजीब अरगूनी मदार
नाशिर	-	हवेली सज्जादगी मकनपुर शरीफ
कम्पोज़िंग / प्रिन्टिंग	-	अल-मदार आफसेट, कानपुर 9616584408
तारीख इशाअत	-	जनवरी 2019
तादाद	-	1000
हदिया	-	120
मुआवनीन हज़रात	-	मौ० सै० मुनव्वर अली मदारी मुफ्ती मो० इस्राफ़ील मदारी मौ० सै० सईद अख्तर मदारी मौ० कैसर रज़ा शाह हन्फ़ी मदारी मौ० सै० अज़बर अली मदारी मौ० सै० अशफ़ाक़ अली मदारी

मिलने का पता

सदरुल मशाएख़ सैय्यद मो0 मुजीबुल बाक़ी अरगूनी मदारी

सदर सज्जादा नशीन हवेली सज्जादगी दारुन्नूर, मकनपुर शरीफ

9956829364, 9838360930

फेहरिस्त मज़ामीन

शर्फ़ इन्तिसाब

ख़ानवादए मदारिया के उस अज़ीम शाहकार के नाम जिसको ज़माना बाबा ज़फ़र हबीब रह० तख्त नशीन और शहनशाह फुक़रा के ताज़ीमी अल्क़ाब से याद करता है जिसकी तहारत सादगी और पाकीज़गी आज भी लोगों के दिलों पर हुकूमत कर रही है।

उस सूफी बाकमाल के नाम जिसकी ज़िन्दगी का हर लम्हा तब्लीग़े दीने मतीन और सिलसिला आलिया मदारिया की तालीमात के फ़रोग़ में गुज़रा और जिसने इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ हमआहन्गी व यकसानियत व दर्स देकर लोगों का दिल जीत लिया।

डॉ० इक्तिदा हुसैन ज़ाफ़री
मकनपुर शरीफ़

ख़ानकाह मदारिया दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़ के सज्जादा नशीनों का मुख्तसर तआर्रुफ़

ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ की तारीख़ पर एक गहरी नज़र डालने के बाद यह महसूस होता है कि उस ख़ानकाह की अज़मतों इज़्ज़तों और उसकी ज़रीं तारीख़ के साथ बहुत ही नारवा सुलूक किया गया है और बाक़ाएदा तौर पर उस ख़ानकाह को किसी अन्धे कुँए में धकेलने के लिये तहरीक चलायी गयी है और इस बाबत दिल खोलकर हर मुम्किन ज़राए का इस्तेमाल भी किया गया है यही वजह है दौरे हाज़िर में जब ग़ैर जानिबदार मोअरख़ीन व मुहक़्क़िकीन ने इस सिलसिले की तारीख़ को मौज़ुऐ क़लम बनाया तो उन्हें बहुत सारी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा लेकिन किसी ने बहुत प्यारी बात कही है कि

कब तक नहीं फैलेगी आफ़ाक़ में बू तेरी
घर-घर लिये फिरती है पैग़ामे सबा तेरा

आज मुझे आपके सामने इस ख़ानक़ाहे आलिया के सज्जजादा नशीनान का कुछ तआर्रुफ़ पेश करना है जिस ख़ानक़ाह का बानी हिन्दुस्तान के लिये जमाअते औलिया अल्लाह में अव्वल दायीऐ इस्लाम और मुबल्लिग़ कुरआन व सुन्नत कहा जाता है यही वह बाबरकत शख्सियत है जिसे औलियाए हिन्द में अव्वल पीराने पीर और मुबल्लिग़े कुरआन व सुन्नत होने का शर्फ हासिल है मेरी मुराद उस मर्दे हक़ आगाह से है जिसे हामिले मक़ामे समदियत व असल मक़ाम महबूबियत शहनशाह औलिया किबार सरकार सरकारां हुज़ूर पुर नूर सैय्यदना सैय्यद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार कुतुबुल मदार कुद्दसा सिर्रहु के नाम नामी से याद किया जाता है जिसकी शाने विलायत ये है कि सारे अक़्ताब उसी के मातहत व महकूम व ताबे फरमा होते

हैं।
जो बराहे रास्त हक़ तआला से फ़ुयूज़ व अहकाम हासिल करता है।

तमाम मौजूदात आलमे अलवी व सफली उसी के वजूद की बरकत से क़ायम होते हैं और जमी अग़वास व अक़ताब नजबा व नक़बा व जमी रिजाल उल्लाह से अज़्ल व नसब का मुख़्तार व मजाज़ होता है यहाँ तक कि वह चाहे अक़ताब ज़माना को भी क़ुतुबियत से बरख़ास कर दे (मरातुल इसरार)।

तारीख बताती है कि हुज़ूर मदार पाक क़ुद्दसा सिर्रहु मसलके हन्फ़ी के वह जलीलुल क़दर बुज़ुर्ग हैं जिनकी ख़िदमात का अहाता बड़े-बड़े मोर्रिख़ व क़लमकार की दस्तरस से बाहर है आपके मदारिज विलायत का इरफ़ान अकसर व बेश्तर किबराए तरीक़त की पहुँच से भी बाहर रहा है आपकी अजाएबुल अहावाल व ग़राएबुल अतवार ने मुहक्क़िक़ीन व मोर्रिख़ीन को भी वरता हैरत में डाल रखा है और कुछ अव्वल दरजे के मुहक्क़िक़ीन व मोर्रिख़ीन तो ऐसे भी हैं जो तसव्वुफ़ व तरीक़त के इस शहनशाह के मकामो मरतबे समझने के सबब सिम्त ग़लत में जा गिरे हैं।

सरकार मदार पाक की तरह आपके जानशीनों और आपकी ख़ानक़ाह के तहत व सज्जादा के वारिसों के साथ भी ऐसे ही मआमलात पेश आये हैं और उनकी तारीख़ भी उमूमन अन्धे कुंएँ में डाल दी गयी है और यही मआमला बक़या ख़ुल्फ़ाए किराम के साथ भी हुआ है कि आप हज़रात की ख़िदमात पर बल्कि पूरी तारीख़े मदारियत पर मोटी चादरें डाली गयी हैं लेकिन सूरज को बदलियाँ कब तक छुपा सकती हैं वह बहरहाल बरामद होकर ही रहेगा और अपने अनवार व तजल्लयात की तपिश से सारे बादलों को चिथड़ा चिथड़ा कर देगा और पूरी आबो ताब के साथ ज़ाहिर होगा चुनांचे सरकार मदार पाक की ख़ानक़ाहे आलिया मकनपुर शरीफ़ में जिन बुज़ुर्ग तरीन शख़्सियात को मन्सबे सज्जादगी हासिल हुई है हर चन्द कि इन तक़द्दस माब बुज़ुर्गान दीन व औलिया कामेलीन की तारीख़ बिखरी हुई है

मगर बमिस्ल-

उठाए कुछ वर्क़ लाला ने कुछ नरगिस ने कुछ गुल ने
चमन में हर तरफ फैली हुयी है दास्तां मेरी

चुनान्चे वाज़ेह हो कि 838 हिजरी में सरकार मदार पाक क़ुद्दसा सिर्रहु ने अपने विसाल पुर मलाल से पहले अपने मुअज़्ज़िज़ खुल्फ़ाए किराम के रूबरू व ख़ानक़ाहे मुअल्ला की सज्जादा नशीनी व तौलियत के लिये अहलुर राए की एक शूरा तलब फ़रमाई और इर्शाद फरमाया अब मुझे अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी छोड़कर राही हयात बक़ा होना है और अन्क़रीब मेरा सफ़रे आख़िरत होने वाला है लिहाज़ा मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे दरम्यान अपना क़ायम मुक़ाम और जानशींन मुक़र्रर कर दूँ मगर इस बाबत आप सबकी राय भी ज़रूरी है कहीं ऐसा न हो कि मेरे बाद इस ताल्लुक़ से किसी को कोई शिकवा गिला हो लिहाज़ा बेहतर ये है कि इस अज़ीम ज़िम्मेदारी का अहल जिसे आप सब समझते हों उसका नाम पेश कर दें और फिर बाइत्तेफ़ाक़ राय आमा उसी को मैं अपना जानशींन मुन्तख़ब कर दूँ आपके इस क़दर फ़रमाने के बाद तमाम खुल्फ़ाए मुरीदीन में आहो फगाह गिरयाज़ारी का माहौल बन गया और आप के लब हाय मुबारका से ये फ़िराक़ व जुदाई के अल्फ़ाज़ सुन्ने के बाद सबका बुरा हाल हो गया मगर आपने सबको ढांरस दिलाते हुये इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह अज़्वजल ने मुझे इस क़दर तवील ज़िन्दगी अता की और पुर उम्र मुझे कोई जिस्मानी तकलीफ नहीं पहुँची और असरे पीरी भी ज़ाहिर नहीं हुआ लिहाज़ा उसका बे पनाह शुक्र व एहसान है कि उसने मुझसे अपने दीने बरहक़ का काम लिया और अब मुझे उसकी ही जानिब लौटना है मगर याद रखो मेरे इन्तक़ाल के बाद जब भी तुम सब हमारी जानिब लौ लगाओगे और याद करोगे तो मुझे ऐसे ही पाओगे जिस तरह आज पाते हो लेकिन ज़ाहिरी नज़्म व नस्क़ संभालने के लिये आप सबके दरम्यान मेरा एक क़ायम मक़ाम व जानशीन होना ज़रूरी है आपके इस फरमाने आलीशान को

सुनकर आपके ख़लीफ़ा अजल शहनशाहे तफ़रीद व तजरीद क़ुतुबुल अक्ताब हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद मुहम्मद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती अक़दस सिर्रहु की औलाद में सोलहवीं पुश्त की औलाद जो आपके आख़िरी सफ़रे हज से वापसी के मौक़े पर शाम से आपके साथ हिन्दुस्तान आये थे जिन्हें सादात मकनपुर शरीफ़ हरसा ख्वाजगान भी कहते हैं उनमें बड़े भाई जिनका नाम नामी क़ुतुबुल अक्ताब हज़रत सैय्यदना सैय्यद ख्वाजा अबु मुहम्मद अरगून है उन्हें गोद में उठा कर तख्त सज्जादगी पर बैठा दिया और कहा हुज़ूर हम तमाम के दरम्यान यह तय पाया है कि आपके भतीजों की औलाद में से इन बड़े साहबज़ादे को जो जानशीनी के तमाम औसाफ़ से मुत्तसिफ़ हैं उन्हें ही आपका क़ायम मक़ाम और जानशीन मुन्तख़ब कर दिया जाये और ख़ानक़ाहे मुअल्ला के तख्त व सज्जादा का वारिस इन्हे ही बना दिया जाय हुज़ूर मदारे पाक अक़दस सिर्रहु ने अपने मोअतमद खुल्फ़ा की ज़बानी ये सब समाअत फ़रमाने के बाद उन्हीं को अपना जानशीन व सज्जादा नशीन मुन्तख़ब फ़रमा दिया फिर बारी बारी तमाम खुल्फ़ाए किराम ने हज़रत अबु मुहम्मद अरगून को तहनियत व मुबारक बाद पेश की जैसा कि ग़दीर खम के वाक़ेया के बाद तमाम सहाबा ने सैय्यदना मौलाए क़ायनात जानशीन रसूल हज़रत मौला अली करामुल्लाह वजहुल करीम को तहनियत व मुबारकबाद पेश किया था पूरी ज़िन्दगी सैय्यदना अबु मुहम्मद अरगून क़ुद्दसा सिर्रहु ने ख़ानक़ाह मदारिया की सज्जादगी और जानशीनी व तख्त नशीनी की ज़िम्मेदारी को बहुस्न व खूबी निभाया और जब सन 891 हिजरी में आपने रहलत फरमाई तो खानक़ाह मदारिया के सज्जादा नशीन व तख्त नशीन आपके बड़े फ़रज़न्द अरजुमन्द सैय्यदना शाह सैय्यद अबुल फ़ाएज़ मुहम्मद अरगूनी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु मुन्तख़ब किये गये आपने अपनी दाइयाना सलाहियतों से हज़ारों हज़ार अफ़राद को हल्क़ाए इस्लाम में दाख़िल फ़रमाया और सिलसिला मदारिया को खूब वुसअत दी आपके दौर में ख़ानक़ाऐ मदारिया को जो शोहरत व इज़्ज़त

हासिल हुयी वह अपनी मिसाल आप है।

सरकार अबुल फ़ाएज़ के विसाल के बाद ख़ानक़ाह मदारिया दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़ के तख़्त व सज्जादा पर आप ही के बड़े साहबज़ादे सैय्यदना शाह सैय्यद फ़ज़्लुल्लाह मदारी अरगूनी क़ुद्दसा सिर्रहु तशरीफ़ फ़रमा हुए आप सरकार अबु मुहम्मद अरगूनी के पोते हैं और ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ के तीसरे सज्जादा नशीन हैं आपके ताल्लुक़ से ये रिवायत मुतावातिर नक़ल व बयान होती आ रही है कि आपने सिलसिला मदारिया को मुनज़्ज़म फ़रमाने में बुनियादी क़िरदार अदा फ़रमा था और ख़ानक़ाह मुअल्ला की शान व शौकत को हमदोश सरया कर दिया था आपके कश्फ़ व करामात की वजह से बिला तफ़रीक़ मज़ाहिब तमाम इन्सान आपके दरबारे फ़ैज़ में चौबीस घण्टा हाज़िर रहते थे और शादो बामुराद होकर वापस जाते थे आपके इन्तिक़ाल के बाद बुज़ुर्गों के दस्तूरुल अमल और ख़ानक़ाह मदारिया की साबक़ा तारीख़ के पेशे नज़र शाह फ़ज़्लुल्लाह क़ुद्दसा सिर्रहु के ही बड़े साहबज़ादे...

सैय्यदना शाह सैय्यद बाबा लाड दरबारी अरगूनी मदारी रह० ख़ानक़ाह ज़िन्दा शाह मदार मकनपुर शरीफ़ के सज्जादा नशीन व तख़्त नशीन मुन्तख़ब हुऐ आप ख़ानक़ाह मुक़द्दसा के चौथे सज्जादा नशीन व तख़्त नशीन हैं आपको दरबारी कहने की वजह तस्मिया यह है कि हुज़ूर क़ुतुबुल मदार से निस्बत उवैसिया रखते थे और बइल्म रूहानी दरबार मदारुल आलमीन में शर्फ़ हुज़ूरी पाया करते थे। आपके बाबत इस बात पर पूरा सिलसिला मदारिया मुत्तफ़िक़ है कि जिस कसरत के साथ आपके दस्ते हक़ परस्त पर अहल हुनूद ने इस्लाम क़ुबूल किया आपके हमअस्र मशाएख़ में इसकी मिसाल मिल पाना बहुत मुश्किल है आपके बाद आप के बड़े फ़रज़न्द सैय्यदना शाह सैय्यद अब्दुर्रहीम अरगूनी मदारी रह० ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ के तख़्त व सज्जादा पर मुतमकिन हुए आप ख़ानक़ाह मदारिया के पाँचवे सज्जादा नशीन व तख़्त नशीन हैं आप बहुत
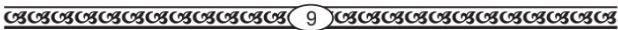
ऊलूल अज़्म और जलीलुल क़दर बुज़ुर्ग हुए हैं आप ही के दौर में फ़ितना दीने इलाही ने सर उठाया था जिसकी मिटाने के लिये आप सिलसिला मदारिया का मख़्सूस तबलीग़ी दस्ता यानी मलंगान पाकबाज़ को लेकर मैदाने अमल में आये और जगह-जगह उसकी ही ममलिकत के अन्दर उस नये मसलक के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई और उसके बाईकाट का पुरज़ार एलान फ़रमाया और लोगों को इस ईमानसोज़ नये धर्म और नये मसलक के ख़िलाफ़ बोलने का हौसला दिया और उसके सद बाब के लिये उल्मा व सूफ़िया और अवाम को मुनज़्ज़म किया और दरबार अकबरी के तमाम वज़ीफ़ा खोरों के दाँत खट्टे कर दिए जबकि उसके बदले में आपकी ख़ानक़ाह और आप को हुकूमत वक्त के बहुत से मज़ालिम भी बर्दाश्त करने पड़े और तरह-तरह की आज़माईश का सामना करना पड़ा लेकिन आपके कदमो में हरकत पैदा नहीं हुई और बिल आख़िर हुकूमत के वज़ीफ़ा खोरों के हिस्से में ज़िल्लत व ख्वारी ही आयी और आप हर गाम पे कामयाब व बामुराद हुए इस ज़मन में एक बात बहुत मशहूर और ज़बान ज़द अवाम भी है इसका ज़िक्र ज़रूरी है कि और वह यह है कि अहले कन्तूर शरीफ़ के ज़रिये ख़ानक़ाह मदारिया के तहत व सज्जादा और उसकी तौलियत पर धावा बोला गया और पूरी ख़ानक़ाह के हड़पने की कोशिश की गई अकबर बादशाह से अपने हक़ में फ़रमान लिखवा लिया जिस वक्त अहले कन्तूर और दरबारे अकबरीर से फ़रमान अकबरी लेकर हुकूमत के सिपाहियों के साथ ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ में दाख़िल हुए तो हज़रत शाह अब्दुर्रहीम अरगूनी मदारी ज़ेबे सज्जादा ख़ानक़ाह मदारिया तबलीग़ी दौरे पर मकनपुर शरीफ़ से बाहर थे उधर हुकूमत के पठ्ठों ने ख़ानक़ाह में दाखिल होकर सिपाहियों के तआवुन से ख़ानक़ाह के सज्जादा पर जबरन क़ब्ज़ा कर लिया और इस बाबत दीगर अहले ख़ानवादा के सामने अकबर का फ़रमान पेश कर दिया जिसमें लिखा था कि इस ख़ानक़ाह के असल वारिस व मुतवल्ली व सज्जादा व तख़्त के मालिक अहले कन्तूर क़रार दिये जाते हैं क्योंकि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने हज़रत सैय्यद शाह अबुल

हसन मारूफ़ ब मीठे मदार की विलादत से क़ब्ल उनके वालिद हज़रत क़ाज़ी महमूदउद्दीन कन्तूरी से फ़रमाया था कि अल्लाह पाक ने मेरी पुश्त में एक फ़रज़न्द रखा था लेकिन मैं उसका मुताहिल नहीं हुआ बादा अपनी पुश्त को क़ाज़ी महमूद की पुश्त से मिला दिया और फ़रमाया कि अब मैं ने वह फ़रज़न्द तुम्हारी पुश्त में मुन्तक़िल कर दिया है बादा हज़रत मीठे मदार की विलादत हुयी लिहाज़ा अहले कन्तूर में जो उनकी नस्ल से हैं वही असली वारिस और जानशीन क़ुतुबुल मदार क़रार पाएंगे जब मशाएख़ मकनपुर शरीफ़ ने उस फ़रमान के मज़मून को पढ़ा तो सब दंग व हैरत ज़दा रह गये और कन्तूरियों से कहा कि इस वक्त ख़ानक़ाह आलिया के साहब सज्जादा मकनपुर शरीफ़ से बाहर हैं अनक़रीब वह वापस तशरीफ़ लायेंगे फिर इस बाबत गुफ्तुगू होगी और इस दजल व फ़रेब का पर्दा चाक किया जायेगा चुनांनचे चन्द दिनों के बाद जब हज़रत शाह अब्दुर्रहीम मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु तबलीग़ी सफ़र से लौट कर मकनपुर शरीफ़ पहुँचे तो हस्बे मामूल सबसे पहले ख़ानक़ाह मुअल्ला में हाज़िर हुए यहाँ पहुँच कर आपने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि ख़ानक़ाह का नक्शा ही अलग है बारगाहे मदारुल आलमीन में हाज़िरी के बाद जब आप बाहर तशरीफ़ लाये तो देखा कि सज्जादा मदारिया पर अहले कन्तूर क़ाबिज़ हैं और हुकूमत के सिपाही उनकी पुश्त पनाही के लिये क़तई तौर पर मुस्तैद नज़र आ रहे हैं लेकिन आप बामुअज्जब ''अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाही'' आगे बढ़े और सज्जादा मदारिया के क़रीब पहुँच कर इर्शाद फ़रमाया कि इस ख़ानक़ाह के तख्त व सज्जादा का वारिस व ख़ादिम ये फ़क़ीर अब्दुर्रहीम मदारी है इस क़दर जुमला इर्शाद फ़रमाते हुए आप सज्जादा मदारिया पर तशरीफ़ फ़रमा हो गए बादा एक अकबरी नुमाइन्दे ने आपके सामने वही शाही फ़रमान पेश कर दिया जिसमें दजल व फ़रेब से काम लेते हुए ख़ानक़ाहे मुअल्ला को हड़पने का पूरा इन्तिज़ाम किया गया था आपने पूरी जुररत व दिलेरी के साथ उस फ़रमाने शाही को पढ़ा और अपने मुँह के पान की पूरी

पीक उस फ़रमाने शाही पर थूक दी और पूरे जोशो ख़रोश से फ़रमाया हम गुलामाने मदार फ़रमाने मदार के आगे किसी भी सुल्तान व फ़रमां रवा के फ़रमान को कुछ भी अहमियत देने का मिज़ाज नहीं रखते ये सब देख सुन कर अकबरियों के तन बदन में आग लग गई और मज़ीद नमक मिर्च लगा कर फ़ौन बात अकबरे अज़ीम तक पहुँचा दी गई ग़र्ज़ कि जब अकबर ने शाही फ़रमान की यह तौहीन व तज़लील सुनी और फ़रमाने शाही को पान की पीक से रंगा देखा तो वह भी आग बबूला हो गया और फ़ौरन आप की गिरफ्तारी का हुक्म जारी कर दिया बिल आख़िर आपको गिरफ्तार करके दरबारे अकबरी में पेश किया गया और तमाम मआमलात पर बाज़ पुर्स शुरू हो गयी आपने उसी जोश व तमतराक़ियत के साथ दरबारे अकबरी में भी तक़रीर की और उस फ़रेबकारी की धज्जियाँ उड़ा दीं और कहा कि शहंशाह हिन्दुस्तान मुझे इस बात से इन्कार नहीं कि इस वक्त हिन्दुस्तान तुम्हारी हुकूमत के ज़ेरे नगीं है लेकिन अगर तुमने ये समझ लिया कि अब तुम्हारी हुकूमत की मुदाख़िलत दीन और मराकज़े दीन चलेगी तो याद रखो कि यह सिर्फ़ तुम्हारी अपनी सोच है हक़ीक़त से उसका कोई ताल्लुक़ नहीं आपकी मज़कूरा जुरात मन्दाना तक़रीर सुनकर वह तिलमिला उठा और अपने जल्लादों को हुक्म दिया कि इस उठा कर फील खाने में डाल दो ताकि उसे और उसके हमख्यालों को एहसासा हो जाये कि अकबरी हुकूमत से बग़ावत और उसकी तौहीन का अन्जाम किस दरजा भयानक व अज़ीयत नाक है मगर चौबीस घण्टे गुज़र जाने के बाद भी क़ुतुबुल मदार का ये शहज़ादा फ़ीलखाने के अन्दर बसेहत व सलामती अपने औरादा व वज़ाएफ़ में मशगूल नज़र आया और देखा गया कि फ़ीलखाने के तमाम हाथी अपने अपने सूंड से उस आला मरतबत के तलवे चाट रहे हैं जब अकबर को यह ख़बर पहुँची तो उस ने कहा कि फ़ीलखाने से निकाल कर ख़ूँखार शेरों के पिंजरे में डाल दो सिपाहियों ने इस हुक्म की भी तामील की मगर जूं ही आप शेरों के पिंजरे में पहुँचे तो शेरों ने भी वही काम किया जो उनसे पहले हाथियों से देखा जा चुका

था सारे दरबारी अभी ये मन्ज़र देख ही रहे थे महले शाही में एक शोर बरपा हो गया कि रानी जोधा बाई पेट के दर्द से तड़प रही हैं अकबर के दरबारी अतिब्बा और वेधौ में से बड़े-बड़े तजुर्बेकार अतिब्बा और वैद्य हाज़िर हुए और एक से बढ़कर एक इलाज किया मगर मर्ज़ बढ़ता गया जूँ-जूँ दवा की थोड़ी ही देर में पूरा शाही महल मातम कदह में तब्दील हो गया अकबर को भी ग़श आने लगे उसी दौरान एक दरबारी शख्स ने अकबर के सामने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया कि हुज़ूर शेरों के पिंजरों में जो शख्स बन्द हैं हो न हो यह उन्हीं की बददुआ के सबब हो रहा है क्योंकि वह शख्स खास आदमी मालूम होता है वरना अभी तक हाथियों और शेरों ने न जाने क्या हाल किया होता लिहाज़ा बेहतर यही है कि आप उन्हें पिंजरे से निकलवा कर माफ़ी तलाफ़ी फ़रमा लें और बहुत मुमकिन है कि इस तरह रानी जोधा बाई को शिफ़ा मिल जाए उस शख्स की बात अकबर को पसन्द आयी और उसने फ़ौरन आप को पिंजरे से बाहर निकाल कर बाइज़्ज़त तौर पर अपने पास लाने का हुक्म दे दिया जब आप उसके सामने पहुँचे अकबर बेहद नादिम हुआ और आपसे मआज़रतख्वाह होकर अपनी बीवी जोधा बाई के लिये दुआ का ख्वास्तगार हुआ आप चूँकि सैय्यदना रहमतुल लिल्आलमीन की नस्ल पाक से थे इसलिये उसे आपने माफ़ कर दिया आपका माफ़ फ़रमाना ही था कि जोधा बाई इस तरह पुरसुकून हो गयीं कि जैसे उसे कुछ हुआ ही नहीं था ये मन्ज़र देखकर तमाम दरबारी हैरान व शशद रह गये बादा सुल्तान जलालुद्दीन अकबर ने आपकी ख़िदमते आलिया में बहुत सारे तोहफ़े तहाएफ़ पेश कर अपने मख़्सूस खुद्दाम के साथ मकनपुर शरीफ़ रवाना कर दिया और आपके लिये एक महल तामीर करवाया जिसको चिकना महल कहा जाता है जो आज भी इस दौर के आला फ़ने तामीर का नमूना है हज़रत शेख़ जमालुल औलिया कोड़ा जहानाबादी रह० ने हाज़िरे दरबार क़ुतुबुल मदार होकर ख़रक़ा ख़िलाफ़त सिलसिला मदारिया आपसे हासिल किया था। ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर

शरीफ़ के इस हक़ीक़ी व मौरूसी सज्जादा नशीन के बाद आपके सबसे बड़े फ़रज़न्द...

हज़रत सैय्यदना ख्वाजा सैय्यद महबूब उल्लाह अरग़ूनी क़ुद्दसा सिर्रहु ख़ानक़ाह आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़ के सज्जादा तख्त के वारिस बने और आपके बाद ये नेमते उज़्मा आपके सबसे बड़े फ़रज़न्द हज़रत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल ग़फ़ूर अरग़ूनी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु के हिस्से में आयी हज़रत सैय्यदना शाह अब्दुल ग़फ़ूर अरग़ूनी के बाद ये मन्सबे जलील यके बाद दीगरे हज़रत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल हकीम अरग़ूनी हज़रत ख्वाजा सैय्यद मुहम्मद मुराद अरग़ूनी को तफ़वीज़ हुआ।

हज़रत ख्वाजा सैय्यद मुराद अली मदारी आप भी मजमउल फ़ज़ाएल शख्सियत के मालिक हैं आपकी आल औलाद खुल्फ़ाए किराम के ज़रिये इकनाफ़े हिन्द में सिलसिला मुबारका की ख़ूब तशहीर व तौसी हुयी आपके इख़लाक़े हमीदा व औसाफ़ शरीफ़ा को देखकर एक आलम फ़ैज़े आब हुआ है ज़माने के सताए मुसीबत के मारे आपके दरबारे फ़ैज़े बार में आकर सुकून की साँस लेते थे हर वक्त हाजतमन्दों की भीड़ लगी रहती थी सख़ावत का आलम ये था कि जब भी किसी ने कोई सवाल किया तो उसे खाली हाथ वापस नहीं फ़रमाया आपकी मक़बूलियत अवामो खास सबकी निगाह में यकसा रही सिलसिला मदारिया में आपका नाम रौशन व ताबनाक है ख़ादमाने दीन मुबल्लिग़ीने इस्लाम की तारीख़ उस वक्त तक मुकम्मल नहीं हो सकती जब तक आप जैसे बाअज़मत ऊलुल अज़म मुबल्लिग़ीने इस्लाम का ज़िक्रे ख़ैर न हो जब तक आप बक़दरे हयात रहे उस वक्त तक ख़ानक़ाह मदारिया की सज्जादगी व तख्त नशीनी के फ़राएज़ बहुस्न ख़ूबी अन्जाम देते रहे और आपके विसाल शरीफ़ के बाद सिलसिला सज्जादगी व तख्त नशीनी आपके फ़रज़न्द अरजुमन्द हज़रत ख्वाजा सैय्यदना शाह ग़ुलाम अली अरग़ूनी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु तक पहुँचा बुज़ुर्गवार ख़ानक़ाह ज़िन्दा शाह मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु के दसवें सज्जादा नशीन व तख्त नशीन हुए आप पर अइम्मा अहले बैत पाक

का खुसूसी फ़ैज़ान था सुलूक व मआरफ़त में बुलन्द मरतबे पर पहुँचे हुए थे आपकी निगाहै फ़ैज़ से बहुत सारे तालिबीने हक़ को मआरफ़ते इलाही हासिल हुयी और गुमराहों को नूरे ईमान की रौशनी मिली जब आपने दारफ़ानी से रहलत की तो आपकी जानशीनी यानी ख़ानक़ाह मदारिया की सज्जादगी व तख्त नशीनी आपके बड़े साहबज़ादे हज़रत सैय्यदना ख्वाजा शाह सैय्यद कामिल दरबारी अरगूनी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु का मुक़द्दर बनी सिजरा सज्जादा नशीनी हज़रत कामिल दरबारी कई ऐतबार से मुम्ताज़ व मुन्फ़रिद हैं आप ख़ानक़ाह आलिया मदारिया के ग्यारहवें सज्जादा नशीन हैं आपका ज़िक्र ख़ैर करते हुए साहबे तज़किरातुल मुत्तक़ीन अल्लामा सैय्यद अमीर हसन फन्सूरी क़ुद्दसा सिर्रहु ने लिखा है कि ''सैय्यद शाह कामिल दरबारी अरगूनी मदारी यके अज़ अरफ़ा...

तर्जुमा - यानी हज़रत सैय्यद शाह कामिल दरबारी अरगूनी मदारी उरफ़ाए अस्र में से एक आरिफ़ बिल्लाह थे उनका फ़ैज़ान आज भी जारी व सारी है दरबारी लक़ब की वजह ये है कि बारगाहे मदारे पाक में उन्हें एक खुसूसी क़िस्म का इख्तिसास हासिल था इसी वजह से उन्हें इस लक़ब से मुलक़्क़ब किया गया उनके अकसर मुरीदीने साहबे निस्बत हुए हैं उन्होंने उमर अज़ीज़ सैर व सियाहत और ख़ल्कुल्लाह की रहनुमाई में गुज़ार दी और रुश्द व हिदायत के सलासल नाफ़िज़ के सात मुहर्रमुल हराम को आपका विसाल हुआ मज़ार मुक़द्दस मकनपुर शरीफ़ में है''।

हज़रत कामिल दरबारी क़ुद्दसा सिर्रहु के विसाल पुर मलाल के बाद आपके बड़े फ़रज़न्द अरजुमन्द शाह विलायत हज़रत हाफ़िज़ सैय्यद मुहम्मद मुराद अरगूनी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ के बारहवें सज्जादा नशीन व तख्त नशीन हुए आपकी ज़ात मजमउल फ़ज़ाएल थी कश्फ़ व करामात आज तक ज़बान ज़द अवाम व ख्वास हैं आपने भी उमर का ज़्यादा हिस्सा सैर व सियाहत में गुज़ारा और बेशुमार ख़लाएक़ को रुश्द व हिदायत से सरफ़राज़ किया नक़ल है कि एक मरतबा दरयाए घाघरा

कश्ती के ज़रिये पार कर रहे थे पूरी कश्ती आदमियों से भरी थी अचानक दरिया में एक तूफ़ान आ गया जो इन्तिहाई होशरूबा और दिल दहलाने वाला था करीब था कि लोग हलाक हो जाएं आपने जब हालात का जायज़ा लिया तो बारगाहे इलाही में दस्तबदुआ हुए और अर्ज़ किया कि ऐ बारे इलाही अगर पूरी ज़िन्दगी में मुझसे जानबूझकर एक भी गुनाह या खिलाफ़े शरा काम सरज़द हुआ हो तो हलाक फ़रमा दे वरना तेरी रहीमी व करीमी का वास्ता इस तूफ़ान हलाकत खेज़ से निजात अता फ़रमा दे इतना कहना हुआ कि रहमते हक़ ने फ़ौरन आग़ोश की बाहें पसार दीं और सब बख़ैर दरिया के पार पहुँच गए सुब्हान अल्लाह । बहराइच शरीफ़ नेपाल के अतराफ़ में आपकी ख़िदमात दीनिया बहुत ज़्यादा हैं आपकी बारगाह से फ़ैज़ पाने वाले भी कश्फ़ व करामात हुए हैं मराते मसऊदी के ज़मीमा में हज़रत मौलाना सिद्दीक़ साहब ने आपके एक जलीलुल क़दर साहबे करामात मुरीद व खलीफ़ा हज़रत सैय्यदना सैय्यद रमज़ान अली शाह उर्फ बाबा मुन्डा शाह मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु के तफ़सीली हालात सुपुर्दे क़लम किये हैं इस वाकिये को राक़िमुस्सुतूर ने अपनी किताब तजलियात मदारियत में भी नक़ल किया है।

साहबे तज़किरातुल मुत्तक़ीन ने आपके बहुत सारे कमालात व फ़ज़ाएल पर रौशनी डाली है लिखते हैं'' आलिम बूद बाअमल मुत्तक़ी व साएमुद्दहर व क़ाएम ईल मुनब्बे शरीअत बुज़ुर्ग थे और इन मआमलात में दरजा कमाल को पहुँचे हुये थे और अपने अकसर औक़ात ज़िक्र व अशग़ाल तालीम व तआल्लुम में गुज़ारते थे आगे लिखते हैं कि दर अशरह मुहर्रम अकसर बारबा बेदारी ज़ियारत जनाब हसनैन रिज़वान उल्लाह तआला अन्हुमा बदीं तरीक़ मी कुनायनद यानी अशरह मुहर्रम में ऐसा कई बार हुआ कि आप बहालते बेदारी ज़ियारत हसनैन करीमैन से मुशर्रफ़ हुए मज़ीद लिखते हैं वां साहबे निस्बत बूद हक़ जल व अलाबर तुरबतश नुज़ूले रहमत कुनन्दह माह रमज़ानुल मुबारक 1299 हि०... यानी आप साहबे निस्बत बुज़ुर्ग थे अल्लाह अज़्ज जल उनकी तरबियत पर रहमत व बरकत नाज़िल

फ़रमाए माह रमज़ानुल मुबारक 1299 हि० में वासिले बहक़ हुए मज़ार मुक़द्दस हवेली सज्जादगी में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है (तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ह 88) आपके विसाल शरीफ़ के बाद ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ के तख्त सज्जादा पर आपके फ़रज़न्द अकबर हज़रत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल बाक़ी अरगूनी मदारी मुतमकिन हुए आप ज़ाकिर व शाग़िल बुज़ुर्ग थे इस्मे ज़ात का विर्द आपका महबूब शग़ल था फ़राएज़ व सुनन व अजबात व नवाफ़िल की पाबन्दी में कभी ग़ाफ़िल न हुए आपके ज़मरा खुल्फ़ा में कामिलीने अस्र की एक लम्बी फेहरिस्त है आप ख़ानक़ाहे मुक़द्दसा के तेरहवें सज्जादा नशीन हैं आपके बाद ये मन्सबे जलील आपके बड़े फ़रज़न्द हज़रत ख्वाजा शाह सैय्यद सरदार अली अरगूनी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु को तफवीज़ मिला इस तौर से ख्वाजा सैय्यद सरदार अली रह० ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ के चौदहवें सज्जादा नशीन व तख्त नशीन हैं आपके खुल्फ़ा ने सिलसिला मदारिया की ज़बरदस्त ख़िदमत अन्जाम दी और साहबे कश्फ़ व करामात हुए और उनके ज़रिए भी सिलसिला मुक़द्दसा की वुसअत में इज़ाफ़ा हुआ आपके एक फ़ैज याफ्ता और ख़लीफ़ाऐ अरशद आज भी बक़यदे हयात हैं अकसर औक़ात गोशा नशीनी में गुज़ारते हैं इन बुज़ुर्गवार का इस्मे गिरामी शेख तरीक़त आरिफ़े बिल्लाह हज़रत सूफ़ी शफ़ीउल हसन मदारी है अल्लाह अज़्व जल उनकी उम्र में और बरकत दे ये भी साहबे करामात दरवीशाने अस्र में से एक हैं राक़िमूल हुरूफ़ ने उनकी बारगाह से फ़ैज़ हासिल किया है बड़े साहबे दयानत और सिदक़े मक़ाल दरवेश हैं हज़रत ख्वाजा सैय्यद सरदार अली मदारी अलैहिर्रहमा के बाद ख़ानक़ाह मदारिया के सज्जादा नशीन व तख्त नशीन आपके बड़े साहबज़ादे आरिफ़ बिल्लाह शेखुल मशाएख़ हज़रत ख्वाजा सैय्यद मुहम्मद ज़फ़र हबीब अरगूनी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु हुए आप अपने दौर में सलफ़ व खलफ़ की हूबहू तसवीर थे अमलन क़ौलन मशाएख़ तरीक़त के जानशीन व वारिस थे रिज़्क़े हलाल सिदक़े मक़ाल

आपका वस्फ़ ख़ास था आपकी ख़िदमाते दीनिया का दाएरा वसाएल व ज़राए की कमी के बावजूद काफ़ी कुशादा रहा आपके बारगाह फ़ैज़ से हज़ारों लोग फ़ैज़े आब हुए आपकी करामते इलाक़ा बहराइच शरीफ़, लखीमपुर, औरय्या, जयपुर, नागपुर, अकोला के इलाक़ों में आज भी ज़बान ज़द अवाम व ख्वास हैं खुद राक़िमुल हुरूफ़ ने ऐसे दरजनों लोगों से मुलाक़ात की है जो आपकी करामात व तक़वा के शाहिद हैं आप ख़ानक़ाह मदारिया के पन्द्रहवें सज्जादा नशीन व तख्त नशीन हैं आपके बाद ख़ानक़ाह मदारिया मकनपुर शरीफ़ के तख्त व सज्जादा के वारिस आपके बड़े साहबज़ादे आरिफ़ बिल्लाह सदारुल मशाएख़ हज़रत अल्लामा अल्हाज सूफ़ी सय्यद मुहम्मद मुजीबुल बाक़ी अरगूनी मदारी हैं यही बुज़ुर्गवार ही इस ज़माने में इस मन्सबे जलील पर फ़ाएज़ हैं राक़िमुस्सुतूर मुहम्मद क़ैसर रज़ा अल्वी हन्फ़ी मदारी को इन्हीं बुज़ुर्गवार से शिजरा अरग़ौनिया मदारिया में शर्फ़ बैअत व ख़िलाफ़त हासिल है इस ज़माने के अहलुल्लाह और असहाबे ख़िदमात बातिनया इन्हीं आली क़दर के हलक़ा बगोश हैं क्योंकि इस वक्त कुतुबुल मदार के जानशीन होने का शर्फ़ बजुज़ इन के किसी और का हासिल नहीं ख़ानक़ाह मदारिया के तमाम मामूलात व मरासिम जो नसलन बाद नसले बुज़ुर्गों से चलते आये हैं उनकी आदाएगी व अन्जान दही इन्हीं के रूबरू और निगरानी में होती है सिलसिला मदार के सरगरदाह ताजदार मलन्ग ज़ीनत बज़्म तफ़रीद व तजरीद शाह सैय्यद मासूम अली मलन्ग इतालुल्लाह उमराहु कि जिनसे मुझे नाचीज़ को सिलसिला आशक़ाने मदार में शरफ़े ख़िलाफत व इजाज़त हासिल है फ़रमाते हैं जब ख्वाजा सैय्यद मुजीबुल बाक़ी अरगूनी मदारी बरोज़े उर्स कुतुबुल मदार ज़ीनत आराए तख्त मदार होते हैं तो हम तमाम मलन्गाने मदार का यह तसव्वुर होता है कि हमारे रूबरू सैय्यदना कुतुबुल मदार तशरीफ़ फ़रमा हैं और हम तमाम उन्हीं के रूबरू शग़ले दम्माल कर रहे हैं उर्स कुतुबुल मदार के मौक़े पर सबसे ख़ास चीज़ यही शग़ल दमाल है जो ख़ानक़ाह मदारिया के साहबे सज्जादा के रूबरू मलन्गान पाकबाज़ करते चले

आए हैं और आज तक ये सिलसिला जारी व सारी है ख्वाजा सैय्यद मुहम्मद मुजीबुल बाक़ी क़िब्ला को अल्लाह अज़्व जल उमरे ख़िज़्र अता फ़रमाए और उनका साया करीम तमाम वाबस्तगान पर तादेर क़ायम रखे आमीन!

मदारे पाक के हसब व नसब पर एक मुहक़्क़िक़ाना तहरीर

इसमें कोई शक नहीं कि कलाम मजीद सारे आलम के लिये हिदायत व इरशाद के असल है अल्लाह पाक ने इस की आयात को तीन दरजों में तक़सीम फ़रमाई है। बाज़ आयात मुहक्कमात हैं तो बाज़ मुजमलात और बाज़ ऐसी मुताशाबिहात हैं जिनके मानी व मतालिब अल्लाह पाक व रसूल अलैहिस्सलाम के दरम्यान ज़ीगए राज़ हैं। ये तो कलाम मजीद की बात है जो सिफ़ाते बारी तआला से इबारत है। औलिया अल्लाह महबूबाने बारगाही इलाहा जो ज़ाते बारी तआला के मज़ाहिर व ज़ाएबीन हैं उनको भी तीन दरजों में मुन्क़सिम किया जा सकता है। उनमें अकसर वह हैं जिनका इरफ़ान अवाम व ख़्वास को किसी न किसी तरह हो जाता है और बाज़ वह हैं जिन्हें ख्वासुल ख्वास जाने जाते हैं और बाज़ वह हैं जिनकी शिनाख्त व इरफ़ान कमाकाहु अख्सुल ख्वास भी नहीं कर पाते मगर अल्लाह जितना चाहता है। ग़ालिबन उन्हीं से मुताल्लिक़ यह हदीसे क़ुदसी है। ''औलियाए ताहतु क़बाइला यहरेफ़ुहुम ग़ैरी '' मेरे महबूब औलिया मेरे क़बाए रहमत के नीचे हैं मेरे सिवा उनका इरफ़ान किसी को नहीं है। हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार रजि० जो क़ुतुबुल मदार फ़रदुल अफ़राद हैं बल्कि मक़ाम वराउल वरा से भी आगे बढ़ कर मक़ाम क़ुर्ब अक़रब में क़दम जमाए हुए हैं और

आपकी ज़ात व सिफ़ात के इल्म व इरफ़ान से भी बढ़कर आरिफ़ महरूम हैं और आपके हालात व औसाफ़ बयान करने में सख्त इज़्तिराब में हैं। चूंकि आप इस्लामे हक़ीक़ी हासिल करके ग़राएबुल अतवार अजाएबुल अहवाल के मरातिब पर मुतमकिन हैं इसलिये आपके बाज़ सवानेह निगार सख्त हैरत व तआज्जुब में पड़ कर हक़ व हक़ीक़त से मस्तूर हो गए हैं। नीज़ आपके सिलसिले आलिया के मुआनदीन व मुनकरीन की भी एक जमाअत है जो अपनी तहरीरों में क़स्दन वाहियात व अग़लूतात की आमेज़िश करती रहती है। इसलिये ज़रूरत है कि आपकी सवानेह हयात पर जो शुबहात की गर्द जमाने की मज़मूम कोशिशें की गयी हैं उन्हें साफ़ कर दिया जाय और अरबाबे तहक़ीक़ के लिये रास्ते रौशन कर दिये जायें।

नाम नामी : हुज़ूर ज़िन्दा शाह मदार का नाम बदीउद्दीन अहमद है। अबु तुराब कुन्नियत है। क़ुतुबुल मदार मरतबा है और ज़िन्दा शाह मदार, मदारुल आलमीन, मदारे जहाँ वग़ैरह अलक़ाब हैं।

पैदाइश : हुज़ूर सरकारे सरकारां सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० यकुम शव्वाल दो सौ बयालिस हिजरी २४२ हि० को मुल्क शाम के शहर हलब के क़स्बा चिनार में पैदा हुए। आप जब पैदा हुए तो हाज़ा वलीउल्लाह हाज़ा वलीउल्लाह के सदाएं फ़िज़ा में गूँज रही थीं। आपके वालिद गिरामी का नाम क़ाज़ी सैय्यद क़िदवतुद्दीन अली हलबी है और वालिदा माजिदा का नाम पाक सैय्यदा फ़ातिमा सानिया उर्फ़ बीबी हाजिरा है।

नसबनामा ज़िन्दा शाह मदार : क़ाज़ी हमीद उद्दीन नागोरी क़ुद्दसा सिर्रहुल क़वा ने अपने मल्फ़ूज़ात में आप का शिजरए नसब इस तरह नक़ल फ़रमाया है। तर्जुमा : आप हज़रत मौला अली करामुल वहजुल करीम की औलाद में से हैं बहुत बुज़ुर्ग हस्ती के मालिक हैं आपके वाजिद माजिद कर इस्मे गिरामी सैय्यद अली हलबी इब्ने बहाउद्दीन इब्ने सैय्यद ज़हीरउद्दीन इब्ने सैय्यद अहमद इब्ने सैय्यद मुहम्मद इब्ने सैय्यद इस्माईल इब्ने इमामुल आएमा सैय्यद जाफ़रुस्सादिक़ इब्ने इमामुल इस्लाम सैय्यद मुहम्मद बाक़र इब्ने

इमामुद्दारैन इमाम ज़ैनुल आबदीन इब्ने इमामुश्शोहदाए इमाम हुसैन इब्ने इमामुल औलिया हज़रत अली करामुल्लाह वजहुल करीम।
नसबनामा मादरी :

(ये नुस्ख़ा नाचीज़ के कुतुबख़ाने में मौजूद है।)

तर्जुमा : और वालिदा माजिदा का नसमनामा यह है वालिदा माजिदा का नाम नामी फ़ातिमा सानिया उर्फ़ बीबी हाजरा तबरेज़िया है जो दुख़्तर हैं सैय्यद अब्दुल्लाह के वह साहबज़ादे हैं सैय्यद ज़ाहिद बिन सैय्यद अबू मुहम्मद इब्ने सैय्यद सालेह इब्ने सैय्यद अबू यूसुफ़ इब्ने सैय्यद अबुल क़ासिम इब्ने सैय्यद अब्दुल्लाह मुहिज़ इब्ने हज़रत सैय्यद हसन मुसन्ना इब्ने इमामुल आलमीन हज़रत इमाम हसन इब्ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली करामुलल्लाह वजहुल करीम।

सियादत से मुताल्लिक़ बुज़ुर्गों के अक़वाल :

और रिसाला मौलाना अब्दुल बासित क़न्नौजी में भी आपका शिजरए नसब इसी तरह दर्ज है फ़रमाते हैं -

तर्जुमा : मालूम हुआ कि आनहज़रत की कुन्नियत अबू तुराब है लक़ब शाह मदार है और नाम नामी सैय्यद बदीउद्दीन है आप वालिद माजिद की तरफ से हसनी हैं मख़्दूम क़ाज़ी हमीदउद्दीन नागोरी के मकतूबात से सही नसबनामा दर्ज किया गया है। सैय्यद बदीउद्दीन इब्ने सैय्यद अली हलबी। आपका वतन हलब है। तारीख़ विलादत यकुम शव्वाल बरोज़ दोशन्बा तीसरी सदी हिजरी है आपकी हयात पाँच सौ साल है मरातुल इन्साब में आपका शिजरए नसब इसी तरह दर्ज है यानी हज़रत बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार सैय्यद बहाउद्दीन सैय्यद ज़हीरउद्दीन सैय्यद इस्माईल सानी सैय्यद मुहम्मद सैय्यद इस्माईल अव्वल सैय्यदना जाफ़रुस्सादिक़ रज़ि० अन्हु। (मरातुल इन्साब स १५६-१५७)

हज़रत सैय्यदना ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के एक क़ौल सी भी इसकी ताईद होती है। आप फ़रमाते हैं तर्जुमाः यानी ऐ साहबज़ादे बिला शुब्हा

तुम्हारी असल मुहम्मदी है मिट्टी फ़ातिमी है और नस्ल अलवी और पैदाइश हलबी है अन्क़रीब अल्लाह तआला तुमको करामतों का मदार और अलामतों का महूर बना देगा। (अलकवाकिबुद्दरारिया स २६ शेख़ अहमद बिन मुहम्मद क़ानी मुत्तबे मजीदया मद्रास)

हज़रत अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद क़ानी क़ुतुबुल मदार के एक मन्क़बत में आपके आली नसब की तर्जुमानी इस तरह करते हैं।

यानी हज़रत ज़िन्दा शाह मदार नाम और कुन्नियत में अपने दादा हज़रत अली करामुल्लाह वजहु के मुशाबेह हैं जिनको अबू तुराब कह कर मुदहत की जाती है।

यानी आप सैय्यद इब्ने सैय्यद इब्ने सैय्यद हैं आप ही से दुनिया में इत्र पाशयां होती हैं बादशाह शाहजहाँ के साहबज़ादा दाराशिकोह बिरादर शहनशाह आलमगीर औरन्गज़ेब ने अपनी किताब सफ़ीनतुल औलिया में तहरीर किया है कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन का लक़ब शाह मदार है, शेख़ महुम्मद तैफ़ूर शामी के मुरीद हैं आपकी निसबते वारदात या तो बवजह कबरसनी या किसी दूसरी बिना पर पाँच छह वास्तों से आनहज़रत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम तक पुहँचती है। आपसे अजीब व ग़रीब करामात और हालात मुशाहिदे में आये हैं। हज़रत शाह मदार का दर्जा और मरतबा बहुत बलन्द है जिसको बयान नहीं किया जा सकता। कहते हैं बारह साल तक आपने कुछ नहीं खाया, जो कपड़े एक मरतबा पहन लिये फिर उनको दोबारा धोने की ज़रूरत न पेश आयी, हमेशा साफ़ व पाक रहते। शेख़ अब्दुल हक़ देहलवी ने लिखा है कि आप मक़ामे समदियत पर फ़ाएज़ थे ये सालकों का मक़ाम है और हक़ तआला ने आपको व हुस्न व जमाल अता फरमाया था कि जो आपको देखता सज्दे में गिर जाता। इसलिये हमेशा चेहरे पर नक़ाब डाले रहते । आपकी वफ़ात सन 840 हि० को हुयी। मज़ार मकनपुर में वाक़े है, जो कन्नौज के मुज़ाफ़ात में एक मौज़ा है। हर साल जमादिल अव्वल के महीने में (16/17 जमादिल अव्वल) आपका उर्स होता है जिसमें पाँच छह लाख

आदमी शरीक होते हैं और अतराफ़ व जवानिब हिन्दुस्तान से रौज़ा शरीफ़ की ज़ियारत को हाज़िर होते हैं और नज़राने पेश करते हैं और आज भी अजीबो ग़रीब वाक़ेआत देखने में आते हैं। अहले हिन्दुस्तान के चार हिस्सों में दो हिस्सा वज़ीअ व शरीफ़ तो हज़रत ग़ौसे आज़म सैय्यद मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलाने के मुरीद हैं और अशराफ़ ज़्यादातर एक हिस्सा शाह मदार के मुरीद हैं और अदना दर्जा के बेश्तर और निस्फ़ हिस्सा ख्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती के मुरीद हैं और बक़िया निस्फ़ हिस्सा मख़्दूम बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी क़ुद्दसा सिर्रहु इसरार हुम के मुरीद हैं (सफ़ीनतुल औलिया स 236 शहज़ादा दारा शिकोह क़ादरी तर्जुमा मुहम्मद अली लुतफ़ी)

मशहूर मोर्रिख़े साहब तारीख़ जदोलिया हुज़ूर मदार पाक की मिदहत सियादत व शराफ़त इस तरह फ़रमाते हैं। ''सैय्यद बदीउद्दीन मुलक्क़ब शाह मदार 383 हि० दरवेशे कामिल हैं मरक़द मुनव्वरह आपका मकनपुर इलाक़ा अवध में है'' कहते हैं कि तीन सौ बरस से ज़्यादा उमर शरीफ़ थी और औरत से वाक़िफ़ न थे और मुरीद शेख़ मुहम्मद तैफ़ूर शामी के थे। कहते हैं कि आपने बारह बरस तआम नहीं खाया और बासबब कमाल हुस्न के बुरक़े पर सर डाले रहते थे ताकि मरदमां महू नज़ारा न हों व सजूद से बाज़ रहें''
(तारीख़ जदोलिया मुसन्फ़ा मुन्शी ख़ादिम अली मतबूआ 1854 / 1280 हि०)।

इसी तरह बदायूँ शरीफ़ के एक तारीख़ी किताब में दर्ज है कि शेख़ मुहम्मद जहन्दह .....आप मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत सैय्यदना क़ुतुबुल अक़्ताब हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार के थे(बदायूँ क़दीम व जदीद, मरतबा निज़ामी बदायूनी मतबूआ निज़ामी प्रेस बदायूँ 1338 हि० 1920 ई०)

ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया मुसन्निफ़ रक़मतराज़ है कि साहबे मुआरिजुल विलायत ने आपका मादरी व पिदरी शिजरा व नसब इस तरह तहरीर किया है तुर्जमा : शिजरा पिदरी व मादरी इस तरह तहरीर किया है कि शेख हज़रत

सैय्यद बदीउद्दीन शेख़ अली के साहबज़ादे हैं आपकी वालिदा माजिदा का नाम हाजिरा बीबी है और शेख़ बदीउद्दीन अहले क़ुरैश से हैं।

साहबज़ादा मुहम्मद मुस्तहिन फ़ारूक़ी अपने एक मक़ाला में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत शाह मदार हसनी व हुसैनी सैय्यद हैं वालिद माजिद का नाम सैय्यद अली हलबी है सिलसिला नसब चन्द वास्तों से सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है। हज़रत शेख़ बदीउद्दीनुल मारूफ़ ब कुतुबुल मदार बिन सैय्यद अली हलबी इब्ने बहाउद्दीन इब्ने सैय्यद ज़हीरउद्दीन इब्ने सैय्यद अहमद इब्ने सैय्यद मुहम्मद इब्ने सैय्यद इस्माईल इब्ने इमामुल आएमा सैय्यद जाफ़रुस्सादिक़ इब्ने इमामुल इस्लाम सैय्यद मुहम्मद बाक़र इब्ने इमामुद्दारैन इमाम ज़ैनुल आबदीन इब्ने इमामुश्शोहदाए इमाम हुसैन इब्ने इमामुल औलिया हज़रत अली करामुल्लाह वजहुल करीम।

वालिदा माजिदा का इस्मे मुबारक बीबी हाजिरा और लक़ब फ़ातिमा था उनका सिलसिलाए नसब सैय्यदना इमाम हसन अलै० तक हस्बे ज़ेल तरीक़े से पहुँचता है। बीबी हाजिरा मुलक्क़ब ब फ़ातिमा बिन्त सैय्यद अब्दुल्लाह तबरेज़ी बिन सैय्यद अबू मुहम्मद बिन सैय्यद मुहम्मद आबिद बिन सैय्यद सालेह बिन अबू यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह सानी बिन हसन मसना बिन सैय्यदना इमाम हसन इब्ने अली इब्ने अबी तालिब। जनाब सैय्यद अली हलबी क़ाज़ी क़दौतद्दीन के लक़ब से मशहूर थे। आपके चार साहबज़ादे थे जिनमें चौथे साहबज़ादे हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार हैं''

(माहनामा आस्ताना देहली स ६ ७ जून १६५६ ई०)

शाह हबीबुल्लाह क़न्नौजी किताब '' मुनाक़िबुल औलिया'' में लिखते हैं कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन मदार क़ुद्दसा सिर्रहु के वालिद माजिद सैय्यद अली हलबी हैं और आपकी वालिदा खासुल मलक हज़रत सैय्यदा हाजिरा हैं''
(बहवाला माहनामा अलमुबारक कानपुर मई 2010 सैय्यद मुहम्मद तलहा बक़ाई निज़ामी)

मक़ाम क़ुतुबुल मदार :

हज़र सैय्यद बदीउद्दीन अहमद क़ुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० तआला अन्हु का मक़ाम व मरतबा बलन्द व बाला है चुनांचे बहरज़ख़ार का मुसन्निफ़ तहरीर फ़रमाता है : तर्जुमा -

''क़ुतुबुल मदार'' विलायत में एक मरतबा है बातिन में उसी को अब्दुल्लाह कहते हैं इसलिये कि वह इस्म ज़ात का मज़हर होता है और बेवास्ता अल्लाह तआला से फ़ैज़ हासिल करके पूरे पूरे तौर से आलमे अलवी व आलमे सिफली पर पहुँचता है और वह हर ज़माने में सिर्फ़ एक होता है और सारे अक़्ताब, औताद, अबदाल और तमामी रिजालुल्लाह क़ुतुबल मदार के ताबे होते हैं। क़ुतुबुल मदार के चन्द नाम होते हैं, क़ुतुबुल अक़्ताब व क़ुतुबुल इरशाद व क़ुतुबे आलम क़ुतुबे क़ुबरा और क़ुतुबे अकबर उसी एक शख़्स को कहते हैं।

हज़रत क़ुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार को मक़ाम समदियत हासिल था और इस मक़ामे समदियत की चन्द अलामते हैं। (१) जब सूफ़ी इस मक़ाम पर पहुँचता है दुनियवी खाने पीने की उसे हाजत नहीं होती। (२) कमज़ोरी और बुढ़ापे से वो दो चार नहीं होता। (३) उसका लिबास पुराना और मैला नहीं होता। (४) जो कोई उसके जमाल व कमाल को देखता है बे इख़्तियार सज्दा करता है ये सारी अलामतें हज़रत ज़िन्दा शाह मदार में मौजूद थीं।

तफ़सीर रूहुल बयान के उर्दू तर्जुमा के हाशिये पर तहरीर है। हर ज़माने में सिर्फ़ एक ऐसा क़ुतुब होता है ये क़ुतुब सबसे बड़ा होता है उसे मुख़्तलिफ़ नामों से पुकारा जाता है। क़ुतुबे आलम, क़ुतुबे क़ुबरा, क़ुतुबुल इरशाद, क़ुतुबुल मदार, क़ुतुबुल अक़्ताब, क़ुतुबे जहाँ और जहाँगीरे आलम, आलिमे अलवी और आलिमे सिफली में उसका तसर्रुफ़ होता है और सारा आलम उसी के फ़ैज़ व बरकत से क़ाएम होता है अगर क़ुतुब आलम का वजूद दरम्यान से हटा दिया जाए तो सारा आलम दरहम बरहम होकर रह जाएगा।

क़ुतुबे आलम बराहे रास्त अल्लाह तआला से अहकाम व फ़ैज़

हासिल करता है और उन फ़ैज़ को अपने मातहत अक़्ताब में तक़सीम करता है वह दुनिया के किसी बड़े शहर में सुकूनत रखता है, बड़ी उमर पाता है नूरे खाम मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकात हर सिम्त से हासिल करता है, वह मातहत अक़्ताब के तक़र्रुर, तनज़्ज़ुल और तरक्क़ी के इख़्तियार का मालिक होता है, वली को माज़ूल करना, विलायत को सलब करना, वली को मुक़र्रर करना, उसके दरजात में तरक्क़ी देना उसी के फ़राएज़ में है। वह विलायत शम्स पर फ़ाएज़ होता है लेकिन उसके मातहत अक़्ताब को विलायत क़मर में जगह मिलती है। क़ुतुबे आलम अल्लाह तआला के इस्म रहमान की तजल्ली का मज़हर होता है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मज़हरे खास तजल्लिल विलायत हैं। क़ुतुबे आलम सालिक भी होता है और उसका मक़ाम तरक्क़ी पज़ीर होता है हत्ता कि वह मक़ाम फ़रदानियत तक पहुँच जाता है, ये मक़ामे महबूबियत है। रिजालुल्लाह में इस क़ुतुबे आलम का नाम अब्दुल्लाह भी है। (तफ़सीर रूहुल बयान अरदौज १५ प ३० स सूरह नबा मतबूआ रिज़वी किताब घर)

(इस मक़ाम की मज़ीद तफ़सीलात हमारी किताब मक़ामे मदारियत में देखी जा सकती हैं)

क़ुतुबुल मदार विलायत के तमाम मक़ामात व अहवाल का जामेअ होता है :

हज़रत शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ क़ाशियानी रह० मज़ीद नक़ल फ़रमाते हैं- तर्जुमा : ख़लीफ़ए बातिन जो अपने ज़माने वालों का सरदार होता है उसी को क़ुतुब (मदार) कहते हैं क्योंकि तमाम मक़ामात व अहवाल का वह जामेअ होता है और तमाम मक़ामात व मरातिब उसी के गिर्द घूमते हैं।

इसी रिसाले में शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ क़ाशियानी रह० का क़ौल मज़ीद नक़ल फ़रमाते हैं - तर्जुमा :

सूफ़ी की इस्तिलाह में क़ुतुबुल मदार उस कामिल तरीन इन्सान को कहते हैं जो मक़ामे फ़रदियत पर फ़ाएज़ हो जिस पर मख़्लूक़ के अहवाल का दारोमदार होता है।

लताएफ़ अशरफ़ी में फ़तूहात मकीया से नक़ल है कि - तर्जुमा :

कुतुबुल मदार वह यकताए ज़माना है जो आलम में मन्जूर नज़र इलाही होता है हर ज़माने में हर घड़ी में और वह इसराफ़ील अलैहि० के क़ल्ब (मशरिब) पर होता है और कुतुबियत कुबरा जो कुतुब मदार का मरतबा है और मरतबाए बातिन नबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है और मरतबा कमाल नहीं मिल सकता है मगर सिर्फ वारिसाने मुहम्मद रसूल स० को इसलिये कि आप स० ही अकमलियत से मुख्तस हैं तो ख़ातिमुल विलायत और कुतुबुल अक़्ताब वही होगा जो बातिन ख़ातिमुन्नबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हो।

बहरज़ख़ार तफ़सीर रूहुलबयान मुतरजिम रिसाला इब्ने आबिद बिन शामी और लताएफ़ अशरफ़ी की इबारतों से मक़ाम कुतुबुल मदार और मरतबा ज़िन्दा शाह मदार कितना आली और कितना रौशन और कितना अज़ीमुश्शान है अरबाबे फिकर व दानिश और असहाबे इल्म व फज़ल पर मख़्फ़ी नहीं रह गया है। इस अज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत निशाने सरदारे औलिया जहाँ अकमल इन्सान कुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार का हसब नसब भी बहुत ही आली शान लारैब व बेगुमान होना ही चाहिये।

आईना : हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० के हसब नसब से थे बाज़ सीरत निगारों ने जिस लापरवाही और कोताह नज़री से काम लिया है और कुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० के हसब व नसब पर गर्द गुबार बिछाने की जसारत की है मैं उन्हें ज़रूर आईना दिखाना चाहता हूँ मुहक्क़िक़ीन सबके चेहरे इसमें देख लेंगे।

ख़ज़ीनतुल असफ़िया के मुसन्निफ़ मौलाना ग़ुलाम सरवर लाहौरी ने मेआरिजुल विलायत के हवाले से एक शिजराए नसब वालिद की तरफ़ से इस तरह बयान किया है-

अज़ तरफ़ वालिद :

शेख़ बदीउद्दीन बिन शेख़ अली बिन शाह तैफ़ूर बिन शाह काफ़ूर

बिन इस्माईल बिन मुहम्मद बिन हसन बिन अली बिन ज़ैफ़ूर बिन बहाउद्दीन मुहम्मद शाह बिन बदरुद्दीन बिन कुतुबुद्दीन बिन अमादुद्दीन बिन अब्दुल हाफ़िज़ बिन शहाबुद्दीन बिन ज़ाहिर बिन ताहिर बिन अब्दुर्रहमान बिन अबु हुरैरह रजि० अन्हुम इस शिजरए नसब से ये तास्सुर क़ायम किया गया है कि हज़रत बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रजि० हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० तआला अन्हु सहाबिये रसूल स० की औलाद हैं।

इस शिजरे में हज़रत अबु हुरैरह रज़ि० अन्हु तक कुल अठ्ठारह वास्ते बीच के ज़ाहिर किये गये हैं नवीं व दसवीं ग्यारहवीं सदी की सीरत की किताबों में से किसी किताब में ये अजीब व ग़रीब शिजरा मरक़ूम नहीं है और न ही कुतुबुल मदार हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के अहले ख़ानदान व मशाएख़ मकनपुर शरीफ़ में किसी ने ये शिजरा लिखा है और अपना ये शिजरा बताया है इसलिये ये शिजरा बाद वालों की वज़ा है, गढ़न्त है।

नज़ीनतुल ख़्वातिर के मुसन्निफ़ मौलाना अब्दुल हई साहब भी नक़ल करते हैं - तर्जुमा :

आप मशहूर सहाबी हज़रब अबु हुरैरह रज़ि० की औलाद से हैं, बारह वास्तों से आप का सिलसिला ए नसब हज़रत अबु हुरैरह तक पहुँचता है और एक क़ौल यह है कि आप हज़रता अली बिन अबु तालिब रज़ि० अन्हु की औलाद से हैं इसके अलावा भी सिलसिला नसब बयान किया गया है।

साहबे नज़ीहतुल ख़्वातिर के मुताबिक़ अबु हुरैरह वाला सिलसिला नसब सिर्फ बारह ही वास्तों से हज़रत अबु हुरैरह तक पहुँच जाता है। ख़ज़ीनतुल असफ़िया और नज़ीहतुल ख्वातिर की इबारतों में कितना ज़्यादा फ़र्क़ है क़ारईने किराम को अन्दाज़ा लग गया होगा। एक साहब हज़रत बदीउद्दीन से हज़रत अबु हुरैरह तक बीच में अठ्ठारह वास्ते यानी अठ्ठारह बाप दादाओं के नाम दर्ज कर रहे हैं तो दूसरे साहब उसकी तरदीद करते हुए लिखते हैं कि दोनों के माबेन सिर्फ़ बारह वास्ते हैं। छै छै नामों के इज़ाफ़े के बावजूद उल्माए अहले सुन्नत आज तक कोई सही रिमार्क करने से

क़ासिर हैं। ज़ाहिर है अब बाद में ख़ज़ीनतुल असफ़िया के मशरब के लोग वही लिखेंगे जो साहबे नज़ीहतुल ख़्वातिर ने रक़म कर दिया है और इस तरह दास्ताने कज़्ब व फ़रेब दराज़ होता चला जाएगा। इसी तरह बाज़ तज़किरह निगारों ने आप को हज़रत सैय्यदना फ़ारूक़ आज़म रज़ि० की औलाद से भी तहरीर किया है और बाज़ ने हज़रत सैय्यदना उस्मान ग़नी रज़ि० की औलाद से बताया है और शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती साहब मरातुल मदारी ने तो सारी तहक़ीक़ को बाला ताक़ रखते हुए हज़रत क़ुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० को अम्बियाए बनी इसराईल की औलाद से बता दिया बनी इसराईल के नबी हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में आपको लिख मारा लेकिन न कोई उसका शिजरा तहरीर किया और न ही नसब नामा, शिआन कन्तूर की गढ़ी हुए एक किताब ईमान महमूदी का हवाला तहरीर कर दिया और उस को ख़लीफ़ा क़ुतुबुल मदार हज़रत क़ाज़ी सैय्यद महमूद कन्तूरी रज़ि० की तरफ़ मन्सूब कर दिया जिस किताब का न तो कोई पता है न असली हालत में लाइब्रेरी में मौजूद है।

नुस्ख़ा मरात मदारी का हाल :

खुद मरातुल मदारी का ये हाल है कि असल नुस्ख़ा कहीं भी मौजूद नहीं है और नक़ल का ये हाल है कि दो सौ साल से ज़ाएद अर्सा तक अंग्रेज़ों की आग़ोश तरबियत में पला बढ़ा और परवान चढ़ा और जब हिन्दुस्तान में उसे लांच किया गया तो शैई और ग़ैर इस्लामी अक़ाएद से ममलू करके लाइब्रेरियों को ज़ीनत बख्श दिया गया। सबसे पहले मरातुल मदारी का उर्दू तर्जुमा लखनऊ के एक शिया मौलवी सैय्यद अब्दुल अली बिरादर इबाद अली मालिक मती असना अशरी लखनऊ ने शाए किया और अब दूसरा तर्जुमा हाल ही में एक सुन्नी आलिमे दीन मौलाना डॉ० मुहम्मद आसिम आज़मी साहब ने २००६ में शाए कर दिया है। जो बहराइच शरीफ़ से शाए हुआ है जनाब डॉ० आसिम साहब मरातुल मदारी के हाशिये में शेख़ अब्दुर्रहमान की मौजूदा मरातुल मदारी को देखकर अपना तास्सुर इस तरह सफ़हा क़रतास के

हवाले फ़रमाते हैं।

''इमाम मेहदी के ज़रिये शाह मदार की तालीम व तरबियत का वाकिया शीई इफ़तरा व इख्तिरा का शाख़साना मालूम होता है शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती जो अहले सुन्नत से ताल्लुक़ रखते हैं उन्होंने अक़ीदा इमाम मेहदी के बारे में जम्हूरे अहले सुन्नत से हट कर रवाफ़िज़ की इफ़तरा परदाज़ियों की ताईद तौशीक़ में क़यासी दलाएल व बराहीन पेश किये''

(मुतर्जम मरात मदारी आसिम आज़मी स १०४)

जनाब डॉ० आसिम साहब की इस इबारत से ये बात वाज़ेह हो जाती है कि मौजूदा मरातुल मदारी में या तो शियों ने अपना तसर्रुफ़ व इख़तरा करके असल किताब में तहरीफ़ कर दी है या अंग्रेज़ों ने किसी शिया के ज़रिये इस काम को अन्जाम दिया है कि उन्हीं के दौर में ये किताब पहले लन्दन गई फिर इण्डिया आयी या फिर खुद अब्दुर्रहमान चिश्ती ही क़ाबिले एतबार मुसन्निफ़ नहीं हैं बल्कि शीयतज़दा हैं। चुनांचे हाशिया मरातुल मदारी में एक दूसरी जगह डॉ० साहब तहरीर फ़रमाते हैं ''शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती ने मशरबे चश्त के जलीलुल क़दर शेख़ तरीक़त के मलफ़ूज़ात ''लताएफ़ अशरफ़ी'' से मरातुल मदारी में इस्तिफ़ादा किया है काश इस मक़ाम को बग़ौर पढ़ लेते तो उन्हें राफ़ज़ी मज़ऊमात की ताईद में क़लम सर्फ करने की ज़रूरत न पेश आती और वह जम्हूरे अहले सुन्नत पर तास्सुब व तन्ग नज़री का इल्ज़ाम आएद न करते (मरातुल मदारी मुतरजिम स १०६)

इस मक़ाम पर मौजूदा मरातुल मदारी की एक और इबारत पेश कर देना मुनासिब जान पड़ता है जिसमें असल इस्लामी नज़रयात से हटकर एक अजीबोग़रीब फ़तवा नक़ल किया गया है जिस पर आज तक किसी इस्लामी मुफ़्ती या मुफ़क्किर ने इत्तेफ़ाक़ नहीं किया है और मौजूदा मरातुल मदारी के सिवा न ही किसी दूसरी दीनी मज़हबी किताब में ये मरकूम है। मरातुल मदारी में है कि -

तर्जुमा : यानी उल्माए दीन ने फ़ैसला फ़रमा दिया है कि जो शख्स

अपने मुजतहदीन के मज़हब से इन्कार करे या उस मज़हब को छोड़ कर दूसरे मज़हब व मसलक को इख्तियार करे तो वह काफ़िर हो जाएगा। जनाब डॉ० साहब अपने हाशिये में इस अक़ीदे पर रिमार्क करते हुए लिखते हैं ''चूंकि तक़लीद महज़ वाजिब है लिहाज़ा इसका मुन्किर या किसी एक मसलक फ़िक़हा को छोड़कर दूसरे मसलके फ़िक़हा को इख्तियार करने वाला काफ़िर नहीं होता, तारीख़ इस्लाम में ऐसी बहुत सारी मिसालें मिलती हैं कि किसी ने इमाम की तक़लीद को तर्क करके दूसरे इमाम की तक़लीद इख्तियार कर ली मगर किसी ने उसे काफ़िर नहीं क़रार दिया'' (मरातुल मदारी मुतर्जम स १११ डॉ० मुहम्मद आसिम आज़मी) जैसे इमाम तहावी और इमाम ऐनी वग़ैरह और कहा जाता है कि खुद हुज़ूर ग़ौस पाक अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि० पहले शाफ़ईल मसलक थे बाद में हम्बली मसलक इख्तियार फ़रमा लिया। वल्लाह आलम बिस्सवाब। तो क्या बक़ौल अब्दुर्रहमान चिश्ती मआज़अल्लाह ये लोग काफ़िर हो गए???

शिजरा नसब में इश्तिबाह पैदा करने की कोशिश :

आमदम बरसर मतलब हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार कुतुबुल मदार रज़ि० को किसी ने बेतहक़ीक़ अबु हुरैरह की औलाद से लिख दिया तो किसी ने हज़रत उमर फ़ारूक़ ख़लीफ़ए सानी या उस्मान ग़नी ख़लीफ़ए सालिस की औलाद में मौसूम कर दिया और जनाब शेख अब्दुर्रहमान चिश्ती की किताब मौजूदा मरातुल मदारी में अम्बिया बनी इसराईल की औलाद में लिख मारा गया और इसी किताब को पढ़ कर तक़रीबन दस से ज़ाएद तज़किरा निगार गुमराह हुए जिसमें क़सर आरिफ़ां का मुअल्लिफ़ भी शामिल है।

हज़रत कुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० सहीहुन्नसब हसनी हुसैनी सैय्यद हैं। शिजरा सयादत तहरीर करने में भी बाज़ लोगों से सहु हुआ है। बहरज़खार के मुसन्निफ़ हज़रत वजीउद्दीन अशरफ़ अलैहिर्रहमा रक़म फ़रमाते हैं।

तर्जुमा : यानी आपका इस्म शरीफ़ बदीउद्दीन अहमद विलायत कुतुबुल मदारी के सबब शाह मदार लक़ब दे दिया गया कुतुबुल मदार के दादा गिरामी सैय्यद अबु इस्हाक़ शामी बिन ज़ैनुल आबदीन हुसैनी बिन इमाम मूसा काज़िम बिन इमाम जाफ़र सादिक़ बिन इमाम मुहम्मद बाक़र बिन इमाम ज़ैनुल आबदीन बिन इमाम हुसैन शहीदे करबला हैं। एक रिवायत में आया है कि दादा क़दवतुद्दीन थे जो हज़रत ख़लीफ़ा सानी या सालिस की औलाद में से थे और शेखुल मुहिद मतीन अब्दुल हक़ देहलवी ने अख्बारुल ख़यार में हज़रत कुतुबुल मदार को सैय्यद तहरीर किया है और उनकी माँ का बीबी हुवैदा है।

इसरारुल आरफ़ीन का मुसन्निफ़ हज़रत मदार पाक रज़ि० का शिजरा सयादत इस तरह नक़ल करते हैं ''मन्शा सिलसिला ईं गरवा सैय्यद शाह बदीउद्दीन मदार से है उनका वतन हलब है और सादात काज़मी मूसा अलहुसैनी से हैं चुनांचे बहरुल अन्साब में लिखते हैं कि (१) सैय्यद बदीउद्दीन अहमद मदार बिन (२) सैय्यद अली हलबी बिन (३) सैय्यद ग़फ़ूर हलबी बिन (४) सैय्यद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ हलबी बिन (५) सैय्यद अब्दुल वहाब (५) सैय्यद हलबी बिन (६) सैय्यद ज़ाहिद हलबी बिन (७) सैय्यद बुरहान उद्दीन हलबी बिन (८) सैय्यद इब्राहीम हलबी बिन (६) सैय्यद अब्दुर्रहमान हलबी बिन (१०) सैय्यद क़ासिम बिन (११) सैय्यद अहमद बिन (१२) सैय्यद यासीन बिन (१३) हज़रत इमाम मूसा काज़िम इब्न (१४) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़'' (इसरारुल आरफ़ीन अहवालुल आशक़ीन मोअल्लिफ़ हज़रत मौलाना हाफ़िज़ शाह शब्बीर अहमद चिश्ती क़ादरी बाराबन्की सम अहमदाबादी स १५४) इस शिजरा में मदार पाक को हज़रत सैय्यद अली हलबी का बेटा लिखा गया है लेकिन बाद के नाम सिर्फ़ किताब में दर्ज हैं अबुल हक़ शामी को मौजूदा मरात मदारी में औलाद पाक निहाद अम्बियाए नबी इसराईल से तहरीर किया गया है। एक आदमी के कितने बाप होते हैं एक और सिर्फ़ एक । न जाने इन सीरत निगारों को कहाँ से इल्हाम हुआ।

तज़किरा निगारों के इख्तिलाफ़ात कहाँ नहीं हैं? सहाबा किराम, ताबईन किराम के शिजरात और उनके आबा व अजदाद के नामों में शदीद इख्तिलाफ़ है।

हज़रत अबु हुरैरह रज़ि० के वालिद के बारे में पाँच से ज़ाएद अक़वाल नक़ल किए गए हैं जिसमें हज़रत अबु हुरैरह और उनके वालिद के नामों का इख्तिलाफ़ ज़ाहिर किया है। अल्लामा अब्दुल बर ने मुताअददिद हवालों से हज़रत अबु हुरैरह रज़ि० के वालिद के बारे में नाम दर्ज किया है। अब्दुल्लाह बिन आमिर, हुरैरह बिन अशरक़ा, शक़ीन बिन अब्दुल्लाह, बिन अब्दुल शम्स, अब्द नहम बिन आमिर, अब्द उमरू बिन अब्द ग़नम, करदौस बिन आमिर (अस्तीआब ज ४ स १८६६)

क़ारईन समझ रहे होंगे एक अबु हुरैरह के कई अरबी नाम हो सकते हैं मगर पाँच पाँच बाप नहीं हो सकते है वालिद तो सिर्फ़ एक ही होता है। इस तरह हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० का एक शिजरा सही है जो उनके अहले ख़ानदान, मशाएख़ मकनपुर शरीफ़ और जम्हूर अहले सैर के नज़दीक मोअतमिद व मक़बूल है।

हज़रत ख़्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती के नसब में इख़्तिलाफ़ :

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनउद्दीन हसन संजरी चिश्ती अजमेरी रज़ि० के नसब नामा में इख़्तिलाफ़ है। मुईनुल अरवाह के मुसन्निफ़ सुलतानुल हिन्द हज़रत सैय्यदना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का नसब नामा पिदरी मुताअद्दिद किताब व सैर के हवाले से इस तरह तहरीर किया है। (१) ख़्वाजा मुईनउद्दीन हसन बिन (२) ख़्वाजा सैय्यद ग़यासुद्दीन बिन (३) सैय्यद सिराजुद्दीन बिन (४) सैय्यद अब्दुल्लाह बिन (५) सैय्यद अब्दुल करीम बिन (६) सैय्यद अब्दुर्रहमान बिन (७) सैय्यद अकबर बिन (८) सैय्यद इब्राहीम बिन (९) इमाम मूसा काज़िम बिन (१०) इमाम जाफ़र सादिक़ बिन (११) इमाम मुहम्मद बाक़र बिन (१२) इमाम ज़ैनुल आबदीन बिन (१३) सैय्यदुश्शोहदाए हज़रत इमाम हुसैन बिन (१४) हज़रत सैय्यदना अली इब्ने

अबी तालिब करामुल्लाह वजहुल करीम व रज़ि० तआला अन्हुम अजमईन।

और साहब मरातुल इसरार व मरातुल मदारी शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती ने आपका शिजरए नसब यूं बयान किया है। ख़्वाजा मुईनउद्दीन बिन ख़्वाजा सैय्यद ग़यासुद्दीन बिन ख़्वाजा नजमुद्दीन ताहिर बिन सैय्यद अब्दुल अज़ीज़ बिन सैय्यद इब्राहीम बिन सैय्यद इदरीस बिन सैय्यदना इमाम मूसा काज़िम रज़ि० तआला अन्हुम अजमईन ज़ाहिर है कि हुज़ुर ख़्वाजा पाक का इसमें से वही शिजरा सही है जिसमें जम्हूर सही मानते हैं।

हुज़ूर ग़ौस पाक के हसब व नसब में इख़्तिलाफ़ :

इसी तरह ग़ौस पाक मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि० के शिजरए नसब के बारे में लोगों ने इख्तिलाफ़ किया है बाज़ लोगों ने आपकी सयादत का ही इन्कार कर दिया है जैसे उम्दतुत तालिब इनसाब आल अबी तालिब का मुसन्निफ। इसी शक व शुब्हा को दूर करने के लिये अपने वक्त के मुहद्दिस हज़रत शेख़ मुल्ला अली क़ारी ने हुज़ूर ग़ौस पाक की सयादत साबित करने के लिये एक मुसतनद किताब लिखी जिसका नाम नामी नज़ीहतुल खातिरुल फ़ातिर है।

जनाब मौलाना अहमद रज़ा खां साहब फ़ाज़िल बरेलवी से इस्तफता किया गया कि शिया लोग कहते हैं हज़रत सैय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० सैय्यद नहीं है और न ही हसने मसना की औलाद में हैं महरबानी फ़रमा कर मुरत्तब मोतबरह शिया व सुन्नी से नक़ल इबारत मय सफ़हा व नाम किताब तहरीर फ़रमाएं। आप जवाब लिखते हैं ''हुज़ूर सैय्यदना ग़ौस पाक रज़ि० तआला अन्हु क़तअन अजले सादात किराम से हैं हुज़ूर की सियादत मुतावातिर है.............. राफ़ज़ियों के यहाँ तो मेयारे सयादत रफ़ज़ है सुन्नी कैसा ही जलीलुल क़दर सैय्यद हो उसे हरगिज़ सैय्यद न मानेंगे और कोई कैसा ही रज़ील क़ौम का आज राफ़ज़ी हो जाए कल से मीर साहब है'' वल्लाहु तआला आलम (फ़तावा रिज़विया स २२९ ज दवाज़ दहम किताबुश्शता)

हज़रत साबिर कलेरी के हसब व नसब में इख़्तिलाफ़ :

हज़रत साबिर कलेरी रह० को मराते इसरार में अम्बिया बनी इसराईल के औलाद में लिखा है जबकि आप का शिजरए नसब हक़ीक़त में हुज़ूर ग़ौसे पाक के शिजरे सयादत से मिलता है। मरातुल इन्साब कलां में ज़िया उद्दीन अहमद अलवी मुजद्दिदी ने आपको हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि० के औलाद से बताया है और शिजरा भी तहरीर किया है। सैय्यद अलाउद्दीन अली अहमद साबरी कलेरी रह० बिन सैय्यद अब्दुल्लाह बिन सैय्यद फ़तेहउल्लाह इब्न सैय्यद नूर मुहम्मद सैय्यद अहमद इब्न सैय्यद ग़यासउद्दीन बिन सैय्यद बहाउद्दीन बिन सैय्यद दाऊद बिन सैय्यद ताजुद्दीन बिन सैय्यद मुहम्मद इब्न ज़ियाउद्दीन अली बिन सैय्यद इस्माईल अव्वल इब्न सैय्यद इमाम जाफ़र सादिक़ रज़िअल्लाहु अन्हु (मरातुल इन्साब स १५७ मतबूआ १३३५ हि०)

रवाफ़िज़ व ख़्वारिज ने बुज़ुर्गों के नसब नामों में तहरीफ़ की है :

जम्हूरे अहले सुन्नत के नज़दीक शिजरए सियादत ही मुसलिम है। ग़र्ज़ ये कि अकाबिर औलिया अल्लाह के हालात शिजरात में ख़लत मलत इख़्तिलाफ़ात व इख़्तिराफ़ात कर दिये गए हैं लेकिन इसके बावजूद मुहक्क़िक़ीन के नज़दीक जो हक़ और सच है वही मुस्लिम है वही मुस्तनद है उसी का रवाज है वही सही मिन्हाज है। रवाफ़िज़ व ख़्वारिज ने अंग्रेज़ों से साज़ बाज़ करके हुज़ूर सैय्यद बदीउद्दीन अहमद क़ुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० के शिजरए तैय्यबा ताहिरा में शक व इरतियाब पैदा करने की भरपूर कोशिश की है और उनके दाम तज़वीर में कुछ अरबाब तारीख़ व सैर भी आ गये हैं या उन ज़ालिमों से तहरीफ़ व तब्दील करके शाए करा दिया है। नतीजतन बाज़ अहले क़लम धोखा खा गए हैं और अपनी तहक़ीक़ में हक़ हक़ीक़त तक नहीं पहुँच सके हैं।

सही मुस्तनद मारूफ़ व मोतबर ये है कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार बाप की तरफ़ से हुसैनी सैय्यद हैं और माँ की तरफ़ से

हसनी सैय्यद हैं । आप के वालिद माजिद सैय्यद अली हलबी हैं जो क़ुदवतुद्दीन के लक़ब से मशहूर हुए हैं और वालिदा माजिदा सैय्यदा ख़ासुल मलक बीबी हाजरा उर्फ़ फ़ातिमा तबरेज़िया हैं। आप की सियादत के लिये किसी भी ख़ारजी दलील की क़तई कोई हाजत नहीं है इस बारे में आपका बयान आपके अहले ख़ानदान का बयान और जम्हूर का क़ौल काफ़ी है। जिन हज़रात ने आपको अबु इसहाक़ शामी या हज़रत अबु हुरैरह या ख़लीफ़ा सानी या सालिस की औलाद में शुमार किया है ये उनकी नावक़िफ़ी ग़लतफ़हमी और बेसुबूत की बातें हैं और इस तरह की ग़लतफ़हमी और शुब्हा पैदा करने में वहाबियों देवबन्दियों, कन्तूर के राफ़ज़ियों और मआनदीन सिलसिले आलिया मदारिया के बड़े-बड़े हाथ हैं और हिर्स व हवा के बन्दों ने उनका भरपूर साथ दिया है।

सिलसिला मदारिया से हसद की वजह :

चूंकि नवी दसवीं और ग्यारहवीं सदी हिजरी में सिलसिला मदारिया का सूरज आफ़ताब निस्फ़ुन्नहार की तरह रौशन और ताबनाक था जो छोटी छोटी ख़ानक़ाहों के टिमटिमाते हुए चिराग़ों को लवों को मान्द किये दे रहा था जैसा कि हज़रत आलमगीर औरन्गज़ेब रह० के भाई दाराशिकोह क़ादरी के इस बयान से ज़ाहिर होता है कि पाँच छै लाख आदमी आप के उर्स में शरीक होते थे। (सफ़ीनतुल औलिया स २३६)

उस ज़माने में हिन्दुस्तान की कुल आबादी ज़्यादा से ज़्यादा पाँच छै करोड़ रही होगी। आमदो रफ्त के ज़राए महदूद थे उस हाल में उर्स क़ुतुबुल मदार में पाँच छै लाख आदमियों का शरीक होना आप की सबसे ज़्यादा शोहरत व मक़बूलियत की रौशन दलील है और किसी के उरूज व क़ुबूलियत से हसद करना और हसद की वजह से उसके उरूज व बुलन्दी पर कीचड़ उछालना अहले हिर्स व हवा की आदत है। जान लीजिये और ख़ूब तहक़ीक़ से जान लीजिये कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० तआला

अन्हु अजला सादात हसनी व हुसैनी में से हैं आपकी सयादत किसी दलील व तआर्रुफ़ की मोहताज नहीं।

एक अजीबो ग़रीब सवाल और उसका जवाब :

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार मक़ाम वराउल वरा से तरक्क़ी करके मक़ाम महबूबियत कुबरा पर फ़ाएज़ थे। बसा औक़ात आप जलवए ज़ात और तसव्वुर सिफ़ात में मुस्तग़रक़ होकर अपनों बेगानों अवाम ख़ास की नज़रों मस्तूर होकर मन्ज़ूरे नज़र इलाही हो जाया करते थे और मक़ाम सम्दियत का ग़लबा शदीद होता तो मख़्लूक़ से बिल्कुल बेनियाज़ हो जाते थे कुछ लोग आपसे मुताल्लिक़ ये उड़ाने लगे कि आपके वालिदैन ही न थे आप बे माँ बाप के थे चुनांचे हज़रत अल्लामा ईसा जौनपुरी रह० ने आपसे सवाल किया - तर्जुमा : कि लोग कहते हैं कि आनहज़रत के कोई माँ बाप नहीं हैं ये कैसे मुमकिन होगा ? आपने जवाबन इरशाद फ़रमाया ख़ुदाए तआला क़ादिर है कि किसी को बग़ैर माँ बाप के पैदा फ़रमा दे चुनांचे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के वालिद वालिदा दोनों नहीं थे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कोई बाप नहीं था पस ख़ुदाए तआला के तौर तख़्लीक़ में क्या ताज्जुब है ऐ प्यारे! विलादत की दो क़िस्में हैं एक विलादते सलबी है जो माँ बाप से ताल्लुक़ रखती है और दूसरी विलादत इरशादी है (हाशिया तज़किरातुल मुत्तक़ीन स १२८)

इस सवाल जवाब से हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० के हसब व नसब का तो इन्कार नहीं किया जा सकता ? हाँ अगर कोई इन्कार पर ही आमादा है तो ये उसकी कोरचश्मी है।

गर न बीनन्द बरोज़ शपरए चश्म चश्मए आफ़ताब राचा गुनाह

गर्ज़ ये कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० हज़रत हसनैन करीमैन के घर के चश्मो चिराग़ थे बल्कि आफ़ताबे सयादत व माहताबे विलायत थे।

पैदाइश के वक्त करामात का ज़हूर :

आप जब शिकम मादर से इस जहान तेरह व तार में जलवा बार हुए

तो रूए अनवर की ताबानी वह मकान जगमगा उठा जिस में आप पैदा हुए। पैदा होते ही जबीने नियाज़ को ख़ालिक़ बे नियाज़ की बारगाह में बहर सजदा झुका दिया हक़ बयान से सदा बुलन्द हुई। "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूल उल्लाह" । हज़रत इदरीस हलबी जो एक साहबे कश्फ़ व करामात बुज़ुर्ग हैं रिवायत करते हैं कि आप रज़ि० ने जब उस खाकदान गैती को अपने क़ुदूम मैमनत लज़ूम से मुशर्रफ़ फ़रमाया तो रूह पाक साहब लौ लाक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मय जुमला असहाब किबार वायमा इतहार ख़ाना अली हलबी में जलवा अफ़रोज़ हुई और सैय्यद अली हलबी और फ़ातिमा सानिया को सईद बेटे की विलादत की मुबारकबाद दी हातिफ़ ग़ैबी ने हाज़ा वली उल्लाह हाज़ा वली उल्लाह का मज़दा सुनाया और शाहिदाने बारगाह लायज़ाल ने अपने लौह दिल पर उन मुबश्शिरात को नक्श कर लिये और आप सईद अज़ली क़रार दिये गये।

तालीम व तरबियत :

अल्लाह तआला जिसे अपने बरगज़ीदा बनाता है और अपनी महबूबियत के लिये इन्तिख़ाब फ़रमाता है उसकी तालीम व तरबियत ज़ाहिरी व बातिनी के लिये भी बेहतरीन इन्तिज़ाम फ़रमाता है चुनांचे जब आप रज़ि० की उमर मुबारक चार साल चार माह चार दिन की हुई तो सलफ़ सालेहीन की सुन्नत के मुताबिक़ वालिद गिरामी ने ये मन्शाए रहमानी रस्म बिस्मिल्लाह ख़्वानी के लिये आपको क़ुतुबे रब्बानी शेख़ुल अस्र हज़रत हुज़ैफ़ा मरअशी शामी क़ुद्दसा सिर्रहु अन्नूरानी मुतावफ़्फ़ी २७६ हि० की ख़िदमत में पेश फ़रमाया। उस्ताज़ मोहतरम ने हक़ उस्तादी अदा करते हुए इब्तिदाई तालीम से लेकर शरीअत के तमाम उलूम व फ़नून से आरास्ता व पीरास्ता कर दिया। जब आपकी उमर मुबारक चौदह साल की थी तो तमामी उलूम अक़लिया व नक़लिया में महारत ताम्मा हासिल हो चुकी थी। हाफ़िज़े क़ुरआन होने के साथ साथ आप तमाम आसमानी किताबों ख़ुसूसन तौरेत, इन्जील व ज़बूर के भी हाफ़िज़ व आलिम थे (तज़किरातुल किराम तारीख़ ख़ुल्फ़ाए अरब इस्लाम स

४६३) मुजद्दिद सिलसिला चिश्तिया हज़रत मख़्दूम अशरफ़ जहांगीर समनानी रज़ि० फ़रमाते हैं कि बाज़ उलूम नवादिर मसलन इल्म हीमिया, सीमिया, कीमिया और रीमिया में कामिल दस्तरस रखते थे। (तर्जुमा लताएफ़ अशरफ़ी फ़ारसी स २५४ मतबूआत नुसरतुल मताबे देहली)

बैअत व ख़िलाफ़त :

ज़ाहिरी उलूम से फ़राग़त के बाद सआदत अज़लिया जज़्ब दरूं को बातिन के हुसूल के लिये पाबा इश्तियाक़ कर देती है। जज़बये इश्क़ ज़ियारत हरमैन शरीफ़ैन के लिये क़दम बढ़ाता है। वालिदैन करीमैन से इजाज़त लेकर आज़िम मक्का व मदीना होते हैं, इधर वतन मालूफ़ से क़दम बाहर निकले उधर नसीबे की मेराज की तैयारी शुरू हो गयी। मन्शए क़ुदरत ने हरीम दिल में सदा लगायी ऐ बदीउद्दीन! सेहन बैतुल मुक़द्दस में तुम्हारी मुरादों की कलीद लिये सरगिरोह औलियाए बायज़ीद बुस्तामी सरापा इन्तिज़ार हैं। आपने रहबरे आज़म को बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ मोड़ दिया। २५६ हि० में सुल्तान औलिया हज़रत बायज़ीद बस्तामी उर्फ तैफ़ूर शामी क़दस सिर्रहुस्सामी ने सेहन बैतुल मुक़द्दस में निस्बते तैफ़ूरिया सिद्दीक़िया व तैफ़ूरिया बसरिया से सरफ़राज़ फरमाया और इजाज़त व ख़िलाफ़त का ताज सर पर रख कर हलै बातिन से आरास्ता व पैरास्ता फ़रमा दिया। एक अरसा तक मुर्शिद बरहक़ की मईअत में रहकर इरफ़ान की नेमतों से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद होते रहे। अज़कार व अशग़ाल औराद वज़ाएफ़ और रियाज़त व मुजाहिदात के ज़रिये तरीक़त व हक़ीक़त और रमूज़ मआरफ़त की मन्ज़िलें तय करते रहे।

हज़रत बायज़ीद बस्तामी रजि0 तआला का इन्तिक़ाल :

मुर्शिद बरहक़ ने मुरीद सादिक़ को इरफ़ाने हक़ व मुशाहिदात हक़ीक़त का ऐसा लतीफ़ एहसास और सलीम जज़्बा अता कर दिया कि आप मुशाहिदा ज़ात इलाहिया वदरक सिफ़ात लामुतानाहिया में महु व मुस्तग़रक

रहने लगे। २६१ हि० का सूरज अपने आठवें बुर्ज में क़दम रख चुका था चौदहवीं रात का चाँद अपने पहले मतला का उजाला जबीने कायनात पर बिखेर चुका था, दायी अजल ने सुल्तानुल आरफ़ीन के दरे ज़िन्दगी पर दस्तक दी और आलमे क़ुर्ब अक़रब में हुज़ूरी की दावत पेश की। आपने सुरूर व इन्बिसात के साथ दावत क़ुबूल फ़रमा ली और १ शाबानुल मुअज़्ज़म ८७५ हि० में इस दारे फ़ानी से आलमे बाला की तरफ़ कूच कर गये हातिफ़ ग़ैबी ने मज़दह सुनाया - तर्जुमा : ऐ नफ्स मुतमइन्ना ! अपने रब की तरफ़ लौट जा खुशी खुशी, मेरे बन्दों में शामिल हो जा, मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। ''इन्ना लिल्लाही वइन्ना इलैहि राजिऊन'' ।

हज बैतुल्लाह व दरे रसूल पर हाज़िरी :

मुर्शिद से जुदाई के बाद हज़रत ज़िन्दा शाह मदार क़ुद्दसा सिर्रहु अपने हासिल मुराद माबूदे हक़ीक़ी की याद से हरीम दिल को आबाद करने लगे और मख़्सूस मक़ाम पर ज़िक्र व दवाम में महू व मुस्तग़रक़ हो गये। आपने ऐसी गोशा नशीनी इख्तियार फ़रमााई कि दुनिया व माफ़ीहा के ख्याल से क़ल्ब पाक व मोअत्तर हो गया और बातिन साफ व मुसफ्फ़ा हो गया। तजल्लियाते रब्बानिया की हमराही और मुशाहिदात हक़ानिया की हमनवाई में एक तवील अरसा गुज़र गया एक रात वारफ्तगी शौक़ के आलम में थोड़ी देर के लिये आँखों के दरीचे बन्द हुए कि ख़्वाब में मुस्तफ़ा जाने आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शबीह मुबारक जलवा अफ़रोज़ हुई और एक शीरीं आवाज़ कानों में रसा घोलने लगी। ऐ बदीउद्दीन ! तेरी मुरादों के हुसूल का वक्त क़रीब आ गया है गुम्बदे ख़िज़रा के मकीन मुक़द्दस तेरे नाना जान सुनहरी जालियों से तेरी राह देख रहे हैं.... आँख खुली तो दिल की दुनिया में मसर्रतों का तूफ़ान बरपा था, वारफ्तगी शौक़, दीद एहसास, वजदान पे छाती चली गयी लेकिन खुर्द ने सरगोशी की कि ऐ शौक़ दीद मचल ऐ पाँव ठहर, ऐ दिल की तमन्ना खूब तड़प आपने रहवा शौक़ को ख़ानए काबा की तरफ़ मोड़

दिया, मौसमे हज शुरू हो चुका था फरीज़ए हज अदा किया। जब जमाले इलाही की तजल्लियों के फ़रूग़ से क़ल्ब दरूं कुन्दन हो गया तो दिले बेताब पर मदीना मुनव्वरह के ख़्याल व एहसासात छाते चले गये।.......वह सरज़मीन जिसका नाम सुनकर अहले ईमान की धड़कनें तेज़ हो जाती हैं वह नूरानी गलियाँ जिनमें जारूब कशी के लिये आँखें और पलकें आरज़ू मन्द रहती हैं। मस्जिदे नबवी के वह मुनक़्क़श व मुअत्तर सुतून जिन्हें तस्वीरों में देखकर ही एहसास व वजदान सजदा रू होने लगते हैं। वह गुम्बदे ख़िज़रा जिससे नूर की शुआएं फूट फूट कर सारी कायनात रौशन करती हैं। अब वहाँ की हुज़ूरी, रसाई और बारयाबी की धुन में पाए शौक़ व रफ्ता तन्दूर होता जा रहा है। जूँ जूँ मन्ज़िल मक़सूद क़रीब आ रही है दिल व दिमाग़ और रूह की तमाम हसयात पर अदब व एहतिराम का रंग ग़ालिब होता जा रहा है। मुक़द्दर की बारयाबी से दरे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पे हाज़िरी होती है। ये अल्लाह तआला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आस्ताना है। यहाँ ख़िलक़त का हुजूम रहता है। यहाँ तो शहनशाह भी गदा बनके आते हैं। ये मक़ाम तो फ़हम व इदराक की मन्ज़िल से भी बालातर है। यहाँ शर्मसारी के जलू में उम्मीदों का दिया जलता है। इज़्तिराब के पस परदह चैन व सुकून की हवा चलती है। वह इधर दायें हाथ को मिम्बर नबुव्वत है और वह रियाज़ुल्जन्ना। यहाँ क़दम क़दम पर क़ुदसी अनवार व रहमत की ख़ैरात लिये खड़े है। दिन या रात की किसी घड़ी में एक पल के लिये भी ये जगह खाली नहीं रहती है। दीवाने और मस्ताने यहाँ धूनी रमाये रहते हैं। बयकवक्त सत्तर हज़ार मालाएका दुरूद सलाम के नग़मों के साथ यहाँ चक्कर लगाते रहते हैं, अहले मुहब्बत का यहाँ हर दम हुजूम रहता है। अल्लाहू की बाज़गश्त फ़िज़ा को गरमाए रहती है, यहाँ का एक सजदा हज़ारों सजदों पर भारी रहता है।

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रजि० बारगाहे रिसाालत में बारयाब हैं, दिल की बेताबी को क़रार मिल रहा है, इज़्तिराबे शौक़ पर हुसूले तमन्ना की

उम्मीदों का ग़ल्बा हो रहा है। एहसासात पर सुकून की खुनकी छाई हुई है रात अपने आख़िरी मरहले में दाख़िल हो चुकी है। फ़ज्र सादिक़ अपने उजाले कायनात पर बिखेरने की तैयारी कर रहा है कि इसी असना में रहमत व नूर के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी नूरानियत के साथ आलमे मिसाल में ज़ाहिर होते हैं और अपने दिल बन्द बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार को अपने दामने रहमत व नूर में ढाँप लेते हैं। क़तरह समन्दर से मिलकर समन्दर होने जा रहा है, ज़र्रा आफ़ताब होने जा रहा है, मअन अमीर कबीर हज़रत अली करामुलल्लाहुल वजहुल करीम ज़ाहिर होते हैं बारगाहे रिसालत से हुक्म जारी होता है ऐ अली ! अपने नूरे नज़र लख्ते जिगर को रूहानियत की तरबियत देकर रजले कामिल बनाकर मेरे पास लाओ।

निस्बते उवैसिया से मुशर्रफ़ होना :

ताजदार अक़लीम विलायत ने अपने फ़रज़न्द को अपनी आग़ोश आतिफ़त में लेकर उसकी रूहानियत को सैकल कर दिया और क़ल्ब व रूह को मुतहमिल बारे विलायत उज़मा कर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया रसूले रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोबारा मशमूल अवातिफ़ फ़रमा कर हिजरए इनायत में इस्लाम हक़ीक़ी तलक़ीन फ़रमाया और अपने जमाले जहाँ आरा से अपने फ़रज़न्द के क़ल्ब व रूह को मुज़य्यन फ़रमाकर शर्फ़ उवैसियत से मुम्ताज़ फ़रमाई और हिन्दुस्तान जाने की ताकीद फ़रमा दी।

उवैसियत का मतलब :

उवैसियत क्या है? उसकी शान कितनी निराली है? उसके फ़हम व इदराक के लिये शाहे सिमनान हज़रत मख़्दूम अशरफ़ जहाँगीर समनान क़दस सिर्रहु अलमनान की बारगाह में थोड़ी देर की हाज़िरी देते हैं आप फ़रमाते हैं। तर्जुमा :

शेख़ फ़रीदउद्दीन अत्तार क़दस सिर्रहु बयान फ़रमाते हैं कि
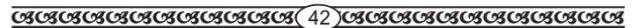
अल्लाह अज़्व जल के वलियों में से कुछ ऐसे हज़रात हैं जिन्हें बुज़ुर्गाने दीन और मशाएख़ तरीक़त उवैसी कहते हैं कि इन हज़रात को ज़ाहिर में किसी पीर की ज़रूरत नहीं होती क्यों कि हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हुजरए इनायत में बज़ाते खुद उनकी तरबियत व परवरिश फ़रमाते हैं इसमें किसी ग़ैर का कोई वास्ता नहीं होता जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उवैस क़रनी रज़ि० को तरबियत दी थी ये मक़ाम उवैसियत निहायत ही ऊँचा रौशन और अज़ीम मक़ाम है किसकी यहाँ तक रसाई होती है? ये दौलत कैसे मयस्सर होती? बमौजिब आयत करीमिया ये अल्लाह तआला का मख़्सूस फ़ज़ल है जिसे चाहता है अता फ़रमाता है और अल्लाह तआला अज़ीम फ़ज़ल वाला है।
मज़ीद फ़रमाते हैं कि : तर्जुमा -

हज़रत शेख बदीउद्दीन अलमुलक्कब शाह मदार क़दस सिर्रहु भी उवैसी हुए हैं निहायत ही बलन्द व आली मशरब वाले हैं बाज़ उलूम नवादिर जैसे हीमिया, कीमिया, सीमिया और रीमिया इनसे मुशाहिदे में आये जो इस जमाअते औलिया अल्लाह में नादिर ही किसी को हासिल होता है (लताएफ़ अशरफ़ी फ़ारसी स ३५४ मतबूआ नुसरतुल मुताबे देहली ऐसा ही मिरातुल इसरार के सफ़हा नम्बर १००७ पर दर्ज है) बहरेजरख़ार में है कि

तर्जुमा : शेख़ बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार दर हक़ीक़त अज़रूहे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व हज़रत अली मुर्तज़ा व इमाम मेहदी से तलक़ीन व तरबियत पाई उवैसी तरीक़े से (बहरेजरख़ार स ६७४ ज ३)

फ़ैज़ाने उवैसिया मदारिया का इजरा :

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० तआला अन्हु को बारगाहे क़ासिमी नेमात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो मख्सूस नेमते उवैसिया तफ़वीज़ की गई आपने उस फ़ैज़ान को सिर्फ़ अपनी ही ज़ात के लिये मुख्तस नहीं फ़रमाया बल्कि जोदो व सखा व करम व अता से काम लेते हुए आपने इस फ़ैज़ कमाल

को दूसरों में भी तक़सीम फ़रमाया चुनांचे आपके एक मुरीद ख़लीफ़ा हज़रत महमूद कन्तूरी रज़ि० ने एक मर्तबा अर्ज़ किया कि हुज़ूर अपना सिलसिला उवैसिया मुझे अता फ़रमाएं करीम इब्ने करीम ने नवाज़िश का दरया बहा दिया और इरशाद फ़रमाया।

अपना नाम लिखो फिर मेरा नाम रक़म करो और फिर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इस्मे गिरामी नक्श कर लो और सिलसिलए उवैसिया आलिया मदारिया से मुस्तफ़ीज़ हो जाओ।

बन्दह इश्क़ शुदी तर्क नसब कुन जानी
कि दरीं राह फलां इब्ने फलां चीज़े नेस्त

जमाल औलिया कोड़ा जहानाबादी और निस्बते उवैसिया मदारिया :

इकराम व नवाज़िश का सिलसिला यहीं पर ख़त्म नहीं हो जाता है बल्कि विसाल के बाद भी साहबाने ज़र्फ़ व क़ुलूब को आप शर्फ़ उवैसियत से नवाज़ते रहे हैं चुनांचे वक्त के वलीए कामिल सिलसिला बरकातिया रिज़विया के उनतीसवें इमाम शेख़ तरीक़त हज़रत मुहम्मद जमालउद्दीन उर्फ़ जमालुल औलिया रह० ने भी बिला वास्ता आप रज़ि० से फ़ैज़ उवैसिया हासिल फ़रमाया (तज़किरह मशाएख़ क़ादरिया रिज़विया स ३१० अब्दुल मुजतबा रिज़वी)

उवैसियत की तफ़सील जानने के बाद एक मर्तबा फिर दयार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में हज़िरी दीजिए और तारीख़ का पिछला औराक़ उलट कर देखिये। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० मुरादों की झोली भर चुके हैं मुक़द्दर की सरफ़राज़ी को कमाल मेराज हासिल हो चुका है शमाए शबिस्तान नबुव्वत से जिस्म व तन के साथ क़ल्ब व रूह भी रौशन हो चुका है। लेकिन शहरे नबी को छोड़कर हिन्दुस्तान जाने का इशारा मुतामन्नी वसल के ख़रमन व वसल पर हिज्र की बिजलियाँ कोन्दने के मुतारादिफ़ है। आशिक़े

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसके दिल में ये सदा गूँजी हो।

तेरी गली को छोड़ कर बाग़े जना में जाए कौन

दिल मुज़तरब मदीने से जुदाई की ख़बर सुनकर तड़प तड़प कर किस क़दर बेचैन हुआ होगा? अहले दिल ही उसे महसूस कर सकते हैं। लब ख़ामोश हैं, आँखें झुकी हैं, ज़ुबान कुछ कहना चाहती है लेकिल क़ुव्वते गोयाई पर पासे अदब की हुक्मरानी मुसल्लत है, एहसासे जुदाई में आँखों से अश्क उबलना चाहते हैं लेकिन पासे अदब में आँसू थमे हुए हैं।

लहू लहू है जिगर आँख तर नहीं होती

ये सोचकर फ़ुगां गले में आकर रुकी हुयी है, कि शायद हुज़ूर के नाज़ुक गोशे मुबारक ताब फ़ुग़ा में न उठा सकें जज़्बाए इश्क़ मदीने से जुदाई के क़तई तैयार नहीं है लेकिन अक़्ल सलीम कानों में सरगोशी करती है आने वाले को तो जाना ही होता है अल्लाहु अकबर । इतनी लम्बी ज़िन्दगी और इतना कम पड़ाव? दिल गिरफ़्तां होते हैं, शौक़ तसल्ली देता है, जनाबे आली ! आप घबराएं नहीं हर चीज़ अपनी असल की तरफ़ लौटती है, फिर दरे हुज़ूर पर हुज़ूरी का शर्फ़ मिलेगा, आप अलविदाई सलाम अर्ज़ करते हैं।

ऐ नूरी क़ुबा वाले अस्सलातो वस्सलाम....ऐ गुम्बदे ख़िज़रा के मकीं मुक़द्दस अस्सलातो वस्सलाम ऐ मदीने के ताजदार.....अस्सलातो वस्सलाम.....ऐ रहमते कायनात अस्सलातो वस्सलाम।

सफ़रे हिन्दुस्तान :

सरज़मीने हिन्द जिसके लाला ज़ारों और गुलिस्तानों से फूटी हुई ईमाने वफ़ा की ख़ुश्बू बारगाहे रिसालत में महसूस की जाती है और हरीमे नबुव्वत से अहले जहान को ये बशारत दी जाती है कि ''हिन्दुस्तान से ईमान व वफ़ा की ख़ुश्बू आ रही है''

मीर अरब को आई ठण्डी हवा जहाँ से

मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है (इक़बाल)

ईमानो वफ़ा की उस ख़ुश्बू से अहले हिन्द के दिलो दिमाग़ को मुअत्तर करने वाले का इन्तिख़ाब हो चुका है कुफ़्र व ज़लालत के अन्धेरे में ईमान व हिदायत की तजल्लियाँ बाँटने के लिये हादी आलिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नूरे नज़र को मज़हरे सिराज मुनीर बनाकर हिन्दुस्तान रवाना हो जाने का हुक्म सादिर फ़रमाया है। मुबल्लिग़ को तब्लीग़ी सलाहियतों से मुसल्लह कर दिया गया है, हज़रत क़ुतुबुल मदार रज़ि० अन्हु बानी इस्लाम के नक़ीब बनकर आज़िम हिन्द हो रहे हैं, समन्दरी सफ़र दरपेश है, हिन्दुस्तान आने वाला जहाज़ साहिल हिन्द पर तैयार खड़ा है, कूच का नक़्क़ारह बजने वाला है लोग अपने अपने ज़ादे सफ़र के साथ अपनी अपनी नशिस्तगाहों पर बैठे हुए हैं नाखुदा बार बार साहिल की तरफ़ नज़रें डाल रहा है कि कहीं हिन्द का कोई मुसाफ़िर छूट न जाए, हज़रत क़ुतुबुल मदार ऐन वक्त पर वहाँ पहुँचते हैं और मुसाफ़िरों की फ़ेहरिस्त में एक फ़र्द का मज़ीद इज़ाफ़ा कर लिया जाता है मल्लाह लन्गर उठाता है और जहाज़ मन्ज़िल की तरफ़ रवां दवां हो जाता है। ऐन वुसअते समन्दर में तौहीद का मुबल्लिग़ एलाए कलिमतुल हक़ के लिये लोगों के दरम्यान खड़ा होता है और तौहीद व रिसालत का पैग़ाम सुनाता है....ऐ लोगों ! इबादत के लायक़ तो सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह पाक है, वह एक है उसकी ज़ातो सिफ़ात में कोई भी उसका शरीक व साझी नहीं। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

जब ये सदाए तौहीद अहले जहाज़ के कानों में पहुँची तो शक़ावत क़ल्बी के तहत उन्होंने क़ुबूले दावते हक़ से इन्कार कर दिया उनके वीरान दिल और मुर्दा रूहें अनवारे इस्लाम से मामूर न हो सकीं। ग़ज़ब इलाही जोश में आया और जहाज़ तूफ़ान की ज़द में आकर ग़र्क़ आब हो गया। आपके अलावा जहाज़ के सभी मुसाफ़िर समन्दरी मौजों में दफ़न हो गए। मशीअते ख़ुदावन्दी से ग़र्क़आब व शिकस्ता जहाज़ का एक तख़्ता नमूदार हुआ और

अल्लाह की ताईद व हिफ़ाज़त में उस तख्ते के सहारे आप समन्दर में पैरने लगे , उसी हाल में कुछ अय्याम गुज़रे, भूक व प्यास से निढाल हो चुके थे, जिस्म मुबारक का पीराहन ज़ौलीदा हो गया था आपने बारगाहे इलाही में दिल से ये दुआ माँगी ''इलाही मुरा गुर नि संगी न शवद लिबास मन कुना न गर दद (ऐ अल्लाह ! जल्ले शानहु ऐसा कर दे कि मुझे भूक न लगे और मेरा लिबास मैला व पुराना न हो) (दरुल मआरिफ़ स 147)

दुआ बाबे इजाबत तक पहुँचती है, क़ुबूलियत अपने आग़ोश में ले लेती है, सूबा ए गुजरात के बन्दरगाह खम्बात के साहिल पर उतरते हैं, बारगाहे बेनियाज़ में जबीन नियाज़ रख कर सजदा शुक्रिया अदा करते हैं।

मक़ाम सम्दियत पर फ़ाएज़ होना :

आपने सर सजदे से उठाया तो कानों से एक आवाज़ टकराई सैय्यद बदीउद्दीन ! इधर आइये आपका इन्तिज़ार हो रहा है आपने चारों तरफ़ देखा कोई मुनादी नज़र नहीं आया मअन वही सदा दुबारा कानों से टकराई, कोई नज़र नहीं आया, तीसरी मरतबा सदा बुलन्द हुई, आपने इरशाद फ़रमाया इस वीराने में कौन है जो मेरे नाम से वाक़िफ़ है ? मलाएक अन्सरी का सरदार सतख़ीशा एक हसीन पैकर में ज़ाहिर हुआ और एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत ख़िज़्र अला नबीयना वअलैहिस्सलाम रूनुमा हुए और फ़रमाया साहबज़ादे ! आलमे अलवी व सिफली में आपके नाम का एलान कर दिया गया है, सभी आपको जानते हैं, आप मेरे साथ आइये आप उनके साथ एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए, देखते हैं कि निहायत ही ख़ूबसूरत और आलीशान मकान है मकान में सात दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े पर एक पैकर जमील निगहबानी के लिये मुक़र्रर है हवेली के अन्दर अज़ीमुश्शान ज़रनिगार तख्त बिछा हुआ है, ताजदारे कायनात फ़ख़रे मौजूदात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मय असहाब किबार जलवा अफ़रोज़ हैं हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के साथ हुज़ूरी में बारयाबी का शर्फ़ मिलता है रहमते आलम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम बकमाल आतिफ़त आग़ोश शफ़क़त में बिठाते हैं एक जवान ख्वान नेमत में तआम मलकूती और हला बहिश्ती लेकर हाज़िर होता है, क़ासिम नेमात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दस्ते मुबारक से नौ लुक़मे मदार पाक को खिलाते हैं जिसके सबब तमाम तबक़ात अरज़ी व समावी आप पर रौशन हो जाते हैं। इरशाद होता है कि अब तुम्हें खाने पीने की ज़रूरत नहीं होगी। मक़ाम सम्दियत से सरफ़राज़ कर दिये गये, जन्नती लिबास पहनाकर बशारत दी कि अब कभी न ये मैला होगा और न पुराना व फटने, धोने और साफ़ करने की हाजत दरपेश न होगी।

रुख़ रौशन ताबनाक हो गया :

नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप के चेहरे पर अपना नूरानी हाथ फेर दिया जिसके सबब रूए मुबारक इतना रौशन और ताबनाक हो गया कि देखने वाले ताब नज़ारा नहीं ला पाते, रुखे रौशन की तजल्लियां देखकर बेइख्तियार सज्दारेज़ हो जाते, ख़ुदाए तआला की याद आती और महज़ हसीन सूरत देखकर ही कलिमा पढ़ लेते, पुकार उठते जब इस महबूब के जमाल का ये आलम है तो ख़ालिक़े हुस्न व जमाल का आलम क्या होगा तिबरानी और इब्ने माजा में इस्मा बिन्त यज़ीद से रिवायत है रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया -

तर्जुमा : क्या मैं तुम्हें ख़बर न दूं तुम में से बेहतर लोगों के बारे में ? सहाबा ने अर्ज़ किया हाँ या रसूल अल्लाह इरशाद फ़रमाएं आपने फ़रमाया तुम में सबसे बेहतर वह लोग हैं जिन्हें देखकर अल्लाह की याद आ जाए।

हज़रत क़ुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार इस हदीस के सच्चे समरूप थे। साहबे तबक़ात शाहजहानी रक़म फ़रमाते हैं।

तर्जुमा : जो कोई आप (ज़िन्दा शाह मदार) को देखता बे इख्तियार सजदे में चला जाता उन अनवारुल इलाहिया के सबब जो आपकी पेशानी में ताबां थे।

दाराशिकोह क़ादरी बिरादर औरन्गज़ेब आलमगीर तहरीर फ़रमाते हैं कि ''हज़रत ज़िन्दा शाह मदार का दरजा और मरतबा बहुत बुलन्द है जिसको बयान नहीं किया जा सकता है कहते हैं कि बारह साल तक आपने कुछ नहीं खाया जो कपड़ा एक मरतबा पहन लेते फिर उसे दोबारा धोने की ज़रूरत पेश न आती हमेशा पाक और साफ़ रहते'' शेख़ अब्दुल हक़ देहल्वी ने लिखा है कि आप सम्दियत पर फ़ाइज़ थे ये सालिकों का मक़ाम है और हक़ तआला ने आपको वह हुस्न व जमाल अता फ़रमाया था कि जो आपको देखता सजदे में गिर जाता इस लिये हमेशा चेहरे पर नक़ाब डाले रहते थे। (सफ़ीनतुल औलिया स २३६ शहज़ादा दाराशिकोह क़ादरी तर्जुमा मुहम्मद अली लतफ़ी)

साहबे तज़किरातुल किराम आपकी सूरत व सीरत का नक्शा इस अन्दाज़ में खींचते हैं ''हज़रत बदीउद्दीन शाह मदार मुरीद शेख़ तैफ़ूर बस्तामी के थे, कहते हैं कि वह बज़ाहिर कुछ नहीं खाते थे और उनका कपड़ा भी कभी मैला नहीं होता था और न उस पर मक्खी बैठती थी और उनके चेहरे पर हमेशा नक़ाब पड़ा रहता था निहायत हसीन व जमील थे चारो कुतुब आसमानी किताबों के आलिम व हाफ़िज़ थे कहते हैं कि आपकी उमर चार सौ बरस से ज़्यादा थी वल्लाह आलम और तमाम दुनिया का सफ़र उन्होंने किया था और वह अपने वक्त के कुतुबुल मदार थे इसलिये लोग शाह मदार कहते हैं।''

(तज़किरातुल किराम तारीख़ खुल्फ़ाए अरब इस्लाम स २६३ मौलाना सैय्यद शाह मुहम्मद कबीर अबुल उला)

वाज़ेह हो कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन शाह मदार कुद्दसा सिर्रहु को हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से जन्नति खाना खिला कर खाने पीने की ज़रूरत से बेनियाज़ फ़रमा दिया था, हज़रत सैय्यदना सैय्यद मख़्दूम अशरफ़ जहांगीर समनानी कुद्दसा सिर्रहुस्सामी ने आपकी हमराही में रहकर पूरे बारह साल तक खाने पीने से बेनियाज़ देखा इसलिये बारह साल तक खुर्दनोश न करने की रिवायत फ़रमाई और इसी पर

एतिमाद करते हुए बाद के लोगों ने और शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहल्वी ने भी बारह साल तक न खाने पीने की रिवायत कर दी वरना दरहक़ीक़त ये है कि जन्नति खाना खाने के बाद आप पूरी उमर यानी तक़रीबन ५५६ साल तक खाने पीने से बेनियाज़ रहे गोया आपने अपने क़ौल ''अद्दुनिया लियौमे वा अना फ़ीहा सौम'' के मुताबिक़ ज़िन्दगी का रोज़ा रख लिया।

हज़रत शाह ग़ुलाम अली नक्शबन्दी रज़ि० अपने मल्फ़ूज़ात में इस तरह इशारह फ़रमाते हैं। हज़रत कुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० को जब बारगाहे रिसालत से बतरीक़ उवैसियत सारी नेमतें मिल गयीं, मक़ाम सम्दियत हासिल कर लिया रुखें रौशन ताबनाक व मुनव्वर हो गया, तो आपने पूरी ज़िन्दगी तब्लीग़ व इरशाद और हुज़ूरी हक़ और मुशाहिदात व सिफ़ात में गुज़ार दी अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी बीस साल जौनपुर और उसके नवाह में गुज़ारी और फिर बाशारहे रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मकनपुर शरीफ़ में नुज़ूल इजलाल फ़रमाया और ८३८ हिजरी बरोज़ दोशम्बा १७ जमादिल अव्वल सुबह सादिक़ के वक्त ५९६ साल की उमर में इस जहाने फ़ानी से परदा फ़रमा गए। इन्ना लिल्लाही वइन्ना इलैही राजिऊन। आपका तसर्रुफ़ हयात व ममात में यकसां है। बहरेज़ख़ार में है तसर्रफ़ुल विलायत व दरहयात व ममात यकसां ख्वाहिद बूद। (बहरज़ख़ार स ६८०)

तारीख़ पैदाइश और विसाल में इख़्तिलाफ़ :

आपकी तारीख़ पैदाइश और विसाल से मुताल्लिक़ सीरत निगारों ने बड़ा इख़्तिलाफ़ लिख दिया है मौजूदा मिर्रते मदारी में विलादत की तारीख़ ७१८ हि० और तारीख़ विसाल १७ जमादिल अवला ८४० हि० मरकूम है और कुल उमर शरीफ़ १२५ साल तहरीर है।

फ़ख़रुल वासलीन के मुअल्लिफ़ ने साल विलादत ७१६ हि० और साल विसाल ८४० हि० तहरीर किया है। इस तरह कुल उमर मुबारक एक सौ चौबीस साल की होती है किसी ने माह आलम ताब से सन विलादत ५६०

हि० निकाली तो किसी ने शाह कौनेन से ४४२ हि० को सन विलादत क़रार दिया है किसी ने साल पैदाइश ३०० हि० बताया है तो किसी ने २५० हि० में तसलीम किया है बाज़ ने माह कौनेन से १८२ हि० का इस्तख़राज किया है लेकिन सच्चाई और हक़ीक़त ये है कि कुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार की विलादत का साल २४२ है और यही सही है। दलाईला और शवाहिद इसी की ताईद करते हैं। जम्हूर अहले सैर के नज़दीक यही सही और मोतबर है। मशाएख़ मकनपुर के नज़दीक यही मुस्तनद है। वैसे आप की सने विलादत में इख़्तिलाफ़ किया गया है लेकिन इख़्तिलाफ़ करने वालों के दावे बग़ैर दलील के हैं और हक़ व हक़ीक़त से बईद हैं और बग़ैर दलील हक़ाएक़ को न तो छिपाया जा सकता है और न ही मिटाया जा सकता है। बुज़ुर्गाने दीन की पैदाइश व विसाल की तारीख़ों में इख़्तिलाफ़ कोई नई बात नहीं है, इख़्तिलाफ़ तो इस उम्मत की फ़ितरत में है और इस के लिये रहमत भी, जब कायनात की सबसे अज़ीम व मोहतरम और मारूफ़ मशहूर हस्ती सरवरे कायनात फ़ख़रे मौजूदात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मीलाद व विसाल की तारीख़ों में अस्हाबे सैर व तवारीख़ ने इख़्तिलाफ़ किया है तो दूसरों का क्या कहना। लेकिन आम्मतुल मुस्लिमीन और जम्हूर का जिस पर इत्तेफ़ाक़ हो गया वही मोतबर व मुस्तनद है और उसी पर फ़तवा जारी होगा। चुनांचे हादी आज़म शहनशाहे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीख़ विलादत के बारे में मुताअद्दिद अक़्वाल मिलते हैं। (१) १२ रबीउल अव्वल, तिबरी इब्न ख़ल्दून व इब्ने हश्शाम वग़ैरह ने इसी पर जज़्म किया है (२) इब्ने जौज़ी विलायत बा सआदत की तारीख़ के सिलसिले में तीन मुख़्तलिफ़ अक़्वाल नक़ल किये हैं (अ) १२ रबीउल अव्वल (हज़रत इब्ने अब्बास) (ब) ८ रबीउल अव्वल (हज़रत अकरमा) (स) ३ रबीउल अव्वल (हज़रत अता) रज़ि० तआला अन्हुम अजमईन (बयान मीलाद) (३) बाज़ लोगों ने २२ रबीउल अव्वल तहरीर किया है। हज़रत ग़ौसे आज़म जीलानी रज़ि० तआला अन्हु का फ़रमान है बाज़ ने आप की विलादत

यौमे आशूरा को लिखा है। (ग़नीतुल तालबीन स ४५७) लेकिन आम्मतुल मुस्लिमीन का मानना है कि १२ रबीउल अव्वल ही मीलादुन्नबी का दिन है। आलमे इस्लाम में १२ रबीउल अव्वल ही को मुत्तफ़क़ा तौर से ईद मीलादुन्नबी मनाई जाती है, इसी तरह सन विलादत में भी इख़्तिलाफ़ है बाज़ ने ५७० ई० लिखा है बाज़ के नज़दीक ५७१ है। इसी तरह तारीख़ विसाल में भी इख़्तिलाफ़ करने वालों ने इख़्तिलाफ़ किया है, शिबली नोमानी ने सीरतुन्नबी में लिखा है कि हुज़ूर की वफ़ात यकुम रबीउल अव्वल है। नूर बख़्श तवक्कली ने वफ़ाउल वफ़ा के हवाले से लिखा है कि मशहूर मुहद्दिस हाफ़िज़ इब्ने हजर के नज़दीक हुज़ूर का यौमे वफ़ात २ रबीउल अव्वल है। इदरीस कान्धवी ने सीरतुल मुस्तफ़ा जिल्द दोम स ३३२ पर लिखा है कि अल्लामा सुहेली ने रौज़ुल आनिफ़ और हाफ़िज़ अस्क़लानी ने फ़ताहुल बारी में २ रबीउल अव्वल को तारीख़ वफ़ात मरहज क़रार दिया है। बई हमा इख़्तिलाफ़ १२ रबीउल अव्वल ही पर जम्हूर मुसलमानों का इत्तेफ़ाक़ हो गया।

सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा व ताबईन की तारीख़ विलादत व विसाल में भी इख़्तिलाफ़ है। मौलाए कायनात हज़रत अली करामुल्लाहु वजहु की सन विसाल ३० हि० या ४० हि० दर्ज की गई है। हज़रत सलमान फ़ारसी की उमर में बड़ा इख़्तिलाफ़ है किसी ने पाँच सौ बरस, किसी ने हज़ार बरस, किसी ने तीन सौ पचास साल तो किसी ने दो सौ पचास साल तहरीर किया है। बाज़ के नज़दीक एक सौ पचाल साल भी लिखा है। हज़रत अनस बिन मालिक की वफ़ात ६२ हि० या ६३ हि० या ८६ हि० है, हज़रत अबु तुफ़ैल आमिर बिन वासला की १०० हि० या ११० हि० है, हज़रत सईब बिन यज़ीद की ८० हि० या ८२ हि० या ६१ हि० है (रजि० अन्हुम अजमईन)

हज़रत इमाम आज़म अबु हनीफ़ा रज़ि० की विलादत ७० हि० या ८० हि० है (नुज़हतुल क़ारी ज १ स ११४ ११५ मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी)

इसी तरह विसाल की तारीख़ में बाज़ ने १४ रजब और बाज़ ने ४ शाबान १५० हि० लिखा है। (मसालिकुल सालकीन स २४७)

हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ की सन रहलत ६ रजब ६३२ हि० या ६३३ हि० और उनके पीर व मुर्शिद हज़रत ख्वाजा उस्मान हारूनी की रहलत ६ शव्वाल ६०३ हि० या ६१७ हि० है। हज़रत ग़ौस पाक अब्दुल क़ादिर जीलानी की रहलत ९ या १४ या ११ रबीउस्सानी ५६१ हि० दर्ज है। रजि० अन्हुम अजमईन। अलग़र्ज़ अम्बियाए किराम व औलियाए एज़ाम की विलादत व विसाल की तारीख़ों में इख्तिलाफ़ कोई अम्र मुहाल नहीं। नमाज़ रोज़ा हज व ज़कात में अइम्मा ए दीन का इख्तिलाफ़ इस क़दर शदीद है कि बाक़ाएदा तौर से इस्लाम चार मसलकों में बँटा हुआ है। इन इख्तिलाफ़ात की वजह से अम्बिया व मुरसलीन, सहाबा व ताबईन और औलिया व स्वालेहीन की सीरत व सवानेह का इन्कार नहीं किया जा सकता और न ही इस इख्तिलाफ़ से नमाज़, रोज़े की हक़ीक़त व हक़्क़ानियत की नफ़ी की जाएगी। जब से हज़रते इन्सान का वजूद क़ाएम है इख्तिलाफ़ उसकी फ़ितरत को वदीअत कर दिया गया है। इख्तिलाफ़ जब तक तलाशे हक़ीक़त का मस्दर और ईज़ाह मतालिब का मरजा होता है ये उम्मत के लिये रहमत है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है इख्तिलाफ़े उम्मती रहमा : मेरी उम्मत का इख्तिलाफ़ करना उसके लिये रहमत है। लेकिन इख्तिलाफ़ अगर ग़ुरूर व तकब्बुर से दूसरे की हक़ बात को इन्कार करने के लिये किया जाए और उसका मक़सद सिर्फ़ मुजादला व मुआवदा हो तो यही इख्तिलाफ़ क़ौमों के लिये ज़हमत बन जाता है। वल्अयाज़ बिल्लाह

अल्ग़र्ज़ हक़ हक़ीक़त से नावाक़फ़ी की बुनियाद पर अगर किसी आलिमे दीन ने हज़रत क़ुतुबुल मदार सैय्यदना सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० की उमर मुबारक और सन विलादत में इख्तिलाफ़ किया है तो उस से हज़रत की ज़ाते बाबरकत वलअस्फ़ात की अज़मत व रफ़अत पर कोई

असर नहीं पड़ता है न किसी के घटाने से आपकी उमर मुबारक घट सकती है और न ही किसी के बढ़ाने से बढ़ सकती है। ये हक़ीक़त है कि सरकार मदार पाक एक तवीलुल उमर बुज़ुर्ग हैं और कुछ बुज़ुर्गों के तवीलुल उमर होने की ख़ास वजह है वह यह है कि अल्लाह के हबीब सादिक़ व मसदूक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमाने आलीशान है अलउल्मा वरससतुल अम्बिया व उल्मा उम्मती का नबीयाए इसराईल ज़ाहिर सी बात है कि अम्बियाए साबक़ीन में अल्लाह पाक की अता करदा जहाँ और सिफ़ात थीं वहीं कुछ की उमरें तवील हुयीं अब उम्मते मुहम्मदिया अला साहबहाअस्सलातु वस्सलाम के औलिया में से चन्द को तवील उमरी के वस्फ़ से भी मौसूफ़ होना चाहिए ताकि सादिक़ व मसदूक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान बहर सूरत हर ज़ाविया से सादिक़ हो इसी वजह से बाज़ औलिया अल्लाह की उमरें काफ़ी तवील हुयीं। सरकार क़ुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रजि० की सन विलादत शरीफ़ लिखने में इख्तिलाफ़ करने वालों ने इख्तिलाफ़ किया है किसी ने सरकार मदार पाक की तारीख़ विलादत माह कौनेन से १८२ हि० निकाली है, किसी ने लफ़्ज़ मुनीर से ३०० हि० तो किसी ने शाह कौनेन से ४४२ हि० निकाली है और अकसर असहाब सेर ने साहबे आलम २४२ हि० से इस्तखराज किया है और इसी को सन विलादत क़रार दिया है। शवाहिद व क़राइन इस पर दाल हैं कि २४२ हि० ही आपकी सन विलादत सही व दुरुस्त और क़ाबिले एतबार है और इसी पर अकसर का इत्तेफ़ाक़ है।

असल हक़ीक़त ये है कि हज़रत सैय्यदना सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० अन्हु यकुम शव्वाल बरोज़ शम्बा २४२ हि० में क़ाज़ी कदवतुद्दीन अली हलबी के घर पैदा हुए, आग़ोश वालिदैन में तरबियत पाकर चार साल चार महीने चार दिन की उमर में मकतब में दाख़िला लिया और चौदह साल की उमर में ही उलूम अक़लिया व नक़लिया से फ़राग़त पाई, जब आपकी उमर शरीफ़ १६ साल की हुई तो बैतुल मक़दिस के सेहन में २५९ हि० हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी क़ुद्दसा सिर्रहु सामी के हाथ पर

बैत हुए और कुछ अरसे तक मुर्शिद बर हक़ में रह कर इरफ़ान की नेमतों से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद हुए और सुलूक की मन्ज़िलें तय करके ख़िलाफ़त व जानशीनी के अज़ीम मन्सब पर सरफ़राज़ किये गये, अकसर अहले सैर का क़ौल है कि सुलतानुल आरफ़ीन ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी का विसाल २६१ हि० में हुआ ७१६ हि० को हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार रज़ि० की सन विलादत तसलीम कर लेना सरासर धोका है, फ़रेब और ग़लत व बातिल है इसलिये कि सरकार मदार पाक की हुज़ूर ग़ौस पाक से मुलाक़ात बदलाइल कसीरह साबित है तो ७१६ हि० को सन विलादत मानना क्या मानी रखता है।

ये तो हक़ गोई, हक़ बीनी व हक़ अन्देशी से मुँह चुराना है और अक्ल व फ़िक्र को मुँह चिढ़ाना है जनाब अक़दस शहनशाह मदार जहाँ की लक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म जीलानी से साबित होने की वजह से उन लोगों की बात भी बिल्कुल रह हो जाती है जिन्होंने हज़रत क़ुतुबुल मदार क़ुद्दसा सिर्रह की सन विलादत माह अलम ताब से ५६० हि० निकाली है इसलिये कि ४७० हि० से ५६१ हि० के दरम्यान जब इन दो बुज़ुर्गों की लक़ा साबित है तो ७१६ हि० और ५६० हि० में विलादत तसलीम करना बिल्कुल बातिल और ग़लत है। गुलिस्तान मसऊदिया की इस इबारत से भी ५६० हि० और ७१६ हि० को सन विलादत मानने की रद होती है। चुनांचे शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती साहब मरातुल इसरार मे रक़म फ़रमाते हैं" हज़रत क़ुतुबुद्दीन बख्तियार काकी रह० ने अपने रिसाले क़ुतुबिया में तहरीर फ़रमाया है कि जब मेरे पीर व मुर्शिद मक्का मुअज़्ज़मा से हिन्दुस्तान आकर अजमेर शरीफ़ मुक़ीम हुए तब जाकर काफ़िरों पर फ़तेह नसीब हुई। हज़रत सैय्यद असलम ग़ाज़ी, हज़रत सैय्यद अकरम ग़ाज़ी, हज़रत सैय्यद सूफ़ी ग़ाज़ी, हज़रत सैय्यद मलिक ग़ौस ग़ाज़ी, हज़रत सैय्यद मुहामिद ग़ाज़ी यही पाँचों पीर हज़रत ख्वाजा मुईनउद्दीन हसन चिश्ती की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह० अलैह और उनके ऊफ़का शहीदाने इज़ाम

के मज़ारात की ज़ियारत के ख्वास्तगार हुए इन पाँचों पीर को हज़रत ख्वाजा मुईनउद्दीन हसन चिश्ती ने एक हफ्ता महमान रखा, आठवें दिन ख़िरक़ा ख़िलाफ़त अता करके हुक्म दिया कि आप लोग अब बहराईच शरीफ़ चले जाएं। अलग़र्ज़ पाँचों पीर हज़रत बख्तियार काकी की मईयत में बहराईच शरीफ़ पहुँच गए.....(चन्द दिन बाद) इसी अस्ना में क़ुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार से शर्फ़ मुलाक़ात हासिल हुआ। ज़िन्दा शाह मदार ने पाँचों पीरों को देखते ही फ़रमाया बहुत दिनों बाद सिद्दीक़ीन की ख़ुशबू दिमाग़ में पहुँची है। चन्द दिनों पाँचों पीर ख़िदमते अक़दस में रहकर राहे सुलूक के मदारिज करते रहे। ख़िरक़ा ख़िलाफ़त हासिल करने के बाद क़दम बोस हुए हुक्म के मुताबिक़ मक़ामात मुक़द्दसा की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये। (ज़ियारत हरमैन तैय्यबैन के लिय ६१५ हि० में गए) (मुतर्जिम गुलिस्तान मसऊदी मौअल्लफ़ा अब्दुर्रहमान चिश्ती अलवी स १३-१६)

इस वाक़िये से ज़ाहिर है कि ६१५ हि० से पहले हज़रत क़ुतुबुल मदार बहराईच शरीफ़ में मौजूद थे लिहाज़ा ५६० हि० और ७१६ हि० को आपकी सन विलादत मानना बईद अज़ क़यास है।

५६० हि० या ४४२ हि० जो लोग आपकी सन विलादत मानते हैं उनकी तरदीद करामात मसऊदिया की रिवायत से भी हो जाती है।

सैय्यदना सिकन्दर दीवाना फ़रमाते हैं कि मैं सुल्तान महमूद ग़ज़नवी की बदौलत उम्दह नफ़ीस कपड़े पहनता रहा जब ४०१ हि० में सुल्तान सैय्यद सालार साहू को जोकि मेरे हक़ीक़ी नाना हैं एक ज़बरदस्त फ़ौज के साथ कन्धार से मुज़फ्फ़र ख़ान की इम्दाद के लिये अजमेर भेज दिया तो उस वक्त मुज़फ्फ़र ख़ाँ रायभीरों, राय सोम कृपा, राय सिंह भेर, राय सोकन, राय महेन्द्र, राय माखन, राय जगन वग़ैरह उन्तालीस राजाओं के नगरो में महसूर था। मैं उस वक्त ख़ास सुल्तान का अरदली था और नानाए मुअज़्ज़म हज़रत सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी मुझसे बेहद मुहब्बत फ़रमाते थे, मुझे उनकी जुदाई,

हरगिज़ गवारा न हुई, घर का इन्तिज़ाम ज़हीर फ़रज़ाना को ग्यारह साल की उमर में सुपुर्द करके और सुल्तान महमूद ग़ज़नवी से इजाज़त लेकर हज़रत सैय्यद सालार साहो ग़ाज़ी के साथ ठठ के रास्ते अजमेर पहुँचा, रास्ते में हज़रत कुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार से मुलाक़ात हुई जैसे ही उनकी नज़र सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी पर पड़ी फ़ौरन कहा सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी के बाप इधर आओ, मैं यह सुनकर मुताज्जुब हुआ कि ये ज़िन्दा शाह मदार क्या फ़रमा रहे हैं मगर सैय्यद सालार साहू को उसकी आरज़ू ज़रूर है। ग़र्ज़ यह कि हज़रत सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी उस मक़ाम से आगे बढ़े और सब राजाओं को शिकस्त देकर काफ़िरों से मुसलमानों को निजात दिलाई, चन्द और सूबा जात फ़तेह करके सुल्तानी हुकूमत में शामिल किया जब ज़रा इत्मीनान हुआ तो नानी मुअज़्ज़मा मख़्दूमा हज़रत सतर मुअल्ला को ग़ज़नी से हिन्दुस्तान बुलवाया, कुदरते खुदा से ४०५ हि० में सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी के एक फ़रज़न्द आफ़ताब की तरह रौशन पैदा हुए उसका नाम मसऊद रखा गया, मुफ़स्सिल हाल तवारीख़ महमूदी में दर्ज है मेरा एतिक़ाद हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के साथ मज़बूत हो गया और इरादा किया कि उनके साथ चल कर फ़क़ीरी इख्तियार करूँ। एक दिन हज़रत सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी ने कुछ तहाएफ़ देकर मुझे हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के पास भेजा कहा कि तुम आगे चलो मैं आता हूँ, मैं तो खुदा से यही चाहता था, फ़ौरन तोहफ़े लेकर हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के पास हाज़िर हुआ और उनके सामने जाकर तहाएफ़ को पेश कर दिया और क़दम चूमे और मैंने दस्तबसता अर्ज़ किया कि हज़रत मुझे अपने सिलसिले में दाख़िल कर लीजिये, हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने कहा कि तुम उम्दा उम्दा लिबास पहने हो ऐशो इशरत में ज़िन्दगी बसर कर रहे हो, फ़क़ीरी में ये आराम कहाँ, मैंने सुनकर अपने सब कपड़े फ़ाड़ डाले, सतर छिपाने के लिये एक तहबन्द रख लिया और सिलसिलए आलिया मदारिया में दाख़िल हो गया, एक रोज़ बाद हज़रत सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी

अपने फ़रज़न्द को लेकर हाज़िर हुए और ज़िन्दा शाह मदार के सामने पेश किया मसऊद की आँखें जैसे ही हज़रत जिन्दा शाह मदार पर पड़ी सलाम के लिये हाथ उठाया जिन्दा शाह मदार ने ख़ैरियत पूछी आपने दायें बायें गर्दन हिलाई, हज़रत सालार साहू ने आपको ज़िन्दा शाह मदार के क़दमों पर डालना चाहा तो आपने ज़ोर शोर से रोना शुरु किया और मुँह आसमान की जानिब बुलन्द किया, हर चन्द हज़रत सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी गर्दन उनकी फेरना चाहते मगर बेसूद रोना उनका कम नहीं होता था, आख़िर हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने उठ कर गोद में ले लिया हाथ पैरों को चूमा पेशानी पर बोसा दिया उस वक्त मसऊद चुप हुए। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने मसऊद को मेरी गोद में दिया और ये कहा कि आज से तू हमेशा इसके साथ रहा कर मुसाहबत से तुझे शहादत का रुतबा मिलेगा और मैं आज तुम्हें सिलसिलए आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से भी नवाज़ रहा हूँ मैं ने हज़रत ज़िन्दा शाह मदार से दरयाफ्त किया कि हज़रत ये क्या मामला है कि छै महीने के बच्चे ने आपको सलाम किया आपकी ख़ैरियत के सवाल पर उसने इन्कार किया फिर आपके क़दमबोस करना चाहा तो मुँह फेर लिया और रोना शुरु किया अब आपने गोद में लेकर चूमना शुरु किया उस वक्त खुद चुप हो गया ये सब क्या किस्सा है? हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने आहिस्ता से मेरे कान में कहा इसको बच्चा न समझ ये मादरज़ात वली है। जब बालिग़ होगा कुफ़्र व शिर्क का निशान मिटाएगा बुतों के नाक कान हाथ पैर काट कर बुत परस्तों को जहन्नम में दाख़िल कराएगा पहले जो सलाम किया था उसका सबब यह था कि हज़रत अली मुरतज़ा रज़ि० तआला अन्हु जिसको देखते पहले सलाम करते, आपकी औलाद की भी यही आदत है। सालार मसऊद ग़ाज़ी भी औलादे अली से हैं लिहाज़ा उनको मीरासे दादा की कमसिनी में मिली है। ख़ैरियत पूछने पर सर हिलाने का मतलब यह था कि इस्लाम की ख़ैरियत अपनी ख़ैरियत पर मुक़द्दम है चाहते हैं कि जब काफ़िरों को मुसलमान करें और जो शख्स कलिमा तैय्यबा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह न पढ़े

उसको तलवार से मौत के घाट उतारूँ, हर हर गाँव में हिन्दुस्तान के गोशे गोशे में इस्लाम का डंका बजाऊँ और मस्जिदें तामीर कराऊँ उस वक्त अलबत्ता ख़ैरियत है वरना ख़ैरियत कहाँ? और रोने मुँह फेरने का मतलब यह है कि यह लड़का पैदाइशी वली है जब उन्नीस साल की उमर होगी उस वक्त, शहीद होगा, शहीद का दर्जा आम वलियों से बड़ा है, इसके चुप हो जाने का बाइस यह था कि उसके हाथ पैरों से बहुत नेक काम अन्जाम पायेंगे और जब मैंने उन जगहों को चूमा तो एक क़िस्म की ख़न्की और मसर्रत उसका महसूस हुई ऐ असलम मैंने ये बातें जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार से सुनीं उस वक्त से मैं हज़रत सैय्यद सालार मसऊदी ग़ाज़ी की सूरत का हज़ार जान से इश्क़ हो गया यहाँ तक कि शहादत के वक्त भी एक लम्हा जुदा नहीं हुआ उनकी मर्ज़ी अपनी ख्वाहिश पर मुक़द्दम रखी।

(करामाते मसऊदिया मुतर्जम स ३२५ ता २८)

नोट : ये किताब बज़ुबान अरबी मौलाना मुहम्मद मलीह अवधी की तसनीफ़ है मौलाना मुहम्मद मसीह अवधी ने बज़ुबान फ़ारसी इसका तर्जुमा किया और मौलाना इलाही बख़्श नक्शबन्दी ने उर्दू तर्जमा किया तिब्बे अव्वल क़ौमी किताब लखनऊ १२६६ हि० तिब्बे दोम मुजाहिदे आज़म पब्लिकेशन्ज़ १४०६ हि०)

इस पूरे वाकिये से बात रोज़े रोशन की तरह अयां हो गई कि हज़रत कुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० तआला अन्हु ४०१ हि० में अजमेर के इलाक़े में मौजूद थे, हज़रत सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी और सैय्यदना सिकन्दर दीवाना को कुतुबुल मदार ने ख़िलाफ़त व इजाज़त की नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाया और सैय्यदना सैय्यद सालार मसऊदी ग़ाज़ी रज़ि० के वालिद मोहतरम सैय्यदना सैय्यद सालार साहू ग़ाज़ी रज़ि० को हज़रत सैय्यदना कुतुबुल मदार रज़ि० अन्हु से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद होने की ताईद व तौसीक़ तवारीख़ महमूदी की इस इबारत से भी होती है।

अल्लाह तआला के हुक्म से सालार मसऊद ग़ाज़ी के पैदा होने की

बशारत दी आपने अपने वह सात नाम जो सालार साहू को तरक़्क़ी दरजात व किफ़ायत मोहमात के लिये अता फ़रमाए जिनके ज़रिये सातों आसमानों में बहुक्मे अल्लाह तआला फ़रिशते तस्बीह करते हैं यह हैं तस्बीह –

बिस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम या ज़ैन उल्लाह या नजमुल्लाह या मजमउल्लाह या फ़तहुल्लाह या ज़िब्ग़तुल्लाह या मुरीदअल्लाह या बदीउल्लाह चुनांचे मुल्ला महमूद ग़ज़नवी की तसनीफ़ तवारीख़ महमूदी से नक़ल है कि जब सालार साहू मुज़फ्फ़र ख़ान अजमेरी की इम्दाद के लिये अजमेर के नज़दीक पहुँचे तो एक तालाब के पास ख़ेमा नसब किया और एक बड़े दरवेश की ख़िदमत से फ़ैज़याब हुए और वह दरवेश हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन कुतबुल मदार थे अपनी ज़बान मुबारक

नोट : इस मुलाक़ात का सुबूत मशहूर हिन्दी मोर्रिख़ व अदीब अचार्या चतुरसेन की किताब सोमनात स १२७ से भी होती है, जो हिन्द पाकेट बुक्स दिल्ली से शाया होती है।

सरकार सरकारां सैय्यदना बदीउद्दीन कुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० की विलादत बा सआदत तीसरी हिजरी में ही सही है। दलाएल व बराहीन और शवाहिद क़राईन इसी की ताईद करते हैं चुनांचे शेख़ फ़रीदउद्दीन अता रह० अलैह फ़रमाते हैं कि शेख़ अहमद बिन मसरूक़ रज़ि० के बारे में सब का इत्तेफ़ाक़ है कि औलिया अल्लाह में से थे हज़रत कुतुबुल मदार की सोहबत में रहे और आप खुद भी अक़्ताब में से थे हारिस महासिबी व सिर्री सक्ती के सोहबत याफ्ता थे। (अनवारुज अज़किया तर्जुमा तज़किरातुल औलिया उर्दू स ४३७)

तारीखुल औलिया में है कि शेख़ अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद मसरूक़ कुद्दसा सिर्रहु की कुन्नियत अबुल अब्बास है असल आपकी तौस है लेकिन सुकूनत आपने शहर बग़दाद में इख्तियार की आप उस्ताद शेख़ अली रूदबारी के और शागिर्द हारिस महासबी कुद्दसा सिर्रहु के हैं और सिर्री सक्ती और मुहम्मद बिन मन्सूरुल हुसैन कुद्दसा सिर्रहु इसरार हम के हम सोहबत थे

और कुतबुल मदार आलिया कुद्दसा सिर्रहु के साथ भी निहायत आप की मुलाक़ात थी आख़िर में आप दरजे कुतुबियत पर पहुँचे।

(तारीखुल औलिया स १ स२७६)

आईना नसबनामा में है कि मुसन्निफ़ तारीखुल औलिया ने जिल्द अव्वल के सफ़हे २६७ में लिखा है कि शेख़ अबुल अब्बास अहमद बिन मसरूक़ रह० और हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार का एक ज़माना था और शेख़ अबुल अब्बास अहमद बिन मसरूक़ रह० आपकी ख़िदमत में इक्कीस साल तक रहे और आप ही की तवज्जो से कुतुबियत के दरजे पर फ़ाएज़ हुए और शेख़ अबुल अब्बास अहमद बिन मसरूक़ की वफ़ात २६६ हि० में हुई और बग़दाद शरीफ़ में उनका मज़ार शरीफ़ है। मुसन्निफ़ तज़किरातुल फ़ुक़रा व इसरारुल वासलीन ने ७६ पर तहरीर किया है कि ख्वाजा बायज़ीद बस्तामी तैफ़ूर शामी रज़ि० अन्हु के साहबे ख़िरक़ा ज़िन्दाने सौफ़ हज़रत सैय्यदना बदीउद्दीन कुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० ख़लीफ़ए अव्वल हैं और शव्वालुल मुकर्रम २५६ हि० में बाद नमाज़ मग़रिब बैतुल मुक़द्दस के सेहन में हज़रत ख्वााज बायज़ीद बस्तामी ने आपको ख़िरक़ऐ ख़िलाफ़त अता फ़रमायी।

(आईना नसबनामा स ४१)

मज़कूरा बाला रिवायतों से साबित हुआ कि हज़रत कुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० २६६ हि० से क़ब्ल तीसरी सदी हिजरी में पैदा हुए और हज़रत अहमद बिन मसरूक़ मातावफ़्फ़ी २६६ हि० से आपकी मुलाक़ात हुई। हज़रत मसऊद अहमद क़लन्दरी काकोरी फ़रमाते हैं तर्जुमा - यानी सरकार कुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार ३०० हि० या २५० हि० में दरयाए नील से तीन मील के फ़ासले पर (शहर हलब) में पैदा हुए।

चूंकि सरकार मदार पाक हज़रत बायज़ीद बस्तामी से मुरीद हुए

इसलिये ३०० हि० में आपकी विलादत मानना बईद अज़क़यास है।

जो बुज़ुर्गाने दीन निस्बत मदारियत से मालामाल होकर सिलसिऐ मदारियत से मुनसलिक हैं या फ़ैज़ान मदारियत से मुस्तफ़ीज़ होकर राहे सुलूक के मदारिज तय किये हैं उन सबने अपना अपना शिजरा मदारिया नक़ल फ़रमाया है और हर शिजरे में पाँच वास्तों से मदार पाक का सिलसिला रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है और अकसर व बेश्तर शिजरात में सुलतानुल आरफ़ीन बायज़ीद बस्तामी उर्फ़. तैफ़ूर शामी और सैय्यदना अब्दुल्लाह शामी रज़ि० अन्हुमा आपके शेख़ बताए गये हैं। फ़सूल मसऊदिया में है :

तर्जुमा - पीराने सिलसिला मदारिया कुद्दसा इसरारहुम के बयान में तो जान लें कि इस सिलसिले के पीर अव्वल सैय्यदुल मुरसलीन ख़ातिमुन्नबीईन अबुल क़ासिम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, पीर दोम हज़रत अमीरुल मोमिनीन अबु बकर सिद्दीक़ रज़ि० तआला अन्हु, पीर सोम हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ अब्दुल्लाह अलमबरदार मक्की हैं, पीर चहारुम हज़रत शाह अमीनुद्दीन शामी हैं, पीर पंजुम हज़रत शाह तैफ़ूर शामी उर्फ़ अबु यज़ीद बुस्तामी कुद्दसा सिर्रहु हैं जिनके अहवाल सिलसिलए तैफ़ूरिया के बयान में मज़कूर हैं पीर शशम हज़रत कुतुबुल मदार बदीउद्दीन उर्फ़ शाह मदार कुद्दसा सिर्रहु हैं।

इस शिजरए मुबारक में सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के पीरो मुर्शिद हज़रत ख्वाजा सुल्तान बायज़ीद बुस्तामी उर्फ तैफ़ूर शामी हैं तज़किरातुल फ़ुक़रा में है। दूसरा ख़ानवादह तैफ़ूरिया हज़रत ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी कुद्दसा सिर्रहु से जारी हुआ आपने कई ख़लीफ़ा किये एक तो हज़र शेख़ मसऊद ख़िरक़ा शकरपारा दूसरे ख़लीफ़ा शेख़ इब्राहीम ख़िरक़ा ख़श्तबार, तीसरे शेख़ महमूद मसऊद हज़ार मीख़ी चौथे अब्दुल्लाह मक्की अलमबरदार पाँचवें शाह अहमद ख़िरक़ा ज़न्दान सौफ़ यानी हज़रत शाह बदीउद्दीन कुतुबुल मदार कुद्दसा सिर्रहु ये सब हज़रात तैफ़ूरिया कहलाते हैं।

वफ़ात तैफ़ूर शामी की १४ शाबान २६१ हि० में हुई मज़ार पुरअनवार बुस्ताम में है। (तज़किरातुल फ़ुक़रा स १६ अहमद अख्तर गोरगानी)

मिफ्ताहुत्तवारीख़ में है कि - तर्जुमा : यानी ज़िन्दा शाह मदार का लक़ब बदीउद्दीन है शेख़ मोहम्मद तैफ़ूर बुस्तामी बायज़ीद बुस्तामी के मुरीद हैं आपका लिबास कभी मैला और पुराना नहीं हुआ आप ही से सिलसिला मदारिया का आग़ाज़ है आपकी ख्वाबगाह मकनपुर शरीफ़ में है।

(मिफ्ताहुत्तवारीख़ स ११५ मुन्शी दानिशवर मतबूआ नवल किशोर)

शाह हबीबुल्लाह क़न्नौजी ने मनाक़िबे औलिया में लिखा है

तर्जुमा : कि शाह कोनैन शाह बदीउद्दीन क़ुद्दसा सिर्रहु के वालिद गिरामी का नाम अली हलबी है हज़रत मदार पाक बचपन में ही (जब आपकी उमर १५ साल की थी) हलब छोड़कर फ़क़ीरों की सोहबत में चले गये और उनमें रहकर क़िस्म क़िस्म की इबादत और रियाज़त की और तैफ़ूर शामी बायज़ीद बुस्तामी क़ुद्दसा सिर्रहु के ख़िदमत में रहकर इस्तिफ़ादा किया।

कुल्लियाते इम्दादिया में है :

तर्जुमा : यानी हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी रज़ि० सिलसिला चिश्तिया क़ादरिया सोहरवरदिया किब्रविया मदारिया और क़लन्दरिया की इजाज़त व बैत अपने मुर्शिद रुकनुद्दीन से और उनको अपने मुर्शिद अब्दुल क़ुद्दूस गन्गोही से सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक -

हाशिये पर दराज है : तर्जुमा - यानी नीज़ अजमल बहराईची को तरीक़ए मदारिया की इजाज़त इस सिलसिले के इमाम शेख़ बदीउद्दीन शाह मदार से बिला वास्ता पहुँची है और उनको तैफ़ूर शामी बायज़ीद बुस्तामी से और उनको यमनुद्दीन शामी से और उनको ऐनुद्दीन शामी से और उनको अब्दुल्लाह अलमबरदार से और उनको अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली करामुल्लाह वजहुल करीम से।

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी की निस्बत मदारिया की

तस्दीक़ सिलसिला नक्शबन्दिया की मुताअद्दिद किताबों से होती है बल्कि मकतूबात में भी आपकी सवानेह उमरी के कालम में आपका सिलसिला मदारिया मय शिजरा दर्ज है। चुनांचे अलजतुल अलमिया गोड़ा हैदराबाद से मतबूआ मकतूबात इमाम रब्बानी दफ्तर अव्वल के जवाहिर मुजद्दिया हिस्सा दोम सफ़हा ६० पर आपका शिजरा इस तरह दर्ज है। बाद नाम सैय्यद अजमल के शाह बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार शेख़ तैफ़ूर शामी यमीनुद्दीन शामी अब्दुल्लाह अलमबरदार हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि० अन्हु या हज़रत अली करामुल्लाह वजहुल करीम (बहर दो वास्ता) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

शहनशाह हिन्द औरन्गज़ेब आलमगीर के भाई दाराशिकोह क़ादरी तहरीर फ़रमाते हैं । हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन शाह मदार आपका लक़ब था शेख़ मुहम्मद तैफ़ूर शामी के मुरीदीन में से हैं।

(सफ़ीनतुल औलिया स २३६ दाराशिकोह)

इन सारे शवाहिदात से साबित होता है कि हज़रत क़ुतुबुल मदार सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के पीरो मुर्शिद सुल्तानुल आरफ़ीन बायज़ीद बस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी क़ुद्दर्स सिर्रहुस्सामी हैं, सरकार क़ुतुबुल मदार ने आपकी ख़िदमत से इस्तिफ़ादा किया और सोहबत बाबरकत में रहकर बैअत व ख़िलाफ़त का शर्फ़ हासिल किया।

शिजरए आलिया मदारिया शाह वली उल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमीरुल मोमिनीन अली बिन तालिब शेख़ ख्वाजा हसन बसरी शेख़ ख्वाजा हबीब अजमी शेख़ बायज़ीद बस्तामी शेखुल वक्त बदीउद्दीन मदार शेख़ मुहम्मद हस्साम उद्दीन सलामती शेख़ हिदायतउल्लाह सरमस्त हाजी हुज़ूर हाजी ज़हूर शेख़ मुहम्मद ग्वालियारी शेख़ वजीहउद्दीन गुजराती शेख़ ज़िब्गतल्लाह शेख़ मुहम्मद सनावी शेख़ अहमद क़श्शाशी शेख़ इब्राहीम अबु ताहिर मदनी

शाह वलीउल्लाह मुहम्मद देहलवी।

(मक़ालात तरीक़त स १८८ मौलाना अब्दुल क़य्यूम मज़ाहिरी)

शिजरए आलिया मदारिया मुहद्दिस शाह अब्दुल अज़ीज़ देहल्वी

मुहद्दिस शाह अब्दुल अज़ीज़ देहल्वी को शाह वली उल्लाह से उनको शेख़ शनावी से उनको अबू ताहिर मदनी से उनको शेख़ इब्राहीम से उनको शेख़ अहमद कश्शाशी से उनको शेख़ मुहम्मद शनावी से उनको शेख़ ज़िब्ग़तुल्लाह से उनको वजीहउद्दीन गुजराती से उनको मुहम्मद ग़ौस ग्वालियारी मुतावफ़्फ़ी ९८० से उनको शेख़ हाजी ज़हूर से उनको हिदायत उल्लाह सरमस्त से उनको शेख़ मदार से उनको शेख़ बायज़ीद बुस्तामी से ।

(मक़ालात तरीक़त मारूफ़ ब फ़ज़ाएल अज़ीज़िया स १८७ मरतबा मुहम्मद अब्दुर्रहीम साहब ज़िया)

शिजरए आलिया मदारिया मौलाना अहमद हसन मुदर्रिस इस्लामिया वाक़े कानपुर मुरीद ख़लीफ़ा हाजी इम्दादउल्लाह मुहाजिर मक्की

मौलाना अहमद हसन हाजी इम्दाद उल्लाह मुहाजिर मक्की हज़रत मौलवी मियाँ जिया नूर मुहम्मद थानवी हज़रत शेखुल मशाएख़ हाजी अब्दुर्रहीम विलायती हज़रत शाह अब्दुल बारी अमरोही हज़रत शाह अब्दुल हादी हज़रत शाह अज़ुद्दीन हज़रत मुहम्मद मक्की हज़रत शाह मुहम्मदी हज़रत शाह मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी हज़रत शेख अबू सईद हज़रत शेख निज़ामुद्दीन हज़रत शेख जलालुद्दीन हज़रत शेख अब्दुल क़ुद्दूस गन्गोही और हज़रत शेख दरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम अवधी हज़रत बुढढन बहराइची हज़रत सैय्यद अजमल बहराइची हज़रत इमामुल तरीक़त बुरहानुल हक़ीक़त सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार क़ुतबुल अक़ताब रह० हज़रत तैफ़ूर शामी हज़रत ऐन उद्दीन शामी हज़रत यमीनउद्दीन शामी हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार हज़रत अमीरुल मोमिनीन करामुल्लाह वजहुल करीम हज़रत नबी करीम अलयहित्तहयात वत्तस्लीम।

(नक़ल अज़ तज़किरातुल मुत्तक़ीन ज २ स ११७)

सिलसिला आलिया बदीइया मदारिया मुहम्मद शेर मियाँ पीला भीत

हज़रत शाह मुहम्मद शेर मियाँ हज़रत अहमद अली शाह दरगाही शाह रामपुरी हज़रत शाह जमालउल्लाह रामपुरी हज़रत क़ुतुबुद्दीन ख्वाजा ज़ुबैर हज़रत मुहम्मद नक्शबन्द हज़रत ख्वाजा मासूम हज़रत शेख अहमद फ़ारूक़ी मुजद्दिद अल्फ़े सानी हज़रत शेख़ अब्दुल अहद हज़रत शेख़ दरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम अवधी सैय्यद बुढढन बहराईची हज़रत सैय्यद शाह अजमल बहराईची हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार हज़रत ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन।

(जवाहिर हिदायत अब्दुल क़दीर मियाँ तज़किरातुल मुत्तक़ीन ज दोम स१७२)

सिलसिला मदारिया हज़रत अमीरुल्लाह सफ़ीपुरी

हज़रत शाह अमीरुल्लाह सफ़वी हज़रत शाह हफ़ीज़उल्लाह हज़रत शाह मुहम्मदी उर्फ़ गुलाप पीर हज़रत शाह अफ़हाम हज़रत शाह अब्दुल्लाह हज़रत शाह मुहम्मद शरीफ़ उर्फ़ भूलन हज़रत शाह ज़ाहिद हज़रत शेख़ अब्दुल वाहिद हज़रत शाह अब्दुर्रहमान हज़रत शाह अकरम हज़रत शाह बन्दगी मुबारक हज़रत मख्दूम सफ़ी हज़रत मख्दूम शेख़ सादउल्लाह हज़रत सैय्यद बुढढन बहराईची हज़रत सैय्यद अजमल बहराईची हज़रत मख्दूम सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी।

दीगर शिजरए आलिया मदारिया साहबान सफ़ीपुर (शिजरए दीगर सलासिल)

हज़रत अहमद गरगानी मुअल्लिफ़ तज़किरातुल फ़ुक़रा हज़रत मिर्ज़ा रौशन बख्त गिरगानी हज़रत सैय्यद देहलवी हज़रत सैय्यद फ़तेह अली देहलवी सैय्यद ग़ौस ख़ाँ शहीद सैय्यद अब्दुल करीम मुहक़्क़िक़ हज़रत सैय्यद शाह ताज सैय्यद शर्फ़उद्दीन शाह मुस्तफ़ा सूफ़ी शाह दाऊद आरिफ़ बन्दगी शाह पीरन सुल्तान शेख़ हामिद मन्झन गोशा नशीन ख्वाजा दाऊद सैय्यद

सदरउद्दीन सैय्यद मख्दूम जहानिया जहान गश्त सैय्यद बदीउद्दीन शाह मदार हज़रत तैफ़ूर शामी ख्वाजा हबीब अजमी।

(तज़किरातुल फ़ुक़रा व तज़किरातुल मुत्तक़ीन ज दोम स १७३ से १७४)

शिजरए आलिया मदारिया सैय्यद अली नक़ी बांगरमउवी इब्ने मेहदी अली शाह

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अली मुश्किल कुशा हज़रत ख्वाजा हसन बसरी हज़रत ख्वाजा हबीब अजमी हज़रत ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी हज़रत ख्वाजा सैय्यद बदीउद्दीन मदार बिन अली हलबी हज़रत शाह दरवेश मुहम्मद बानवामदार सानी हज़रत सैय्यद हाजी इनायत उल्लाह सरमस्त हज़रत बन्दगी शाह अज़मतउल्लाह अकबरआबादी हज़रत शाह नसीरउद्दीन महमूद अयाज़ हज़रत इश्कउल्लाह शाह हज़रत शाह अहलुल्लाह हज़रत मीर सैय्यद शाह यासीन हज़रत सैय्यद मेहदी अली शाह हज़रत सैय्यद शाह अली नक़ी बांगरमउवी।

(नक़ल अज़ तज़किरातुल मुत्तक़ीन हिस्सा दोम स १६५ से १६६)

इन लिखे शिजरात से भी वाज़ेह हो गया कि सरकार सरकारां हज़रत सैय्यद बदीउ्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० अन्हु के पीरो मुर्शिद सुल्तानुल आरफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैमूर शामी हैं और हज़रत सुल्तानुल आरफ़ीन की सन विलादत बक़ौल राजेह २६१ हि० है और कुतबुल मदार के अकसर सवानेह निगार लिखते हुए चले आ रहे हैं कि १६ साल की उमर में मस्जिदे अक्सा के सेहन में २५६ हि० में सुल्तानुल आरफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैमूर शामी रज़ि० से आप मुरीद हुए और मुर्शिद बरहक़ के साथ में रह कर नेमात व इरफ़ान से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद होते रहे इसलिये २४२ हि० साहबे आलम ही को आपकी सन विलादत मानना सही और राजेह

मुदल्लिल व मुबरहन क़ौल है।

जिन हज़रात ने ८६ हि० १८२ हि० या ३०० हि० सन विलादत कुतबुल मदार तहरीर किया है उनका क़ौल, शवाहिद क़राईन के खिलाफ़ है और ग़ैर मुहक्क़िक़ है अकसर सवानेह निगारों ने ये तस्लीम किया है कि पाँच वास्तों से आपका सिलसिला सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है। चुनांचे अख्बारुल ख्यार में है।

तर्जुमा : यानी बदीउद्दीन मदार रह० कई लोग आपके अजीब व ग़रीब हालात बयान करते हैं कहते हैं कि आप मक़ामे सम्दियत पर फ़ाएज़ थे अकसर औक़ात चेहरे पर नक़ाब डाले रहते थे जिसकी नज़र पड़ जाती थी वह बेइख्तियार होकर सज्दा करता कहते हैं कि दराज़ी उमर की वजह से या किसी वजह से पाँच वास्तों से आपका सिलसिला रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है।

(अख्बारुल अख़्यार उर्दू सफ़ह २६२)

तब्क़ात शाहजहानी में है : हज़रत बदीउद्दीन शाह मदार कुद्दसा सिर्रहु ने ८ वी सदी हि० की आखिरि सल्तनत शाह गीती सतां साहब कुरां की आख़िरी दौरे हुकूमत में अमीर तैमूर गोरगां की वफ़ात से सात साल क़ब्ल इस जहान फ़ानी से परदा फ़रमाया आपके अहवाल व मक़ामात अजीबो ग़रीब हैं तवील उमर पाई आपकी ख़िलाफ़त का सिलसिला चार वास्तों से सैय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ि० तक पहुँचता है दूसरे सिलसिलों की बनिस्बत आप का सिलसिला क़रीब तर वसाएत की वजह से दिलों पर कश्फ़ व इश्राक़ और अदराक मआनी हक़ीक़त के बाब में निहायत आला मरतबा रखता है जो कोई आपको देखता बेइख्तियार सज्दा करता उन अनवार इलाही के सबब जो आपकी पेशानी में ताबां थे मगर बारे आम के दिन नक़ाब चेहरे से उठा देते उस दिन से किसी को जो भी मुश्किल पेश होती आप उसका हल फ़रमाते मुर्दों को ज़िन्दा करना खाने पीने से बेनियाज़ रहना बग़ैर धोबी के धोए कपड़ों का

सफ़ेद व साफ़ रहना आपकी जुमला करामात से है। आपके ख़ुल्फ़ाए नामदार व अस्हाब किराम कसीर तादाद में हुए जो सभी ज़ाहिरी शरीअत से आरास्ता थे। सफ़ीनतुल औलिया में है कि हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन का लक़ब शाह मदार है शेख़ मुहम्मद तैफ़ूर शामी के मुरीद हैं आपकी निस्बतो इरादत क़िब्रसिन्नी या तो किसी दूसरी बिना पर पाँच वास्तों से आनहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचती है, आपसे अजीब व ग़रीब करामात और हालात का मुशाहिदे में आए हैं। हज़रत शाह मदार का दरजा और मरतबा बहुत बुलन्द है जिसको बयान नहीं किया जा सकता। कहते हैं कि बारह साल तक आपने कुछ नहीं खाया जो कपड़े एक मरतबा पहन लिये फिर उनको दोबारा धोने की ज़रूरत पेश न आई हमेशा पाक व साफ़ रहते। शेख़ अब्दुल हक़ ने लिखा है कि आप मक़ाम सम्दियत पर फ़ाएज़ थे जो सालिकों का मक़ाम है और हक़ तआला ने आपको वह हुस्न व जमाल अता फ़रमाया था कि जो आपको देखता सज्दे में गिर जाता इस लिये हमेशा चेहरे पर नक़ाब डाले रहते थे, आपकी वफ़ात ८४० ह० को हुई (सही ८३८ है) मज़ार मकनपुर में वाक़े है जो कन्नौज के मज़ाफ़ात में एक कस्बा है, हर साल जमादिल अव्वल के महीने में १६ १७ जमादिल अव्वल में आपका उर्स होता है जिसमें पाँच छै लाख लोग शरीक होते हैं और अतराफ़ व जवानिब हिन्दुस्तान से रौज़ा शरीफ़ की ज़ियारत को हाज़िर होते हैं और नज़राने पेश करते हैं और आज भी अजीबो ग़रीब वाक़ेआत देखने में आते हैं अहले हिन्दुस्तान के चार हिस्सों में से दो हिस्सा वज़ी और शरीफ़ तो हज़रत ग़ौसे आज़म सैय्यद मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी के मुरीद हैं और अशराफ़ ज़्यादातर एक हिस्सा शाह मदार के मुरीद हैं और अदना दरजा के बेश्तर और निस्फ़ ख़्वाजा मुईन उद्दीन चिश्ती के मुरीद हैं और बक़िया निस्फ हिस्सा मख्दूम बहाउद्दीन ज़करया मुल्तानी क़दसुल्लाह इसरार हुम के मुरीद हैं । (सफ़ीनतुल औलिया स २३६ शहज़ादा दाराशिकोह क़ादरी बिरादर शहनशाह औरन्गज़ेब तर्जुमा मुहम्मद अली लुतफ़ी) तज़किरातुल किराम में है हज़रत

बदीउद्दीन शाह मदार मुरीद शेख तैफ़ूर बुस्तामी के थे कहते हैं कि वह बज़ाहिर कुछ नहीं खाते थे और न उनका कपड़ा कभी मैला होता था और न उस पर मक्खी बैठती थी और उनके चेहरे पर हमेशा नक़ाब पड़ा रहता। निहायत ही हसीन व जमील थे चारों आसमानी किताबो के हाफ़िज़ व आलिम थे लोग कहते हैं कि उनकी उमर चार सौ बरस से भी ज़ाएद थी अल्लाह आलम। और तमाम दुनिया का सफ़र उन्होंने किया था और अपने वक्त के क़ुतबुल मदार थे इसलिये लोग शाह मदार कहते हैं उनसे मख्दूम हुसैन नोश्ता तौहीद ने हस्ब वसीयत मख्दूम शर्फ़उद्दीन बहाउद्दीन अपने पीर की किताब अवारिफ़ पढ़ी थी और फ़ैज़याब हुए आप के मुरीद और ख़ुल्फ़ा बहुत हैं।

(तज़किरातुल किराम तारीख़ ख़ुल्फ़ा अरब व इस्लाम स ४६३ मुसन्निफ़ मौलाना सैय्यद शाह मुहम्मद कबीर अबुल उला)

अख्बारुल अखंयार तबक़ात शाहजहानी और सफ़ीनतुल औलिया की मज़कूरा इबारतों से वाज़े है कि सरकार सरकारां सैय्यदना बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार रज़ि० की निस्बत इरादत व ख़िलाफ़त बवजह कबरसनी या किसी दूसरी बिना पर पाँच वास्तों से जनाबे रिसालत माब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचती है और अक़ल वसाएत व क़ुर्ब सलासिल होने की वजह से क़ुलूब सालकीन व दुल्हाए मोमिनीन पर कश्फ़ व इशराक़ में निहायत आला व अफ़ज़ल मरतबा रखती है और क़िल्लत वसाएत सुलतानुल मुफ़र्रदीन की तवीलुल उमरी का पता देती है और क़ुरबते नबवी की तरफ़ मुशीर है।

हज़रात मदार पाक क़ुद्दसा सिर्रहु को न सिर्फ़ सुल्तानुल आरफ़ीन बायज़ीद बस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी क़दस सिर्रहुन्नूरानी से बैअत व ख़िलाफ़त हासिल बल्कि दूसरे मशाएख़ ने भी आपको इजाज़द व ख़िलाफ़त से नवाज़ा है। उन मशाएख़ के शिजरात में भी मदार पाक रज़ि० और साहबे लौलाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरम्यान सिर्फ़ पाँच वास्ते आते हैं। चुनांचे मुफ़्ती आज़मे हिन्द फ़ाज़िल बरेलवी के पीरो मुर्शिद सैय्यद अबुल हुसैन नूरी मियाँ साहब बरकाती मारहरवी क़दस सिर्रहु अपना शिजरा मदारिया नक़्ल

करते हैं जिसमें मदार पाक रज़ि० अन्हु साहबे लौलाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरम्यान सिर्फ़ चार वास्ते नक़ल फ़रमाते हैं।

(अन्नूर वलबहा मतबूआ विक्टोरिया प्रेस बदायूँ स १७२ अबुल हसन अहमद नूरी मियाँ मारहरवी)

तर्जुमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो आलमीन का रब है दरूदो सलाम अल्लाह तआला के रसूल और उनकी तमाम आल व अस्हाब पर बाद दरूदो सलाम के फ़क़ीर अबुल हसन अफ़ी अन्हु कहता है कि मुझे सिलसिला आलिया बदीइया मदारिया की इजाज़त मेरे दादा और मुर्शिद सैय्यद आले रसूल अहमदी क़ुद्दसा सिर्रहु ने दी उनको हज़रत अच्छे मियाँ साहब ने उनको उनके वालिद सैय्यद हमज़ा मियाँ ने उनको उनके दादा सैय्यद आले मुहम्मद साहब ने उनको साहबे बरकात मारहरवी ने उनको सैय्यद फ़ज़लुल्लाह कालपवी ने उनको उनके वालिद सैय्यद अहमद ने उनको उनके दादा सैय्यद मुहम्मद साहब ने उनको जमालुल औलिया ने उनको उनके शेख़ क़याम उद्दीन ने उनको शेख़ क़ुतुबुद्दीन ने उनको सैय्यद जमाल अब्दुल क़ादिर ने उनको सैय्यद मुबारक ने उनको सैय्यद अजमल बहराईची ने दी और उनको आरिफ़ अजल कामिल अकमल मौलाना बदीउल हक़ वद्दीन मदार मकनपुरी रह० ने इजाज़त दी उनको (१)शेख़ अब्दुल्लाह शामी ने उनको (२) शेख़ अब्दुल अव्वल ने उनको (३) शेख़ अमीनुद्दीन ने उनको (४) अमीरुल मोमिनीन अली रज़ि० तआला अन्हु ने दी और उनको सैय्यदुल मुरसलीन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उने इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

इस शिजरा मदारिया में भी मदार पाक सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० और साहब लौलाक अहमद मुख़्तार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरम्यान सिर्फ़ चार वास्ते हैं। शेख़ अब्दुल्लाह शामी शेख़ अब्दुल अव्वल शेख़ अमीनुद्दीन शामी अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली करामुल्लाह

वजहु रज़ि० तआला अन्हुम अजमईन इसी तरह मौलवी सलामत उल्लाह मुरीद व ख़लीफ़ा शाह अच्छे मियाँ साहब का शिजरए मदारिया हज़रत अच्छे मियाँ मारहरवी से आगे आख़िर सनद तक तहरीर किया गया है।

और मौलाना अब्दुल क़ादिर बदायूँनी जो मुरीद व ख़लीफ़ मौलाना फ़ज़ल रसूल के हैं और वह मुरीद व ख़लीफ़ा शाह अब्दुल मजीद के हैं और वह मुरीद व ख़लीफ़ शाह अच्छे मियाँ मारहरवी के हैं उनका शिजरए मदारिया भी इसी सनद के साथ मरक़ूम है। (अकमल अत्तवारीख़) (तज़किरातुल मुत्तक़ीन)

और मौलाना अली अहमद महमूदउल्लाह शाह अबु बकर सिद्दीक़ी मोअर्रिख़ बदायूँनी का शिजरए मदारिया इशजारुल बरकात में इसी सनद के साथ इसी तरह मरक़ूम है।

ख़ादिमुल फ़ुक़रा अली अहमद महमूद उल्लाह शाह अबु बकर सिद्दीक़ी मोअर्रिख़ बदायूँनी मख्दूमुल फ़ुक़रा ए इमामुस सिद्दीक़ीन सैय्यदना मौलाना शाह मुहम्मद दिलदार अली बदायूँनी सैय्यद शाह फ़ज़ल ग़ौस बरेलवी सैय्यद आले अहमद अच्छे मियाँ मारहरवी सैय्यद हमज़ा सैय्यद शाह आले मुहम्मद शाह बरकतुल्लाह सैय्यद शाह फ़ज़लुल्लाह सैय्यद अहमद सैय्यद मुहम्मद शेख़ जमालुल औलिया शेख़ क़यामुद्दीन शेख़ क़ुतुबुद्दीन सैय्यद जलाल अब्दुल क़ादिर सैय्यद मुबारक सैय्यद अजमल शाह बदीउद्दीन मदार शेख़ अब्दुल्लाह शामी शेख़ अब्दुल अव्वल शेख़ अमीनुद्दीन अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली जनाब हज़रत अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

(इशजारुल बरकात स ७, मुअल्लिफ़ मौलाना अली अहमद महमूद उल्लाह शाह)

इन सभी शिजराते तैय्यबात में सरकार क़ुतुबुल मदार रज़ि० और

फ़ख्रे मौजूदात अहमदे मुख्तार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरम्यान सिर्फ़ चार वास्ते मज़कूर हैं जिनसे हज़रत मदार पाक रज़ि० की तवील उमरी का पता चलता है और आपके २४२ हि० में पैदा होने की तरफ़ सच्ची रहनुमाई हो रही है इसलिये २४२ हि० को ही आपकी सन विलादत मानना सही, दुरुस्त और क़ौल राजेह है।

इसी पर जम्हूर अस्हाब सैर का इत्तेफ़ाक़ है इसके अलावा दूसरी तारीख़ें ग़ैर सही बे सुबूत और शवाहिद दलाइल के ख़िलाफ़ हैं।

चुनांचे हज़रत क़ुतबुल मदार रज़ि० की उमर मुबारक काफ़ी तवील है ५६६ साल की उमर मुक़द्दस करामत ही करामत है इस तवील मुद्दत में सैंकड़ों हज़ारों मशाएख़ से आपकी मुलाक़ात अम्र यक़ीनी है आप को मज़कूरा मशाएख़ के अलावा बाज़ दीगर मशाएख़ ने भी एज़ाज़ी तौर पर अपनी इजाज़त व खिलाफ़त से नवाज़ा है लेकिन इन इजाज़त नामों की वजह से हज़रत बायज़ीद बस्तामी क़दस सिर्रहुन्नूरानी और शेख़ अब्दुल्लाह शामी क़दस सिर्रहुस्सामी की इजाज़त व ख़िलाफ़त का इन्कार सच्ची हक़ाएक़ से रूगरदानी करता है और सैंकड़ों मुस्तनद मशाएख़ की तकज़ीब है।

''सिलसिलातुल मशाएख़'' की यह इबारत अहले फ़हम के लिये बसीरत बख्श और इबरत आमूज़ है - तर्जुमा : शेख़ बदीउद्दीन मुक़ल्लब बहज़रत शाह मदार क़ुद्दसा सिर्रहुल अज़ीज़ कि सिलसिलए मदारिया अज़ां दौलत लाए और उनसे फ़ैज़ व ख़िलाफ़त हासिल किया आपकी इरादत की निस्बत बहरुल हक़ाएक़ वल मआनी शेख़ बायज़ीद बस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी से दुरुस्त है कि आख़िर अय्याम में शेख़ तैफ़ूर शामी ने आपको ख़िलाफ़त देकर मसनदे इक्तिदाए इरशाद आपके सुपुर्द फ़रमाया, शेख़ तैफ़ूर शामी शेख़ यमीनुद्दीन शामी के ख़लीफ़ा थे। तर्जुमा :

ये फ़सल सिलसिला मदारिया के बयान में है जो इस शहबाज़ बाग़ अनस बलन्द परवाज़ रियाज़ क़दस नुस्ख़ा जामेआ इसरारे आलम सिफ़ातुल मअउल मआ अनवार आलम ग़वास बहर मआनी साहबे इक्तिदा शेख़

बदीउद्दीन मुलक्क़ब शाह मदार क़दस सिर्रहुल अज़ीज़ से ज़हूर पज़ीर हुआ है आप रिजालुल्लाह में से एक रजलुल कामिल थे इल्म ज़ाहिरी व बातिनी में कमाल हासिल था, रियाज़त व मुजाहिदात के बाब में बेनज़ीर और इत्तेबाए सुन्नत में बेमिस्ल थे। बयान किया गया है कि अवाएल उमरी में ही आप सियाहान हक़ीक़ी की सफ़ में जा मिले थे आप ख़िज़्र मअनवी थे कि मजमा बहरीन हक़ीक़ व मअनवी को आप तय कर लिया था अपने सफ़रों में बहुत से मशाएख़ किराम की ज़ियारत की और ख़िदमत बजा ख़िलाफ़त हासिल की है लेकिन अपने शिजरए इरादत में इसी सनद को इख़्तियार फ़रमाया है क्यों कि इस सनद में वसाएत क़लील हैं और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़ैज़ में क़रीब तर है।

(सिलसिलातुल मशाएख़)

मुख्तसर हालात

हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार रज़ि0 अन्हु

आपका नाम : सैय्यद बदीउद्दीन अहमद है।

आपकी कुन्नियत अबु तुराब है बाज़ मुमालिक में अहमद ज़िन्दान सौफ़ के नाम से मशहूर हैं

अल्क़ाब : औलिया अल्लाह की जमाअत में आपको अब्दुल्लाह क़ुतबुल अक्ताब क़ुतबुल मदार फ़रदुल अफ़राद क़ुतबे वहदत कहते हैं और अवाम में मदार आलम मदार दो जहाँ मदारुल आलमीन ज़िन्दा शाह मदार ज़िन्दा वली मदार पाक वगैरह से जाना और पहचाना जाता है।

विलादत : आपकी विलादत बासआदत सुबह सादिक़ के वक्त पीर के दिन यकुम शव्वालुल मुकर्रम २४२ हि० मुताबिक़ ५ फ़रवरी ८५६ ई० मुल्क शाम के शहर हलब के मुहल्ले चिनार में हुई।

आपके वालिद का नाम सैय्यद क़िदवतुद्दीन अली हलबी है और वालिदा
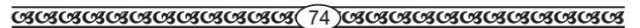
मोहतरमा सैय्यदा फ़ातिमा सानिया उर्फ़ बीबी हाजिरा से मशहूर हैं।
आप हसनी हुसैनी सैय्यद हैं।
हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० अपना हसब व नसब खुद इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाते हैं " अना हलबी बदीउद्दीन इस्मी बामी वाबी हसनी हुसैनी जद्दी मुस्तफ़ा सुल्तानुल दारैन मुहम्मद अहमद व महमूद कोनैन। मैं हलब का रहने वाला हूँ मेरा नाम बदीउद्दीन है माँ की तरफ़ से हसनी और बाप की तरफ़ से हुसैनी सैय्यद हूँ मेरे नानाए मोहतरम मुस्तफ़ा जाने आलम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनकी तारीफ़ व सताइश दो जहाँ में की जाती है।
आपका ख़ानदानी शिजरा : सैय्यद बदीउद्दीन अहमद इब्न सैय्यद क़ाज़ी क़दवतुद्दीन अली हलबी इब्न सैय्यद बहाउद्दीन हुसैन इब्न सैय्यद ज़हीरउद्दीन इब्न सैय्यद अहमद इस्माईल सानी इब्न सैय्यद मुहम्मद इब्न सैय्यद इस्माईल इब्न सैय्यद इमाम जाफ़र सादिक़ इब्न सैय्यद इमाम मुहम्मद बाक़र इब्न सैय्यद इमाम ज़ैनुल आबदीन इब्न सैय्यद इमाम हुसैन इब्न सैय्यद सैय्यदना मौला अली इब्न अबी तालिब व सैय्यदा फ़ातिमा ज़ोहरा बिन्ते रसूल मक़बूल अलैह व अलैहिमस्सलातो वस्सलाम और वालिदा माजिदा की तरफ़ से शिजरा ये है।
सैय्यद बदीउद्दीन अहमद इब्न सैय्यद हाजिरा फ़ातिमा सानिया बिन्त सैय्यद अब्दुल्लाह इब्न सैय्यद ज़ाहिद इब्न सैय्यद मुहम्मद इब्न सैय्यद आबिद इब्न सैय्यद अबू स्वालेह इब्न सैय्यद अबु यूसुफ़ इब्न सैय्यद अबुल क़ासिम इब्न सैय्यद अब्दुल्लाह महज़ इब्न सैय्यद हसन मसना इब्न इमाम सैय्यद हसन इब्न सैय्यद अमीरुल मोमिनीन रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ।

पैदाइश के वक्त करामातों का ज़ाहिर होना :
आप जब पैदा हुए तो पूर मकान रोशनी से चमकने लगा आपने पैदा होते ही सज्दा किया और कलिमा तैय्यबा "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूल

उल्लाह" पढ़ा हज़रत इदरीस हलबी जो एक साहबे करामात थे उन्होंने फ़रमाया कि जब बदीउद्दीन पैदा हुए तो रूह पाक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमला अस्हाब किबार वाएमा अतहार ख़ानए अली हलबी में जलवा फ़रमा हुए और वालिदैन को मुबारकबाद दी और ग़ैब से हाज़ा वली हाज़ा वली उल्लाह की आवाज़ सुनी गई और बहुत सी करामातें ज़ाहिर हुयीं जो तफ़सील से सीरत की किताबों में मुन्दरज हैं।

जब आपकी उमर मुबारक चार साल चार माह चार दिन की हुई तो आपके वालिद गिरामी ने रस्म बिस्मिल्लाह ख्वानी के लिये हज़रत हुज़ैफ़ा मरअशी शामी जो अपने वक्त के बहुत बड़े आलिम थे उनकी ख़िदमत में पेश किया उस्ताद मोहतरम ने अपना पूरा हक़ अदा किया इब्तिदाई तालीम से लेकर शरीअत के तमाम उलूम व फ़नून से आरास्ता किया और जब आपकी उमर मुबारक चौदह साल की हुई तो उलूम अक़लिया व नक़लिया में आपको महारत हो चुकी थी हाफ़िज़ क़ुरआन होने के साथ साथ आप तमामी आसमानी किताबों खुसूसन तौरेत इन्जील व ज़बूर के भी हाफ़िज़ व आलिम थे।

बैअत व ख़िलाफ़त : ज़ाहिरी उलूम हासिल करने के बाद इल्म बातिन के हुसूल के लिये सफ़र शुरू किया और जज़्बए शौक़ ने ज़ियारत हरमैन शरीफ़ैन के लिये क़दम बढ़ाया वालिदैन करीमैन से इजाज़त तलब की और आज़िम मक्का मदीना हो गए जब वतन से बाहर निकले तो बफ़ज़्ले रब्बी क़दम क़दम पर रहबरी और सही रहनुमाई के लिये रिजालुल ग़ैब और अरवाहे तैय्यबात का तआवुन मिलता गया और हर तरफ़ से आपको मक़ाम रफ़ीआ के हुसूल की बशारतें मिलने लगीं अकसर अरबाब सैरास अक़दह कशाई से दूर मालूम होते हैं कि हज़रत मदार पाक २५६ हि० से लेकर २५६ हि० के बीच कहाँ रहे हाँ चन्द मोहतात व अख़ाज़ा मज़ाज तज़किरा निगारों ने अक़दह कशाई किसी क़दर की है कि हज़रत मदार उन तीन सालों के बीच मुल्क शाम के

बेशुमार मक़ामात पर रियाज़त व मुजाहिदात में मसरूफ़ रहे जिन मक़ामात पर बहुक्म अल्लाह अज़वजल आपके लिये एक मुअल्लिम कामिल पहले से ही मौजूद रहा यहाँ तक कि २५६ हि० में हातिफ़ ग़ैब ने आपको मुत्तला किया कि अब आप बैतुल मक़दस का रुख़ करें अमानत ख़िलाफ़त व ख़लअत लेकर सुल्तानुल आरफ़ीन हज़रत बायज़ीद बस्तामी आपका इन्तिज़ार फ़रमा रहे हैं।

सफ़र बैतुल मक़दस और ख़िलाफ़त व इजाज़त : सदाए ग़ैब सुनने के बाद हज़रत मदार पाक कशां कशां बैतुल मक़दस की जानिब रवाना हो गए अरबाब सैर ने वज़ाहत के साथ क़लमबन्द किया है कि हज़रत सुल्तानुल आरफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी क़दस सिर्रहु दरवाज़ा बैतुल मक़दस पर पहले से ही हज़रत मदार पाक के मुन्तज़िर थे और आपको पता चल चुका था कि हमारे पास मोजूद उन तमाम दयानतों का अमीन चन्द साआत में पहुँचने वाला है दीगर हाज़िरीन भी सुल्तानुल आरफ़ीन के हमराह आप के मुन्तज़िर ही थे कि हज़रत सुल्तानुल आरफ़ीन ने बाआवाज़ बलन्द फ़रमाया वह देखो जिसका इन्तिज़ार था वह आ गए जब आप बैतुल मक़दस पहुँचे तो वह वक्त ज़ोहर और असर के दरम्यान का वक्त था नमाज़ असर अदा फ़रमाने के बाद हज़रत बायज़ीद बुस्तामी आपको लेकर ख़िलवत गाह में पहुँचे और बहुत सारी राज़ो नियाज़ की बातें हुईं इकनाफ़े आलम के चप्पे चप्पे पर किस तरह मज़हबे इस्लाम पहुँचाया जा सकता है और मुशरिकीने आलम को किस तरह वहदानियत व रिसालत की घुट्टी पिलाई जा सकती है खुश्की और बहरी रास्तों की क्या नवय्यत है जैसे बहुत सारे मआमलात पर बातें पीरो मुरीद की गुफ्तुगू होती रही यहाँ तक कि वक्त मग़रिब आ गया और सबने मिलकर बैतुल मक़दस में नमाज़ मग़रिब अदा की बादा सुल्तानुल आरफ़ीन ने हज़रत मदार पाक को बुलाया और वह तमाम अमानतें आपको सौंप दी जिनको आपने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ और दीगर सलफ़ व ख़लफ़ से हासिल फ़रमाया था और ताजे ख़िलाफ़त व इजाज़त आप के सर पर रखते हुए

इरशाद फ़रमाया बदीउद्दीन अब आप बिला ताख़ीर मक़ामात मुक़द्दसा का रुख़ करें और आज़िम हरमैन हों।

सफ़र हरमैन : हुज़ूर सैय्यदना बदीउद्दीन अहमद ने अपने पीरो मुरशिद हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी से इजाज़त हासिल की और हज बैतुल्लाह के लिये मक्का मुअज़्ज़मा हाज़िर हुए और हज से फ़ारिग़ होने के बाद हिदायत ग़ैबी हुयी कि तुम्हारी आरज़ू और मुरादों के हासिल होने का वक्त आ गया है गुम्बदे ख़िज़रा के मकीं तेरे नाना जान सुनहरी जालियों से तेरी राह देख रहे हैं आँख खुली तो दिल की दुनिया में मुसर्रतों का तूफ़ान बरपा था और दिले बेताब पर मदीना मुनव्वरा के खूबसूरत एहसासात छाते चले गये आप मदीना मुनव्वरह हाज़िर हुए सरकारे रिसालत माब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मज़ार मुक़द्दस की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए आप ने नज़राना दरूद व सलाम पेश किया।

तालीम रूहानी : उसी शब आलम में रात अपने आख़िरी मरहले में पहुँच चुकी थी सुबह सादिक़ का उजाला कायनात आलम को अपनी रौशनी से रौशन करने जा रहा था कि उसी वक्त सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जमाल अतहर की ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और अपने दिलबन्द बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार को अपने दामने रहमत में ढाँप लिया और फिर हज़रत मौला अली करामुल्लाह वजहुल करीम के सुपुर्द फ़रमाया और फ़रमाया ऐ अली अपने नूरे नज़र को रूहानियत की तरबियत दे और रजलुल कामिल बना कर मेरे पास लाओ।

तब्लीग़े इस्लाम का हुक्म : ग़र्ज़ कि आप जब उलूम ज़ाहिरी व बातिनी मसलन इल्म कीमिया सीमिया इल्म रीमिया इल्म हीमिया से जब मुस्तफ़ीज़ हुए और निस्बते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आपका सीना गहवारा

नूर बन गया तो उलूम ज़ाहिरा व बातिना की तकमील के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बदीउद्दीन हिन्दुस्तान जाओ और वहाँ जाकर मख़्लूक़े ख़ुदा की हिदायत व रहनुमाई में कोशिश करो।

वतन अज़ीज़ की वापसी और हुक्म की तामील : उसके बाद आप अपने वतन अज़ीज़ हुए ऐसा लगता था कि आप बहुत जल्दी में हैं जब आप अपने शहर हलब के क़स्बे चिनार में दाख़िल हुए और अपने वालिदैन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने के बाद ख़ुदा का शुक्र अदा किया हिज्र व फ़िराक़ ग़म दूर हुआ इज़्तिराबियाँ मिट गयीं आपके वालिदैन ने जब वाक़िया मज़कूरा समाअत किया तो कहते हुए रुख़सत किया ऐ मेरे बेटे मेरी आँखों की ठण्डक काश ख़ुदावन्द क़ुद्दूस अपनी रहमते इस्लाम को तुम्हारी मेहनत व तब्लीग़ से तमाम आलम में फैला दे आपने अपने वालिदैन से इजाज़त हासिल की और अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म की तामील के लिये घर से निकल पड़े।

सैय्यद कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त पाकर अल्लाह पर तवक्कल करके बग़ैर सहारे और मदद के हिन्दुस्तान का सफ़र शुरु किया। हिन्दुस्तानी ताजिरों के साथ २८१ हि० में पानी वाले जहाज़ पर सवार हुए और अहले कश्ती को फ़ज़ाएल नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मालूमात से नवाज़ा जैसा कि अल्लाह वालों का क़ाएदा हुआ करता है फ़ज़ाएल नबवी बयान करने के बाद तमाम कश्ती वालों को इस्लाम की दावत दी और कलिमा ''ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूल उल्लाह'' की तब्लीग़ फ़रमाई। कश्ती पर कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन ज़्यादा थे। आप की तब्लीग़ और इस्लाम की तालीम उन काफ़िरों को पसन्द न आई सबने इस्लाम क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया जिससे सैय्यद बदीउद्दीन अहमद को दिली सदमा पहुँचा। आप उनके इस करतूत से रन्जीदा हुए ख़ुदावन्द क़ुद्दूस को अपने महबूब वली की तकलीफ़ गवारा नहीं हुई अल्लाह का ग़ज़ब जलाल में आ

गया और समन्दर में एक तूफ़ान आ गया कश्ती टुकड़े टुकड़े होकर समन्दर में डूब गयी फिर एक तख़्ता ज़ाहिर हुआ उस पर बैठकर ख़ुदवन्द क़ुद्दूस के सहारे १२ दिन के बाद कश्ती साहिल मालाबार बन्दर खम्बात पर पहुँची।

समन्दर के खारे पानी ने आपके कपड़ों को बोसीदा कर दिया था और आप भूक व प्यास की वजह से कमज़ोर हो गये थे आपने दुआ कि या अल्लाह कोई ऐसी तदबीर फ़रमा दे मुझे भूक न लगे और प्यास न लगे और मेरा कपड़ा कभी मैला न हो दुआ बारगाहे रब्बुल आलमीन में क़ुबूल होती है एक पुकारने वाला पुकारता है बदीउद्दीन आप मेरे साथ चलिये आपका इन्तिज़ार हो रहा है आपकी आँखें आपको आवाज़ देने वाले को तलाशती हैं कि हज़रत ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलाम आपके सामने ज़ाहिर होते हैं सरकार बदीउद्दीन अहमद क़ुतुबुल मदार ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के साथ एक ख़ास मकान की तरफ़ रवाना हो गए देखते हैं कि समन्दर के क़रीब एक बड़ी सुरंग है उसमें दाख़िल हो गए चलते चलते एक हसीन बाग़ सामने आया और उस बाग़ में एक बहुत ख़ूबसूरत महल नज़र आया आप उस महल में दाख़िल हुए क्या देखते हैं कि एक दालान है उस दालान में बहुत ख़ूबसूरत अज़ीमुश्शान नूरानी तख़्त मौजूद है जिस पर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं आपको सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया गया आपने दरूद व सलाम का नज़राना पेश किया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको तमाम इन्आमात से नवाज़ा और अपने नबुव्वत वाले मुक़द्दस हाथों से जन्नती खाना खिलाया और जन्नती शरबत पिलाया हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अतियात हासिल करने के बाद आपको कभी न भूक लगी और न कभी प्यास लगी और वही एक कपड़ा जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अता किया था पूरी ज़िन्दगी के लिये काफ़ी हो गया और कभी पुराना नहीं हुआ और फिर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक हाथों से आपके चेहरे को चूमा मस किया उसके बाद आपका चेहरा

इतना रौशन हो गया कि देखने वाले आपके चेहरे को देखने की ताब व ताक़त नहीं रखते थे। आपको देखकर देखने वाले को अल्लाह पाक याद आता और देखने वाला बेइख़्तियार होकर सज्दे में गिर पड़ता इसलिये आप अपने चेहरे पर सात नक़ाब डाले रहते थे। आपकी ज़ात से अहलियाने हिन्द ख़ूब ख़ूब फ़ैज़े आब हुए और उनका दाएराए तब्लीग़ बहुत वसीअ है। भारत की ज़मीन पर २८२ हि० में तशरीफ़ लाए उस वक्त भारत की हुदूद में कोई मुबल्लिग़े इस्लाम बाज़ाब्ता तौर पर तब्लीग़ी दस्तूर निज़ाम लेकर नहीं आया। यहाँ तक फिर हुज़ूर सैय्यद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार हलबी मकनपुरी क़ुद्दसा सिर्रहु का मुक़द्दस क़दम इस्लामी बाग़ व बहार लेकर हिन्दुस्तान की सरहद में दाख़िल हो गया देखते ही देखते भारत की चप्पे चप्पे पर इस मुबल्लिग़ ने परचमे इस्लाम को इस तरह बलन्द कर दिया कि जिसकी तमसील पेश करना इन्तिहाई मुश्किल अम्र है बड़ इख़्तिसार से तहरीर करता हूँ कि हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार क़ुद्दसा सिर्रहु ने तक़रीबन पाँच सौ छप्पन साल यानी २८२ हि० से ८३८ हि० तक दीन व मज़हब की जो गिरां क़द्र ख़िदमत अन्जाम दी है उसे बड़े बड़े मोअर्रिख़ और बड़े से बड़ा तज़किरा निगार हिसार तहरीर में लाने से क़ासिर है। बड़े ही वावसूक़ तौर पर यह बात तहरीर कर रहा हूँ कि हिन्दुस्तान के किसी भी ख़ित्ते में या किसी शहर में चले जाइये तो कोई न कोई निशानी सरकार ज़िन्दा शाह मदार के नाम की ज़रूर मिलेगी जो इस बात की गवाही देगी कि हुज़ूर मदारुल आलमीन का मुक़द्दस क़दम इस इलाक़े में भी दीने मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम लेकर आया था। इस जगह पर बैठकर हुज़ूर मदारुल आलमीन ने अवामुन्नास के तारीक दिलों में इस्लाम का चिराग़ रौशन किया था और फिर चन्द दिनों में फ़िज़ाए हिन्द को तब्लीग़ इस्लाम के लिये हमवार कर दिया था इसके बाद दसवी सदी हिजरी तक हज़ारहाए हज़ार सूफ़ियाए इस्लाम इस सर ज़मीन पर तशरीफ़ लाए और पूरे हिन्दुस्तान को ख़ान्क़ाही निज़ाम से जकड़ दिया २८२ हि० से लेकर दसवीं सदी हिजरी तक

हिन्दुस्तान की सरज़मीन को मज़हबे इस्लाम से जो फ़रोग़ और वुसअत हासिल हुई वह क़तई तौर पर जग ज़ाहिर है। मज़कूरा मुद्दत के दरम्यान मुताअद्दिद बुज़ुर्गाने दीन और औलियाए कामेलीन ने अपनी ख़ुदादाद सलाहियतों के बलबूते हिन्दुस्तान के तमाम ख़ित्तों को दौलते इस्लाम से मालामाल फ़रमा दिया तारीख़ व सैर के हवाले से और हमारे अन्दाज़े के मुताबिक़ इस सिलसिले में अहले हिन्द जिन बुज़ुर्गाने दीन के ज़्यादा मरहून मन्नत हैं उनमें से हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार हज़रत सैय्यदना बू अली शाह क़लन्दर पानीपती हुज़ूर सैय्यदना महबूब इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया अलैहिमुर्रहमा के इस्माए गिरामी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं बाद इन तमाम बुज़ुर्गाने दीन की तब्लीग़ी कारनामों को अहाताऐ तहरीर में लाना मुश्किल है। मुलाहिदा हिन्दुस्तान के औलिया इज़ाम की तारीख़ पढ़ने वाली शख़्सियात से ये बात तो पोशीदा नहीं है कि हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर बाज़ाब्ता तरीक़े से मुकम्मल तब्लीग़ी दस्तूर निज़ाम लेकर आने वाले औलियाए किराम मशाएख़ ज़विल एहतिराम में सबसे पहली ज़ात हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद बदीउद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार की है उसी अव्वलियत की बिना पर अस्हाबे तहक़ीक़ व नज़र आपको हिन्दुस्तान का अव्वल मुर्शिद बरहक़ और पीराने पीर भी कहते हैं।

आपकी ज़ात से जहाँ अहले हिन्द फ़ैज़ाने मुहम्मदी से मालामाल हुए वहीं दुनिया के बेश्तर मुमालिक के लोग आपके रूहानी फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ हुए और जितने भी सलासिल औलिया हैं तक़रीबन सभी में आपके फ़ैज़ मिस्ल आब रवां जारी है उसकी एक ख़ास वजह यह है कि आप शोबए विलायत में ऐसे बाअज़मत वली हैं जिनको सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इतना क़ुर्ब हासिल है कि दूसरे बानियाने सलासिल और सरगरदह हज़रात को हासिल नहीं जैसा कि आपकी निस्बतों से ज़ाहिर है और इस बात की तरफ़ मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा ने अपनी शोहरहे आफ़ाक़ किताब अख़्बारुल अख़्यार शरीफ़ में वाज़ेह इशारा

फ़रमाया है चुनांचे आप तहरीर फ़रमाते हैं कि "सिलसिलए उवैसिया किब्ररसिनी या बजौहेते दीगर ब पंज शश वास्ता बहज़रत रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मी पेवन्द व बाज़े मदारियान बिलावास्ता और आनहज़रत रिसालत पनाह मनसूब मी करदन्द।
आप तवील उमरी के बाअस और पाँच और छै वास्तों की वजह से सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँच जाते हैं।
आप हुज़र अलैहिस्सलाम से सलासिले ख़मसा की निस्बते जाफ़रया तैफूरिया सिद्दीक़िया महदविया उवैसिया से मुन्सलिक व मरबूत हैं।

निस्बते जाफ़रया : हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार बिन सैय्यद अली हलबी बिन सैय्यद बहाउद्दीन बिन सैय्यद ज़हीरुद्दीन बिन सैय्यद अहमद इस्माईल सानी बिन सैय्यद मुहम्मद बिन इस्माईल बिन सैय्यद इमाम जाफ़र सादिक़ बिन सैय्यद इमाम मुहम्मद बाक़र बिन सैय्यद इमाम ज़ैनुल आबदीन बिन सैय्यद इमाम आली मक़ाम शहीदे करबला हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम बिन सैय्यदना मौला अली व सैय्यदह फ़ातिमा ज़ोहरा बिन्ते रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलातो वस्सलाम।

निस्बते तैफूरिया : हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफूर शामी हज़रत हबीब अजमी हज़रत हसन बसरी हज़रत मौला अली हज़रत रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलाम।

निस्बते सिद्दीक़िया : हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफूर शामी हज़रत ऐनुद्दीन शामी हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि० हज़रत रसूल ख़दा अलैहिस्सलाम।

निस्बते महदविया : हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन शेख अहमद ज़िन्दा शाह मदार
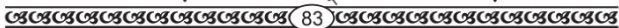
रूह पाक इमाम मेहदी आख़िरुज़्ज़मा अलैहिस्सलाम हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

निस्बते उवैसिया : हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार हज़रत रसूल ख़ुदा अलैहिस्सलाम मिर्रते मदारी में है कि निस्बते उवैसिया सिर्फ़ आप ही के ज़रिए बुज़ुर्गान हिन्द तक पहुँची। जिससे अवाम व ख्वास सभी ने फ़ैज़ हासिल किया। अलग़र्ज़ आपने हर तब्क़े के लोगों को बरकाते इस्लाम और नेमाते दीन से सरफ़राज़ किया सरज़मीन हिन्द का कोई सूबा न छोड़ा जहाँ आपने तब्लीग़े इस्लाम न फ़रमाई हो । गुजरात, महाराष्ट्रा, हिमांचल,मध्यप्रदेश, राजस्थान, करनाटक, तामिलनाडु, केरल, बिहार, बंगाल, कश्मीर वग़ैरहम हर जगह आपने तब्लीग़ इस्लाम फ़रमाई आपके अस्फ़ार का मुसलसल ज़िक्र नहीं कर सकता हूँ क्योंकि तारीख़ में मुझे तसलसुल नहीं मिल पाया है। अलबत्ता कुछ उन मक़ामात पर आपकी तशरीफ़ अरज़ाई और फ़ैज़े रसानी का ज़िक्र कर रहा हूँ जिन मक़ामात का जिक्र कुत्बे तवारिख़ में मिलता है।

पालनपुर : हज़रत बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार जब पालनपुर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो वहाँ का राजा बलवान सिंह मए चन्द अकाबिर सलतनत के मुसलमान हुआ आपने उसका नाम बज़ुबान फ़ारसी ज़ोरआवर रखा ज़ोरआवर खान ने तमाम मस्जिदें तामीर करवायीं पालनपुर से आपका क़ाफ़िला अजमेर शरीफ़ की तरफ़ रवाना हुआ और फिर कई दिन अजमेर में क़याम फ़रमाने के बाद आपका क़ाफ़िला आगरा और आगरा से भरतपुर बान्दी क्वीन जयपुर टोंक दबवा और कोटा का सफ़र किया और तब्लीग़े दीन मतीन फ़रमाते कैशूराव पाटन में जलवा अफ़रोज़ हुए इस इलाक़े में ये आपका दूसरा सफ़र था फिर सवाई करोल शिकोहाबाद जसवन्त नगर और भरथना वग़ैरह होते हुए कंचौसी के क़रीब रौनक़ अफ़रोज़ हुए कंचौसी में आपका क़ाफ़िला चालीस

रोज़ तक मुक़ीम रहा और उसके बाद आप अपने असल मक़ाम मकनपुर में जलवा बहार हुए। ८१८ हि० में मकनपुर पहुँचे। यहाँ अजीबो ग़रीब वाक़ेआत रूनुमा हुए जैसे आवाज़ों का आना दरिया से बन्द हुआ। दरिया ईसन जारी हुआ। मकनादेव मुसलमान हुआ वग़ैरह आपकी आमद से माहौल साज़गार हो गए। हज़रत बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार को जब यक़ीन हो गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म पूरा हो गया और मेरा काम ख़त्म हो गया और ज़रूरत बाक़ी न रही तो आपने अपनी आख़िरी आरामगाह का एलान फ़रमाया ख़बर फैलते ही लोगों का मजमा शर्फ़े ज़ियारत व मुलाक़ात के लिये उमड़ पड़ा। सैय्यदना सैय्यद बदीउद्दीन क़ुतुबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार क़दस सिर्रहु अपने बिरादर हक़ीक़ी हज़रत सैय्यद महमूदउद्दीन हलबी की नसल पाक में से आख़िरी सफ़रे हज से वापिसी के मौक़े पर हज़रत सैय्यद अब्दुल्लहा शामी हलबी जो आपके भतीजों की औलाद में थे उनके तीन फ़रज़न्दों को अपने हमराह हिन्दुस्तान लाए जिन में सबसे बड़े क़ुतबुल अकताब हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद ख्वाजा अबू मुहम्मद अरगून मदारी रह० और बक़िया दो हज़रात क़ुतबे वक्त हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद ख्वाजा अबु तुराब फन्सूर और सैय्यदना सैय्यद अबुल हसन तैफ़ूर मदारी अलैहिर्रहमा हैं।

फ़ैज़ाने सिलसिला मदारिया

तरीक़त व तसव्वुफ़ और इरशाद व सुलूक में सिलसिला मदारिया ऐसा आफ़ताबे जहाँ ताब है जिसकी ज़िया पाशियों से एशिया व यूरोप में तरीक़त व तसव्वुफ़ के तमाम सलासिल और इरशाद व सुलूक के तमाम मराकिज़ बिला वास्ता या बिलवास्ता किसी न किसी तौर से सराहतन या ज़िमनन वाबस्ताा व पेवस्ता हैं और जाबजा इसका इज़हार भी किया है चूंकि सिलसिला मदारिया सिर्फ़ पाँच या छै वास्तों से रहमते आलम आफ़ताबे करम

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँच जाता है इसलिये ये ख़ैर कसीर, ख़ैरुल क़ुरून और ख़ैरुर्रसल रहमते तमाम सैय्यदना अलअनाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तर क़रीब सिलसिला है और फ़ैज़ाने मुहम्मदिया और बरकाते अहमदिया का बहुत क़रीबी तक़सीम कार है इस पर मज़ीद इनआम ख़ास यह है कि ये शर्फ़ उवैसियत से भी मुम्ताज़ है इन्हीं ख़साएस व इम्तियाज़ात की वजह से तरीक़त व मआरफ़त की सज्जादगी पर मसनद नशीन अहले दिल और अहले नज़र ने इस सिलिसिला आलिया क़ुदसिया मुक़द्दसिया को हासिल फ़रमा कर अपनी कामयाबी और कामरानी की तकमील पर मुहर लगाई है और इसकी बरकात व हसनात से अपने दामने मुराद को पुर किया है। ज़ेल में इन चन्द सलासल औलिया अल्लाह का ज़िक्र करते हैं जिन्होंने मेरी मालूमात के मुताबिक़ फ़ैज़ान मदारियत से इस्तिफ़ादा करके अपने मन्सब कमाल पर मुहर तसदीक़ सब्रत किये हैं।

सिलसिला क़ादरिया बरकातिया पर फ़ैज़ाने मदारियत :

सिलसिला क़ादरिया बरकातिया रिज़विया के बुज़ुर्गों ने बिलवास्ता और बिला वास्ता बराहे रास्त और दूसरी किस्मऐ कई कई तरीक़ों से सिलसिलया आलिया क़ुदसिया बदीइया मदारिया का फ़ैज़ान हासिल किया है और सिलसिला आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से माज़ून व मुम्ताज़ हो कर फ़ख़्र व मुबाहात का इज़हार फ़रमाया है और अपने बुज़ुर्गों की सीरत व सवानेह की किताबों में इसका बरमला एलान भी फ़रमाया है।

हज़रत जमालुल औलिया कोड़वी पर फ़ैज़ाने मदारियत :

हज़रत सैय्यद शाह जमालुद्दीन कड़वी (९७३ हि० से १०४७ हि०) या कोड़ा जहानाबादी रह० अलैह आपके वालिद मोहतरम का नाम नामी शाह अब्दउद्दीन उर्फ़ हज़रत मख्दूम जहानिया सानी बिन शाह बहाउद्दीन है (रहमहमाउल्लाह तआला) आपके वालिद बुज़ुर्गवार ने अव्वल आपको अपने

सिलसिला आलिया चिश्तिया निज़ामिया में बैअत से मुशर्रफ़ फ़रमा कर निस्बते क़ादरिया सोहरवरदिया से भी सरफ़राज़ बख्शी। वालिद मोहतरम से अपने ख़ानदानी निस्बतों से मुम्ताज़ व माज़ून होने के बाद मकनपुर तशरीफ़ लाकर आस्तानए कुतबुल मदार रज़ि० पर हाज़िरी दी उस वक्त हज़रत सैय्यद मुबारक अली रह० तआल अलैह जो हज़रत अबुल हसन तैफ़ूर रह० की औलाद से हैं मकनपुर शरीफ़ में मौजूद थे उन्होंने आपको अपना महमान फ़रमाया और अपने सिलसिलए मदारिया की निस्बत से मालामाल फ़रमा कर ख़िलाफ़त व इजाज़त अता फ़रमाई। (मदाएह हुज़ूर नूर - गुलाम शब्बर क़ादरी बरकाती) नीज़ आपने जिन मशाएख़ वक्त से उलूम ज़ाहिर व बातिन का इक्तिसाब किया है उनमें शेख़ क़यामउद्दीन बिन कुतुबुद्दीन शेख़ अढन जौनपुरी (रह० तआला अलैहिम अजमईन) का नाम सरे फ़ेहरिस्त है जैसाकि तज़किरा मशाएख़ क़ादरिया बरकातिया रिज़विया सफ़हा नं० ३११ पर दर्ज है और शेख़ क़यामउद्दीन बिन कुतुबुद्दीन (रह०) ने भी आपको सिलसिलए आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया है जैसा कि हज़रत शाह सैय्यद अबुल हुसैन अहमद नूरी बरकाती मारहरवी रह० अपनी किताब अलनूर वलबहा में अपने शिजरए बदीइया मदारिया में इसका इज़हार फ़रमाते हैं।

तर्जुमा : कि ये फ़क़ीर अबुल हुसैन नूरी अफ़ी अन्हु कहता है कि मुझको सिलसिलाा बदीइया मदारिया की इजाज़त मुझको मेरे दादा मुर्शिद सैय्यद आले रसूल अहमदी कुद्दसा सिर्रहु ने दी उन्हें हज़रत अच्छे मियाँ साहब से उन्हें सैय्यद हमज़ा से उन्हें सैय्यद आल मुहम्मद साहब से उन्हें साहबुल बरकात मारहरवी से उन्हें सैय्यद शाह फ़ज़लुल्लाह कालपवी से उनहें सैय्यद अहमद से उन्हें अपने दादा सैय्यद मुहम्मद साहब से उन्हें जमालुल औलिया से उन्हें शेख़ क़यामउद्दीन से उन्हें शेख़ कुतुबुद्दीन से उन्हें शेख़ सैय्यद जलाल अब्दुल क़ादिर से उन्हें सैय्यद मुबारक से उन्हें सैय्यद अजमल से उन्हें आरिफ़ अजल कामिल अकमल मौलाना बदीइउल हक़

वलमिल्लतुद्दीन मदार मकनपुरी रह० तआला अलैह से।

जमालुल औलिया का निस्बते उवैसिया से मुस्तफ़ीज़ होना :

हज़रत जमालुल औलिया कोड़वी जहाँ ज़ाहिरी निस्बतों से सरफ़राज़ व मुम्ताज़ थे वहीं आप बातिनी निस्बते उवैसिया मदारिया से भी मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद थे चुनांचे साहबे तज़किरा मशाएख़ क़ादरिया बयान करते हैं कि "आपने बिला वास्ता अरवाहे मुबारका सैय्यदना मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि० अन्हु ख़्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द और हज़रत शाह बदीउद्दीन कुतबुल मदार रज़ि० तआला अन्हुमा से फ़ैज़े उवैसिया हासिल फ़रमाया। (मशाएख़ क़ादरिया रिज़विया स ३१०/ मौलाना अब्दुल मुजतबा रिज़वी)

मीर सैय्यद मुहम्मद तिरमिज़ी कालपवी और सिलसिलए मदारिया :

मीर सैय्यद मुहम्मद कालपवी कुद्दसा सिर्रहु जो कालपी शरीफ़ की ख़ानक़ाह के बानी मुबानी हैं और सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया के इमामों में से हैं आपको सिलसिलए क़ादरिया चिश्तिया व सोहरवरदिया के साथ सिलसिलए आलिया बदीइया मदारिया का फ़ैज़ान भी अपने पीरो मुर्शिद से बदरजा अतम हासिल हुआ है चुनांचे जनाब मीर गुलाम अली आज़ाद बिलगिरामी कुद्दसा सिर्रहुस्सामी फ़रमाते हैं कि -

तर्जुमा : यानी मीर सैय्यद मुहम्मद तिरमिज़ी कालपवी कुद्दसा सिर्रहु ने दरस निज़ामी की आख़िरी किताबें किसी क़दर मौलाना उमर जाजमुई रूहउल्लाह रूहा से पढ़ी और अकसर शेख़ कोड़वी कुद्दसा सिर्रहु के हलक़ा दरसे में शामिल रहे और फ़ज़ीलत सूरी में बुलन्द मरतबा हासिल किया और फ़ातिहा फ़राग़ हज़रत जमालुल औलिया से पाया और आप ही से तरीक़त आलिया चिश्तिया में बैअत हुए और सिलसिलए क़ादरिया व सोहरवरदिया और सिलसिलए मदारिया में इजाज़त हासिल किया।

मीर गुलाम अली आज़ाद बिलग्रामी मतबूआ आम आगरा १६१० हि० मौलाना गुलाम शब्बर बरकाती बदायूँनी फ़रमाते हैं कि हज़रत मीर सैय्यद मुहम्मद कालपवी क़ुद्दसा सिर्रहु ने हज़रत जमालुलऔलिया कोड़वी क़ुद्दसा सिर्रहु से तरीक़ए चिश्तिया में बैअत की और सलासिले क़ादरिया सोहरवरदिया मदारिया में इजाज़त पाई।
(मदाएह हुज़ूर नूर मतबूआ १३३४ हि० स २८ आईना कालपी स २०)

साहबे तज़किरा मशाएख़ क़ादरिया भी यही शहादत पेश करते हुए रक़मतराज़ हैं कि "आप जब हज़रत जमालुलऔलिया रज़ि० की ख़िदमत बाबरकत में कसबे इल्म के वास्ते तशरीफ़ ले गए तो आप के आली ज़र्फ व सलाहियत को देखते हुए अपने सिलसिलए बैअत में दाख़िल फ़रमाया और तमाम सलासिल जैसे क़ादरिया चिश्तिया सोहरवरदिया नक्शबन्दिया और मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। (तज़किरा मशाएख़ क़ादरिया बरकातिया रिज़विया ३१६ मतबूअल मजमउल इस्लामी मुबारकपुर)

बुज़ुर्गाने दीन का तरीक़ा रहा है कि जब उन पर ख़ुदा वन्द क़ुद्दूस का कोई ख़ास इनाम नाज़िल होता है और किसी किसी बुज़ुर्ग से कोई नेमत ख़ास उन्हें मिलती है तो अहलयान नेमत में उस नेमत को तफ़वीज़ व तक़सीम करने में कोई दरीग़ नहीं करते चूंकि शेख़ कामिल हज़रत शाह जमालुलऔलिया क़दस सिर्रहु मुख़्तलिफ़ तरीक़ से सिलसिलए आलिया मदारिया में इजाज़त व ख़िलाफ़त के मजाज़ व माजून थे इसलिय निहायत ही सख़ावत व दरियादिली के साथ आपने अपने ख़ुल्फ़ा को इस सिलसिलए मुबारका की इजाज़त व ख़िलाफ़त मरहमत फ़रमाई।

हज़रत लध्धा शाह बिलग्रामी का सिलसिलए मदारिया :

हज़रत मीर सैय्यद लुत्फ़उल्ला शाह उर्फ़ लध्धा शाह बिलग्रामी क़दस सिर्रहुस्सामी का नाम नामी दफ्तरे औलियाए बिलग्राम में सैय्यदुल आरफ़ीन के

लक़ब के साथ मुन्दरज है ख़ानदान के बेशतर मुआसिर औलिया अल्लाह ने आप से बातिनी तरबियत हासिल की। हज़रत सैय्यद शाह बरकतउल्लाह मारहरवी, सैय्यद शाह आल मुहम्मद मारहरवी, सैय्यद निजातउल्लाह मारहरवी, सैय्यद मुहम्मद बिलग्रामी, सैय्यद मुहिब्बुल्लाह बिलग्रामी, मीर सैय्यद मुहम्मद शाएर इब्ने सैय्यद अब्दुल जलील नामी बिलग्रामी रहमहुमउल्लाह तआला अलैहिम अजमईन वग़ैरह से अकाबिर ख़ानवादह बरकातिया ने आप से फ़ैज़ हासिल किया आपके वालिद माजिद का नाम सैय्यद शाह करामुल्लाह (१०८३ हि०) हज़रत शाह लध्धा बिलग्रामी क़ुद्दसा सिर्रहु ने हज़रत मीर सैय्यद अहमद तिरमिज़ी क़ुद्दसा सिर्रहु से ख़रक़ा ख़िलाफ़त और पाँचों सलासिल की इजाज़त का तमग़ा हासिल किया। (मासरुल किराम १६३ - १६५)

आपका सिलसिला बदीइया मदारिया का शिजरा ये है -

मीर सैय्यद लुत्फ़उल्लाह शाह लध्धा बिलग्रामी। सैय्यद अहमद तिरमिज़ी कालपवी। सैय्यद मुहम्मद तिरमिज़ी कालपवी। शेख़ जमालुल औलिया। शेख़ क़यामउद्दीम। शेख़ क़ुतबुद्दीन। सैय्यद जलालउद्दीन अब्दुल क़ादिर। सैय्यद मुबारक। सैय्यद अजमल बहराईची। आरिफ़ कामिल शाह बदीउल हक़ वालिदैन मदार मकनपुरी क़ुद्दसा सिर्रहु। शेख़ अब्दुल्लाह शामी। शेख़ अब्दुल अव्वल। शेख़ अमीनउद्दीन। मौलाए कायनात अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुरतज़ा रज़िअल्लाहु तआला अन्हु। सैय्यदुल मुरसलीन सैय्यदना मुहम्मद रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (दाएरा क़ादरिया बिलग्राम शरीफ़ स २०२) डॉक्टर साहिल सहसरामी।

शेख़ अमीर अबुल उला एहरारी और फ़ैज़ाने सिलसिलए मदारिया :

सिलसिलए अबुल उलाइया के सरगरोह व सरताज शेख़ अमीर अबुल उला एहरारी रहमउल बारी भी सिलसिलए आलिया मदारिया बदीइया

की नेमत व बरकत से मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ीज़ थे और अपने मुन्तख़ब और मख्सूस लोगो को सिलसिला मुबारका मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया करते थे चुनानचे हज़रत सय्यद मुहम्मद कालपवी रज़ि० जब इक्तिसाबे फ़ैज़ के लिये हज़रत सय्यद अबुल उला एहरारी कि ख़िदमत में बईशारे बातिनी हज़रत ख़्वाजा नक्शबन्द कुद्दसा सिर्रहुल अज़ीज़ अकबराबाद (आगरा) पहुचे तो कई माह हज़रत अबुल उला कुद्दसा सिर्रहु की सोहबत बाबरकत मे रहे और जब आप वापस होने लगे तो आप को हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द कुद्दसा सिर्रहु की एक तसबीह इनायत फ़रमाई और बैत व ख़िलाफ़त सिलसिला आलिया क़ादरिया चिश्तिया नक्शबन्दिया मदारिया अबुल उलाईया से सरफ़राज़ फ़रमाया।

(तज़किराह मशाएख़ क़दरिया रिज़विया सफ़ा ३१८/इसरार अबुल उला)

मालूम होना चाहिये के हज़रत मीर सय्यद मुहम्मद कालपवी कुद्दसा सिर्रहुल कवी के ख़ुलफ़ा की तादाद कम अज़ कम चौदह बयान की जाती हैं जो मज़कूराह सलासिले ख़मसा के माज़ूनो मजाज़ थे लेकिन उनमे ख़ुसूसियत के साथ मीर सय्यद अहमद कालपवि कुद्दसा सिर्रहु काबिले ज़िक्र हैं के आप मज़कूराह पाँच सलासिल यानी क़ादरिया चिश्तिया सोहरवरदिया नक्शबन्दिया और मदारिया हासिल फ़रमा कर अपने साहब ज़ादे जनाब मीर सय्यद फ़जलुल्लाह कालपवी कुद्दसा सिर्रहु को उनका अमीन व माज़ून करार देकर अपना ख़लीफ़ा व मिजाज़ ठहराया और सआदत मन्द फ़रज़न्द ने अपने बाप बाप दादा से मिली नेमतो को दूसरे ख़ानवादो में बड़ी जवादी सख़ावत के साथ तकसीम फ़रमा कर अजदाद कि सुन्नत को ज़िन्दा रखा।

हज़रत सय्यद शाह बरकत उल्लाह माहरारवी कुद्दसा सिर्रहु पर फ़ैज़ाने मदारिया कि बारिश

हुज़ूर शाह बरकत उल्लाह माहरारवी कुद्दसा सिर्रहु जिनकी ज़ाते गिरामी और नामे नामी कि तरफ़ सिलसिला बरकातिया मनसूब है माहरारा

मुताहरा को रूहानियत कि आमज गा और तरीकत व तसव्वुफ़ कि दर्सगाह बनाने वाली ज़ात आप ही की ज़ात बाबरकत है आपने उलूमे बातिन व सुलूक अपने वालिद मोअज़्ज़म हज़रत सय्यद शाह उवैस कुद्दसा सिर्रहु से हासिल फ़रमाया और वालिद माजिद ने जुमला सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त मरहम्मत फ़रमा कर सलासिल ख़मसा कादरिया, चिश्तिया, नक्शबन्दिया, सोहरवरदिया, मदारिया में बैत लेने की भी इजाज़त मरहम्मत फ़रमाई।

(तज़किराह मशाएख़ कादरिया बरकातिया रिज़विया सफ़ा ३३३)

शाह फ़ज़लुल्लाह कालपवी कुद्दसा सिर्रहु से सिलसिला आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त

हज़रत शाह बरकत उल्लाह माहरारवी रह० अल कवी ने जब सय्यदना शाह फ़ज़लुल्लाह रज़ि० के इल्म व हिकमत व सुलूक व मारफ़त का शहर सुना तो कालपी शरीफ़ जाने का इरादा किया। नूरूल आरफ़ीन हज़रत सय्यद शाह फ़ज़लुल्लाह कुद्दसा सिर्रहु की बारगाह आलिया वक़ार में पहुँचे हज़रत की निगाह आप पर पड़ी आगे बड़ कर अपने सीने से लगाया और इरशाद फ़रमाया, दरया बादरया पेवस्त। और चलते वक़्त इस तरह इरशाद फ़रमाया, तरजुमा - ऐ शाह बरकत उल्लाह आप की ज़ात जुमला अमूर सूरी व मानवी से मामूर है और आप का सुलूक इन्तिहा को पहुँचा हुआ है। आप तशरीफ़ ले जाए और अपने घर ही क़याम फ़रमाए मज़ीद तालीम व तालीम की आपको हाजत नहीं। फिर एक दो मुकद्दमात और बहुत ख़ास चीज़ें जो उस राह के माज़मात से थी इनायत फ़रमा कर सिलसिला ख़मसा, क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया, सोहरवरदिया, मदारिया की इजाज़त मै सनद व ख़िलाफ़त और दूसरे आमाल व अशग़ाल अलायत फ़रमा कर दो रोज़ से ज़्यादा वहा रहने की इजाज़त नहीं दी।

(मशाएख़ क़ादरिया रिज़विया सफ़ा ३३४)

बिरादराने मिल्लते इसलामिया! आप को मालूम होना चाहिए के सय्यद शाह बरकत उल्लाह माहरारवी कुद्दस सिर्रहु से सिलसिला ख़मसा

क़ादरिया,चिश्तिया, नक़्शबन्दिया, सोहरवरदिया और मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त मुनतक़िल होकर सय्यद ऑल मुहम्मद माहरेरवी क़ुद्दसा सिर्रहु को पहुँची है और उनसे हज़रत सय्यद हमज़ा माहरेरवी क़ुद्दस सिर्रहु को और उनसे हज़रत सय्यद अच्छे मियाँ माहरेरवी क़ुद्दस सिर्रहु को और उनसे हज़रत सय्यद आले रसूल अहमदी क़ुद्दस सिर्रहु को और उनसे हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ क़ुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़ को पहुँची है मज़ीद तफ़सील के लिये ज़ेल की किताबों का मुताला करें। मॉशिरूल कराम, सेह अलतवारीख़, काशिफ़ुल असतार, मद्दाहे हुज़ूर नूर, ख़ानदाने बरकात, बरकात माहराराह वग़ैराह।

हुज़ूर नूरी मियाँ क़ुद्दसा सिर्रहु को सिलसिला मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त

हुज़ूर सय्यदना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी माहरेरवी क़ुद्दस सिर्रहु की वह ज़ाते गिरामी है जिनसे मुफ्ति अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ने तमाम सलासिल हक़ बरगज़ीदाह की इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल कर के उनकी इशाअत व तशहीर की है अैर यह एलान भी किया है के यह वह सिलसिला है जो मुझे महबूब व पसन्द हैं। हुज़ूर नूरी मियाँ क़ुद्दस सिर्रहु को ख़िलाफ़त व इजाज़त अपने शेख़ तरीक़त हज़रत सय्यद शाह आले रसूल माहरेरवी क़ुद्दस उल्लाह सिर्रहुल अज़ीज़ से थी चुनानचे राहे मारफ़त की तकमील के बाद आप इजाज़ते आम मराहमत फ़रमाई और जिस सनद को आप के शेख़ तरीक़त ने अता फ़रमाया था वह यह है।

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महरबान रहमत वाला है

हज़रत जनाब सय्यद आले रसूल अहमदी फ़रमाते हैं के नूरे निगाह सरवरे क़ल्ब वसीना मेरी आँखो की ठंडक और मेरे दिल के क़रार सय्यद अबुल हुसैन नूरी मियाँ साहिबे तूल उमराह वज़ीदे क़दराह, को पाँचो सलासिल यानी क़ादरिया, चिश्तिया, नक़शबन्दिया, सोहरवरदिया और मदारिया क़दीमा और

जदीदाह और जदीद सलासिल क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया और अलविया मिनामिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त और ख़ानदान बरकातिया के मामूला तमाम अज़कारो अशग़ाल और औराद व ज़ाएफ़ की इजाज़त बईना इसी तरह दे रहा हूँ जिस तरह मेरे चचा मुरशदी व मौलाई हज़रत सय्यद शाह अबुल फ़ज़ल आले अहमद अच्छे मियाँ साहब अनरूल्लाह बुरहाना से और मेरे वालिद माजिद हज़रत सय्यद आले बरकात उर्फ़ सुथरे मियाँ नव्वरूल्लाहू मरकदहु से पहुँची है और मौज़ूफ़ को मै अपना ख़लीफ़ा मिजाज़ व माज़वन क़रार देता हूँ। जो शख़्स बैत का इरादा ज़ाहिर करे और मुरीद होना चाहे उसको यह सिलसिलाए आलिया में दाख़िल फ़रमा कर मुरीद करें और उसकी सलाहियत के मुताबिक ख़ानदानी ज़िक्र व शुग़ल और विर्द का हुक्म दे। अल्लाह सुबहानोतआला से दुआ है के मौसूफ़ को बुर्जुगो के रासते पर ग़ामज़न फ़रमाए अल्लाह तआला से ही मदद दरकार है और इसी पर भरोसा है।

हुज़ूर सय्यदना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ क़ुद्दसा सिर्रहु को उनके आबाओ अजदाद से जो फ़ैज़ व बरकात हासिल हुए हैं वह अपनी जगह ख़ास हैं लेकिन बारगाहे क़ुतबुलमदार सय्यदना सय्यद बदीउद्दीन रज़ि० से आप पर बड़ी मख़सूस करम फ़रमाईयाँ हुई है। मरातिब व मुनासिब की बशारतो से नवाज़ा गया है और ख़ुसूसियत के साथ ओहदाऐ क़ुतबियत से आप को सरफ़राज़ किया गया है चुनानंचे साहिबे तज़किराह मशाएख़ बरकातिया आप की अज़मत शान को ज़ाहिर करते हुए रक़म तराज़ हैं के "आप इक़ताबे सबॉ में से एक क़ुतुब है जिनकी बशारत हज़रत शाह बू अली क़लन्दर पानी पती और हज़रत शाह बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार रज़ि० ने दी है और यही इस सिलसिलाए बशारत के ख़ातिम हैं।
(तज़किरा मशाएख़ क़ादरिया बरकातिया सफ़ा १८३ बाहवाला तज़किराह नूरी सफ़ा ५५/६५)
ग़ालिबन इसी करम नवाज़ी की वजह से हज़रत नूरी मियाँ क़ुद्दसा सिर्रहु ने क़ुतबुल मदार सय्यदी ज़िन्दा शाह मदार रजि० की मोहब्बत व इनायत में डूब

कर आशिक़ाने क़ुतबुल मदार के वज़ीफ़ा के लिये ''सलातौ मदारिया'' नाम की एक किताब लिखी है जिसमे हज़रत सय्यद बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार रज़ि० की अज़माए हुसना निन्यानवे सेग़ों के साथ दर्ज हैं।

(तज़किराह मशाएख़ ६८३)

हज़रत नूरी मियाँ का शिजरऐ मदारिया:

आप का शिजराह मदारिया बदिया जिसको आप ने अपनी किताब अन्नूर वल बहा में ख़ुद रक़म फ़रमाया है इस तरह है।

सय्यदुल उलमा आले मुसतफ़ा अलैहि अलरहमा और सिलसिलऐ मदारिया:

जनाब सय्यद अबुल हुसैन आले मुसतफ़ा सय्यद मियाँ बरकाती नूरी अलैहि अल रहमॉ जो सय्यदुल उलमा से मशहूर हैं उलमाए अहले सुन्नत और सालकान राहे मारफ़त में एक मख़सूस मुक़ाम रखते हैं माहरहेरा मुताहरा और ख़ानक़ाहे बरकातिया के चशमोचिराग़ होने के नाते उस दौर में जमाते अहले सुन्नत में आप को बड़ी पज़ीराई हासिल थी। सिलसिलऐ आलिया बदिया मदारिया के इजराए फ़ैज़ से मुताल्लिक़ कुछ बाते ग़लत तौर से आप की ज़ात से मनसूब कर दी गई जिनकी सफ़ाई और वज़ाहत के लिये ६/दिसम्बर १९६१ ई० को एक तवील मकतूब ऑल इंण्डिया सुन्नी जमियतुल उलमा के लैटर पैड पर ख़ानकाह आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़ के एक बुर्ज़ुग के नाम आप ने इरसाल फ़रमाया जो आज भी अपनी असली हालत में अलहाज सय्यद ज़ुलफ़िक़ार अली क़मर मदारी मद्दाह ज़िल्लहुल आली के पास मौजूद है और नाचीज़ मौलिफ़ के पास इसकी फ़ोटो कापी मौजूद है। मदार बुक डीपो मकनपुर शरीफ़ में उस मकतूब को फ़ोटो कापी के साथ जुलाई २००३ दो हज़ार तीन में मुकम्मल शाए कर दिया है, ज़ेल में इसके कुछ इक़तिबा सात रक़म किये जा रहें हैं जिनहें पढ़ कर सुन्नी उलमा और अवाम को यह एहसास होगा के सिलसिला मदारिया को कैसे कैसे

बुर्ज़ुगो ने अपने सर का ताज बनाया है और इस सिलसिला मुबारका के फ़ुयूज़ व बरकात के इज़रा का इनकार करने वाले माहरहेरा मुताहरा के तमाम बुर्ज़ुगो की तौहीन व तनक़ीज़ करते हैं जो इनके ईमान व अक़ीदाह के लिये ज़हरे क़ातिल है और अल्लाह तआला से जंग मोल लेने की सरटीफ़िकेट है अलइया जबिल्लाह।

मिला ख़ात हो हुज़ूर सय्यदुल उलमा अलैहि अल रहमा के मकतूब का इक़तिबास आप फ़रमाते हैं''

''आप तो अच्छी तरह जानते हैं ख़ानक़ाहे आलिया क़ादरिया बरकातिया माहरहेरा मुताहरा तीन सदीयों से नामूस औलियाकिराम अलैहिम अल रहमा व अल रिज़वान के लिये अपने सारी क़ुव्वते और ताकते बाज़ी पर लगाए हुए है तो फ़िर इस ख़ानक़ाह शरीफ़ के एक हक़ीर ख़ादिम की हैसियत से क्यों कर मतसूर था के वह अपने एक मुरशिदे इजाज़त ज़ात बरगुज़ीदाह सफ़ात हुज़ूर पुर नूरे सय्यदना क़ुतबुल मदार रज़ि० व रज़ा अनाह की बारगाहे फ़ज़ीलत पनाह में ज़ुबान गुसताख़ाना दराज़ करता ऐ सुबहानअल्लाह! क्या मैं इतना अहमक था के जिस शाख़ पर बैठा था उसी पर कुलहाड़ी चलाता सिलसिलऐ आलिया मदारिया के इजराए फ़ैज़ का इनकार किया ख़ुद मेरे जद्दे इकराम सय्यद शाह बरकत उल्लाह क़ुद्दसा सिर्रहुल अज़ीज़ की मॉज़ अल्लाह तजहील व तहमीक़ के मुतरादिफ़ ना होता।

(मकतूब सय्यदुल उलमा सफ़ा ३)

मेरे जद्दे आला हज़रत साहब अलबरकात सय्यद शाह बरकत उल्लाह अल बिलगिरामी व माहरेरवी अलैहि अल रहमा कालपी शरीफ़ से सिलसिलऐ आलिया मदारिया लाए और फ़क़ीर को जिस तरह सलासिल आलियात चिश्तिया, सोहरवरदिया नक्शबन्दिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त है इस सिलसिलऐ मुबारका की भी इजाज़त व ख़िलाफ़त है। (मकतूब सफ़ा २/) आप बफ़ज़्ले तआला अहले इल्म हैं अच्छी तरह जानते हैं के ऐसे कलाम अजिल्ला बुर्ज़ुगाने इज़्ज़ाम रिज़वानुल्ला तआला अलैहि अजमईन के लिये कहे

गए मसलन अर्ज़ करता हूँ मोहद्दिसीन ने इत्तेफ़क किया के सय्यदना अमीरूल मोमिनीन मौलाए काएनात सय्यदना मुरतज़ा अली करमउल्ला तआला वजहुल करीम से हुज़ूर एहसनुल ताबईन सय्यदना इमाम हसन बसरी रज़ि० को लक़ा व सोहबत हासिल न थी दूसरे गिरोह ने इसका रद किया और सय्यदना इमाम को हुज़ूर अमीरूल मोमिनीन से ख़िरक़ा ख़िलाफ़त साबित किया। सिलसिलऐ नक्शबन्दिया सिद्दीकया के सिलसिले में फ़िर मोहद्दिसीन ने कलाम किया के सय्यदना इमाम क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अमीरूल मोमिनीन सय्यदना सिद्दीके़ अक्बर रज़ि० को हुज़ूर सय्यदना सलमान फ़ारसी रज़ि० से बैत व ख़िलाफ़त न थी फ़िर आगे चल कर हज़रत सय्यदना अबुल हसन ख़िरक़ानी और हज़रत सय्यदना बायज़ीद बुसतामी रज़ि० के दरमियान सौ बरस का ज़माना साबित करते हुए बाहमी लक़ा व सोहबत का इनकार किया इसी तरह हज़रत सय्यदना अली अहमद मख़दूम साबिर पाक और हज़रत सय्यदना कुतबे जमाल हाँसवी का बाहमी मक़ाला भी रिवायतो में मज़कूर है इरशाद फ़रमाया जाए क्या बराए तज़किराह इन रिवायतो में से किसी का बयान करने वाला इन सलासिल आलिया का मुनकिर करार दिया जाएगा क्या यह सारे सलासिल आलिया माज़ अल्लाह सोख़्त व महरूम अलफ़ैज़ हो गए हैं हाशा व कला हरगिज़ नहीं तो फ़िर इनसाफ़ फ़रमाइये के फ़क़ीर के इस इक़रार के बावजूद के मेरे ख़ानदान ब वक़ार के पास सिलसिलऐ मदारिया की इजाज़त मौजूद है जो कालपी शरीफ़ से आई है और खुद फ़क़ीर को इजाज़त है मुझ पर सिलसिलऐ आलिया के सिरे से सोख़्त होने के अक़ीदाह का इलज़ाम बोहतान है या नहीं लिहाज़ा फ़क़ीर का मसलक समाअत फ़रमाइये के यह फ़क़ीर ख़ाकपाए मुर्शिदाने इज़्ज़ाम हुज़ूर पुरनूर सय्यदना बदीउलमिल्लत व अल शरीअत व अल तरीक़त व अल इसलाम व यन शेख़ाना व मुर्शिदना सय्यदी क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० अपना वैसा ही मुर्शिद इजाज़त मुफ़िज़ मुफ़िद यक़ीन करता है जैसा के ख़्वाजा ख़्वाजगान सुलतानुल हिंन्द

वलीउल हिंन्द अताए रसूल सय्यदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज चिश्ती अजमेरी व हज़रत ख़्वाजा बहाउलमिल्लत व यन सय्यदना मौलाए नक़्शबन्द व सय्यदना शेख़ुल शियूख़ शहाबुल मिल्लत व यन उमर सोहरवरदी रिज़वानुल्लाह तआला अजमईन को। (मकतूब सय्यदुल उलमा सफ़ा ३/४/)

माहराराह मुताहरा मे बाफ़ज़ले तआला मदारी गद्दी सदियों से क़ायम है और फ़क़ीर के बुर्जुगानेकिराम हमेशा से इसकी ख़िदमत करते आए। मेरे जद करीम हुज़ूर शम्सेमिल्लत व यन सय्यदना आले अहमद अच्छे मियाँ कुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़ ने अपने अहद मुबारक में सरकार मदारूल आलमीन के नामे नामी से मनसूब मेला क़ायम कराया जो ६/ जमदिउल अव्वल को बराबर होता है और इस दिन जब गद्दी नशीन अपना जुलूस लेकर दरगाह बरकातिया पर हाज़री देते हैं तो वक्त का साहिबे सज्जादाह दरगाह शरीफ़ के दरवाज़े पर ख़ैर मक़दम करता है और उनको फ़ातिहा के लिये ले जाता है फ़िर हवेली सज्जादाह नशीनी पर आते हैं और फ़ातिया का तबर्रूक सज्जादा बरकातिया को देते हैं और साहिबे सज्जादा बरकातिया गद्दी नशीन को दरगाह बरकातिया की तरफ़ से हदिया के तौर पर एक रूमाल और सवा रूपया नज़र देते हैं। यह नज़र मेरी दरगाह कमेटी के बजट में सालाना पास होती है और वक़्फ़ बोर्ड के नोशते में आती है मौजूदा गद्दी नशीन मियाँ दीदार अली शाह साहब फ़क़ीर के बड़े अच्छे दोस्त हैं और यह बाहमी रूहानीं रिश्ता इनके और फ़क़ीर के दरमियान अभी भी क़ायम है। दरगाह शरीफ़ के मक़तब की मनज़ूर शुदा छुट्टीयों में मेला शाह मदार की तहनीत खुशनुमा काग़ज़ो पर देते हैं और बच्चे अपने उस्तादों की ख़िदमते ज़र नक़्द से करते हैं। यह रक़म ''मदारी'' कहलाती है। फ़क़ीर के ख़ानदान में मख़तूबा लड़कीयों को उनके होने वाले शौहरों के घरो से ६/ जमादिउल औला को जोड़ा और मिठाई और नक़्द ज़ेवर जाता है और हुज़ूर ज़िन्दा शाह मदार अलैहि अल रहमा के उर्सो विसाल की इसी तरह याद मनाई जाती है। यह सारी चीज़ें सदियों से मुझसे और मेरे सिलसिले से वाबसता हैं और फ़िर मुझ पर

सिलसिला आलिया के सोख़्त समझने का इलज़ाम? माज़ अल्लाह माज़ अल्लाह। (मकतूब सय्यदुल उलमा सफ़ा ५/)
आख़िर में जनाब की इत्तिला के लिये अपना शिजराह आलिया मदारिया लिख रहा हूँ जो मैने अपनी ख़ानदानी किताब सनादुलनुलबहा फ़ी सनादुलहदीस व सलासिल अल औलिया मुन्निफ़ जद करीम हज़रत सय्यदना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी क़ुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़ से नक़ल किया है, मिला ख़त हो।

हज़रत एहसानुल उलमा और सिलसिला मदारिया:

एहसानुल उलमा हज़रत सय्यद शाह मुसतफ़ा हैदर हसन मियाँ माहरेरवी क़ुद्दसा सिर्रहु (१३४५हि० १४१६हि०) जिन्होंने सिलसिला क़ादरिया बरकातिया की तरवीज व शाअत में नुमाइयां किरदार अदा किया है आप ने इसलाम व सुन्नत के फ़रोग़ के लिये अपनी पूरी ज़िन्दिगी वक़्फ़ कर रखी थी हज़ारों उलमा व सूफ़िया आप के ख़ुलफ़ा व मुरिदीन के ज़मरे में दाख़िल हुए और आप के हुसनात व बरकात से मुसतफ़ीद व मुसतफ़ीज़ हुए। आप को जहां दूसरे सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़ हासिल थी सिलसिला मदारिया जदीदा व क़दीमा में भी माज़वन व मिजाज़ थे। ताजुल उलमा जनाब सय्यद शाह मुहम्मद मियाँ क़ादरी बरकाती क़ुद्दस सिर्रहु ने और आप के वालिद माजिद ने आप को इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़ा। आप (मुहम्मद मियाँ साहब) फ़रमाते हैं मैंने ''बर्ख़ुरदार नुरूलअबसार सय्यद हाफ़िज़ मुसतफ़ा हैदर हसन मियाँ सल्लमाउल तआला को जुमला सलासिल ख़ानदानी क़दीमा व जदीदा क़ादरिया, चिश्तिया, सोहरवरदिया, नक़्शबन्दिया व बदीया मदारिया व मिनामिया अलविया और ओवैसिया जलीलिया व बरकातिया व मुनव्विरिया व रज़्ज़ाक़िया व आले रसूलिया की व नीज़ जुमला आमाल व और अदुअज़कार व अशग़ाल व औफ़ाक़ ।।।।। व दीगर अदायों ख़ानदानी की इन सब तरीको से जो फ़कीर हक़ीर को अपने हज़रत मुर्शिदे बरहक़ इमामुल मुर्शिदीन क़िबला व काबा वालिद माजिद और अपने हज़रत नाना साहब नूरूल आरफ़ीन क़िबला सय्यद शाह अबुल हुसैन नूरी मियाँ साहब और

हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब क़ुदसत इसरार हम्मुल अज़ीज़ से बाफ़ज़ले तआला हासिल है। इजाज़त नामा व ख़िलाफ़त आमॉ व ख़ासा दी और उन इन सब सलासिल में बैत लेने का मजाज़ व माजून किया।
(बियाद हज़रत अहसनुल उलमा सय्यद शाह मुसतफ़ा हैदर हसन मियाँ क़ुद्दसा सिर्रहु अहले सुन्नत की आवाज़ सफ़ा १६३/१६४ ख़ानक़ाह बरकातिया मराहरा शरीफ़ का तरजुमान ख़ुसुसी शुमाराह आप के महज़ सज्जादगी की नक़ल में)
हज़रत मुहम्मद मियाँ कादरि बरकाती क़ुद्दस सरहु का फ़रमान इस तरह नक़ल है ''आज से अज़ीज़ी मौसूफ़ (सय्यद मुसतफ़ा हैदर हसन मियाँ कादरि बरकाती) सल्लमाहुल तआला मेरी तरह हज़रत सय्यदी मुर्शिदी व वालिदी रज़ि० के और ख़ुद मेरे सज्जादाह नशीन हैं और हज़रत सय्यदी व मुर्शिदी व वालिदी रज़ि० से अज़ीज़ मौसूफ़ सल्लमाहुल तआला को बैत व इजाज़त व ख़िलाफ़त सिलसिला आलिया कादरिया व दीगर सलासिल बरकातिया से हासिल है नीज़ इस फ़क़ीर ने भी इनको जुमला सलासिल आलिया क़ादरिया व चिश्तिया व सोहरवरदिया व नक्शबन्दिया व बदिया मदारिया जदीदाह व क़दीमा व जुमला औकाफ़ व आमाल व औरादो अफ़कार व दीगर बरकात हज़रात अकाबिर किराम बरकातिया कुदसत इसरार हम की इजाज़त व ख़िलाफ़त आमा व ख़ासा आप से पेश तर दे दी और इसका वसीक़ा अलैहदा तहरीर कर के दे दिया है। फ़क़ीर औला व रसूल मुहम्मद मियाँ क़ादरी बरकाती क़ासमी ख़दिम सज्जादा ग़ौसिया बरकातिया आले अहमद मराहरा मुताहरा ब क़लम ख़ुद (अहले सुन्नत की आवाज़ १६५/१६६)

हज़रत सय्यद उवैस मियाँ बिलगिरामी का शिजरा मदारिया

हज़रत मौलाना हाविज़ व क़ारी सय्यद उवैस मुसतफ़ा क़ादरी वासती दामद बरकतुहुमुल क़ुदसिया जो इस वक़्त ज़ेब सज्जादा बिलगिराम शरीफ़ हैं वालिद माजिद का नाम सय्यद शाहिद हुसैन वासती है आप की पैदाइश १३८५ हि०

बामुताबिक १९६७ ई० में हुई १९९२ ई० में दरजात फ़ज़ीलत की डिगरी जामिया अरबिया अज़हारूल उलूम जहाँगीरगंज ज़िला अम्बेटकर नगर से हासिल की आप के बड़े वालिद सय्यद शाह ज़ैनुल आबदीन से शर्फ़ बैत हासिल हुई १९९० ई० में सिलसिला आलिया क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया में मुरीद हुए १९९१ ई० में सन १४१२ हि० में सारे सिलासिल की इजाज़त व खिलाफ़त मरहमत फ़रमाई बाद में २६/ज़िलक़ादाह सन १४१२ हि० बामुताबिक १९९२ ई० को सय्यद मिल्लत हज़रत सय्यद आले रसूल हसनैन मियाँ नज़मी माहरेरवी सज्जादाह नशीन ख़ानक़ाह आलिया बरकातिया मराहरा शरीफ़ में भी सिलसिला आलिया कादरिया कालपविया क़दीमा व जदीदाह की इजाज़त मरहमत फ़रमाई हज़रत उवैस मियाँ मख़दूमे मिल्लत दामत बरकातहुम को इन मशाएख़ के सिलसिलो की ख़िलाफ़ें हासिल हैं हज़रत सैय्यद मुहम्मद चिश्ती साहब अल दावतुल सुग़राह फ़ातेह बिलगिराम हज़रत सय्यद मुहम्मद कादरी बिलगिरामी हज़रत मीर सय्यद लुतफ़ुल्लााह शाह बिलगिरामी साहब अल बरकात सय्यद शाह बरकत उल्लाह क़ादरी इश्क़ी हज़रत सय्यद शाह अब्दुल रज़्ज़ाक़ क़ादरी बांसा शरीफ़ हज़रत मौलाना शाह फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी इस तौर से आप जिन मशहूर सलासिल की इजाज़ते और ख़िलाफ़तें हासिल हुंई इनकी तफ़सील यह है सलसिला क़ादरीया में पाँच सिलसिले सलसिला चिश्तीया में तीन सिलसिले सलसिला सोहरवरदिया में दो सिलसिले सलसिला नक्शबन्दिया में तीन सिलसिले यह कुल तेराह सिलसिले हुए और चौधवां सिलसिला बदीया मदारिया लुतफ़िया कालपविया है

(दाएरा क़ादरीया बिलगिराम सफ़ा २९४ डा० साहिल सहसरामी अलीग)

मुफ़्ती अहमद रज़ा ख़ान फ़ज़िले बरेलवी और सिलसिला मदारिया

फ़ाज़िले बरेलवी की ज़ात दौरे हाज़िर के उलमा के लिये मोहताजे तारूफ़ नहीं है वह सलसिला रिज़विया के इमाम और बानी हैं। आप को

मशाएख़ तरीक़त के कम अज़ कम तेराह सिलसिलों में इजाज़त व ख़िलाफ़त देने के माजूवन व मजाज़ थे जैसा के उनकी किताब अल इजाज़तुल मतीना की इबारत से ज़ाहिर है ''उनको जिन सलासिल तरीक़त में इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी उसकी तफ़सील इस तरह है (१) क़ादरिया बरकातिया जदीदाह (२) क़ादरीया आबाईया क़दीमा (३) क़ादरीया एहदाया (४) क़ादरीया रज़्ज़ाकिया (५) क़ादरिया मनसुरिया (६) चिश्तीया निज़ामिया क़दीमा (७) चिश्तीया महबुबिया जदीदाह (८) सोहरवरदिया वाहिदया (९) सोहरवरदिया फ़ज़ीलया (१०) नक्शबन्दिया आलिया सिद्दीक़ीया (११) नक्शबन्दिया आलिया अलविया (१२) बदीआ (१३)दअलविया मिनामिया वग़ैराह वग़ैराह

(मशाएख़ क़ादरिया रिज़विया ३९९/)

वाज़ेह हो के बाराह नम्बर का सिलसिला बदीआ सिलसिला आलिया बदीया ही है जैसा के सिलसिला बरकातिया के बुर्ज़ुगों की तहरीरों से ज़ाहिर है। सिलसिला की इजाज़त व ख़िलाफ़त का ज़िक्र वह अपनी किताब अल इजाज़तुल मतीना में इस तरह करते हैं''

फ़ाज़िले बरेलवी को सिलसिला मदारिया की ख़िलाफ़त व इजाज़त

के उन तमाम दिल पसन्द सिलसिलों की भी इजाज़त देता हूँ जिनकी मुझे इजाज़त हासिल है। जिनमें किसी को अपना क़ाएम मक़ाम, जानशीन करने का साहब ख़िलाफ़त के इरशाद के मुताबिक़ में माजूवन हूँ वह सिलासिल तरीक़त यह हैं '' (उलमाए हरमैन के लिये इजाज़त नामा तसनीफ़ मौलाना अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी तरजुमा। अल्लामा मुहम्मद एहसानुल हक़ क़ादरी रिज़वी लाएलपुर । सफ़ा ८२/८३/ मतबुआ रज़ा अकाडॅमी मुम्बई)

मैनें उन्हीं तरीक़त के इन तमाम सिलसिलो की भी इजाज़त दी जिनकी मुझे इजाज़त है। (१) तरीक़त आलिया क़ादरीया बरक़ातिया जदीदाह (१०) सिलसिला बदिया (सफ़ा ३९/३९)

मैनें उन्हीं तरीक़त के उन तमाम सिलसिलो की भी इजाज़त देता हूँ जिनकी मुझे इजाज़त है और ख़लीफ़ा बनाने का अज़्न है वह सलासिल तरीक़त यह हैं (१) तरीकता आलिया क़ादरिया बरक़ातिया (२) क़ादरिया आबाइया क़दीमा (३) क़ादरिया अहदलिया (४) क़ादरिया रज़्ज़ाकिया (५) क़ादरिया मुनव्वरिया (६) चिश्तीया निज़ामिया क़दीमा (७) चिश्तीया जदीदा (८) सोहरवरदिया वाहिदया (६) सोहरवरदिया फ़ज़ीलिया (१०) नक्शबन्दिया अबुल अलेएया (जो हज़रत सय्यद करीम अकबर आबादी की तरफ़ मनसूब है) (११) सिलसिला बदीया (अल इजाज़ातुल मतीना सफ़ा १००/१०१/)

मुफ़्ती आज़म पर सिलसिला मदारिया का फ़ैज़ान:

जनाब हज़रत मौलाना मुहम्मद मुसतफ़ा रज़ा ख़ान नूरी बरेलवी जो मुफ़्ती आज़म हिंन्द के लकब से मशहूर हैं सिलसिला रिज़विया में आप का मुक़ाम भी बड़ा ऊँचा है। सिलसिला रिज़विया के आला हज़रत के शहज़ादा होने की वजह से आप इस सिलसिला में अपने दौर में मरकज़ अक़ीदत बने रहे हिंन्द व पाक के हज़ारो लोग आप के दामन से वाबिसता हैं शेख़े तरीक़त हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी माहरेरवी क़ुद्दसा सिर्रहुल अज़ीज़ से आप को बैत व ख़िलाफ़ है" छः साल की उर्म में आप के शेख़े तरीक़त ने बैत करने के बाद जुमला सलासिल मसलन क़ादरिया, चिश्तीया, नक़्शबन्दिया, सोहरवरदिया, मदारिया वग़ैरह की इजाज़त से भी नवाज़ा । अपने शेख़े तरीक़त के अलावा वालिद माजिद मौलाना अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी से भी ख़िलाफ़त व इजाज़त हासिल की ।

(तज़किराह मशाएख़ क़ादरीया - सफ़ा - ५०७/ मुसद्दक़ा मौलाना अख़तर रज़ा ख़ान साहब अज़ही बरेलवी)

अलहमदोलिल्लाह रोज़े रौशन की तरह आशकार दलाएल व बराहिन से यह बात वाज़ेह है के हज़रत सय्यद जमाल औलिया कोड़ा जहानाबादी अलैहि अल रहमॉ से लेकर मौलाना सय्यद हसन मियाँ साहब माहरेरवी क़ुद्दसा सिर्रहु तक और मुफ़्ती अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी से मुफ़्ती आज़म हिंन्द अलैहिम

अल रहमा तक सिलसिला बरक़तिया रिज़विया के सारे बुर्ज़ुगों पर सिलसिला मदारिया बदीया का फ़ैज़ान जारी व सारी है । सबने इस सिलसिला मुबारका को ज़ाहिरी या रूहानी दिलवासता या बिला वासता तौर से हासिल किया है और इन सभी बुर्ज़ुगों के लिये यह सिलसिला सरमाया फ़ख़र व इफ़्तिख़ार है किसी को हुज़ूर क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० शर्फ़ उवैसियत से मुमताज़ फ़रमा रहे हैं तो किसी को क़ुतबियत की बशारत दे रहे हैं किसी को अपने रूशदी सिलसिला मुबारका से नवाज़ रहे हैं तो किसी को अपनी निसबी और रूहानीं औलाद के वासते से फ़ैज़याब फ़रमा रहे हैं। यह सभी बुर्ज़ुग सिलसिला मदारिया के मरहून मिन्नत और एहसान मंन्द हैं। उन सारे बुर्ज़ुगो के नज़दीक सिलसिला आलिया मदारिया महबूब व दिल पसंन्द और सरताज व सरफ़राज़ है सिलसिला क़ादरिया रिज़विया के बाज़ जाहिल ना वाक़िफ़ और हक़ाएत से ना आशिना लोग सिलसिला आलिया मदारिया बदीया को सोख़्त व मनक़ता बता कर इन बरक़ाती रिज़वी बुर्ज़ुगों की तौहीन कर रहे हैं और अपनी आक़बत भी ख़राब कर रहे हैं। अल्लाह तआला उन्हें हिदायत दे। इन लोगो को इबरत हासिल करने के लिये हुज़ूर सय्यदुल उलमा आले मुसतफ़ा माहरेरवी अलैहि अल रहमा के यह फ़रामीन हमेशा ज़हन में रखना चाहिये।

(१) मेरे जुदा अली हज़रत अल बरकात सय्यद शाह बरकत उल्लाह अल बिलगिरामी अल माहरेरवी अलैहि अल रहमा कालपी शरीफ़ सिलसिला आलिया मदारिया लाए और फ़क़ीर को जिस तरह सलासिल आलियात चिश्तीया व सोहरवरदिया व नक़्शबन्दिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त है इस सिलसिला मुबारका की भी इजाज़त व ख़िलाफ़त है।

(२) सिलसिला आलिया मदारिया के अजराए फ़ैज़ का इनकार किया ख़ुद मेरे जद अकरम सय्यद शाह बरकत उल्लाह क़ुद्दस सरहुल अज़ीज़ के माज़ अल्लाह तजहील व तहमीक़ के मुतरादिफ़ न होता।

(३) मेरे ख़ानदान बावक़ार के पास सिलसिला मदारिया की इजाज़त मौजूद है जो कालपी शरीफ़ से आई और ख़ुद फ़क़ीर को इजाज़त है।

(४) फ़क़ीर का मसलक समाअत फ़रमाईये के यह फ़क़ीर ख़ाकपाए मुर्शिदान इज़ाम हुजूर पुर नूर सय्यदना बदीउल मिल्लता व अल शरीअता व अल तरीक़ता व अल इसलाम बदी उद्दीन शेख़ना व मुर्शिदना सय्यदी क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० को अपना वैसा ही मुर्शिद इजाज़त मुफ़ीद व मुफ़ीज़ यकीन करता है जैसा के ख़्वाजा ख़्वाजगान सुलतानुल हिंन्द अतउल रसूल सय्यदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चिश्ती अजमेरी व हज़रत ख़्वाजा बहाउलमिल्लता वउद्दीन सय्यदना मौलाए नक्शबन्द व सय्यदना अल शैख़ शहाबुल मिल्लत वउद्दीन उमर सोहरवरदी रिज़वानुल्लाह तआला अजमईन को।

(५) ख़ुद मुझको सिलसिला आलिया मदारिया में इजाज़त व ख़िलाफ़त है क्या कियी सोख़्त सिलसिला में भी इजाज़त व ख़िलाफ़त होती है?

राक़िमुल हुरूफ़ अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी यह उम्मीद रखता है के बुर्ज़ुगो की यह सारी दसतावेज़ो और असनाद व इजाज़त को देख और पढ़ कर अब कोई सलीम अलतबी ज़ी शऊर और हिदायत का तालिब मुताल्लिम या कोई आलिम सिलसिला मदारिया बदीया के अजराए फ़ैज़ का इनकार करेगा और बदज़ुबानी और बदकलामी कर के अपनी आक़्बत ख़ाराब करने से डरेगा । व अल्लाह तआला होवल मौअफ्फ़ीक़ वलहादी अला तरीक़ुल हक़ क़ुल मोहक़्क़ि वसल्लल्लाहो तआला अला ख़ैरे ख़लक़ेही मुहम्मद वआला वअसहाबेही अजमईन बजाह सय्यदुल मुर्सलीन आमीन आमीन या रब्बल आलमीन।

ख़ानक़ाह बदायूँ पर सिलसिला मदारिया का फ़ैज़ान:

बदायूँ शरीफ़ सदीयों से इल्म व फ़ज़्ल का मरकज़ रहा है। बड़े जदीदो अकाबिर उलमा व फ़ोज़ला और औलिया अल्लाह वहाँ से ज़हूर पज़ीर हुए हैं, शेख़ मुहम्मद जहिन्दाह जो मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत सय्यदना क़ुतबुल अक़ताब हज़रत सय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार के साथ। जहिदन्दाह इस वजह से मशहूर है के हालत व जद में कूदा करते थे। बदायूँ में मुतस्सिल

तालाब चँन्दूकर में एक मक़बराह बतूरे गुम्बद के बना है उसमे आप का मज़ार है। (किताब बदायूँ क़दीम व जदीद मतबू निज़ामी प्रेस बदायूँ १६२० ई०) ताजुल फ़हूल हज़रत अल्लामा अब्दुल क़ादिर बदायूँनी वसीफ़ुल्लाह अलमसलूल अल्लामा शाह फ़ज़्ले रसूल बदायूँनी और अल्लामा अब्दुल मुक़तदिर व शाह अब्दुल क़दीर अलैहिम अल रहमा जो बदायूँ की ज़ेब व

ज़ीनत हैं और अकाबरीन के बरकात मदारयत से बहरावर हुए हैं। आप हज़रात का शजराऐ मदारिया इस तरह है"

इलाही मुस्तफ़ा सुल्तान मौजूदात का सदक़ा
अली मुश्किल कुशा का क़िबला हाजात का सदक़ा
अमीनुद्दीन अब्दुल औल ज़ी जाह का सदक़ा
इमाम औलियाए शाम अब्दुल्लाह का सदक़ा
बहक़ हज़रत क़ुतबुल मदार व शेख़ बातमकीं
मदार औलिया व इतक़िया सय्यद बदीउद्दीन
अता कर नूर इरफ़ाँ नूर ईमाँ हर मुसलमाँ को
मुनव्वर रख सदा नूरे मुबीं से बज़्म इमकाँ को
वसीला सय्यद अजमल व बास्ता सय्यद मुबारक का
जलाल अब्दुल क़ादिर से दिल अहले सफ़ा चमका
बाहक़ शेख़ क़ुतब उद्दीं बा अनवारे क़याम उद्दीं
अता कर हम ग़रीबों बेकसों की रूह को तसकीं
जमालुलऔलिया के चेहरे पुरनूर का सदक़ा
दिखा जलवाह हमें सय्यद मुहम्मद सय्यद अहमद का
वसीला शाह फ़ज़्ल उल्लाह के फ़ज़्ल फ़रावाँ का
तसद्दुक़ साहबुलबरकात की बरकात व इरफ़ाँ का
पये आले मुहम्मद और बराए सय्यद हमज़ाह
दिखा अहले मुहब्बत को रसूल अल्लाह का रौज़ा
ब हक़्क़े आले अहमद शमसुद्दीं अच्छे मियाँ या रब

बदीउद्दीन वलमिल्लत का शैदाई बना या रब
इलाही ऐन हक़ अब्दुल मजीद पाक का सदक़ा
शहे फ़ज़ले रसूल साहबे लौलाक का सदक़ा
ब हक़्क़े मज़हर हक़ शाह अब्दुल क़ादिर सानी
दिखा या रब रसूल पाक का दरबार नूरानी
पये मौलाना अब्दुल मुक़तदिर महबूबे हक़ या रब
करम से अपने पूरे कर हमारे नेक मक़सद सब
हमे इसलाम की उलफ़त हमे ईमान कामिल दे
हो जिस दिल में वलाए औलिया अल्लाह वह दिल से
शहीदे मिल्लत हक़ अब्द माजिद के तसद्दुक़ से
मदारी क़ादरी चिशती मशाएख़ की मोहब्बत दे
शहे अब्दुल क़दीर बा सफ़ा का फ़ैज़ जारी रख
जहान फ़क्र में क़ायम इलाही दीन दारी जारी रख
मुसलमानों को ज़ौक मारफ़त या रब अता फ़रमा
शरीअत पर तरीक़त पर हर एक मुस्लिम को रख शैदा
रहे जन्नत बक्फ़ क़ुतबुल मदार पाक का शिजरा
फले फूलें मदार सय्यद लुलाक का शिजरा
रहे नाम औलिया अल्लाह का ज़माने में
खुदा वालो की देखे शान दुनिया आसताने में
ज़िया सुए मदीना काश फिर या रब रवाना हो

सरे शोरीदा वक्फ़ संघ बाबे आसताना हो
(हज़रत मौलाना ज़ियाउल क़ादरी साहब माहेनामा आसताना देहली में सफ़ा १८/माह अगस्त सन १९५५ ई॰)

सैफ़ुल्लाह अल मसलूल अल्लामा शाह फ़ज़ले रसूल बदायूँनी क़ुद्दसा सिर्रहु का शजरऐ मदारिया

अल्लामा शाह फ़ज़ले रसूल बदायूँनी कुद्दसा सिर्रहु मौलाना मुफ़्ती अहमद रज़ा

ख़ाँ साहब फ़ाज़िले बरेलवी के मम्दुह हैं फ़ाज़िले बरेलवी ने आप की आलिशान मनकबित हिदाएक़ बख़शिश में तहरीर की है अल्लामा फ़ज़ले रसूल बदायूँनी ने ताजुल फ़हूल अल्लामा अब्दुल क़ादिर क़ुद्दसा सिर्रहु मोअर्रिख़ बदायूँनी को दीगर निज़बतो के साथ अपनी मदारिया निसबत की इजाज़त व ख़िलाफ़ इन लफ़ज़ों में अता फ़रमाते हैं इन दो तहरीरों में जो कुछ मज़कूर है इसकी तुम्हें इजाज़त देता हूँ और जुमला औराद व अज़कार अशग़ाल व आमाल की भी इजाज़त देता हूँ जिसका मैं हुज़ूरे क़िबला जाँ व काबा ईमाँ शाह ऐनुल हक़ अब्दुल मजीद क़ादरी क़दसना उल्लाह बसरहुल मजीद से मिजाज़ हूँ नीज़ तुम्हें तमाम सलासिल आलिया क़ादरिया व चिश्तीया व नक्शबन्दिया व सोहरवरदिया व मदारिया में उनके शराएत व लवाज़िम के साथ बैत करने की।इजाज़त देता हूँ
(अकमल तारीख़ सफ़ा २६८/तसनीफ़ मौलाना मुहम्मद याक़ूब हुसैन ज़ियाउल क़ादरी बदायूँनी तरतीब जदीद असीदुलहक़ क़ादरी बदायूँनी)

सिलसिला मोजद्दिदिया नक़्शबन्दिया पर फ़ैज़ाने मदारियत:

इमाम रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़सानी हज़रत शेख़ अमद सरहिंन्दी क़ुद्दसा सिर्रहुल क़वी की ज़ाते गिरामी हिंन्दो पाक के मुसलमानो के लिये माहताज तारीफ़ नहीं है पूरा आलमे इसलाम आप के इल्म व फ़ज़्ल का क़ाएल है तरीक़त व तसव्वुफ़ में आप आला मदारिज पर फ़ाएज़ थे । आप के मकतूबात आप की अबक़रयत पर हुज्जत हैं । बुर्ज़ुगाने दीन के जिन सलासिल आलियात में आप को इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी इनमें सिलसिला आलिया मदारिय भी ख़ुसुसियत से मज़कूर है चुनानचे ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया में है के''
हज़रत शेख़ मुजद्दिदे इजाज़त तलक़ीन दर सलासिल मस्ले हम सिलसिला रेफ़ाईया व मदारिया किबरूईया वग़ैराह वग़ैराह अलैहदा अलैहदा अज़ शेख़ अब्दुल आहद पिद्र बुर्ज़ुगवार ख़ुदअस्त हज़रत शेख़ मुजद्दिद अल्फ़सानी क़ुद्दसा सिर्रहु को सिलसिला रेफ़ाईया व मदारिया किबरोया वग़ैराह में तलक़ीन

फ़रमाने की इजाज़त व ख़िलाफ़त आप के वालिद बुर्जुगवार शेख़ अब्दुल अहद कुद्दसा सिर्रहु से है।'' (ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया जिल्द अव्वल सफ़ा ६०६/६११)हज़रत गुलाम अली नक़्शबन्दी मुजद्दिदी देहलवी अलैहि अल रहमा हुजूर मुजद्दिदे अल्फ़सानी ईमाम रब्बानी के अहवाल बैअत और हुसूले निसबत के बारे में फ़रमाते हैं के आप

औला! बैत अज़्वा माजिद ख़ुदुदर ख़ानदान आलीशान चिश्तीया नमूदाह बूदंन्द व इजाज़त व ख़िलाफ़तें ख़ानदान याफ़्ता बूदंन्द बलके अज़्वा बुज़ुर्गवार इजाज़त तरीक़त दीगर मस्ल सोहरवरदिया किबरोया व क़ादरिया व शत्तारिया व मदारिया हमयाफ़्ता बूदंन्द।

''पहले ख़ानदान आलीशान चिश्तीया में अपने वालिद बुर्ज़गवार से बैत थे और इस ख़ानदान से आप को इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी बलके वालिद बुर्जुगवार से दूसरे तरीक़ मसलन सोहरवरदिया, किबरतिया क़ादरिया, शत्तारिया और सिलसिला मदारिया की भी इजाज़त व ख़िलाफ़त आप को हासिल थी।

(दुर्रूल मआरिफ़ मलफूज़ात हज़रत गुलाम अली नक़्शबन्दी अलैहि अल रहमा सफ़ा १२३/ मोवल्लिफ़ शाह रऊफ़ मुजद्दिदी मतबुआ वख़्फ़ुल इख़्लास इस्तामबोल तुर्की)

शिजराह मुजद्दिदया मदारिया:

हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी शेख़ अहमद सरहिंन्दी अलैहि अल रहमतुल क़वी का शिजराह मदारिया इस तराह है,,

''शेख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिंन्दी उनको इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल हुई उनके वालिद बुर्जुगवार शेख़ अब्दुल अहद ज़ैनुलआबदीन से उनको अपने पीर व मुर्शिद शेख़ रूकनुद्दीन से उनको अपने वालिद माजिद शेख़ अब्दुल कुद्दूस गंगोही से उनको अपने पीर दुरवेश बिन क़ासिम औधी से उनको सय्यद बुड्डन बहराईची से उनको अपने वालिद माजिद सय्यद अजमल बहराईची से उनको हज़रत कुतबुल अक़ताब सय्यद बदी उद्दीन कुतबुल

मदार क़द्दस उल्लाह तआला सिर्रहु से अल्ख़।

(तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १७४/)

मकतूबात शरीफ़ में सवानेह हयात के कालम में भी आप का शिजराह मदारिया इस तरह दर्ज है चुनानचे अल जन्नतुलउलमिया चन्चलगोड़ाह हैदराबाद से शाया मक़्तूबात इमाम रब्बानी दफ़्तर अव्वल के जवाहर मुजद्दिदया हिस्सा दोम के सफ़ा ६०/ पर आप का शिजराह मदारिया इस तरह दर्ज है।

बाद नाम सय्यद अजमल के शाह बदीउद्दीन कुतबुल मदार, शेख़ तैफ़ूर शामी, शाह ऐन उद्दीन शामी, यमीन उद्दीन शामी, अब्दुल्लाह अलमबरदार, हज़रत अबुबकर सिद्दीक़ रज़ि० या हज़रत अली कर्म उल्लाह वजहुल करीम (बहर दो वासता) जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

हज़रत ख़्वाजा आदम बनूरी और सिलसिला मदारिया:

वली सुबहानी शेख़ नूरानी ख़लीफ़ा इमाम रब्बानी हज़रत ख़्वाजा सय्यद आदम बनूरी रहमुल्लाह अल बारी। आप का नाम सय्यद आदम था। बन्नूर के रहने वाले थे जो सर हिंन्द के ज़िला में है। आप का सिलसिला नसब हज़रत इमाम अलहिस्सलाम तक पहुँचता है। आप मादर ज़ाद वली थे।।।। जब उमर बलूग़ को पहुँचे तो कस्बे मआश की ख़ातिर सिपा गीरी की नौकरी की लेकिन जब रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कशिश ने मुलाज़ित ग़ैर से सबकदोश कर दिया और सुलूक व तसूफ़ तालीम व तरबियत के लिये बहूलपूर में आरिफ़े बिल्लाह हज़रत हाजी ख़िज़्र कुद्दस सिर्रहु मुता वफ़्फ़ी सन १०५२ हि० के दामने फ़ैज़ से वाबिसता हुए जो सिलसिला क़ादरिया चिश्तीया में हज़रत शेख़ अब्दुल अहद सरहिंन्दी अलैहि अल रहमा से मुसतफ़ीज़ थें। हज़रत शेख़ अब्दुल अहद क़ादरिया व चिश्तीया में हज़रत शाह रूकनुद्दीन गंगोही के ख़लीफ़ा थे। हज़रत हाजी ख़िज़्र कुद्दस सिर्रहु ने हसब इसतादाद तालीम व तरबियत के बाद इमाम रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़सानी हज़रत शेख़ अहमद सरहिंन्दी रह० के हलक़ा तरबियत में शामिल कर दिया जहाँ हज़रत

मुजद्दिद साहब कुद्दस सरहु ने अपने फ़ैज़ सोहबत और कमाल तवज्जो से थोड़े ही अरसा में कामिल व मुकम्मल वली और खुद अशनास बना कर सलासिल क़ादरिया, नक़्शबन्दीया, चिश्तीया, साबरिया, शतारिय, मदारिया, सोहरवरदिया की इजाज़तें मरहमत फ़रमा कर कुतबुल अक़्ताब के दरजा आलिया पर फ़ाएज़ फ़रमाया।

(माहे नामा आसताना देहली अकतूबर १६७० ई० सफ़ा ५७/)

ख़ानदाने मुजद्दिद में सिलसिला मदारिया:

तसव्वुफ़ की मशहूर किताब दारूल मआरिफ़ के मुरत्तिब व मोअल्लिफ़ जनाब शाह रऊफ़ अहमद क़द्दसा सिर्रहु हैं। आप का सिलसिला नसब यह है, हज़रत शाह रऊफ़ अहमद इबने हज़रत शऊर अहमद इबने हज़रत मुहम्मद अशरफ़ इबने हज़रत शेख़ रज़ी उद्दीन इबने हज़रत शेख़ ज़ैनुल आबदीन इबने हज़रत शेख़ मुहम्मद याहया इबने हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़सानी शेख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिंन्दी रहमतुल्लाह तआला अलैमि अजमईन विलादत १२०१ हि० में है । आप मुरीद हैं शेख़ दौराँ जनाब फ़ैज़ बख़्श अल मुलक़्क़ब बा हज़रत शाह दरगाही रहमतुल्लाह तआला अलैहि के वह मुरीद व ख़लीफ़ा हैं सय्यद शाह कुतबुद्दीन मुहम्मद अशरफ़ हैदर हसन बिन इनायत उललाह रहमहुमुल्लाह तआला के वह मुरीद व ख़लीफ़ा हैं क्य्यूम ख़्वाजा मुहम्मद ज़ुबैर रज़ि० के शाह रऊफ़ अहमद अलैहि अल रहमा को अपने पीर व मुर्शिद शाह दरगाही अलैहि अल रहमा से छः सिलसिलों में इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी, क़ादरिया, नक़शबन्दीया, चिश्तीया, साबिरया व निज़ामिया, सोहरवरदिया, किब्ररिवया और मदारिया। दारूलमारिफ़ की इबारत यह है।

यानी ख़ानदाने क़ादरिया में आप ने अपने पीर मौसूफ़ से मुसाफ़ाह बैत हासिलफ़रमा कर पन्द्राह साल तक उनसे फ़ैज़ व बरकात कसब कर के तरीक़त की तालीम की इजाज़त से मुशर्रफ़ हुए बलके छः ख़ानदान यॉनी क़ादरिया, नक़्शबन्दीया, चिश्तीया, साबरिया व निज़ामिया, सोहरवरदिया,

किब्ररिवया और मदारिया में ख़िलाफ़त व मजाज़ हुए।

(दारूल मारूफ़ सफ़ा १६०/ मतबुआ तुर्की)

शाह दरगाही अलैहि अल रहमा के विसाल के बाद हज़रत शाह अब्दुलाह देहलवी मारूफ़बा शाह ग़ुलाम अली नक़्शबन्दिया से भी आप को इन मज़कूराह तमाम सलासिल में इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल हुई चुनानचे दारूल मारूफ़ में है के

बार्ख़िक़ा ख़िलाफ़त व इजाज़त तालीम तरीक़ा क़ादरिया, नक़्शबन्दिया, चिश्तिया, साबिरया व निज़ामिया, सोहरवरदिया, किब्ररिवया और मदारिय मुशर्रफ़ शुद । (दारूल मारूफ़ सफ़ा १६०/)

यानी शेख़ ग़ुलाम अली नक़्शबन्दी से तरीक़ा क़ादरिया, नक़्शबन्दिया, चिश्तिया, साबिरया व निज़ामिया, सोहरवरदिया, किब्ररिवया और मदारिया की ख़िलाफ़त व इजाज़त से आप मुशर्रफ़ हुए।

मज़ीद यह भी तहरीर है के

यानी छः ख़ानदान मज़कूराह के साथ साथ सातों ख़ानदान सिलसिला क़लंदरया यानी इन सातों ख़ानदान आलीशान में इजाज़त मुतल्लक़ा व ख़िलाफ़त आमा से आप सरफ़राज़ हुए।

मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ व अहमद सय्यद देहलवी का शिजराह मदारिया:

मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार हज़रत शेख़ यमीन उद्दीन शामी हज़रत ऐनुद्दीन शामी हज़रत शेख़ तैफ़ूरशामी हज़रत बदीउद्दीन शाह मदार हज़रत सय्यद अजमल बहराईची हज़रत सय्यद बड़हन बहराईची हज़रत शेख़ दुरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम ऊधी हज़रत अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही हज़रत शेख़ अब्दुल अहद हज़रत शेख़ अहमद मुजद्दिदे अल्फ़सानी हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद सय्यद हज़रत अब्दुल अहद शाह गुल हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ हज़रत
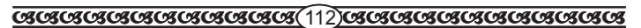
अब्दुल्लाह अलमारूफ़ बागुलामे अली शाह हज़रत शाह अबु सय्यद हज़रत शाह अहमद सय्यद।

(तज़किरातुलमुत्तक़ीन सफ़ा १७१)

शिजराह मदारिया शाह अब्दुल रज़्ज़ाक़:

शाह अब्दुल रज़्ज़ाक़ हज़रत शाह अब्दुलाह गोरखपुरी हज़रत शाह अब्दुलाह अलनाहुनूई हज़रत शाह मुहम्मद गुलज़ार कशनवी हज़रत मोलवी सय्यद अब्दुल हसन नसीरा बादी हज़रत मोलवी मुराद उल्लाह थानेरी हज़रत मोलवी नईम शाह गुल हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद सईद हज़रत शेख़ अहमद मुजद्दिद अल्फ़सानी हज़रत शेख़ अब्दुल अहद हज़रत शेख़ करन उद्दीन गंगोही हज़रत अब्दुल क़द्दूस गंगोही हज़रत दुरवेश मुहम्मद क़ासिम ऊधी हज़रत सय्यद शाह बडहन बहराईची हज़रत सय्यद अजमल बहराईची हज़रत बदीउद्दीन शाह मदार हज़रत तैफ़ूर शामी अल्ख़

(तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १७२/)

शिजराह मदारिया हज़रत मुहम्मद शेर शाह पीली भीत:

हज़रत शाह मुहम्मद शेर मियाँ पीली भीत एक मॉमिर व मुरताज़ बुर्जुग गुज़रे हैं मोहद्दिस सोवरती मौलाना वसी अहमद साहब रह० आप के दौलत ख़ाना पर तशरीफ़ लाया करते थे। आप ने अपना सिलसिला मदारिया मौलाना सय्यद अमीर हसन साहब मदारी कुद्दसा सिर्रहु साहब तज़किरातुल मुत्तक़ीन को इस लिखवाया है''

शिजराह बदीया मदारिया:

यानी जनाब मुहम्मद शेर मियाँ पीली भीती अलैहि अल रहमा जिनसे दौरे हाज़िर में सिलसिला शेर या मशहूर है आप को बैत व सोहबत और इजाज़त व ख़िलाफ़त का शर्फ़ हज़रत क़िबला अहमद अली शाह साहब से हासिल है उनहें क़िबला दरगाही शाह साहब रामपूरी से उन्हें क़िबला हाफ़िज़ जमाल उल्लाह शाह रामपूरी से उन्हें हज़रत क़िबला कुतबुद्दीन मदफूने मदीना मुनव्वराह से उन्हें हज़रत क़िबला मुहम्मद नक़्शबन्द सानी से उन्हें हज़रत

क़िबला ख़्वाजा मासूम से उन्हें हज़रत क़िबला अहमद मुजद्दिद अल्फ़सानी से उन्हें हज़रत किबला शेख़ रूकनुद्दीन गंगोही से उन्हें हज़रत किबला अब्दुल कुद्दूस गंगोही से उन्हें हज़रत क़िबला शेख़ दुरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम ऊधी से उन्हें हज़रत क़िबला सय्यद शाह बुडहन बहराईची से उन्हें हज़रत क़िबला सय्यद अजमल बहराईची से उन्हें क़िबला हज़रत सय्यद बदी उद्दीन शाह मदार मकनपुरी से अल्ख़।

शिजराह मदारिया मौलाना अहमद हसन कानपुरी (मुरीद व ख़ालीफ़ा इम्दाद उल्लाह मुहाजिर मक्की:

मौलाना अहमद हसन कानपुरी कहते हैं के सिलसिला अलिया मदारिया में फ़क़ीर अहमद हसन अफ़ी अन्हु को निसबत बैत हासिल है। हाजी अल हरमैन हाजी इमदाद उल्लाह चिश्ती मदारी से उन्हें मौलाना व मुर्शिदना हज़रत मियाँ जी नूर मुहम्मद झन्झानूई से उन्हें शेख़ुल मशाएख़ हाजी शाह अब्दुर्रहीम विलाएती से और उन्हें शाह अब्दुल बारी से और उन्हें शाह मुहम्मदी से और उन्हें शाह मोहब्बत उल्लाह ऑला आबादी से और उन्हें शेख़ अबू सईद से और उन्हें शेख़ निज़ाम उद्दीन से और उन्हें शेख़ दुरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम ऊधी से और उन्हें सय्यद हज़रत शेख़ बदी उद्दीन कुतबुल अक़ताब कुतबुल मदार से और उन्हें तैफ़ूर शामी से अल्ख़।

(तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १७०)

शिजराह आलिया मदारिया तबक़ातिया मौलाना फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी:

जनाब मौलाना फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी की शख़्सिअत मोताज तार्रूफ़ नहीं है, माज़ी करीब के बुर्ज़गों में आप का नाम बड़ी इज़्ज़त व अज़मत व एहतराम से लिया जाता है। अकाबरीन उलमा की एक बड़ी जमात आप से फ़ैज़ याफ़ता है। पिछली सदी के सूफ़िया में आप अपनी अलग पहचान रखते हैं। मकनपुर शरीफ़ से गंज मुरादाबाद तकरीबन नौकोस के फ़ासले पर शुमाल

में वाक्या है इस लिये गंज मुरादाबाद के बुर्जुगो का मकनपुर शरीफ़ बराबर आना जाना रहता है। इतना करीब रह कर फ़ैज़ाने मदारियत से मुसतफ़ीज़ होना बहुत सहल तर है इस लिये ख़ानाक़ाह रहमानिया के मुताल्लेकीन मुतावस्सलीन मदारियत की बरकात व एहसानात से कैसे महरूम रहते। आप ने अपना शिजराह मदारिया मौलाना सय्यद अमीर हसन जाफ़री अल मदारी रह० अल बारी को इस तरह नक़ल कराया है। मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी इनको इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल है हज़रत शाह मुहम्मद आफ़ाक़ से इनको हज़रत ख़्वाजा ज़िया उद्दीन से इनको हज़रत क़िबला आलमे ख़्वाजा मुहम्मद ज़ुबैर से इनको हुज्जतुल्लाह मुहम्मद नक़्शबन्द सानी से इनको हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद मासूम से इनको हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिने अल्फ़सानी शेख़ अहमद सर हिंन्दी से इनको अपने वालिद माजिद शेख़ अब्दुल अहद से इनको शेख़ रूकनुद्दीन गंगोही से इनको अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही से इनको दुरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम ऊधी से इनको बुडहन बहराईची से इनको सय्यद अजमल बहराईची से इनको बदी उल मिल्लता व उद्दीन क़ुतबुल मदार मकनपुरी से अल्ख़

(तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १७६)

ज़िक्र मशाएख़ हिसामिया:

हुज़ूर सय्यदना सय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार रज़ि० के ख़ुलफ़ाए बावक़ार के इस्मे गिरामी में उमदतुल वासेलीन ज़बदतुल वासेलीन हज़रत सय्यदना मौलाना हिसामुद्दीन असफ़हानी सलामती क़ुद्दसा सिर्रहु का इस्मे गिरामी निहायत ही मशहूर मारूफ़ है। आप हिंन्दुस्तान के ज़ी इफ़्तिख़ार और बावक़ार उलमा में सरफ़ुहरसत हैं। सुलतान इब्राहीम शरक़ी जौनपुरी के अहद हुकूमत में ज़ी मनसब व बामुक़ामे आलिम थे। तुख़फ़तुल अबरार में है के आप बहुत ही तेज़ तबाह दानिशवर थे। अचानक आप हुज़ूर सय्यदी क़ुतबुल मदार की मुहब्बत में असीर हो गए। हुआ यह के एक मरतबा ख़ुलूते ख़ास के वक्त जबके हमनशीनों और ख़ुलफ़ा को भी क़ुर्ब सोहबत की भी

मजाल नहीं होती थी आप ग़लबा शौक़ में दीनावार बे इख़्तियार ख़ुलूते ख़ाना क़ुतबुल मदार में दाख़िल हो गए। हज़रत क़ुतबुल मदार ने इरशाद फ़रमाया, ऐ फ़लॉ! कोई बे अदब ख़ुदा तक नहीं पहुँचा । हज़रत हिसाम उद्दीन क़ुद्दसा सिर्रहु ने अर्ज़ किया, हुज़ूर ! इस वक़्त मैं अदब से काम लेता तो यक़ीनन अल्लाह के जमाल से महरूम रह जाता । अब जबके मैने अदब को तर्क कर दिया ख़ुदा तक रसाई हो गई।

हुज़ूर सय्यदना क़ुतबुल मदार इस जवाब से ख़ुश हुए, इरशद फ़रमाया, सलामती सलामती!! यह लक़ब उसी दिन से आप पर चिसपा हो गया ।।।।।।।

सलामती नशवी हज़रत मौलाना हसाम उद्दीन सलामती को ही यह शर्फ़ हासिल हुआ के आप ने हुज़ूर सय्यदना क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० जनाज़ाह पड़ाया । आप के बड़े बड़े ख़ुलफ़ाए बावक़ार हुए जिन्होंने फ़ैज़ाने मदारियात को लोगो में तक़सीम फ़रमाया । इन्हें ख़ुलफ़ाए ज़वीउल एहतराम में से हज़रत शेख़ मुहम्मद अलाउल मुनीरी क़ुद्दसा सिर्रहु हैं जो शेख़ क़ाज़िन शतारी के लक़ब से मशहूर मारूफ़ हैं। आप से हाजी हमीद उद्दीन बिन शम्स उद्दीन नें और इनसे नेमतुल्लाह चिश्ती ने और इनसे शेख़ क़ासिम सिद्दीक़ी ने फ़ैज़ाने मदारियत हासिल किया ।

हज़रत मौलाना हुसाम उद्दीन सलामती रज़ि० का विसाल का कता तारीख़ यह है। (तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १५४)

हज़रत मौलाना वजीह उद्दीना गुजराती पर फ़ैज़ाने मदारियत:

हज़रत मौलाना वजीह उद्दीन सानी गुजराती क़ुद्दसा सिर्रहु जो अपने वक़्त के ताजदारे इल्म व फ़न और ज़ेबदाह मशाएख़ ज़मन थे। आप का सिलसिला बैत व ख़िलाफ़त सिर्फ़ चार वासतों से हुज़ूर असवतुल मोहक़्केक़ीन शेख़ुल इसलाम वाअल मुसलेमीन मोलाना हुसाम उद्दीन सलामती से जा मिलता है। तक़रीबन ९९८ हि० में आप का विसाल है।

सिलसिला क़लनदरया पर फ़ैज़ाने मदारियत:

हज़रत हाफ़िज़ अली अनवर क़लनदर क़ुद्दसा सिर्रहु जो शाह अली अकबर क़लनदर के ख़ल्फ़ अकबर हैं और ख़लीफ़ा व जानशीन हैं शाह तुराब अली काकोरी क़लनदर के शाह तुराब अली क़लनदर इबने शाह मुहम्मद काज़िम अपनी किताब असूल अल मक़सूद में रक़म फ़रमाते हैं।

हज़रत मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमहुमुल बारी का शिजराह मदारिया:

हज़रत हाजी हमीद उद्दीन शाह उर्फ़ शेख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी जो ग्वालियर मध्य प्रदेश की ज़ेब व ज़ीनत और शान व शौकत हैं अहल अल्लाह में आप का मक़ाम बहुत ऊँचा है। अकाबिर औलिया अल्लाह ने आप की अज़मत शान को बयान फ़रमाया है। सिलसिला मदारिया में आप को निसबत व इजाज़त हज़रत शेख़ हिदायत उल्लाह सर मस्त क़ुद्दसा सिर्रहु ९४६ हि० १५३६ ई० से है उनको निसबत व इजाज़त हज़रत शेख़ क़ाज़िन शतारी मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु से है उनको निसबत व इजाज़त हज़रत शेख़ हुसाम उद्दीन सलामती क़ुद्दस सिर्रहु अल क़वी से उनको निसबत व इजाज़त हजूर सय्यदना सय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार ज़िन्दाह शाह मदार क़ुद्दस सिर्रहु से है। (तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १५९)

हज़रत सय्यदना सय्यद शाह मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी ने अपनी तसनीफ़ और अदग़ौसिया में जिन सलासिल से इसतिफ़ादाह किया है उनका तज़किराह इस तरह किया है चिश्तीया, फ़िरदौसिया, सोहरवरदिया, क़ादरिया, तैफ़ूरया, ख़ुलूतिया, रब्बानिया, मदारिया, वग़ैराह

हज़रत ईसा फ़क़ीया पर फ़ैज़ाने मदारियत:

हज़रत ईसा फ़क़ीया सूफ़ी मोहद्दिस मुफ़्ती गोपामवी जो दसवीं सदी के अजला अकाबिर में से हैं फ़क़ीया और मोहद्दिस होने के साथ साथ एक बहुत ही सूफ़ी साफ़ी मिज़ाज के बुर्ज़ुग हैं आप पर भी मदारियत के फ़ियूज़ व बरकात की बारिश होती है आप का शिजराह मदारिया इस तरह से है'' शेख़

ईसा फ़क़ीया मोहद्दिस गोपामवी, अलमा वजीह उद्दीन गुजराती, शेख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी, हज़रत हाजी ज़हूर, हज़रत अबु अल फ़ताह हिदायत उल्लाह सर मस्त, हज़रत क़ाज़ी क़ाज़िन, हज़रत मौलाना हुसाम उद्दीन सलामती, हज़रत क़ुतबुल अक़ताब सय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार क़ुद्दस सिर्रहु, हज़रत तैफ़ूर शामी हज़रत अमीन उद्दीन शामी अल्ख़

(तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १५९)

शिजराह मदारिया शाह अमीन उद्दीन:

मख़दुमुल मुल्क हज़रत याहया मज़ीरी रज़ि० जिन्होंने अपने क़दूम मेमनत लज़ूम से सर ज़मीने बहार को शर्फ़ व हयात अता फ़रमाया जो आसमान विलायत के माहे मुनीर और महर मुनव्वर भी हैं और बाग़े रिसालत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुल तर भी हैं जिनके पोतों और नवासों की फ़ुहरसत में सय्यद अहमद चर्म कोश और सय्यदना ग़ुलाम हैदर रज़ि० जैसी जलील उल क़द्र हसतियां आज भी सर ज़मीने बहार की पेशानी की ज़ीनत हैं। हज़रत मख़दुमुल मुल्क ने अपनी हयात ज़ाहिरी में अपने मुरीद व ख़लीफ़ा नोशता तौहीद से इरशाद फ़रमाया था के किताब अवारूल माअर्फ़ तुम्हें क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार ही पढ़ा सकते हैं। जौनपुर जा कर इनसे शर्फ़ तल मंन्द हासिल करो और क़ुतबुल मदार से अवारिफ़ुल माअर्फ़ पढ़ कर अहले माअरफ़त बन जाओ । सिलसिला मदारिया का फ़ैज़ान आप पर आप के मुरीदों पर और आप की ख़ानकाह शरीफ़ के सज्जादाह नशीनों पर आप हुआ चुनानचे अमीन उद्दीन अहमद सज्जादाह नशीन ख़ानक़ाह हज़रत मख़दुमुल मुल्क याहया मुनीरी क़ुद्दस सिर्रहु अपनी किताब सिलसिलातु आली मतबुआ मतबॉ अनवारे मुहम्मदी लखनऊ में अपना और अपने बुर्ज़ुगों का शिजराह मदारिया इस तरह नक़्ल फ़रमाते हैं।''

'बाआं फ़रमान रवाए क़ाब व क़ौसैन दोस्त दार क़ुर्रतुल ऐन
बा मम्दुह ख़ुदा सिद्दीक़े अकबर बुर्ज़ुग अज जुमला याराने पीर
बा अबुल ख़ैराँ के शाह सादक़ीने अस्त अलम बरदार ख़तमुल मुर्सलीन अस्त

बक़्तुब दो जहाँ तैफ़ूर शामी बशरामियाँ याहयल अज़ामी
बा आली बारगाह ज़ाते अक़दस रबी आँ साकिन बैतुल मुक़द्दस
बअब्दुल्लाह मक्की कारिन्द आईं गदाया नश चो शाहाँ व सलातीं

तज़किराह मशाएख़ा तालबान मदारिया

हुज़ूर सय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० के खुलफ़ाए नामदार हैं हज़रत क़ाज़ी महमूद उद्दीन कसूरी रज़ि० का नामे नामी इस्मे गिरामी मोहताज ताअर्रूफ़ नहीं है। गर्ग दानिशमनदाँ, तय्यग़ बर हनॉ के लक़ब से मशहूर हज़रत क़ाज़ी मौसूफ़ जामॉ शरीअत व तरीक़त और ग़वास माअर्फ़त व हक़ीक़त होने के साथ साथ इन्तेख़ाब निगाहे क़ुतबुल मदार थे। आप जहाँ अज़ीमुल क़द्र आलिम, साहब तसानीफ़ फ़ाज़िल, वसीउल सदर फ़क़ीया और मनसब अदालत व इनसाफ़ पर मुतमक्किन क़ाज़ी थे वहीं हज़रत मदारे पाक की खुसूसी तवज्जाह और करम फ़रमाई से मुरतबा विलायते अज़मा पर मुसन्निद नशीन भी थे। अपने मुर्शिद तरीक़त हुज़ूर मदारे पाक से बे हद हुस्ने अक़ीदत रखते थे।

मुरीद होने का वाक़्या

एक मरतबा हुज़ूर सय्यदना क़ुतबुल मदार रज़ि० व अरज़ाह अना ने जौनपुर से कसूर जाने का इरादाह फ़रमाया और तशरीफ़ ले गए। क़सबा कसूर की मस्जिद में नुज़ूल अजलाल फ़रमाया और अपने रफ़क़ा व ख़ादिम के साथ शहर वालों की जमाअत का इनतेज़ार किये बग़ैर आप ने नमाज़ अदा फ़रमाली और अव्वल वक़्त की अफ़ज़लयत को जाने न दिया। थोड़ी देर के बाद क़ाज़ी महमूद अपने तिलामज़ाह के साथ मस्जिद में दाख़िल हुए और नमाज़ अदा करके हज़रत क़ुतबुल मदार से जमाअत के लिये इजतेज़ार ना करने की बाबत आमादाह बहस व तकरार हुए और अपनी गुफ़तुगू शुरू की। हुज़ूर मदारे पाक ने उनके तर्ज़ कलाम से समझ लिया के मुबाहसा की आग क़ाज़ी मौसूफ़ के अन्दर गर्म है, गुफ़्तुगू लम्बी हो गई पस इस ख़याल से हुज़ूर मदारे पाक ने इरशाद फ़रमाया के क़ाज़ी ने शायद क़लाम मजीद नहीं पढ़ा

और ना ही उसका मुताला किया है। क़ाज़ी मौसूफ़ ने अर्ज़ किया के हुज़ूर मेरा क़लाम क़लामे जलील के मवाफ़िक़ है। हुक्म हुआ के क़ाज़ी के क़ुतुब ख़ाने से क़ुर्आन मजीद व फ़ुरक़ान हमीद लाया जाए। जब क़ुर्आन मजीद सामने पेशे ख़िदमत हुआ और अवरक़ खोले गए तो देखते हैं के सारे वरक़ सादह सफ़ेद हैं हुरूफ़ देखने में नहीं आते यह मनज़र देख कर हज़रत क़ाज़ी साहब हैरत में पड़ गए और फ़िक्र व अन्देशा में डूब गए और अर्ज़ किया के हुज़ूर! आप का इस्मे गिरामी क्या है? हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया, बदी उद्दीन! इतपस फ़रमाना था के क़ाज़ी मौसूफ़ के ज़हन के दरीचे खुल गए और उनके वालिद माजिद शेख़ अबुल फ़ताह शतारी रहमतुल बारी का मक़ूला याद आ गया जिसे उन्होंने उनके मुरीद होने के वक़्त इरशाद फ़रमाया था वह मक़ूला यह है, ''यह (क़ाज़ी मौसूफ़) नसीबे का सिकन्दर है हज़रत सय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार की ज़ाते गिरामी से मुसतफ़ीज़ होगा। मुफ़ज़्ज़िले हक़ीक़ी की करम नवाज़ी से उसका मुक़द्दर रौशन होगा और वली साहब तसर्रूफ़ात बनेगा और इसका सिलसिला रश्द व हिदायत जारी वा सारी रहेगा।'' यह ख़याल आते ही होश ठिकाने लगा। माज़रत चाही और अर्ज़ी लगाई के हुज़ूर! मुझे अपने ग़ुलामों के जमराह में दाख़िल फ़रमा लिया जाए। हुज़ूर मदारे पाक ने हुक्म फ़रमाया के जब तक अपने किसी इल्म को फ़रामोश नहीं कर देते हरगिज़ दाख़िले बैत नहीं करूंगा। क़ाज़ी सर गिरेबान में डाले महू हैरत हैं के जो इल्म मुझे हासिल है उसे कालअदम व फ़रामोश कैसे किया जा सकता है लिहाज़ा आप ने अपनी आजज़ी व इनकेसारी पेश की अर्ज़ किया,''हुज़ूर यह मेरे बस का काम नहीं है। हुज़ूर मदारेपाक ने अपना लुआबदहन शरीफ़ आप के मुंह में डाल दिया। ''अल इल्म हिजाबुल कब्र'' का जो परदाह उन पर पड़ा हुआ था वह उठ गया और तबक़ात अरज़ी व समावी के तमाम अहवाल व सरारान पुर रौशन हो गए और हुज़ूर मदारे पाक की खुसूसी इनायत यह हो गई के आप को अपने हलक़ा इरादत में दाख़िल फ़रमा कर अपनी विलायत व

ख़िलाफ़त मख़सूसा से मुमताज़ फ़रमाया। आप से सिलसिला मदारिया बनाम तालबान मदारिया जारी हुआ। यह सिलसिला आज भी जारी है और इन्शाअल्लाह क़यामत तक जारी रहेगा। आप का आसताना कसूर शरीफ़ नवाही लखनऊ में मरजा ख़लाएक़ है।

क़तऑ तारीख़े वफ़ात:

जनाब क़ाज़ी महमूद ज़ीशान फ़रीज़ाँ आफ़ताबे औजजा है
चूँ आज़म जानिबे मुल्क बक़ाशिद ज़े दुनिया आँमआरिफ़ दस्तगा है
नोशतम अज सर आह व बका साल ज़े दुनिया आह रफ़तादीं पना है

(५९८हि०)

ताजुल शरीअत सय्यद मुहम्मद शहबाज़ भागलपुरी अलैहि अल रहमॉ पर सिलसिला मदारिया का फ़ैज़ान–

शेख़ुल आलम हज़रत मौलाना सय्यद शहबाज़ मुहम्मद भागलपुरी ९५६ हि० में सूबा बिहार के क़सबा देवराह में पैदा हुए आप शेख़ सय्यद कमाल उद्दीन हुसैनी तिरमज़ी की नस्ल से हैं सिलसिला नसब अल्लामा अब्दुल हई लखनवी ने। नुज़हतुल ख़वातिर जिल्द ५ सफ़ा १६६। पर इस तर दर्ज किया है। शेख़ आलम फ़क़ीहा ज़ाहिद शहबाज़ इबने मुहम्मद बिन ख़ैरूद्दीन बिन अली बिन अली बिन इसमाईल बिन इसहाक़ बिन सईदी बिन याक़ूब बिन मुहम्मद बिन महमूद बिन मसऊद बिन शेख़ अहमद हुसैनी लाहौरी।
आप को बैत व रादत शाह यासीन सामानी मोहद्दिस से हासिल हुई ९८५ हि० में ३० साल की उर्म में देवराह में रही।
आप ने अपने वालिदे गिरामी मौलाना सय्यद मुहम्मद ख़त्ताब क़ुद्दसा सिर्रहु और क़ाज़ीउल क़ज़्ज़ात मौलाना मुफ्ति क़ाज़ी शाह मुहम्मद अब्बासी देवरवी से जुमला उलूम मत्दूला की तकमील फ़रमाई।
१५ साल की उर्म में जुमला उलूम अक़्लिया व नक़लिया पर दसतर्स हासिल कर लिया मगर इलमी पियास न बुझी फ़िर जौनपुर और कन्नौज में रह कर हुसूल फ़रमाया।

९७०हि० में मक्का मोअज़्ज़मॉ का सफ़र फ़रमाया और ख़तिमुल मुहद्दिसीन अल्लामा इबने हिर्ज मक्की के दर्स हदीस में शमिल हो गए ९७५ हि० में हज फ़रमाया ९८५ हि० में बशारत नबवी के तहत भागलपुर वापस आए । और भागलपुर को सरचशमॉ उलूम मसतफ़ूया बनाया। आप बुलन्द पाया फ़क़्या, बेमिसाल मोहद्दिस और यकताए रोज़गार सूफ़ी आलिम थे।
आप का दौरे अहद जहाँगीरी का दौर है दौरे शहजहाँनी में भी आप की अज़मत का सिक्का राएजुल वक़्त था । आप का फ़ैज़ान इल्मी व रूहानी हिंन्द व बैरूने हिंन्द तक फ़ैला हुआ था। आप की ज़ात जामिया उल उलूम और बहरूलसलासिल थी।
हिंन्दुस्तान के जुमला मशहूर सलासिल की इजाज़तें व ख़िलाफ़तें आप को हासिल थीं सलासिल आलिया बदिया मदारिया में आप को जो इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी उसका नक़शा (साहिबे काएनात तसूफ़) सय्यद मुहम्मद इशतीयाक़ आलिम ज़िया शहबाज़ी भागलपुरी ने इस तरह खींचा है।

सिलसिला मदारिया शहबाज़िया

(१) हज़रत रिसालत पनाह अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुसतुफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि वआलेहि वसल्लम
(२) हज़रत अमीरूल मोमिनीन शाहे मरदाँ अली उल मुर्तज़ा करमुल्लाहुल वजहुल करीम
(३) हज़रत सय्यदुल शहीद आसय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम
(४) हज़रत शेख़ रबी मुक़द्दसी क़ुद्दस सिर्रहु
(५) हज़रत शेख़ रफ़ी उद्दीन शामी क़ुद्दस सिर्रहु
(६) हज़रत शेख़ ऐन उद्दीन शामी क़ुद्दस सिर्रहु
(७) हज़रत शेख़ अमीनुद्दीन शामी क़ुद्दस सिर्रहु
(८) हज़रत शेख़ बदी उद्दीन ज़िन्दाह शाह मदार क़ुद्दस सिर्रहु
(९) हज़रत शेख़ हिसाम उद्दीन सलामती क़ुद्दस सिर्रहु
(१०) हज़रत शेख़ मुहम्मद अलाऊ क़ाज़िन शतारी चिश्ती क़ुद्दस सिर्रहु
(११) हज़रत शेख़ अबुल फ़ताह हिदायतुल्लाह सर मसत क़ुद्दस सिर्रहु

(१२) हज़रत शेख़ ज़हूर हाजी हुसूर कुद्दस सिर्रहु
(१३) हज़रत शेख़ हाजी हमीद उर्फ़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी कुद्दस सिर्रहु
(१४) हज़रत शेख़ वजीह उद्दीन बिन नसरूल्लाह अलवी कुद्दस सिर्रहु
(१५) हज़रत शेख़ मीर सय्यद यासीन सामानी कुद्दस सिर्रहु
(१६) हज़रत सुलतानुल आरफ़ीन बन्दिगी मौलाना शाहबाज़ मुहम्मद भागलपुरी कुद्दस सिर्रहु
(काएनात तसव्वुफ़ सफ़ा ६६४ मुसन्निफ़ सय्यद मुहम्मद इश्तियाक़ आलम शाहबाज़ी सज्जादा नशीन ख़ानकाह शाहबाज़िया भागलपुर बिहार)
सिलसिला मदारिया तैफ़ूरिया शाहबाज़िया
(१) हज़रत रिसालत पनाह अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुसतुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम
(२) हज़रत अमीरूल मोमिनीन अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि०
(३) हज़रत सय्यदना अब्दुल्लाह अलम बरदार मुस्तुफ़ा कुद्दस सिर्रहु
(४) हज़रत शेख़ यमीनुद्दीन शामी कुद्दस सिर्रहु
(५) हज़रत ऐन उद्दीन शामी कुद्दस सिर्रहु
(६) हज़रत तैफ़ूर शामी बायज़ीद बुसतामी कुद्दस सिर्रहु
(७) हज़रत शेख़ बदी उद्दीन ज़िन्दाह शाह मदार कुद्दस सिर्रहु
(८) हज़रत शेख़ हिसाम उद्दीन सलामती कुद्दस सिर्रहु
(९) हज़रत मुहम्मद अलाऊ क़ाज़िन शतारी कुद्दस सिर्रहु
(१०) हज़रत शेख़ अबुल फ़तेह हिदायत उल्लाह सरे मस्त कुद्दस सिर्रहु
(११) हज़रत शेख़ ज़हूर हाजी हुसूर कुद्दस सिर्रहु
(१२) हज़रत शेख़ हाजी हमीद उर्फ़ शेख़ मुहम्मद ग्वालियरी कुद्दस सिर्रहु
(१३) हज़रत वजीह उद्दीन बिन नसरूल्लाह अलवी गुजराती कुद्दस सिर्रहु
(१४) हज़रत मीर सय्यद यासीन सामानी कुद्दस सिर्रहु
(१५) हज़रत सुलतानुल आरफ़ीन मौलाना शाहबाज़ मुहम्मद भागलपुरी कुद्दस सिर्रहु

हज़रत सय्यद शाह मीठे मदार रज़ि०

हज़रत क़ाज़ी सय्यद महमूद कसूरी रज़ि० बारगाहे कुतबुल मदार रज़ि० में इस कदर अज़ीज़ो मक़बूल थे की सरकार ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० जब लखनऊ के गिरोह नवाह से गुज़र फ़रमाते तो क़ाज़ी महमूद कुद्दस सिर्रहु पर खुसूसी तवज्जो फ़रमाते अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमा कर करामातो नवाज़िशात की बारिश बरसाते एक मरतबा क़ाज़ी साहब ने सरकार मदारे पाक को कैफ़ोसरवर की हालत में देख कर अपने अरमानों की झोली फैला दी, अर्ज़ किया, हुज़ूर! अनवारे मुहम्मदिया व बरकातो मरतज़विया से आप ने जिस तरह मुझे नवाज़ा है मै उसका बेहद मम्नून व मशकूर हूँ लेकिन गुलिसताने मदारियत की जिस दौलतो सरवत से आपने मुझे नवाज़ा है उसका कोई वारिस ख़ास पैदा हो जाता तो आँखो को ठंडक पहुँचती और क़ल्ब व जिगर को सुकून मिलता सरकारे मदारे पाक ने क़ाज़ी मौसूफ़ की पुश्त पर अपना दस्ते नूरानीं फेरते हुए इरशाद फ़रमाया, क़ाज़ी महमूद! जाओ अल्लाह तआला तुम्हें एक बेटा इनायत फ़रमाएगा जो तुम्हारा वारिसे ख़ास और मेरा मानवी फ़रज़न्द होगा उसकी पैदाइश की ख़बर मुझे देना यह मिसराह सुन कर क़ाज़ी साहब बहुत खुश हुए और फ़ौरन सज्दाए शुर्क अदा किया जब मुद्दत मुक़र्ररा पर साहब ज़ादे का तवल्लुद हुआ तो सरकारे मदारे पाक तशरीफ़ लाए अबुल हसन मीठे मदार नाम तजवीज़ हुआ सरकार ने बच्चे के लिये दुआए ख़ैरो बरकत फ़रमाई और एक तावीज़ अता किया और कुछ खुसूसी अमानतों दईअत फ़रमाई हज़रत मीठे मदार विलायते अज़्मा के मरतबे पर फ़ाएज़ हुए सरकार की दुआ की बरकत से आप की औलाद में बड़े बड़े मुतज्जर उलमा और अकाबिरे औलिया पैदा हुए आप की करामातो हालात बज्ज़ ख़ार और तोफ़तुल अबरार वग़ैराह कुतुब सेर में तफ़सील से वारिद हैं। सन ६४२ हि० में आप का विसाल हुआ क़ता तारीख़ वफ़ातः

शाह मीठे मदार क़िबला दें। अज़्म फ़रमूद चूँ बाखुल्द बरीं
साल गुफ़तिश शदाज़ सराउलहाम हफ़त हादी दें बा इल्लीयीन (६४२हि०)

शिजरा ए मदारिया शाह ज़की उद्दीन मानकपुरी कुद्दसा

सिर्रहु

शाह ज़की उद्दीन मानकपुरी सज्जादाह नशीन शाह करम अहमद हिसामी करीमी मानकपुरी का शिजराह मदारिया मुहम्मद रज़ा हिसामी मानकपुरी ने इस तरह क़लम बंन्द फ़रमाया है।

इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत ज़ाते पाक व सफ़ात आलियात अहमदे मुजबा मुहम्मद मुस्तफ़ा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबु बक़्र रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत अमीरूल मोमिनीन इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत सुलतानुल आरफ़ीन बायज़ीद बुसतामी रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत अब्दुल्लाह मक्की रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत बदी उद्दीन शाह मदार बिन सय्यद अली हलबी क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत क़ाज़ी महमूद क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शेख़ मीठे मदार क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शेख़ ताहा मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शेख़ लाड मदारी क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ ख़्वाजा सुलतान मुहम्मद क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत क़ुतबुल अक़ताब शाह अब्दुल करीम मानकपुरी क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत सुलतान बायज़ीद मानकपुरी क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शेख़ दानियाल क़ुद्दस सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शाह मुहम्मद अहमद क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शाह महबूब आलम क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शाह मरम अली क़ुद्दसा सिर्रहु

इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत ग़ुलाम चिश्ती क़ुद्दस सिर्रहु
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शाह मुहम्मद मोहसिन क़ुद्दस उललाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत शाह करम अहमद हिसामी अल करीमी मानकपुरी क़ुद्दसा उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत ख़ाकपाए सग़ीर व कबीर फ़क़ीर ज़की उद्दीन सज्जादाह नशीन मानकपुरी बाकलम मुहम्मद रज़ा हिसामी अल करीम मानकपुरी (तज़किराहतुल मुत्तक़ीन सफ़ा १५२)

शिजराह तैफ़ूरिया मदारिया सज्जादाह नशीन ख़ानक़ाह सलोन शरीफ़ ज़िला राए बरेली

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुसतुफ़ा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत अबु बक़्र रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अमीर अबु बक़्र सिद्दीक़ रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ अल मोमिनीन इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत सुलतानुल आरफ़ीन बायज़ीद बुसतामी रज़ि०
इलाही बहुरमतेराज़ओ नियाज़ हज़रत शाह अब्दुल्लाह मक्की रज़ि०
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत बदी उद्दीन शाह मदार इबने सय्यद अली हलबी क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत क़ाज़ी महमूद क़ुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत शेख़ मीठे मदार क़ुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत शेख़ ताहा मदारी क़ुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत लाड मदारी क़ुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ ख़्वाजा सुलातन मुहम्मद क़ुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत हाजी अलहरमैन अल शरीफ़ैन शाह

अब्दुलकरीम मानकपुरी कुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत शेख़ पीर मुहम्मद पनाह शेख़ कुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत पीर करीम अता कुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत पीर मुहम्मद पनाह अता कुद्दस उल्लाह सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत शाह पीर मुहम्मद हुसैन अता कुद्दसा सिर्रहु
इलाही बहुरमते राज़ओ नियाज़ हज़रत शाह पीर मुहम्मद मेहँदी अता कुद्दसा सिर्रहु
इलाही बज्ज़ व ग़रीबी मुहम्मद नईम अता करीमी अशरफ़ी अजफ़ा गुनहम बा बख़्श व जमीऑ हाजात व मोहमात दीनी व दुनयवी मन बरार बजाह उलनबी वआलेहि अल अबरारें शिजराह मुतबरका तैफ़ूरिया के फ़क़ीर सय्यदाह अस्त हसब अल इरशाद जनाब शाह मुहम्मद अमीर हसन साहब मदारी बाग़र्ज़ मशमूल किताब तज़किरातुल मुत्तक़ीन तहरीर करदाह शदम

मुहम्मद नईम अता फ़ी अना
१२ रबीउलसानी १३२५ हि०
(तज़किरातुल मुत्तक़ीन सफ़ा १५२)
यानी। यह शिजराह मुबारका ख़ुद शाह मुहम्मद नईम अता शाह कुद्दसा सिर्रहु ने अपने हाथ से लिख कर तज़किरातुल मुत्तक़ीन में शामिल करने के वासते मौलाना शाह मुहम्मद अमीर हसन साहब मदारी साहब तज़किरातुल मुत्तक़ीन को इनायत फ़रमाया।

नोटः- मानकपुर और सलोन शरीफ़ के दोनों शिजरों में सुलातन बायज़ीद बुसतामी रज़ि० और हुज़ूर सय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दाह शाह मदार रज़ि० के दरमियान एक नाम हज़रत अब्दुल्लाह मक्की रज़ि० का किताबत की ग़लती से आ गया है। तहक़ीक़ यह है के यह हज़रत सय्यदना अमीरूल मोमिनीन सिद्दीक़े अक़बर रज़ि० व सय्यदना अमीरूल मोमिनीन मौला अली करम

उल्लाह वजहुलकरीम के ख़लीफ़ा हैं जैसा के सिलसिलाऐ मदारिया के दूसरे शिजरात से वाज़ेह है। वल्लाह आलम बिलसवाब

जानशीन क़ुतबुल मदार हज़रत ख़्वाजा अबु मुहम्मद अरगून रज़ि0: आप सर चश्मा बहर रज़ा काबा यक़ीन वर जामिनबॉ इसरारे इलाही मख़ज़न जूदे सख़ा आप का नुत्क़ शीरीं बयान आप का वाज़ा करिशमा साज़ आप हादी गुमराहाँ आले रसूल औलादे अली और जानशीन कुतबुल मदार रज़ि० हैं आप हसनी और हुसैनी सादात से हैं आप की मुक़द्दसा निसबत वालिद माजिद की तरफ़ से हज़रत सय्यदना इमाम आली मक़ाम हुसैन अलैहिस्सलाम शहीदे करबला और वालिद माजिद की जानिब से हज़रत सय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम से मिलता है। आप तीन भाई हैं सबसे बड़े आप हैं यानी
(१) ख़्वाजा मुहम्मद अरग़ून रज़ि०
(२) ख़्वाजा सय्यद अबु तुराब फ़नसूर रज़ि०
(३) ख़्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर रज़ि०
इबने ख़्वाजा सय्यद अब्दुल्लाह रज़ि० इबने ख़्वाजा सय्यद कबीर उद्दीन रज़ि०
इबने ख़्वाजा सय्यद वहीद उद्दीन रज़ि० इबने सय्यद यासीन उद्दीन रज़ि०
इबने सय्यद मुहम्मद रज़ि०इबने ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद दाऊद रज़ि०
इबने सय्यद मुहम्मद रज़ि०इबने ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद इबराहिम रज़ि०
इबने सय्यद मुहम्मद रज़ि०इबने ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद इसमाईल रज़ि०
इबने सय्यद मुहम्मद रज़ि०इबने ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद इसहाक़ रज़ि०
इबने सय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक़ रज़ि० इबने ख़्वाजा सय्यद निज़ाम उद्दीन रज़ि०
इबने ख़्वाजा सय्यद अबु सईद रज़ि० इबने ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद रज़ि०
इबने ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद जाफ़र रज़ि०
इबने ख़्वाजा सय्यद महमूद उद्दीन रज़ि०
बिरादर हक़ीक़ी हज़रत सय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार रज़ि० अल हलबी मकनपुरी

विलादत शरीफ़: यौमे जुमॉ बा वक़्त फ़र्ज यकुम रबिउल अव्वल ७८३

हि० में क़सबॉ ज़िनार मुल्क शाम में यह सूरज तुलू हुआ जिसकी रौशनी से तमाम आलम ज़ियाबार हुए।

तालीम व तरबिअत: मदरसा इबराहीमिया ख़ानकाह बदीया मदारिया बा मक़ाम बैरूत । यह मदरसा आप के जद्दे करीम हज़रत अल्लामा ख़्वाजा सय्यद इबराहीम रज़ि० ने क़ाएम फ़रमाया था वह अपने ज़माने के मुतबहर आलिम व साहिबे कमाल बुज़ुर्ग थे और ख़ानक़ाह मदारिया बैरूत के गद्दी नशीन थे।

आमदे हिंन्दुस्तान: आठवीं सदी हिजरी के आख़ीर में हुज़ूर सरकारे सरकाराँ सय्यद बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार रज़ि० बाग़र्ज़ हज हिंन्दुस्तानसे हेजाज़ व रवाना हुए मक्का मुकर्रमा पहुँचे तो आप की आमद की ख़बर अतराफ़ व जवानिब में फ़ैल गई जब यह ख़बर क़सबॉ ज़िनार शहर हल्ब पहुँची तो हुज़ूर सय्यद अबु मुहम्मद अरगून ने अपने वालिद मोहतर्म हज़रत ख़्वाजा सय्यद अब्दुलाह से अपने शौक़े दीदार का इज़्हार किया वालिद मोहतर्म आप को और आप के दोनों छोटे भाईयों कुदवतुल आरफ़ीन ख़्वाजा सय्यद अबुतुराब फ़नसूर व हज़रत ख़्वाजा शहबाज़ तरीक़त ख़्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर रज़ि० को लेकर मक्का मुकर्रमा हाज़िर हुए और शर्फ़ मुलाक़ात हासिल किया हुज़ूर सय्यदी क़ुतबुल मदार की निगाहे ख़ास बच्चों की तरफ़ हुई तो उनकी जबीनों पर सआदत मंन्दी के अनवार नज़र आए हुज़ूर मदारूल आलमीन ने हर सॉ ख़्वाजगान को सहन मस्जिदुल हराम में बैत फ़रमाया और उन पर बे इन्तिहा नवाज़िशात फ़रमाई उन्हें तक़र्रूबे ख़ास से नवाज़ा और हमेशा अपने साथ रखना पसन्द किया हज्जे बैतुल्लाह और ज़ियारते मदीना मुनव्वराह से फ़ारिग़ होने के बाद जब हुज़ूर शाह वला ने इरादाह किया हिंन्दुस्तान की तरफ़ जाए सफ़र का इस से पहले अपने वतन अज़ीज़ शहर हल्ब के क़सबा ज़िनार पहुँचे और तीनों फ़रज़न्दों को उनके वालिदैन से अपने हमराह ले जाने की इजाज़त तलब की उनके वालिदैन और

तमाम अहले ख़ानाँ ने बख़ुशी ख़ातिर आप के सुपुर्द फ़रमा दिया सरकार क़ुतबुल मदार मुख़तसर अर्सा वहाँ क़याम पज़ीर रहे और फिर तीनों शहज़ादों को अपने हमराह हिंन्दुस्तान लाए बहुत सारे मक़ामात से गुज़रते हुए तबलीग़ व अशाअत करते हुए लखनऊ की सर ज़मीन पर पहुँचे आप की आमद का शोर हुआ लोग जोक़ दर जोक़ आते रहे और फ़ैज़ मदारूल आलमीन से मालामाल हुए इसी दौरान हज़रत मख़दूम शाह मीना क़ुद्दसा सिर्रहुल अज़ीज़ की विलादत हुइ आप ने उनकी विलायत को ज़ाहिर फ़रमाया मुख़्तलिफ़ मक़ामात का दोरा फ़रमाते हुए जौनपुर तशरीफ़ लाए कुछ अर्सा क़याम के बाद फिर लखनऊ आए हज़रत शहाब उद्दीन पर काला आतिश की माअर्फ़त से मख़दूम शाह मीना को अपनी जानमाज़ तबर्रूका इनायत फ़रमाई और उनकी तक़बीत का एलान किया ८१८ हि० में मकनपुर शरीफ़ वारिद हुए जो उस वक़्त ग़ैर आबाद जंगल था।

निकाह: एक रोज़ हज़रत शेख़ अहमद ज़िन्दाह शाह मदार रज़ि० ने अपने खुलफ़ा व मुरीदीन की मजलिस में इरशाद फ़रमाया के मैंने ख़्वाजा मुहम्मद अरगून के निकाह और उस ज़मीन पर मुसतक़लन आबाद करने का फ़ैसला ले लिया है क्यों के इसी में रब तआला की रज़ा मंन्दी है तज़किरत किसी ने यह बात हज़रत ख़्वाजा अबु मुहम्मद अरगून को बताई तो आप ने इनकार फ़रमाया मगर सरकार मदारूल आलमीन को जब यह मालूम हुआ तो आप ने उन्हें तलब किया और फ़रमाया ऐ बेटे तुम्हारा और तुम्हारे छोटे भाईयों का निकाह होना मशयत यज़दी है और तुमसे इजराऐ नसल होना है इस लिये इनकार ना करना चाहिए हुज़ूरे वाला का हुक्म सुन कर आप ख़ामोश हो गए हज़रत ख़्वाजा सय्यद जमाल उ्दीन जानेमन जन्नती ने अर्ज़ किया के (जथरा मज़ाफ़ात कालपी) में सय्यद अहमद ख़ानदान फ़ातमी के मुमताज़ शख़्स हैं उनकी साहबज़ादी जन्नतुन्निसा के लिये पैग़ाम पहुँचाया जाए ग़र्ज़ के पैग़ाम पहुँचाया गया तो सय्यद अहमद जथरावी ने इसे बसरो व चश्म क़ुबूल किया

और यकूम रबीउल अव्वल ८२४ हि० को आप का निकाह हो गया और बाद में आप के दोनों छोटे भाई हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबु तुराब फ़नसूर हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर रज़ि० के निकाह भी देवहा और बिल्हौर में हो गऐ।

ख़िलाफ़त व जानशीनी: आप को बैत व ख़िलाफ़त का शर्फ़तो हुज़ूर मदारूल आलमीन से हासिल ही था उसके बाद सरकार क़ुतबुल मदार रज़ि० ने क़ुतबुल अक़ताब ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद अरगून को अपना जानशीने ख़ास मुकर्रर फ़रमा लिया चुनानचे हुज़ूर मदारे पाक ने एक दिन अपने क़रीब बुलाया और अपने सर अक़दस से दसतार उतार कर अबु मुहम्मद अरगून के सर पर यह दसतार बंन्दी और इरशाद फ़रमाया ऐ बेटे विलादत दो क़िस्म की होती है एक सलबी दूसरी रूहानी, सलबी तो माँ बाप से ताल्लुक़ रखती है और इसका ताल्लुक़ आलमे ख़ल्क़ से होता है जो कोई आता है। इस लिबासे ज़ाहिरी को पहने हुए जाता है। एक ना एक दिन उसको तर्क करना भी होगा, रूहानी विलादत मरबी रूह से मुताल्लिक़ होती है इस का ताल्लुक़ आलमे उम्र से है जो मेरा और तुम्हारा ताल्लुक़ है यह क़यामत तक काएम रहेगा इसको फ़ना नहीं है मैंने तुमको अपना जानशीन बनाया ज़ाहिरी ताल्लुक़ भी तुम्हारे साथ यह है के तुम मेरे भाई की औलाद हो और भाई की औलाद भाई की तरफ़ मनसूब हुआ करती है चुनानचे क़ुर्आन पाक में आया है, और ज़ाहिर है के हुज़ूर सरवरे आलम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नसब हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम से मिलता है ना के हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम से मगर चूँ के इसहाक़ अलैहिस्सलाम हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम के भाई थे उनको भी बाप कहा गया है लिहाज़ा तुम मेरी औलाद हो और शरीअत व तरीक़त में तुम मेरे जानशीन हो इसी तरह सरकार क़ुतबुल मदार रज़ि० ने अपने विसाल से पहले तमाम ख़ुलफ़ा व मुरीदीन से इरशाद फ़रमाया के सय्यद मुहम्मद अरगून को मैंने अपना जानशीन किया और इन तीनों शहज़ादों को बजाए मेरे तसव्वुर करना और

जो कोई मुशकिल पेश आए तो इनकी तरफ़ रूजू करना बाक़ी मेरी रूह जिस तरह अब तुम लोगों की तरबिअत बातनी करती है इनशा अल्लाह बाद विसाल भी उसी तरह करती रहेगी। ग़र्ज़ के जब हज़रत सय्यदना सय्यद बदी उद्दीन अहमद का विसाल हो गया तो बाद विसाल आप की जानशीनी और नक़ाबत के लिये ताजुल आरफ़ीन हज़रत ख़्वाजा सय्यद महमूद उद्दीन कंतुरी सर गिरोह तालबान मदार और ख़्वाजा सय्यद महमूद जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती सर गिरोह दीवानगान क़ाज़ी मुताहर कल्ला शेर सर गिरोह आशिक़ान और हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर और हज़रत क़ाज़ी अली शेर लहरी और हज़रत शम्सुद्दीन हसन अरब और हज़रत मीर रूकनुद्दीन हसन अरब व दीगर ख़ुलफ़ा मदारूल आलमीन व मुरीदीन ने बिल इज़्मा व बिल इत्तेफ़ेक़ तायद करते हुए हज़रत क़ुतबुल अक़ताब ख़्वाजा सय्यद अबु मुहम्मद अरगून रज़ि० को सरकार सय्यद बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार का जानशीन मुनतख़िब कर लिया और इसके बाद जमी ख़ुलफ़ा मुरीदीन ने फ़र्दन फ़र्दन ख़्वाजा मुहम्मद अरगून की बारगाह में नज़रे अताअत पेश की ।

करामात: आप की पूरी ज़िन्दिगी अल्लाह व रसूल की अताअत इबादत व रियाज़त मुजाहिदा नफ़्स व तसफ़ीए क़ल्ब और रूश्द व हिदायत में गुज़री । हालते बेदारी और हालते नोम दोनों में यकसा ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहते।

वफ़ात शरीफ़: आप की वफ़ात ६ जमादिउल आख़िर १८६१ हि० को हुई मज़ारे मुक़द्दस दरगाहे मोअल्ला हुज़ूर सय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार से मुत्तसिल है जो आज भी मरजॉ ख़लाएक़ और मुफ़ीज़े अनाम है।

औलाद व अमजाद: हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबुल फ़ाएज़ मुहम्मद रज़ि० सज्जादाह नशीन हज़रत ख़्वाजा सय्यद महमूद रज़ि० हज़रत ख़्वाजा सय्यद दाऊद रज़ि० हज़रत ख़्वाजा सय इसमाईल रज़ि० हज़रत ख़्वाजा सय्यद हामिद महामिद अलैहि अल रहमतो वर्रिज़वान।

क़ुतुब की शान: शेख़ अक़बर फ़तूहात मक्किया के बाब तीन सौ इक्यावन में रक्म तराज़ हैं के क़ुतुब की शान यह है के वह हमेशा इस हिजाब में रहता है जो इसके और अल्लाह तआला के दरमियान होता है और हिजाब मरते दम तक नहीं उठता और जब क़ुतुब इन्तिक़ाल करता है तो अल्लाह से जा मिलता है।

एक क़ुतुब के तसर्रूफ़ की हद क्या है:

सरकार ग़ौस पाक अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि० फ़रमाते है के अक़ताब के लिये सोला आलम हैं और हर आलम इनमें से इतना बड़ा है जो इस आलम के दुनियां व आख़िरत दोनों को मुहीत है मगर इस अमर को सिवा क़ुतुब के कोई नहीं जानता।

(अल दराउल मुनज़्ज़िम फ़ी मुनाक़िब ग़ौसे आज़म सफ़ा ५८)

हर ज़माना और हर विलायत के लिये एक क़ुतुब होता है:

अददुररूल मुनज़्ज़म में है के हर हर मुक़ाम पर इस मुक़ाम की हिफ़ाज़त के लिये वह गाँव हो यह क़सबा एक वली अल्लाह होता है जो इस गाँव का क़ुतुब कहा जाता है। ख़्वाह इस गाँव में मुसलमान रहते हों या काफ़िर अगर मुसलमान मौजूद हैं तो इनकी परवरिश ज़ेर तजल्ली इस्म हादी होगी और अगर काफ़िर हैं तो इनकी परवरिश ज़ेर तजल्ली मुज़िल होगी और यह दोनों सिफ़तें एक ही ज़ात की हैं (अल दराउल मुनज़्ज़िम सफ़ा ६४)

और फ़सलुल ख़िताब में है के बक़ौल साहिबे फ़तुहात मक्किया क़ुतबों की कोई इन्तिहा नहीं हर हर सिम्त में एक क़ुतुब होता जैसे क़ुतुब अब्बाद, क़ुतुब ज़ाहहाद, क़ुतुब इरफ़ा, क़ुतुब मुता वक्किलान वग़ैराह।

अक़ताब उमम ग़ुज़िश्ता:

याद रखे के अक़ताब से ज़माना कभी ख़ाली नहीं रहता। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अहदे रिसालते माब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक हर दौर में क़ुतुबे ज़मॉ का ज़हूर हुआ है। शेख़ अक़बर फ़तूहात

मक्किया के चौधवें बाबा में रक्म फ़रमाते हैं, ''उमम ग़ुज़िश्ता के तमाम अक़ताब कामलीन हज़रत आदम अलेहिस्सलाम से ले कर अहद रिसालते आब सल्लल्लाहु अलैहि वसललम तक कुल पच्चीस हुए हैं अल्लाह तआला ने मुशहिद क़ुद्दस में के जो मुशहिदाह बरज़ख़िया है इनसे मेरी मुलाकात कराई।'' इस वक़्त में शहर क़र्तबा में था और वह पच्चीस अक़ताब यह हैं!
(१) फ़र्क़ (२) मदाविल क़ुलूम (३) बक़ॉ (४) मुरतफ़ॉ (५) शफ़उल माज़ी (६) माहक़ (७) आक़िब (८) मनजूर (६) बहरूल माह (१०) अनसरूल हयात (११) शरीद (१२) साएग़ (१३) राजे (१४) तय्यार (१५) सालिम (१६) ख़लीफ़ा (१७) मक़सूम (१८) हई (१६) राक़ी (२०) वासे (२१) बहर (२२)मज़्फ़ (२३) हादी (२४) असलाह (२५) बाक़ी

वह अक़ताब जो अंबिया अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर हैं:

शेख़ अब्दुल रहमान चिश्ती बाहवाला फ़तूहात नक़्ल फ़रमाते हैं बारा अक़ताब ऐसे है जो बाज़े अंबिया अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर हैं जिसमें पहला क़ुतुब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है। इसका विर्द सूराह यासीन शरीफ़ है। दूसरा क़ुतुब हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है। इसका विर्द सूराह नस्र एज़ा जा नसरूल्लाह है। चौथा क़ुतुब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है इसका विर्द सूराह फ़ताह है। पाँचवा क़ुतुब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है। इसका विर्द सूराह ज़िल ज़लाल है। छटा क़ुतुब हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है। इसका विर्द सूराह वाक़्या है। सातवाँ क़ुतुब हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है इसका विर्द सूराह बक़र है। आठवाँ क़ुतुब हज़रत इलयास अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है इसका विर्द सूराह कहेफ़ है। नवाँ क़ुतुब हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है इसका विर्द सूराह नमल है। दसवाँ क़ुतुब हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है इसका विर्द सूराह अन ऑम है। ग्यारवाँ क़ुतुब हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है इसका विर्द सूराह ताहा है। बारवाँ क़ुतुब हज़रत शीस अलैहिस्सलाम के क़ल्ब पर है इसका विर्द

सूराह मुल्क है और कुतबुल मदार क़लबे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर होता है और बड़े शहर में होता है और इसका फ़ैज़ आलम सफ़ली व अलवी पर बराबर होता है। (उर्दू मुरातिल असरार सफ़ा ६३ शेख़ अब्दुल रहमान चिश्ती मतबुआ मकतबा जामेनूर देहली)

तमाम अक़्ताब क़ुतबुल मदार के महकूम होते हैं:

अक़्ताब जितने होते हैं सब के सब क़ुतबुल मदार के महकूम व मातहत होते हैं और यह बाराह अक़्ताब भी जिनका माँ सबक़ में ज़िक्र हुआ कुतबुल मदार के महकूम होते हैं और इन बाराह कुतबोह में से सात हफ़्त अक़लीम के हैं यानी हर अक़लीम में एक क़ुतुब और पाँच क़ुतुब यमन की विलायत में रहते हैं उनको क़ुतबे विलायत कहते हैं। क़ुतबे आलम यानी क़ुतबुल मदार का फ़ैज़ अक़्ताब अक़ालीम पर वारिद होता है और अक़्ताब अक़ालीम का फ़ैज़ अक़ालीम अक़्ताब विलायत पर आता है और अक़्ताब विलायत का फ़ैज़ तमाम औलिया पर जाता है और यही तरीक़ा क़यामत तक रहेगा।
(उर्दू मुरातिल असरार सफ़ा ६३८ शेख़ अब्दुल रहमान चिश्ती मतबुआ मकतबा जामेनूर देहली)

मरातिबे अक़्ताब:

गुज़िश्ता अवराक़ में बयान हो चुका है के विलायत के चार मरतबे हैं (१) सुग़रा (२) वसतॉ (३) कुबरॉ (४) उज़्मा और इन चारों के हर मरतबे में तीन तीन मुक़ाम हैं (१) बिदायत (२) वस्त (३) निहायत। इसी तरह अक़्ताब के भी मुख़्तलिफ़ मुक़मात व मुरातिब हैं चुनान्चे सय्यदना सय्यद मीर मुहम्मद मक्की मुरीद वख़लीफ़ा सय्यदना सय्यद नसीर उद्दीन चराग़ देहलवी रह० अपनी मशहूर ज़माना तसनीफ़ बहरूलमानी में तहरीर फ़रमाते हैं के जब वली यानी क़ुतुब तरक़्क़ी करता है तो क़ुतुबे विलायत हो जाता है और क़ुतुबे विलायत तरक़्क़ी करके क़ुतुब अक़लीम और क़ुतुब अक़लीम तरक़्क़ी करके क़ुतबे आलम हो जाता है और क़ुतबे आलम तरक़्क़ी कर के अब्दुलरब के मरतबा पर जो वज़ीरे क़ुतबुल इरशाद हो जाता है और क़ुतबुल अक़लीम ही

को क़ुतुब अबदाल भी कहते हैं फिर तीसरी मरतबा यह क़ुतबुल इरशाद हो जाता है और क़ुतबुल इरशाद तरक़्क़ी करके मुक़ामे फ़रदानियत में पहुँच जाता है अल ग़र्ज़ क़ुतबे आलम को इख़्तियार है के अगर चाहे तो अक़्ताब को क़ुतबियत से माज़ूल कर दे।
इबारत बाला से अक़्ताब के मरातिब व दरजात में तरक़्क़ी व प्रमोशन साफ़ ज़ाहिर है मज़ीद बरऑन क़ुतबे ज़ोदाह, क़ुतबे इबाद, क़ुतबे इरफ़ॉ, क़ुतबे मुतावक़्क़िलान वग़ैराह भी अक़्ताब के दरजात हैं जैसा के फ़स्लुलअख़ताब में है और हज़रत मौलाना अब्दुल रहमदान जामी अलैहिर्रहमा व अल रिज़वान नफ़हातुल अनस में हज़रत शेख़ अहमद जाम के हवाले में लिखते हैं के वह क़ुतुब औलिया थे और क़ुतबुल औलिया तमाम रबॉ मसकूँ में एक होता है जिसको क़ुतबे विलायत कहते हैं और इस को क़ुतबे जहाँ और जहाँगीर आलम भी कहते हैं क्यों के (उसके मातहत के) कल अक़्साम विलायत का क़याम इसी के दरजॉ से होता है (नफ़ुहातुल अनस अल्लामा जामी) इसी इबारत से ज़ाहिर हुआ के क़ुतुब विलायत को क़ुतुब औलिया, क़ुतुब जहाँ और जहागीर आलम के नाम से भी मौसूम करते हैं।

क्या क़ुतबे आलम, साहेबे ज़मा, क़ुतबुल अक़्ताब और क़ुतबुल मदार एक ही शख़्स के नाम हैं?

इसी तरह क़ुतबे आलम, साहिबे ज़माँ, क़ुतबुल अक़्ताब, क़ुतुब अकबर, क़ुतबुल इरशाद और क़ुतबुल मदार के बारे में कहा जाता है के यह सब एक ही शख़्स के नाम व अलक़ाब हैं चुनानचे सय्यदुस्सादात सय्यद बासित अली क़लन्दर क़ुद्दसा सिर्रहु अतहर फ़रमाते हैं के "क़ुतबुल इरशाद, क़ुतबुल अक़्ताब और क़ुतबे आलम और साहिबे ज़माँ और क़ुतबुल मदार एक शख़्स के नाम हैं जो बिल सालते इरफ़ान की कुँजी है और अक़्ताब के दरासिल मुवस्सिल इलल्लाह हैं वह नयाबत में क़ुतबुल अक़्ताब के रहते हैं और उसको इख़्तियार होता है के वह चाहे उनको अपनी नयाबत में रखे या ना रखे।
(मतालिब रशीदी सफ़ा २६७/,१ अल मदारूल मुनज़्ज़िम मनाक़िब ग़ौसे आज़म)

बहरूल मआनी में है कुतबे आलम हर ज़माने में एक होता है और मौजूदात अलवी व सफ़ली का वजूद उसके वजूद के सबब क़ाएम होता है और बावजा उसके कुतबे आलम होने के सबब चीज़ें क़ाएम होती हैं और बारह अक़ताब उसके सवा होते है। और कुतबे आलम को हक़ तआला से बेवासता फ़ैज़ पहुँचता है और उसी को कुतबे अकबर और कुतबुल इरशाद और कुतबुल अक़ताब और कुतबुल मदार भी चूँके हज़रत ज़िन्दाह शाह मदार मक़ामे कुतबुल मदार पर फ़ाएज़ थे इस लिये कुतुब और कुतबुल मदार के मनसब व मरतबा को वाज़ेह कर देना मुनासिब मालूम हो रहा है कारेईन कराम मुलाहिज़ा फ़रमाएँ के मक़ामे मदारियत क्या है

मक़ामे मदारियत

क़ुतुब लुगवी मॉनी:

चक्की की कील जिस पर चक्की घूमती है। मदारकार, सरदार क़ौम, ज़मीन के महवर का किनाराह, एक सिताराह का नाम जिस से क़िबला की ताईन करते हैं।

क़ुतुब का इसतिलाही मॉनी:

क़ुतुब उसको कहते हैं जो आलम में मनज़ूरे नज़र हक़ तआला हो हर ज़माने में और वह बर क़ल्ब इसराफ़ील अलैहिस्सलाम होता है।

(अल अददुररूल मुनज़्ज़म सफ़ा ५० । लताएफ़ अशरफ़ी)

अक़ताब की बरकत से आलम महफ़ूज़ है:

हज़रत शेख़ अकबर फ़तूहात के बाब तीन सौ तेरासी में लिखते हैं के कुतुब के सबब से अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखता है कुल दाएराह वजूद को आलिमे कून व फ़साद से और इमामैन की वजह से आलमे ग़ैब व शहादत को और औताद की वजह से जुनूब व शुमाल को और मशरिक़ व मग़रिब को और अबदाल की वजह से सातों विलायतों को महफ़ूज़ रखता है और कुतबुल अक़ताब से उन सब को क्यों के वह तो वह शख़्स है जिस पर सारे आलम का

अमर दाएर है।

कुतबे उलूम इसरार का आलिम होता है:

शेख़ अब्दुल वहाब शारानी अली वाक़यत व अल जवाहर के पैतालीस बाब में लिखते हैं के शेख़ अकबर फ़तूहात के बाब दो सौ पच्चीस में लिखते हैं के कुतुब अपनी क़तबियत में क़ाएम नहीं रह सकता वक्ते के उसको उन हुरूफ़ मक़तआत के मानी मालूम ना हों जो अवाएल सूरे क़ुर्आनी में होते हैं। (बाहवाला अलमदारूल मुअज़्ज़िम)

शेख़ अकबर फ़तूहात के बाब दो सौ सत्तर में लिखते हैं के क़ुतुब का नाम हर ज़माने में अब्दुल्लाह और अब्दुल जामा है और उसकी तारीफ़ यह है के वह मौसूफ़ बावसाफ़े इलाही हो यानी कुतुब सिफ़ाते अलाहया से मुतस्सिफ़ होता है और इख़लाक़ सर मदया के साँचे में डल जाता है। इस तौर पर के उसमें तमाम मआनी असमाए अलाहया पाए जाते हैं।

लताएफ़ अशरफ़ी में है के कुतुब कहते हैं चंन्द ज़ातों को जो मुतफ़र्रिक़ आबादियों में रहते हैं क्यों के हर विलायतमें अगर कुतुब ना हो तो आसार बरकात और ज़हूर हसनात और क़याम दुनयावी मुम्किन ना हों।

कुतब की विरासत:

शेख़ अकबर फ़तूहात मक्किया में लिखते है के कुतुब वो मर्दे कामिल है जिसने वह चार दिनार हासिल किए हों जिसका हर दिनार पच्चीस किरात का हो और उन से मर्दाने ख़ुदा की कैफ़िअत मालूम की जाती हो और चार दिनार से मुराद रूस्ल, अंम्बिया औलिया और मोमिनीन हैं और उन सब का वारिस कुतुब होता है ।

कहते हैं। (कज़ालिक फ़ी मुरातुल इसरार सफ़ा ६१) बहरूल मआनी में मज़ीद यह भी तहरी है के अलामत कुतबुल इरशाद (कुतबुल मदार) यह है के उसमें नूर तमक़ीन नज़र आए जो सब्ज़ रंग का होता है और कभी कभी सुर्ख़ रंग का और वह बे जहत तमाम अतराफ़ को आँख खोले ख़्वाह बंन्द किए हो यकसाँ दिखता है। उस नूर की हक़ीकत जान्ना ख़ासा मुसतुफ़ा सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का है क्यों के आप ही पर उसका पर तो पड़ा है । अनतही कलामा । इसी तर तज़्क्रितुल आबदीन सफ़ा २४४ पर है । अब यह समझ लेना चाहिए के उन तमाम गिरोहों में क्या क्या मर्तबा औलिया अल्लाह का होता है । दुनिया का कुल कारख़ाना अल्लाह जल्ले शानों ने औलियाए कराम की ज़ात से वाबिसता किया है और इस गिरोह के बाराह नू हैं। अव्वल उनमें क़ुतबुल अक़्ताब हैं जिस जिस को क़ुतबे आलम भी कहते हैं वह एक ही होता है ख़्वाह क़ुतबुल इरशाद हो या क़ुतबुल मदार उसके बाराह नाएब या यूँ कहे के मदारूल महाम होते हैं दूसरा ग़ौस है रूतबा उसका क़ुतुब से कम होता है। अल्ख़ ।

इन इबारात से ख़ूब ख़ूब मालूम हुआ के अक़्ताब के मुख़्तलिफ़ दरजात व मक़ामात हैं नेज़ यह भी ज़ाहिर हुआ के क़ुतबे अकबर, क़ुतबे आलम, क़ुतबुल अक़्ताब और क़ुतबुल इरशाद व क़ुतबुल मदार एक ही शख़्स के नाम हैं। इन नामों में से किसी नाम से उनके औसाफ़ व मरातिब और मक़ामात व मनाक़िब बयान हों वह सब क़ुतबुल मदार के औसाफ़ व मरातिब और मक़ामात व मनाकिब हों गे।

सबसे बड़ा क़ुतुब क़ुतबुल मदार होता है:

तफ़सीर रूहुल बयान उर्दू ज़ेराएत व अल जबाल औतादा (पा अम) में रक़्म है के हर ज़माने में एक क़ुतुब होता है यह क़ुतुब सबसे बड़ा होता है इसे मुख़्तलिफ़ नामों से पुकारा जाता है। क़ुतबे आलम, क़ुतबे कुबरा, क़ुतबुल इरशाद, क़ुतबुल मदार, क़ुतबे जहाँ, और जहाँगीर आलम । आलमे अलवी और आलमे सफ़ली में इसी का तसर्रूफ़ होता है और सारा आलम उसी के फ़ैज़ व बरकत से क़ाएम होता है अगर क़ुतबे आलम का वजूद दरमियान से हटा दिया जाए तो सारा आलम दरहम बरहम हो कर रह जाए। क़ुतबे आलम बराहे रास्त अल्लाह तआला से अहकाम व फ़ैज़ हासिल करता है और उन फ़ियूज़ को अपने मातहत अक़्ताब में तक़सीम करता है वह दुनियां के किसी बड़े शहर में सुकूनत रखता है बड़ी उर्म पाता है नूरे ख़ाम मुसतुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकात हर सिम्त से हासिल करता है वह अपने मातहत

अक़्ताब के तक़र्रूं, तनज़ुल और तरक़्क़ी के इख़्तियार का मालिक होता है वली को माज़ूल करना, विलायत को सल्ब करना, वली को मुक़र्रिर करना, इसके दरजात में तरक़्क़ी दुनिया इसी के फ़राएज़ में है वह विलायत शम्स पर फ़ाएज़ होता है लेकिन इसके मातहत अक़्ताब को विलायत क़मर में जगह मिलती है । क़ुतबे आलम अल्लाह तआला के इस्मे रहमान की तजल्ली का मज़हर होता है । सरकार दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम मज़हर ख़ास तजल्लीउल विलायत हैं। क़ुतबे आलम सालक भी होता और उसका मुक़ाम तरक़्क़ी पज़ीर होता है हत्ता के वह मुक़ाम फ़रदानियत तक पहुँच जाता है । यह मक़ामे महबुबियत है । लजालुल्लाह में इस क़ुतबे आलम का नाम अब्दुल्लाह भी है ।

(तफ़सीर रूहुल बयान उर्दू सफ़ा २१ ज़ेरायत वलजबाल औताद पा/अम : तरजुमा मौलाना मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी ,, मतबुआ रिज़वी किताब घर मटीया महल देहली)

क़ुतबुल मदार पर मख़्लूक़ के अहवाल रौशन रहते हैं:

चूँ के क़ुतबुल मदार पर ख़ल्क़ के अहवाल गर्दिश करते रहते हैं इस लिये क़ुतबुल मदार मख़्लूक़ के अहवाल को जानता है और उस पर ख़ल्क़ की हालत आशकार होती है।

शेख़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ क़ाशानी रहमतुल्लाह तआला अलैहि सुबहानी फ़रमाते हैं के सूफ़िया की इसतलाह में क़ुतुब मदार उस तरीन इनसा को कहते हैं जो मक़ामे फ़रदिअत पर फ़ाएज़ हो जिस पर मख़्लूक़ के अहवाल गर्दिश करते हैं।

क़ुतबुल मदार विलायत के तमाम मुक़ामात व अहवाल का जामॉ होता है:

साहिबे फ़ताविया शामिया इबने आबिद बिन शामी क़ुद्दस उल्लाह सिर्रहुल नूरानी नक़्ल फ़रमाते हैं के

ख़लीफ़ा बातिन जो अपने ज़माने वालो का सरदार होता है उसी को क़ुतबुल मदार कहते हैं क्यूं के तमाम मक़ामात व अहवाल वह जामा होता है और

तमाम मक़ामात व मरातिब उसी के गिर्द घूमते हैं।

मरतबा क़ुतबुल मदार:

शेख़ अकबर मोही उद्दीन इबने अरबी अलैहि रहमतो वर्रिज़वान फ़रमाते हैं "क़ुतबियत किबरिया क़ुतबुल अक़्ताब का मरतबा है के जो मरतबा बातिन नबूवत आ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है और यह मरतबा सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसललम के वरसा के लिये मख़्सूस है इस लिये के आ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसललम साहिबे नबूवत आमा व रिसालत शामिला में सारे आलम के लिये और अकमिलयत के साथ मख़सूस हैं तो ख़ातिमुल विलायत और क़ुतबुल अक़्ताब वही होगा जो बातिन ख़तिमुल नबूवत पर हो। (फ़तूहात फ़स्ल ३१/बाब १६८/बाहवाला अलमदारूल मुनज़्ज़म सफ़ा १५०)

मरतबा क़ुतबुल मदार मुनतहाए दरजा विलायत है:

साहिबे मदारूल मुनज़्ज़िम फ़रमाते हैं क़ुतबुल अक़्ताब वह है जिस के मरतबा से आला सवाए नबूवत आमा के और कोई मरतबा ना हुआ इसी वजह से क़ुतबुल अक़्ताब सिद्दीक़ों का सरदार होता है।

(अददुररूल मुनज़्ज़म सफ़ा ५०)

लताएफ़ अशरफ़ी में शेख़ अकबर रहमतुल्लाह तआला अलैहि के फ़रमान को इस तरह नक़ल किया है।

यानी क़ुतुब वह है जो आलम में मनज़ूरे नज़र इलाही होता है और वह हर ज़माने में होता है और वह इसराफ़ील अलैहिस्सलाम के मशरब पर होता है और क़ुतबिअत किबरिया जो क़ुतबुल अक़्ताब (क़ुतबुल मदार) का मरतबा है और यह मरतबा बातिन नुबूवत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है और यह मरतबा कमाले सिर्फ़ वारिसाने मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है इस लिये के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही अकमिलयत से मुख़तस हैं तो ख़ातिमुल विलायत और क़ुतबुल अक़्ताब वही होगा जो बातिन ख़ातिमुल नुबूवत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हो।

इनतही कलामा।"

इबारत बाला से वाज़ेह हुआ के क़ुतबुल मदार क़ुतबियत क़ुबरा के मुक़ाम पर फ़ाएज़ होता है क़ुतबुल मदार जो क़ुतबुल अक़्ताब भी होता है वही अकमिलयत विरासते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हामिल व मुतहमिल होता है और क़ुतबुल मदार ख़ातिमुल नबीयीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विरासत से मुनतहाए दर्जा विलायत ख़तिमुल विलायत के मनसब पर फ़ाएज़ होता है और वही विलायत ख़ासा मुहम्मदीया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वारिस क़ामिल होता है।

विलायत ख़ासा मुहम्मदीया का फ़ैज़ान:

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी क़ुद्दस सिर्रहुल सामी अपने मकतूबात में इरशाद फ़रमाते हैं के "विलायत ख़ासा से विलायत मुहम्मदीया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुराद है। विलायत मुहम्मदीया अली साहबहा अस्सलातो वस्सलाम में फ़ना अतुम और बक़ाए अकमल हासिल होती है तो जो नेक बख़्त इस नेमते अज़्मा से मुशर्रफ़ किया गया इसका जिस्म ताअत के लिये नर्म हो गया और इसका सीना इसलाम के लिये खुल गया और इसका नफ़्स मुतमईनना हो गया और इसका नफ़्स अपने मौला से राज़ी हो गया और उसका मौला उस्से राज़ी हो गया और इसका दिल रबतआला की ज़ात के लिये ही ख़ालिस हो गया और इसकी रूह पूरे तौर पर सिफ़ात लाहूत के मुक़ाशफ़े के लिये आज़ाद हो गई और इसका सिर शतयून व ऐतबारात के मुलाहिज़ा के साथ मौसूफ़ हो गया और इस मुक़ाम में तजल्लीयाते ज़तिया बरकिया से मुशर्रफ़ हो गया और इसका लतीफ़ा ख़फ़ी रब तआला के कमाल तनुज़्ज़ाह और तक़द्दुस किबरिया के सामने दरियाए हैरत में डूब गया, इसका लतीफ़ा अख़फ़ा इस ज़ात के साथ बेकैफ़ और बेमिसाल तरीका पर इतसाल पज़ीर हो गया।"

अरबाब नेमत को नेमते मुबारक हों (मकतूबात मुजद्दिद जिल्द अव्वल मकतूब न० १३५)

लताएफ़ छः हैं: याद रहे के इनसानी वजूद के अंन्दर लताएफ़ कुल छः हैं जो लताएफ़ सत्ता के नाम से मौसूम हैं यानी (१) लतीफ़ा नफ़्स (२) लतीफ़ा क़ल्ब (३) लतीफ़ा रूह (४) लतीफ़ा सिर्र (५) लतीफ़ा ख़फ़ी (६) लतीफ़ा अख़फ़ा लतीफ़ा नफ़्स का मुक़ाम नाफ़ है। लतीफ़ा क़ल्ब का मुक़ाम बायाँ पहलू, लतीफा रूह का मुक़ाम दायाँ पहलू, लतीफ़ा सिर्र का मुक़ाम दरमियाने क़ल्ब व रूह, लतीफ़ा ख़फ़ी का मुक़ाम पेशानी और लतीफ़ा अख़फ़ा का मुक़ाम सर की चोटी है। इक़्तिबास अल अनवार में है के क़ुतबुल इरशाद (जिसे क़ुतबुल मदार भी कहते हैं) आ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्मे लदुन्नी का वारिस होता है और नबी उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तजल्लीयात के लिये अज बस साहिबे लतीफ़ा अख़फ़ा होता है।

(उर्दू इक़्तिबास अल अनवार शेख़ मुहम्मद अकरम क़ुद्दूसी सफ़ा ४१/ मतबूआ जसीम बुक डिपो देहली। ज़माना तालीफ़ ११३० हि०)

यानी उसका लतीफ़ा अख़फ़ा जो सर की चोटी में है ज़िन्दाह ज़ाकिर होता है यह मुक़ाम फ़ना बलके फ़नाउल फ़ना है जिसके उपर कोई मुक़ाम नहीं।

विलाएते ख़ासा मुहम्मदीया अली साहबहा अस्सलातो वस्सलाम तमाम मुरातिब विलायत से मुम्ताज़ है:

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़सानी क़ुद्दसा सिर्रहुल नूरानी फ़रमाते हैं और एक बात जो ज़हन में रखनी चाहिये यह है के विलायते मुहम्मदीया अला साहबहा अस्सलातो वस्सलाम उरूज व नुज़ल के तरीक़ों में दूसरे तमाम मुरातिब विलायत से मुम्ताज़ और अलग हैं जनाबे उरूज में तो इस तरह के लतीफ़ा अख़्फ़ा की फ़ना और इसकी बक़ा इसकी विलायत ख़ासा के साथ मुख़्तिस है बाक़ी तमाम विलायतों का उरूज अपने दरजात के फ़र्क़ के मुताबिक सिर्फ़ लतीफ़ा ख़फ़ी तक है यानी बाज़ अरबाब विलायत का उरूज सिर्फ़ रूह तक है और बाज़ का सिर्र तक और कुछ दूसरों का उरूज लतीफ़ा ख़फ़ी तक है और यह विलायत मुहम्मदीया अली साहबहा अस्सलातो वस्सलाम व अल ताहया के औलिया के अजसाम ज़ाहिराह को भी इस

विलायत के दरजात कमालात से हिस्सा मिलता है क्यूँ के नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शबे मेराज जहाँ तक ख़ुदा ने चाहा जसदे अनसरी के साथ उरूज नसीब हुआ। आप पर जन्नत दोज़ख़ पेश किये गए और आप हक़ तआला की रूयत बसरी से मुशर्रफ़ किये गए इस तरह मेराज हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के लिये ख़ास है और वह औलिया जो हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की कमाल मुताबिअत से मौसूफ़ हो कर विलायते ख़ासा के वारिस हुए हैं और आप के कदम मुबारक के नीचे चलते हैं इन्हें भी इस मरतबा मख़सूसा से हिस्सा मिलता है।

लेकिन जो औलिया ज़ेरे क़दम नुबूवत है इन्हें जो हालत नसीब होती है वह रूईयत असलिया की हालत नहीं, रूईयत और इस हालत में फ़र्क़ असल व फरॉ और शख़्स व साया का फ़र्क है। रूईयत और यह हालत एक दूसरे का ऐन नहीं।

(मकतूबात इमाम रब्बानी जिल्द अव्वल मकतूब न० १३५)

रूश्द व हिदायत और ईमान व मारिफ़त का नूर क़ुतबुल इरशाद के वसीले से

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद अरगून

मुक़तिदाए औलिया पेशवाए असफ़िया, शाहबाज़ आसमान विलायत व करामात, मैदाने सख़ावत व क़नाअत, हादी राहे शरीअत, साती जामे तरीक़त, मोअल्लिम रमूज़े हिकमत, वाक़िफ़ इसरारे हक़ीक़त, ग़वास बहरे माअर्फ़त, मुवर्रिद फ़यूज़ फ़यूज़े इलाही, पैकरे इख़लाक मुसतफ़वी, वारिसे औसाफ़ मुरतज़वी, क़ुदवतुल आरफ़ीन, उमदतुल कामिलीन, रहबरे दीन, क़िबला अहले यक़ीन, क़ुतबुल अस्र, ग़ौसुद्दहर, सुलतानुल आरफ़ीन हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबु मुहम्मद अरगून जाफ़री मदारी हलबी मकनपुरी रज़ि० ख़ानदाने फ़तमी के रौशन चिराग़, सिलसिला आलिया मदारिया के सर गिरोह, बहुत बड़े और नामूर वली, जामा कमालात सूरी व मानवी बुर्ज़ुग गुज़रे हैं ग़ैर मुनक़सिम हिंन्दुस्तान के गोशा गोशा में आप के ख़्वारक़ व करामात, मुहासिन

व कमालात और रूहानियत व माअर्फ़त की आम शोहरत व मक़बूलिअत है।

आप ने अपने सर चशमा फ़ैज़ व इरशाद से एक आलम को सहराब फ़रमाया। आप की तवज्जो से हज़ारो गुश्तगान राहे हक़ पर गामज़न हुए और हज़ारों के दामन तल्बे गौहर मक़सूद भरे।

आप सरकारे सरकारा शहन्शाह औलिया कबार सय्यदुल अफ़राद क़ुतबे वहदत हुज़ूर सय्यदना बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दाह शाह मदार रज़ि० के बिरादर ज़ादाह, फ़र्ज़न्द मानवी, मुरीद व ख़लीफ़ा और सज्जादाह नशीन हैं इस्म शरीफ़ "मुहम्मद" कुन्नियत "अबु मुहम्मद" और लक़ब "अरगून" है। आप का क़सबा जिनार, शहर हल्ब मुल्के शाम है।
निसबन सादात हुसैनी जाफ़री से हैं।

आप का नसब नामा: अल सय्युदुल शरीफ़ अब्दुल्लाह बिन सय्यद क़बीर उद्दीन बिन सय्यद वहीद उद्दीन बिन सय्यद यासीन बिन सय्यद मुहम्मद बिन सय्यद दाऊद बिन सय्यद मुहम्मद बिन सय्यद इबराहीम बिन सय्यद मुहम्मद बिन सय्यद इसमाईल बिन सय्यद मुहम्मद बिन सय्यद इसहाक़ बिन सय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक़ बिन सय्यद निज़ामुद्दीन बिन सय्यद अबु सईद बिन सय्यद मुहम्मद बिन सय्यद जाफ़र बिन सय्यद महमुद्दीन (बिरादर हज़रत सय्यद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दाह शाह मदार) बिन सय्यद अली बिन सय्यद बहा उद्दीन बिन सय्यद ज़हीर उद्दीन अहमद बिन सय्यद इसमाईल सानी बिन सय्यद मुहम्मद बिन सय्यद इसमाईल बिन सय्यद इमाम जाफ़र सादिक़ बिन सय्यद इमाम मुहम्मद बाक़र बिन सय्यद अली औसत ज़ैनुल आबदीन बिन इमाम हुसैन बिन अली (रिज़वान उल्लाह अलैहिम अजमईन)

विलादत शरीफ़: यौम जुमा बावक़्त फ़ज्र यकुम रबी उल अव्वल ७८३हि०
तालीम व तरबिअत: मदरसा इबराहीमया ख़ानक़ाह बदीया मदारिया
बामुक़ाम बैरूत: यह मदरसा आप के जद मुकर्रम हज़रत अल्लामा ख़्वाजा सय्यद इबराहीम रज़ि० ने जारी फ़रमाया था। वह अपने ज़माने के

मुतबहर आलिम व साहिबे कमाल बुर्ज़ुग और ख़ानक़ाह मदारिया बैरूत के गद्दी नशीन थे।

आमदे हिंन्दुस्तान: आठवीं सदी हि० के आख़िर में हुज़ूर सरकारे सरकारां सय्यद बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार रज़ि० बाग़र्ज़ हज हिंन्दुस्तान से हजाज़ रवाना हुए। मक्कतुल मुकर्रमॉ पहुँचे तो आप की आमद की ख़बर इतराफ़ व जवानिब में फ़ैल गई।

जब यह ख़बर क़सबा जिनार शहर हल्ब पहुँची तो हुज़ूर सय्यद मुहम्मद अरगून ने अपने वालिदे मोहतरम हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह से अपने शौके दीदर का इज़हार किया। वालिदे मोहतरम आप को और आप के दोनों छोटे भाईयों (हज़रत किदवातुल आरफ़ीन ख़्वाजा सय्यद अबु तुराब फ़नसूर व हज़रत शहबाज़ तरीक़त ख़्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर रज़ि०) को लेकर मक्का मुकर्रमा में हाज़िर हुए और शर्फ़ मुलाकात हासिल किया। हुज़ूर सय्यदी क़ुतबुल मदार की निगाह अलतिफ़ात बच्चों की तरफ़ हुई तो इनकी जबीनों पर अनवारे सआदत मुसकुरान लगे। हुज़ूर मदारूल आलमीन ने हिरसा ख़्वाजगान को सहन मस्जिदुल हराम में बैत फ़रमाया और इन पर बे इनतिहा नवाज़िशात फ़रमाईं और इन्हें तकर्रूब ख़ास से नवाज़ा और हमेशा अपने साथ रखना पसंन्द फ़रमाया।

अरकान व लवाज़िम हज व ज़ियारत से फ़राग़त के बाद जब हुज़ूर शाह वाला आज़म हिंन्दुस्तान हुए। तो पहले अपने आबाई वतन क़सबा जिनार पहुँचे और तीनों शहज़ादों की सआदत मंन्दी से इनकी वालिदाह माजिदाह और अहले ख़ानदान को मुताला फ़रमा कर अपनी मोअईयत में रखने की इजाज़त ली। आप ख़ुद ही साहिबे इख़्तियार व बर सरे इक़्तिदार थे इस लिये तमाम अहले ख़ानदान ने बख़ुशी ख़ातिर मामला आप की मरज़ी पर मौक़ूफ़ कर दिया।

सरकार क़ुतबुल मदार मुख़तसिर अरसा क़याम पज़ीर रहे और फिर तीनों शहज़ादों को हमराह लेकर आज़िम सफ़र हुए। मुख़तलिफ़ मुक़ामात पर

तबलीग़ व अशाअत फ़रमाते हुए लखनऊ जलवा अफ़रोज़ हुए मख़लूके ख़ुदा को मुसतफीज़ फ़रमाया । इसी दौरान हज़रत मख़दूम शाहमीना क़ुद्दसा सिर्रहुल अज़ीज़ की विलादत हुई । आप ने इनकी विलायत को ज़ाहिर फ़रमाया । मुख़्तलिफ़ मुक़ामात का दौराह फ़रमाते हुए जौनपुर तशरीफ़ लाए । कुछ अरसा क़याम के बाद फिर लखनऊ आए । लखनऊ में शहाब उद्दीन पुर काला आतिश की माअर्फ़त से हज़रत मख़दूम शाह मीना को अपनी जानमाज़ तबर्रूकन इनायत फ़रमाई और उनकी क़ुतबिअत का एलान फ़रमाया ८१८ हि० में मकनपुर शरीफ़ वारिद हुए जो उस वक़्त ग़ैर आबाद एक जंगल था ।

निकाह: एक रोज़ हज़रत शेख़ अहमद ज़िन्दाह शाह मदार रज़ि० ने अपने ख़ुलफ़ा व मुरीदीन की मजलिस में इरशाद फ़रमाया के मैंने ख़्वाजा मुहम्मद अरगून के निकाह और इन्हें इस ज़मीन पर मुसतक़लन आबाद करने का फ़ैसला ले लिया है क्यों के इसी में रब तबारक व तआला की मरज़ी है ।

तज़किरत किसी ने यह बात हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबु मुहम्मद अरगून को बताई तो आन ने इनकार फ़रमाया मगर सरकार मदारूल आलमीन को जब यह मालूम हुआ तो आप ने उन्हें तलब किया और इरशाद फ़रमाया ऐ फ़र्ज़न्द ! तुम्हारा और तुम्हारे भाईयों का निकाह होना मशीत यज़दी है और तुम से अजराऐ नसल होना है । इस लिये इनकार ना करना चाहिए । हुज़ूरे वाला का हुक्म सुन कर आप ख़ामोश हो गए । हज़रत ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती ने अर्ज़ किया के क़सबा जुथरा (मज़ाफ़ात कालपी) में हज़रत सय्यद अहमद ख़ानदाने फ़ातमी के एक मुमताज़ शख़्स हैं उनकी साहेब ज़ादी जन्नतुन निसा के लिये पैग़ाम पहुँचाया जाए । ग़र्ज़ के पैग़ाम पहुँचाया गया तो हज़रत सय्यद अहमद जुथरावी ने उसे बस्र व चश्म क़ुबूल कर लिया और यकुम रबी उल अव्वल ८२४ हि० को आप का निकाह हो गया ।

बाद में आप के दोनों छोटे भाई हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबु तुराब

फ़नसूर व हज़रत ख्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर रज़ि० के निकाह भी हो गए ।

ख़िलाफ़त व जानशीनी: आप को बैत व ख़िलाफ़त का शर्फ़ तो हुज़ूर मदारूल आलमीन से हासिल ही था । शेख़ मुर्शिद की निगाहे इन्तिख़ाब ने अपना जानशीन भी मुक़र्रिर फ़रमा लिया चुनानचे हुज़ूर मदार पाक ने एक दिन अपने क़रीब बुलाया और इरशाद फ़रमाया, ऐ फ़र्ज़न्द ! विलादत दो क़िस्म की होती है एक सलबी और दूसरी रूहानी । सलबी तो माँ बाप से ताल्लुक़ रखती है । इसका ताल्लुक़ आलमे ख़ल्क़ से है जो कोई आता है इस लिबासे ज़ाहिरी को पहने हुए आता है । एक ना एक दिन उसको तर्क करना भी होगा । रूहानी विलादत मरबी रूह से ताल्लुक़ होती है । इसका ताल्लुक़ आलमे अमर से है जो तेरा और तुम्हारा ताल्लुक़ है यह क़यामत तक क़ाएम रहेगा इसको फ़ना नहीं है । मैने तुम्को अपना जानशीन बनाया । ज़ाहिरी ताल्लुक़ भी तुम्हारे साथ यह है के तुम मेरे भाई की औलाद हो और भाई की औलाद भाई की तरफ़ मनसूब हुआ करती है चुनानचे क़ुर्आन पाक में आया है और ज़ाहिर है के हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम से मिलता है ना के हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम से मगर चूँ के हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम के भाई थे । उनको भी बाप कहा गया लिहाज़ा तुम भी मेरी औलाद हो और शरीअत व तरीक़त में मेरे जानशीन उसी तरह सरकार क़ुतबुल मदार रज़ि० ने अपने विसाल से क़ब्ल तमाम ख़ुलफ़ा व मुरीदीन से इरशाद फ़रमाया के सय्यद मुहम्मद अरगून को मैंने अपना जानशीन किया और इन तीनों सय्यद मुहम्मद अरगून, सय्यद अबु तुराब फ़नसूर, सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर को बजाए मेरे यकसाँ तसव्वुर करना और जो कोई मुशकिल पेश आए तो उनकी तरफ़ रूजू करना बाक़ी मेरी रूह जिस तरह अब तुम लोगों की तरबिअत बातनी करती है इन्शा अल्लाह बाद विसाल भी इसी तरह करती रहेगी जो कोई मुझ से इरादत रखता है मैंने उसे क़बूल किया

उसकी सात नसलों तक क़ुबूल किया और जो कोई मेरे इन फ़र्ज़न्दों से इरादत रखता है मैंने उसे भी सात पुशतों तक क़ुबूल किया

ग़र्ज़ के जब हुज़ूर मदारूल आलमीन का विसाल हो गया तो बाद विसाल आप की जानशीनी का मसला दरपेश आया तो ताजुल आरफ़ीन हज़रत ख़्वाजा सय्यद महमूद उद्दीन कसूरी (कसूरी) सर गिरोह तालबान मदार और ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती सर गिरोह दीवानगान, क़ाज़ी मुताहर क़ल्ला शेर सर गिरोह आशिक़ान व हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबु तुराब फ़नसूर व हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर व हज़रत क़ाज़ी अली शेर लहरी और हज़रत मीर शम्स उद्दीन हसन अरब व हज़रत मीर रूकनुद्दीन हसन अरब व दीगर ख़ुलफ़ा मुरीदीन ने बिला इत्तिफ़ाक़ हज़रत क़ुतबुल अक़ताब ख़्वाजा सय्यद अबु मुहम्मद अरगून रज़ि० को सरकार मदारूल आलमीन का जानशीन मुनतख़िबकर लिया और नज़रे अताअत पेश की।

करामात: आप की पूरी ज़िन्दिगी अल्लाह व रसूल की अताअत, इबादत व रियाज़त, मुजाहिदाह नफ़्स व तसफ़िया क़ल्ब और रूश्द व हिदायत में गुज़ारी।

हालते बेदारी और हालते नूम दोनों में यकसाँ ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ थे।

जब तिलावते क़ुर्आन मजीद फ़रमाते तो लोग महू व मस्त हो जाते थे चरिन्द, परिन्द भी पास आ कर जमा होने लगते थे और बेहोश हो जाते थे।

आप की आवाज़ बहुत दिलकश थी इसी वजह से सय्यदना मदारूल आलमीन ने लक़ब ''अरगून'' से मुलक़्क़िब फ़रमाया। अरगून ''अरग़ून'' का मख़फ़ुफ़ है। एक क़िस्म के नफ़ीस बाजे को कहते हैं।

औलाद माजिद: हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबुल फ़ाएज़ मुहम्मद। हज़रत ख़्वाजा सय्यद दाऊउद। हज़रत ख़्वाजा सय्यद इसमाईल। हज़रत सय्यद हामिद मुहामिद अलैहिम अल रहमतुल्लाह वरिज़वान।

ख़िलाफ़त बावक़ार: सुलातनुल औलिया सरगिरोह मदारिया हज़रत

ख़्वाजा सय्यद अबुल फ़ाएज़ मुहम्मद सज्जादाह नशीन सुलतानुल तारकीन उमदतुल कामेलीन हज़रत ख़्वाजा सय्यद महमूद सदर नशीन। हज़रत शाह सय्यद हुसैन सर हिंन्दी हज़रत शेख़ सैफ़ उद्दीन। हज़रत ख़्वाजा सय्यद मुहम्मद। शेख़ कामिल हज़रत शाह दासिल। हज़रत शाह क़मर उद्दीन। हज़रत शेख़ कमाल उद्दीन शेख़ सुलेमान मदारी। हज़रत शाह अब्दुल्लाह। हज़रत पीर ग़ुलाम अली शाह हज़रत शेख़ निज़ाम सनभली रज़ि अल्लाह अनहुम।

आप तीन भाई थे जो तीन जिस्म और एक जान थे। इसी लिए हरसा ख़्वाजगान को कुन्नस वाहिद के लक़ब से मुलक़्क़िब किया जाता है। इस लिए उनके तज़किराह जमील के बग़ैर यह ज़िक्र करना ना मुकम्मल रहेगा।

इन हरसा ख़्वाजगान से जो सिलसिला मुबारका जारी है उन्हें ख़ादमान कहा जाता है।

ख़ादमान अरगूनी, ख़ादमान फ़नसूरी, ख़ादमान तैफ़ूरी, ख़ादमान अरगूनी से नक़्द अरगूनी। अबु अल फ़एज़ी। महमूदी सर मूरी। सलूतरी। सलासिल का अजरॉ हुआ............ग़ुलाम अली सिकन्दरी।

कुतबुल मदार की तजरीदी ज़िन्दगी

कुतबुल मदार रज़ि० ने निकाह क्यों नही किया?

शहज़ादा विलायत क़ुतुब व हिदायत सुलतानुल आरफ़ीन हज़रत शेख़ बदी उद्दीन सय्यद अहमद ज़िन्दाह शाह मदार रज़ि० की सवानेह मुक़द्दसा के मुख़तलिफ़ पहलूओं का जाएज़ाह लिया जाए तो यह हक़ीक़त आफ़ताब नीमरोज़ की तरह रौशन हो जाती है के आप रूहानियत और मार्फ़त के उस मुक़ाम पर जलवाह अफ़रोज़ हैं के बहुत से औलियाए कराम जिस के साया ही तक नहीं पहुँचे हैं, आप को शरीअत व तरीक़त में मुक़ामे तहक़ीक़ हासिल है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ासिमे नेमात हुज़ूर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तवस्सुत सत से आप को मुक़ामे समदिअत पर वह मेराज

कमाल अता फ़रमाई है के उस मुक़ाम में आप फ़र्द वहीद नज़र आते हैं। आप पाँच सौ छप्पन साल तक खाने, पीने, सोने, तबदीले लिबास और दीगर हवाएज बाशरिया से नियाज़ रहे। यही मुक़ामे समदिअत है। निकाह ना करना भी चूँ के समदिअत से मुताल्लिक़ है इस लिए आप ने अक़्द निकाह भी नहीं फ़रमाया और तमाम उर्म तजरीद व तफ़रीद में बसर फ़रमाई।

बाज़ अहले जाहिर चूँ के तजरीद (निकाह ना करना) को ख़िलाफ़े सुन्नत गुमान करते और इस हदीस को सनद बताते हैं, यानी निकाह मेरी सुन्नत है तो जो शख़्स मेरी सुन्नत के अलावाह राग़िब हुआ वह मुझसे नहीं।

लिहाज़ा मैं इस मसले की मुख़तसर तवज़्ज़ेह कर देना चाहता हूँ ता के शकूक व शबहात का अज़ाला हो जाए।

सबसे पहले यह जान लेना ज़रूरी है के हदीस मज़कूराह में "सुन्नत" से क्या मुराद है ? शारहीन हदीस फ़रमाते हैं के सुन्नत से मुराद तरीक़ा है ना के इसतलाही इस लिए के शरीअत मुताहरा मेंनिकाह सिर्फ़ सुन्नत ही नहीं बलके इसके मुख़तलिफ़ मदारिज हैं। किसी के लिये फ़र्ज़ है, किसी के लिए वाजिब किसी के लिये सुन्नत, किसी के लिये सिर्फ़ मुबाह, बलके किसी के लिये मुबाह भी नहीं बलके मकरूह है और किसी के लिये हराम भी है और फ़लैसा मिन्नी का मतलब है जो शख़्स बिला उर्ज़ शरई निकाह ना करे तो वह मेरे तरीक़े पर नहीं और अगर निकाह ना करना सुन्नत से अराएज़ की वजाह से हो या सुननत को हक़ीर जानकर तो मतलब यह होगा के वह शख़्स मेरे दीन पर नहीं क्यों के तरीक़ा महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मायूब समझना कुफ़्र है।

निकाह के सिलसिले में और भी अहादीस हैं। बाज़ अहादीस बाज़ लोगों के अहवाल के तक़ाज़े के मुताबिक़ ताहल व तज़वीज की फ़ज़ीलत में हैं और बाज़ अहादीसें लोगों की सलाहियत तजरीद की फ़ज़ीतलत में। जैसे के इरशाद फ़रमाया (देखो मुर्जेरत लोग तुम पर सबक़त ले गए) एक हदीस में इस तरह इरशाद फ़रमाया (आख़िर ज़ामाना में सब से बेहतर ख़फ़ीफ़

अलहाज़ है) सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़फ़ीफ़ अलहाज़ क्या है ? फ़रमाया "वह शख़्स जिसकी ना बीवी हो ना बच्चे" इस हदीस को सय्यदना दाता गंज बख़्श अली हजूरी रज़ि० ने बग़ैर सनद के "कशाफ़ूल महजूब" में नक़्ल फ़रमाया है। जबके शेख़ुल शेयूख़ हज़रत शेख़ शहाब उद्दीन सोहरवरदी रज़ि० "अवारिफ़ुल मारूफ़" में यूँ नक़्ल फ़रमाते हैं :

हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमया के दो सौ बरस के बाद तुम्हारे दरमियान सबसे बेहतर "ख़फ़ीफ़ अलहाज़" है सहाबा कराम ने अर्ज़ किया "या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़फ़ीफ़ अलहाज़ क्या चीज़ है? फ़रमाया वह शख़्स है जिसकी ना बीवी हुई ना औलाद। इस हदीस की रौशनी में यह कहना बजा है के सरकार मदार पाक के "ख़ैरून्नास" होने की बशारत हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी है क्यों के आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो सौ साल बाद २४२ हि० में तो हुए और आप के बीवी बच्चे ना थे। फिर जिस तरीक़े के तर्क पर जिस शख़्स का ख़ैरून्नास होना ज़बाने रिसालत से साबित हुआ उसे तर्क सुन्नत का मुरतकिब कैसे क़रार दिया जा सकता है। इस सिलसिले में दो हदीस और मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

हज़रत अबु उमामा रज़ि० से रिवायत है के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया के बेशक मेरे नज़दीक लोगों में सबसे ज़ियादाह क़ाबिले रश्क मोमिन ख़फ़ीफ़ अलहाज़ है। नमाज़ में उसके लिये हिस्सा है। लोगों में पोशीदाह है......उसका ज़िक्र बाक़दरे ज़िन्दिगी है और वह उस पर साबिर है। उसकी ख़्वाहिश जल्द फ़ना हो जाएगी और उसकी मेरास माल व ज़र नहीं है और उसके रोने वाले (बीवी बच्चे) नहीं हैं।

अहमद, तिरमज़ी, इबने माजा से मशकवात में यूँ मनक़ूल है:
हज़रत अबु उमामा से मरवी है के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे नज़दीक मेरे वलीयों में सबसे ज़ियादाह क़ाबिले रश्क ज़रवर

एक मोमिन ख़फ़ीफ़ अलहाज़ है । नमाज़ का एक बड़ा हिस्सा दार है । अपने रब की इबादत व अताअत बेहतरीन तरीक़े से तनहाई, गोशा नशीनी में करने वाला है । लोगों में वह ऐसा मसतूर व पोशीदाह रहेगा के उंगलियों से उसकी तरफ़ इशाराह नहीं किया जा सकता । दुनियां से उसका रिज़्क़ क़ुव्वतुल यमूत यानी बहुत कम होगा और वह अपने नफ़्स को उसी पर रोक कर सब्र करेगा। फिर आप ने अपनी उंगली दूसरी उंगली से मिला कर इरशाद फ़रमाया उसकी ख़्वाहिशात नफ़्सानिया मर जायेंगी । उस पर कोई रोने वाला यानी उसकी बीवी बच्चे नहीं होंगे और उसका कुछ मेरास नहीं होगा ।

क़राएन कराम ! मुलाहिज़ा फ़रमाया, आप ने क्या मुहासिन ज़िक्र फ़रमाए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मख़सूस तारिक निकाह (ख़फ़ीफ़ अलहाज़) के? ख़ुदा ना ख़ासता अगर यह तारिक सुन्नत होता तो क्या ज़बाने रिसालत से इसका ज़िक्र इस शान से होता है? माशा अल्लाह....... सरकारे सरकाराँ फ़रदुल अफ़राद हुज़ूर मदारूल अलमीन की सवानेह मुक़द्दसा का मुताला करने वाले इस बात की ताईद करेंगे के मज़कूराह बाला अहादीस करीमा के मिसदाक़ हुज़ूर सय्यदुल अफ़राद मदारूल अलमीन हैं । अव्वलन यह के आप ख़फ़ीफ़ अल हाज़ हैं। सानियन यूँ के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो साल के बाद हैं। सालसन यूँ के पूरी हयाते मुक़द्दसा इबादात व अताअत इलाही में बसर फ़रमाई। राबअन यूँ के मुक़ाम फ़रदानियत में औलिया तहत क़बा ला यारिफ़ूहुम ग़ैरी के मिसदाक़ मसतूरूल हाल और परदाह गुमानी में रहे यही वजह है मुआसिरीन औलिया अल्लाह व उलमा व आरफ़ीन भी आप की अज़मत व शख़सिअत का इरफ़ान नहीं कर पाए और आप के औसाफ़ व अहवाल बयान करने से क़ासिर रहे बलके बाज़ तो मुनाज़राह व मुजादला पर आमादाह हो जाते थे। हां जब कभी मक़ामे मदारियत पर नुज़ूल फ़रमाते तो किसी क़द्र आप का इरफ़ान हो पाता । ख़मसाईयों के इब्तिदाए अहवाल में आप को कफ़ाफ़ रिज़्क़ मिलता और आप उस पर सब्र करते । तज़किराह निगारों के मुताबिक़ पहली

मरतबा जब मदीना मुनव्वराह हाज़िर हुए तो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप को तबलीग़ व इरशाद के मक़सद से सफ़र का हुक्म फ़रमाया । ज़ाहिर सी बात है के आप के पास ना तो सामान तिजारत था और ना ही ज़ादराह इतना होगा के तमाम उर्म को काफ़ी हो । इस सफ़र में दिन भर रोज़ाह रखते शाम को दस्त ग़ैब से दो नान शीरी हासिल होतीं एक ख़ुद तनावुल फ़रमाते और एक ख़ैरात कर देते बलके कभी कभी दोनों ख़ैरात कर देते और हफ़्ता अशराह के बाद एक दो ख़ुरमे से इफ़्तार फ़रमाते। सादसन यूँ के कम व बेश इक्कीस साल इसी तरह गुज़रने के बाद २८२ हि० में मौतू क़बल अन तमूतू के मुताबिक़ आप की मौत हो गई। यानि आप का नफ़्स मर गया, ख़्वाहिशात बशरी फ़ना हो गई, मक़ाम समदियत पर फ़ाएज़ हो गए। साबेअन यूँ के आपकी मिरास में माल व दौलत वग़ैराह असबाबे दुनियां थे बल्कि फ़क़ीरी थी और तवक्कुल था ।

अल ग़र्ज़ तर्क निकाह पर जिस ज़ात के फ़ज़ाएल व मनाक़िब अहादीस करीमा में मौजूद हों क्या उसे तर्क सुन्नत का इल्ज़ाम दिया जा सकता है ।

सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैमि अजमईन से बड़ कर आलमे बिस्सुन्ना कौन हो सकता है? यह तो वह मुक़द्दस जमाअत है जिस के बारे में इरशाद है, (मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं इनमें से जिस किसी की तुमने इक़तिदा कर ली हिदायत पा लोगे) मगर इस मुक़द्दस जमात में भी तजरीद की मिसाल मौजूद है । फिर ज़बाने रिसालत से अहेतदे यतम मिस्रदाह पाने वालो पर तर्क सुन्नत का इलज़ाम किया? तिबरानी हाकिम, बज़्ज़ारकी रवायत से साबित है के मुतअदद ने शौहर के हुक़ूक़ सुन कर हुज़र अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने उर्म भर निकाह ना करने की कसम खाई तरजुमॉ (उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ भेजा मैं रहती दुनिया तक निकाह ना करूगी) तरजुमॉ (उस ज़ात की कसम जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया मैं कभी निकाह ना करूगी) हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इनकार करने वालो पर ना तो ख़फ़ा हुए और ना उनसे आप ने फ़रमाया "अल निकाह मिन सुन्नती फ़मल लम यामल बे सुन्नती फ़लइसा मिन्नी" बल्कि ख़ामोश रहे मुहद्दिसीन की इसतिलाह में इसको हदीस तक़रीरी कहते हैं और हदीस तक़रीरी सूबूत जवाज़ के लिये काफ़ी है सहाबा किराम के अलावा ताबईन तबा ताबईन और जलील उल क़द्र औलियाए किराम ने भी मुजर्रद लोग मौजूद हैं और यह वह नफ़ूस क़ुदसिया में "जो अनअमल्लाह अलैहिम" के ज़ुमरे में शामिल हैं और उनका तरीका सिरातल मुसतक़ीम है बल्कि ख़ुद सरकार मदारूल आलमीन का उसी मुक़द्दस जमात से होना बित्तहक़ीक व बा इत्तिफ़ाक साबित व मुस्लिम तो ऐसी मुअज़्ज़िम शख़्सिअतों से तार्रूज़ अन सुन्नता का गुमान माशा अल्लाह, हरगिज़ नहीं हरगिज़ नहीं।

ख़िलाफ़े पयम्मबर कैसे रह गुज़ीद के हरगिज़ बामंन्ज़िल नाख़्वाहिद रसीद

खुदा ना ख़ासता सरकार मदार का निकाह ना करना ख़िलाफ़ सुन्नत होता तो क्या विलायत वा मारफ़त के इस अर्फ़ा व आला मक़ाम पर होते जो मुनतहाए दर्जा विलायत से इबारत है।

शहज़ादाह दारा शिकोह क़ादरी तहरीर फ़रमाते हैं हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन शाह मदार क़ुद्दस्सिर्रहू का दरजा और मरतबा बहुत बुलंन्द है जिसको अहाता तहरीर में बयान नहीं किया जा सकता। (सफ़ीनतुल औलिया)

हज़रत मौलाना ग़ुलाम अली नक़्शबन्दी रज़ि० फ़रमाते हैं "शेख़ बदी उद्दीन शाह मदार क़ुद्दस्सिर्रहू क़ुतबुल मदार थे और अज़ीम शान रखते थे।

(दारूल मारूफ़)

ग़र्ज़ के हुसूल कमालात बग़ैर इत्तिबा हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुमकिन ही नहीं फिर जिस के कमालात बातख़सीस साबित और बाइत्तिफ़ाक़ मुसल्लम हों उस से तर्क सुन्नत का गुमान?

गर ना बीनद बरोज़ सेहरा चश्म चश्म आफ़ाताब राचा गुना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है के रसूल अल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "ऐ नौजवानों की जमात तुम में से जिसको निकाह करने की इसतिताअत हो तो चाहिये के वह निकाह करे बेशक निकाह निगाह को नीची रखने वाला और शर्म गाह को गुनाह से महफ़ूज़ रखने वाला है और जिसको निकाह की इसतिताअत (महरू नफ़्क़ा) ना हो तो उस पर रोज़ाह रखना ज़रूरी है के रोज़ाह ख़्वाहिश को ख़्तम करने वाला है।

(बुख़ारी शरीफ़)

इस अहादीस की दो शक़्लें हैं एक यह के अगर निकाह की इसतिताअत हो तो निकाह करे दूसरी यह के इसतिताअत ना हो तो रोज़ाह रखे। इस अहादीस मुबारका की रौशनी में जब हम मदार पाक की सीरत पाक मुक़द्दसा का जाएज़ा लेते हैं तो आप हम को हदीस पाक की शक़ सानी पर अमल पैरा नज़र आते हैं जिस की तफ़सील किताब मोअतबराह में इस तरह है के हज़रत ज़िन्दाह शाह मदार को अल्लाह तआला की बारगाह से सईद अज़ली होने का शर्फ़ हासिल है चुनानचे तज़किराह निगारों के मुताबिक़ अय्याम शेर ख़्वारगी में आप ने कभी रमज़ान के महीने में दिन में दूध नहीं पिया। इस से मालूम हुआ के बा तौफ़ीक़ अल्लाह आप अहद रज़ाअत में भी रोज़ाह रखते थे। १४/साल की उर्म शरीफ़ में तालीम से फ़राग़त हासिल फ़रमाई। १७ साल की उर्म मुबारक में शौक़ हज व ज़ियारत कशाँ कशाँ हरमैन तय्यबैन ले गया। मदीनतुल रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में आक़ाए काएनात क़ासिम नेमात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत अक़दस का शर्फ़ हासिल हो गया। शहनशाह दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नूरे नज़र बदी उद्दीन पर कमाल महरबानी फ़रमाते हुए बाब मदीनतुल इल्म हज़रत अली मुर्तज़ा की ख़िदमत में दे दिया ता के मौला अली करम उल्लाह वजहुल करीम बदी उद्दीन को उलूम बातनी अता करें।

मौला अली रज़ि० ने बाहुक्म सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदी उद्दीन को उलूम बातनी से नवाज़ा और फिर रूह पाक मेंहदी मौऊद के सुपुर्द फ़रमाया के बदी उद्दीन की तरबिअत बातनी करे। रूह

पाक मेंहदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने तरबिअत बातनी फ़रमाई फिर बारगाह मौला अली में वापिस कर दिया मौला अली ने बारगाह रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में पेश फ़रमाया के यह नौजवान लाएक़ इरशाद हो गया। फिर हुजूर शहनशाह काएनात क़ासिम नेमात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बानफ़स नफ़ीस ख़ुद हज़रत बदी उद्दीन का हाथ अपने हाथ में लेकर निसबत उवैसिया से मुसतफ़ीज़ कर के इसलाम हक़ीक़ी तालीम फ़रमाया फिर हुक्म फ़रमाया "बदी उद्दीन तबलीग़ इसलाम के लिये सफ़र करो खुसूसन मुल्क हिन्द में पैग़ाम हक़ पहुँचाओ। शहनशाह दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म पर सरकार बदी उद्दीन मदार रज़ि० आमादेय सफ़र हुए इस सफ़र में आप के साथ ज़ादो रोहला था तज़किराह निगारो ने तहरीर नहीं फ़रमाया। अलबत्ता बाज़ कुत्ब माअतबर में इतना ज़रूर मिलता है के आप इस ज़माने में दिन भर रोज़ाह रखते थे और शाम को दस्त ग़ैब से दो रोटियाँ हासिल होतीं एक खुद तनावुल फ़रमाते और एक किसी ज़रूरत मन्द को अता कर देते। ग़र्ज़ सतराह साल की उर्म मुबारक से चालीस साल की उम्र शरीफ़ यानी २८२ हि० तक आप का यही मामूल रहा फिर दो सौ बयासी हिजरी में क़ासिम नेमात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोह ज़र निगार पर जलवाह अफ़रोज़ हो कर अपने दस्त मोअज्जिज़ तराज़ से सैय्यदना बदी उद्दीन अहमद को नौ लुक़मे शीरे ब्रीरज अज़ क़िसम तामे मलकूती खिलाए जिसकी बरकत से १४/ तबक़ात अरज़ी व समावी के हालात मुनकशफ़ हो गए। एक प्याला शरबत अता फ़रमाया जिस से मारफ़त ख़ुदा वन्दी हासिल हो गई और फिर हुल्लऐ बहशती पहनाया और सर अक़दस को दसतार ख़िलाफ़त से मज़ीन फ़रमाया। फिर दस्त अनवर मदार पाक के चेहरे पर मुस फ़रमा कर रूए ज़ेबा को नीरता बाँ बना दिया और इरशाद फ़रमाया बदी उद्दीन आज से तू खाने पीने सोने तबदील लिबास ओर दीगर हवाएज ज़रूरिया बा शरिया से बे नियाज़ किया गया। उस वक़्त मदार पाक ने फ़रमाया तरजुमा (मेरे लिए

दुनियां की वसअत सिर्फ़ एक दिन की है और में इसमें मुकम्मल रोज़ाह दार हूँ। उस वक़्त से आख़ीर उम्र ८३८ हि० तक यानी पाँच सौ छप्पन साल खाने पीने सोने तबदील लिबास और दीगर बशरी तक़ाज़ों से बेनियाज़ रहे। ग़र्ज़ मदारूल आलमीन का अमल मुबारक ऐन मनशा मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम है।

अजदवाजी ज़िन्दिगी की उलझनों से कौन वाक़िफ़ नहीं? फिर सफ़र की सोबतें, मुशक़्क़तें किस पर मख़फ़ी? वह भी ऐसा सफ़र जिसका कोई पता नहीं ठिकाना नहीं कोई मंज़िल नहीं! हर मुख़तसर से अर्सा के बाद एक नई जगाह नया माहौल फिर सफ़र भी किस मक़सद से? तबलीग़ दीन के मक़सद से! तबलीग़ दीन कितना मुशकिल और दुशवार तरीन काम है अक़्ल मन्द बख़ूबी वाक़िफ़! खुसूसन कुफ़रिस्तान हिंन्द तीसरी सदी हिजरी में तबलीग़ इसलाम जुए शेर लाने से ज़्यादाह मुश्किल। एक अरबी मुबल्लिग़ के लिये यहाँ के अफ़राद अजनबी ज़बान अजनबी रसमों रिवाज अजनबी सारा माहौल अजनबी और यहाँ के अफ़राद के लिये वह मुबल्लिग़ अजनबी उसकी ज़बान अजनबी और जिस दीन की वह तबलीग़ कर रहा है उसके तमाम अरकान और तमाम अहकाम आमाल व वज़ाएफ़ अजनबी उस दीन की तमाम क़ानूनी किताबें अजनबी ऐसे में अगर बीवी बच्चों की उलझनें और झमेलें भी होते तो उस राह में बड़ी रूकावट भी बन सकते थे।

यह राज़ तो वह है जो अहले इल्म पर ज़ाहिर है और बातौफ़ीक़ इलाही शरीअत ज़ाहिर से यह साबित हो गया के हज़रत मदार पाक का निकाह ना फ़रमाना आप को मुवर्रिद इलज़ाम नहीं ठहराता। अब चूँ के हज़रत कुतबुल मदार रूहानियत व मारफ़त के उस अज़ीमुश्शान गिरोह से हैं जिस के बारे में इरशाद ख़ुदा वन्दी है के मेरे वली मेरे दामन के नीचे हैं मेरा ग़ैर उन्हें जानता नहीं" इस लिये इस सिलसिले में अहले बातिन के इरशादात और तजर्रूबात के फ़वाएद इख़्तिसारन नक़ल करे अपनी बात ख़्त्म करूँगा। मगर उससे क़ब्ल ज़हन में उभरने वाले एक सवाल का जवाब और अर्ज़

करता चलूँ। सवाल यह पैदा होता है के मदार पाक के निकाह ना फ़रमाने पर तर्क सुन्नत का इलज़ाम तो मुरतफ़ा हो गया मगर निकाह के जो फ़एदे हैं वह भी आप को हासिल हैं या नहीं? इस लिये आइये इसे देखते हैं के निकाह के फ़वाएद क्या हासिल हैं इस सिलसिलए में अहादीस में दो बातें मिलती हैं। यह एक इरतिकाब गुनाह से बचाना जैसा के बुख़ारी शरीफ़ की इब्न मसऊद वाली मज़कूराह रिवायात से साबित है (इन्नहू अग़दुल लबसरू हसनुल फ़ज्र) दूसरे यह के अव्वलद मुहम्मदीया अली साहबहान अस्सलातुत्तसलीमात मं इज़ाफ़ा करना जैसा के इस अहादीस से साबित है "मुसलमानों! निकाह करो और अव्वलद की कसरत करो इस लिये के बरोज़ क़यामत तुम्हारे ज़रिये मैं कसीरूल औलाद होने पर फ़ख़्र करूँगा"। इन फ़वाएद को जान लेने के बाद जब हम ज़िन्दाह शाह मदार की सीरत मुक़द्दसा का मुताला करते हैं तो यह हक़ीक़त रोज़ रौशन की तरह अयाँ हो जाती है के चूँ के ख़्वाहिशात बशरी से अल्लाह तआला ने आप को नियाज़ कर दिया था लिहाज़ा ऐसी सूरत में इरतिकाब गुनाह का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। रहामत मुहम्मदीया में इज़ाफ़ा करना तो अहले इल्म बाख़ूबी जानते हैं के हज़रत मदार पाक ने तज़ुव्वियत के ज़रिये ना सही मगर तजरीद के रासते अपनी मसाई जमीलया से उम्मत मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में ऐसा हैरतनाक और क़ाबिल फ़ख़्र इज़ाफ़ा फ़रमाया है के कोई शादी शुदाह बाज़रिया अव्वलन हरगिज़ हरगिज़ ऐसा इज़ाफ़ा नहीं कर सकता। लाखों बल्कि अनगिनत अफ़राद को कलमॉ तय्यबा पढ़ा कर हलक़ा बागोश इसलाम फ़रमाया। जिसकी तफ़सील हज़ारों सफ़हात में मौजूद है। अलग़र्ज़ निकाह से जो मुनाफ़ा मुक़सूद बहमदुल्लाह अल महमूद यहाँ बग़ैर निकाह ही मौजूद फ़लाहेज़ा तर्क निकाह का सिरे से ख़ुसरान भी मफ़क़ूद।

यह तफ़हीम अहले ज़ाहिर के मताबिक़ थी मगर अहले बातिन भी उससे कुछ मुख़तलिफ़ुल ख़याल नहीं उनके नज़दीक किसी भी शख़्स के लिये तज़वीज वजाह फ़ज़ीलत और किसी के लिये तजरीद बेहतर चुनानचे सैय्यदना

दाता गंज बख़्श अली हजूरी रज़ि० फ़रमाते हैं "जो शख़्स ख़ल्क़ की सोहबत चाहता है उसके लिये निकाह करना ज़रूरी है और जो खिलवत व गोशा नशीनी का ख़्वाहाँ है उसे मुजर्रिद रहना मुनासिब है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तरजुमॉ (देखो मुजर्रिद लोग तुम पर सबक़त ले गए) (कशफ़ुल महजूब सफ़ा ५२२/५२३)

चन्द सितूर के बाद इस तरह इरशाद फ़रमाते हैं "मशाएख़ तरीक़त का उन पर अजमॉ है के जिन के दिल आफ़त से ख़ाली हों और उनकी तबीअत शोहवत व मआसी के इरतिकाब के इरादाह से पाक हो उनका मुजर्रिद रहना अफ़ज़ल व बेहतर है और आम लोगों ने इरतिकाब मआसी के लिये हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस हदीस को (मॉज़ अल्लाह) सनद बना लिया है के "तुम्हारी दुनिया की तीन चीज़े मुझे पसंन्द व मरग़ूब हैं। एक तो ख़ुशबू, दूसरी बीवयाँ, तीसरी नमाज़ के इसमें मेरी आँखो की ठंडक रखी गई है। मशाख़ तरीक़त फ़रमाते हैं के जिसे औरत महबूब हो उसका निकाह करना अफ़ज़ल है। लेकिन हम (अली हजूरी) कहते हैं के हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है के तरजुमा (मेरे दो कसब हैं एक फ़क़र दूसरा जिहाद) लिहाज़ा इस हरफ़त व कसब से क्यों हाथ उठाया जाए अगर औरत महबूब है तो यह उसकी हरफ़त है। अपनी इस हर्स को औरत तुम्हें ज़्यादाह महबूब है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ क्यों मनसूब करते हो। यह महाल व बातिल है के जो शख़्स पचास साल तक अपनी हर्स का -------और वह यह गुमान रखे के यह सुन्नत की पैरवी है वह सख़्त ग़लती में मुबतिला है।" (सफ़ा २२५)

अल हासिल तरीक़त की बुनियाद मुजर्रिद रहने पर है निकाह के बाद हाल दिगर गों हो जाता है। शोहवत के लशकर से बड़ा कोई लशकर ग़ारत नहीं है मगर शोहवत की आग को कोशिश कर के बुझाना चाहिये।(रोज़ाह वग़ैराह मआलिजात से) (कशफ़ुल महजूब)

शेखुल शियूख़ हज़रत शहाब उद्दीन सोहरवरदी रज़ि० फ़रमाते हैं ''जो शख़्स अपने कामिल तक़्वा और ज़ब्त नफ़्स से अपनी आतिश शोहवत को सर्द कर ले उसके लिये तजरीद ही वजह फ़ज़ीलत है और वह शख़्स जिसको मुजर्रिद रहने से फ़ितना का अनदेशा हो और शेहवत का उस पर ग़लबा हो तो उसके लिये निकाह करना ही ज़रूरी है.......दुरवेश के लिये तजरीद की ज़िन्दिगी मुफ़ीद होती है । आलम तजरीद में उसके ख़यालात यकसू रहते हैं और उसको जमाईयत ख़ासिर हासिल होती है इस तरह उसकी ज़िन्दिगी के झमेलों में गिरफ़तार रहे तो उस अज़दवाजी ज़िन्दिगी को मसरूफ़ियात से उसके रूहानी अज़्म में बजाए बुलन्दी के पसती आजाती है शेख़ अबु सुलेमान अल दारानी फ़रमाते हैं के जिसने तीन चीज़ों को तलब किया वह दुनिया का हो गया । अव्वल मआश । दोम निकाह । सोम अहादीस लिखना । और मैंने अपने साथियों में से किसी को भी नहीं देखा के वह शादी करने बाद वह अपने बुलन्द मक़ाम पर काएम रहा हो (बल्कि उसको वहाँ पर तनज़्ज़ुल हुआ)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद से मरवी है के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया के ''मेरे बाद मरदों के लिये औरत से ज़्यादाह मुज़र्रित रसां और कोई फ़ितना नहीं होगा............... अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है तरजुमा (और इनसान को ना तो ------पैदा किया गया) मुफ़स्सेरीन ने इस की तफ़सीर में लिखा है के इनसान इस वजह से कमज़ोर है के वह बग़ैर औरत के नहीं रह सकता और इसी तरह इस इरशाद रब्बानी में फ़रमाया गया तरजुमा (ऐ हमारे परवरदिगार हम पर वह बोझ ना डाल जिसके उठाने की हम पर ताक़त नहीं है) इस इरशाद खुदा वन्दी में ताक़त से ज़्यादा बोझ डालने से मुराद क़ुव्वत शहवानी है । पस फ़क़ीर अगर नफ़्स के मुक़ाबले पर क़ादिर है और हुस्न मआमल्त से मआलजों नफ़्स में उसको वाफ़िर हिस्सा मिला है और वह औरतों पर सब्र कर ले तो मसझ लेना चाहिए के उसने पूरा फ़ज़्ल हासिल किया है और अपनी अक़्ल को काम में लाया और

एक आसान काम की तरफ़ रासता पा लिया ।

(अवारिफ़ुल मआरिफ़ सफ़ा ३०६/३१०)

ख़याल रहे के अख़सुल ख़्वास औलियाए किराम अपने अज़ाएम व अरदादे जनाब बारी तआला में पेश करते हैं । फिर खुदा वन्द क़ुद्दूस की तरफ़ से हुक्म व इजाज़त के मुताबिक़ अमल पैरा होते हैं जैसा के सैय्यदना दाता गंज बख़्श अली हजवेरी रज़ि० ने फ़रमाया के ''मशाएख़ तरीक़त का एक गिरोह कहता है के हम मुजर्रिद रहने और निकाह ना करने में भी अपने इख़्तियार को दाख़िल नहीं होने देते यहाँ पक के परदह ग़ैब से तकदीर का जो हुक्म भी ज़ाहिर हो सर तसलीम ख़म कर देते हैं अगर हमारी तक़दीर मुजर्रिद रहने में है तो हम पासाई की कोशिश करते हैं और अगर निकाह करने में है तो हम सुन्नत की पैरवी करते हैं । (कशफ़ुल महजूब सफ़ा ५२७)

हज़रत सैय्यदना ग़ौसुल आज़म शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि० से दरयाप्त किया गया के निकाह करना वाजिब है के नहीं? इरशाद फ़रमाया ''यह इख़्तिलाफ़ी मसला है बाज़ फ़ुक़हा का क़ौल है के निकाह करना सुन्नत है और बाज़ का क़ौल है के अगर अगर उसके बस में पहचान ना हो तो (मुजर्रिद रह कर) इबादत में मशग़ूल रहना औला है । इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद का यही मज़हब है । इमाम अहमद अबु हनीफ़ा के नज़दीक निकाह की मशग़ूलियत अफ़ज़ल है । (और में ग़ौसुल आज़म कहता हूँ) जब तक तो दरजा इबादत व तलब में है उस वक़्त तक इबादत में मशग़ूल रहना अफ़ज़ल है और अगर तो (सुलूक ख़त्म करके खुदा की) मुराद व मतलूब बन जाए तो अब अपने नफ़्स के मुताल्लिक़ किसी क़िस्म की भी तदबीर का तुझे हक़ नहीं । अगर वह चाहे तो तेरा निकाह करदे और चाहे तो उसके सिवा किसी दूसरे शुग़ल में लगा दे । (फ़ैज़ यज़दानी)

मख़फ़ी ना रहे । औलियाए किराम क़ुद्दस्त इसरार हुम का यह गिरोह वह मुम्ताज़ गिरोह है जो इख़्तिलाफ़ मज़हब से तरक़्क़ी फ़रमा कर हक़ीक़त शरीअत पर अमल पैरा होता है इस लिये उस से सर ज़द होने वाले बाज़

अमूर अगर चे शरीअत ज़ाहिर के ख़िलाफ़ मालूम हों मगर वह महफ़ूज़ होने की वजह से एक भी दक़ीक़ा शरई तर्क नहीं करता । चुनानचे मुजद्दिद अल्फ़सानी रज़ि० उस सिलसिला में रक़्म तराज़ हैं, शरीअत की एक सूरत है। और एक हक़ीक़त । उसकी सूरत वह है जिसके बयान के उलमा ज़ाहिर कफ़ील व ज़मिन हैं और उसकी हक़ीक़त वह है जिसके बयान के साथ बुलंन्द कर दा सूफ़िया मुम्ताज़ है............उस मक़ाम में आरिफ़ अपने आप को दाएरा शरीअत से बाहर पाता है लेकिन चूँके महफ़ूज़ होता है इस लिये वक़ाएक़ शरीअत से एक दक़ीक़ा भी नहीं छूटता । वह जमात जो इस दौलते अज़्मा से मुशर्रफ़ होती है उसकी तादाद बहुत ही कम है...........और सूफ़िया की एक कसीर जमात उस मक़ाम आली के साए ही तक पहूँची है ।

(कतूबात इमाम रब्बानी दफ़्तर मकतूब १७२)

तहक़ीक़ किजिये तो सरकार क़ुतबुल मदार उसी दौलत उज़्मा से मुशर्रफ़ और उसी मक़ाम आली पर जलवाह अफ़ोज़ नज़र आते हैं । चुनानचे शेख़ मोहक्क़ि हज़रत अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह० मदार पाक के औसाफ़ में तहरीर फ़रमाते हैं "बादे औज़ाँ ईशाँ बर ख़िलाफ़ ज़ाहिर शरीअत बूद" यानी हज़रत मदार पाक के बाज़ अहवाल ज़हिरी शरीअत के ख़िलाफ़ थे

(अख़बारूल अख़्यार)

और शरीअत ज़ाहिरी से बाज़ अमूर ख़िलाफ़ होने का सबब वही "हक़ीक़त शरीअत का इल्म" है जो मुजद्दिद अल्फ़सानी ने ज़िक्र फ़रमाया । चुनानचे सहिबे लताऐफे अशरफ़ी लिखते हैं के

"क़ुतबुल मदार मदीना मुनव्वराह में हाज़िर हुए तो बरूहानियते हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाकमाल महरबानी खुद दस्त गिरफ़्ता इसलामी हक़ीक़ी तालीम फ़रमूद नद व रूहानियते अली करम उल्लाह वजहू पर दन्द,

(कलीदे मारफ़त अल मारूफ़ बज़्म वारसी सफ़ा ११७/गुज़ार वारिस)

हज़रत मौलाना अब्दुल रहमान चिश्ती ने हज़रत बदी उद्दीन क़ुतबुल

मदारूल मुलक़्क़िब बा ज़िन्दाह शाह मदार के वाक़्यात की एक किताब "मुरात मदारी" में लिखते हैं जिस का क़लमी नुस्ख़ा १०६४ हि० का लिखा हुआ कुतुब ख़ाना सालार जंग में मौजूद है के "हज़रत शाह बदी उद्दीन ने अलावाह कुरआने मजीद के तौरैत व ज़ुबूर व इन्जील का भी इल्म हासिल किया । फिर भी तशफ़ी ना हुई और दरबार रिसालत माआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में मदीने पहुंच कर रियाज़त करा रहे व आलमे रूहानी हज़रत खत्मे मरतवत सल्ललाहो अलैहि वसल्लम ने इसलाम हक़ीक़ी की तलक़ीन की और उनको हज़रत अली मुरतज़ा अलैहि अस्सलाम के हवाले फ़रमाया के इनको तालीम दो " (कमतुल हक़ सफ़ा ६६५/हिस्सा दो । मुसन्निफ़ हामिद बिन बशीर साबिक़ चीफ़ जसटिस सिटी कोर्ट हैदराबाद)

हज़रत मौलाना अब्दुल रशीद ज़हूरूल इसलाम सहसरामी हनफ़ी क़ादरी तहरीर फ़रमाते हैं :

"बाज़ उलमा ज़ाहिरया का हज़रत क़ुतबुल मदार के साथ सबब मुख़ालिफ़त था के हज़रत क़ुतबुल मदार मौसूफ़ ने उलूम दीनया व मआरिफ़ यक़ीनया खुद रूहानियत पाक हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व हज़रत अली करम उल्लाह वजहु से अख़्ज़ फ़रमाया था और कुतुब आसमानी हज़रत इमाम मेहंदी अस करीम रज़ि० की ख़िदमत मुबारक में पड़े थे और इख़्तिलाफ़ात मज़ाहिब को छोड़ कर मुशरिब हक़ पर पहुँच गए थे और बाज़ उलमा ज़ाहिर आप के सामने ! अब्जद ख़्वाँ थे और आप क़दम बा क़दम हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आमॉ अहले बैत नबवीया के थे और इसी तरीक़े पर अमल फ़रमाते थे और चूँ के आप के बाज़ अतवार मुजतहदीन की राए व क़यास के मवाफ़िक़ ना थे उस वासते बाज़ उलमा ज़ाहिर यह हक़ीक़त कार व असली मामला से नावाक़िफ़ रह कर इल्म इख़्तिलाफ़ व नज़ा बुलन्द करते थे ।

(सवाकिबुल आसारफ़ी मुनाक़िब क़ुतबुल मदार सफ़ा ४०)

ग़र्ज़ हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन शेख़ अहमद क़ुतबुल मदार उसी

मुमताज़ गिरोह से थे और उस गिरोह के ताल्लुक़ से हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी एक दूसरे मकतूब में इस तरह फ़रमाते हैं "यह लोग असहाब कशफ़ व मुशाहिदाह हैं और यही ोग तजल्लियात व ज़हूरात के मालिक हैं....
...अलहाम उनको होते हैं और कलाम उनसे होता है। अकाबिर हक़ीक़त में यही लोग हैं। यह उलूम व असरार बिला वास्ता असल से अख़ज़ करते हैं और मुजतहदीन जिस तरह अपनी राए और इजतिहाद के पाबन्द होते हैं यह लोग मारफ़त व मवाजीद में अपने अलहाम और फ़रासत के ताबे होते हैं.....
...पस जाएज़ है के ख़्वास अहलुल्लाह अल्लाह तआला के अफ़आल और ज़ात व सिफ़ात के मआरिफ़ में बाज़े असरार व हक़ाएक़ मालूम करें ज़ाहिर शरीअत उन मआरिफ़ से ख़ामोश हो और हरकात व सकानात में खुदा वन्द तआला का इज़्न या अदम अज़न मालूम कर लें और खुदा तआला की मरज़ी और अदम को जान लें।

बहुत दफ़ा ऐसा होता है के बाज़ औक़ात में बाज़ नफ़ली इबादातों का अदा करना वह नापसंन्दीदाह जानते हैं और उनको उनके छोड़ देने का हुक्म होता है। (ख़याल रहे मसला निकाह इस से मुख़तलिफ़ नहीं) और कभी वह सोने को जागने से बेहतर समझते हैं। अहकाम शरीआ औक़ात पर मुक़र्रिर रहें और अहकाम अलहामिया हर वक़्त साबित और चूँ के उन बुज़ुर्गवारों हरकात व सकानात खुदा तआला के इज़्न से वाबिस्ता हैं। तो लाज़मन "दूसरों के नवाफ़िल उनके फ़राएज़ हैं" मसलन एक काम एक आदमी की निसबत शरीअत का नफ़ली हुक्म है और वही फ़अल किसी दूसरे के लिये बतौर अलहाम फ़र्ज़ है। पास दूसरे कभी नवाफ़िल अदा करते हैं और कभी अमूर मुबाहा का इरतिकाब करते हैं और यह बुज़ुर्गवार चूँ के काम को खुदा तआलाकी इजाज़त और हुक्म से करते हैं। तो वह सब उनके लिये फ़र्ज़ होते हैं। दूसरों के मुबाह और मुसतहब उनके फ़राएज़ है इस लिहाज़ से उन बुज़ुर्गवारों की बुलंन्दी मरतबा मालूम करना चाहिये। उलमा ज़ाहिर अमूर दीन में ग़ैबी अख़बार को सिर्फ़ अंम्बिया अलैहिमुस्सलातो तसलीमात के साथ

मख़सूस समझते हैं और दूसरों की उन अख़बार शिरकत जाएज़ नहीं समझते और यह बात विरासत के मनाफ़ी है और बहुत से उलूम और मआरिफ़ सहहय्या की नफ़ी है जो के दीन मतीन के साथ ताल्लुक़ रखते हैं। हाँ शरई अहकाम अदिल्लये रब्बा से वाबिस्ता हैं के अलहाम को इनमें कोई दख़ल नहीं लेकिन अमूर दीनयॉ अहकाम शरीआ के अलावह और भी बहुत से हैं के जिनमें पाँचवाँ असल अलहाम है बल्कि कहना चाहिये के तीसरा असल अलहाम है। किताब व सुन्नत के बाद यह असल क़यामत तक क़ाएम है। पस दूसरों के इन बुज़ुर्गवारों से क्या निसबत ? बहुत दफ़ा ऐसा होता है के दूसरे लोग बाज़ हालात में इबादत छोड़ देते हैं और वह छोड़ देना पसंन्दीदाह होती है और यह बुज़ुर्गवार के नज़दीक उनका तर्क दूसरों के फ़ाएल से बेहतर है।

हज़रत क़ुतबुल मदार का रोज़ा

रोज़े की हक़ीक़त रकना है यानी खाने पीने और जमॉ से अपने आप को रोकना। बज़ाहिर रोज़ा रहने के लिये वक़्त मुक़र्रिर है। यानी सुबह सादिक़ से लेकर सूरज डूबने तक रोज़ा होता है। रात में रोज़ा नहीं होता है। फ़र्ज़ व वाजिब रोज़ा के अलावाह नफ़ली रोज़ा भी शरिअत में अहमियत रखते हैं। हदीस शरीफ़ में रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत वारिद हुई है। कहीं यह आया है के रोज़ा अल्लाह के लिये और अल्लाह तआला ही इसकी जज़ा देगा। किसी हदीस में यह है के "रोज़ा की जज़ा (बदला) अल्लाह तआला खुद हो जाएगा" यानी रोज़ादार को उसकी असल मुराद मिल जाएंगी। एक हीदस में है के "रोज़ा रोज़ेदार की शफ़ाअत करेगा" सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम ने यह भी फ़रमाया है के जन्नत में एक रैय्यान नामी दरवाज़ा है जिस से सिर्फ़ रोज़ा दार लोग ही दाख़िल होंगे। ग़र्ज़ के शरीअत में रोज़ा दारों के लिये बड़ी बशारते हैं बहुत सारे इनामात खुदा वन्दी का रोज़ा दारों के लिये मसरदाह सुनाया गया है और बड़ी बड़ी फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं।

रोज़ा रखने में बन्दों की सेहत और ताक़त को भी मलहूज़ रखा गया है । हदीस शरीफ़ में आम मुसलमानों के लिये यह हुक्म है के अपनी सेहत और ताक़त के लिहाज़ से नफ़ली रोज़े रखे ।

नफ़िल रोज़े: नफ़िल रोज़ों में मुनदर्जा ज़ेल रोज़े बड़ी बड़ी अहमियत रखते हैं:
१- अय्याम बैज़ के रोज़े, ६/१० मुहर्रम, ६/ ज़िलहिज्जा, १५/शाबान शव्वाल के छै रोज़े ।
२- रजब की सत्ताईसवीं का रोज़ा बहुत से नेक बन्दों के मामूलात में है ।

अरबाब अज़ीमत सोम दाऊदी भी रखते हैं के एक दिन रोज़ा है एक दिन इफ़्तार लेकिन सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सेहत और ताक़त मलहूज़ रख कर नफ़ली रोज़े रखने का हुक्म दिया है बुख़ारी व मुस्लिम में है के हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर आस रज़ि० हर दिन रोज़े रखते थे । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से फ़रमाया "ऐसा ना करो । तुम्हरे बदन का भी तुम पर हक़ है तुम्हारी आँखों का भी तुम पर हक़ है तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है (यानी उन हुक़ूक़ का लिहाज़ रखो) नफ़िल रोज़ोह रखो भी और नाग़ा भी करो हर महीने में तीन रोज़ा रख लिया करो।

बिला शुबा रोज़ा बड़ा रूहानियत आफ़रीं और नफ़्स शिकन अमल है इससे क़ल्ब व रूह में बड़ी पाकीज़गी और लताफ़त पैदा होती है और ज़ब्ते नफ़्स में कमाल पैदा होता है । हदीस शरीफ़ में है के आधा ज़ब्ते नफ़्स यही रोज़ा है ।

तरजुमा - यानी हर चीज़ की ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा सब्र (यानी ज़ब्ते नफ़्स) का आधा हिस्सा है ।

इसी लिये असहाबे मुजाहिद बहुत ज़्यादा रोज़ा रखते हैं । सालिहीन का तजुर्बा है के रोज़ा नफ़स के तज़किया और क़ल्ब की सफ़ाई के लिये अदीमुल मिसाल है । इससे नफ़्स में जो पाकीज़गी और दिल में जो सफ़ाई आती है वह किसी और अमल से नहीं आती लिहाज़ा उसके मिस्ल कोई अमल नहीं । नबी काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबु

उमामा बाहली रज़ि० से फ़रमाया" ।

सोम व साल : सोम व साल यानी मुसलसल और पै दर पै रोज़ा रखना रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम लोगो को उससे मुमानिअत फ़रमाई है के हर आदमी उसकी ताक़त नहीं रखता । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब सोम व साल रखा तो सहाबा किराम ने भी आप की मुवाफ़िक़त में रोज़े रखने शुरू कर दिये । हुज़ूर ने उनसे फ़रमाया "तुम सोम व साल ना रखो क्यों के मैं तुम में से किसी के मान्निद नहीं हूँ के तुम्हारे रब के हुज़ूर रात गुज़ारता हूँ और वह मुझे खिलाता और पिलाता है । अरबाबे मुजाहिदाह फ़रमाते है के आप की यह मुमानिअत शफ़क़त व महरबानी के लिये है न के नहीं मुमानिअत हराम बनाने के लिये । इस हदीस शरीफ़ में यह जुमला क़ाबिले ग़ौर है के तरजुमा - मैं तुम्हारे रब के हुज़ूर रात गुज़ारता वह मुझे खिलाता है और पिलाता है" इस हदीस में खिलाने पिलाने की निस्बत रब की तरफ़ की गई है ।

कुतबुल मदार का खाने पीने से बे नियाज़ होना हदीस सोम व सला की रौशनी में:

रौशनी में: इस से ज़ाहिर तौर से खाना पीना मुराद नहीं है बलके हदीस के अलफ़ाज़ (मुझे रब खिलाता पिलाता है) की तीन तरीक़े पर तौज़ीह की गई है।
१- बाज़ बुर्जुगों ने कहा है के उस से क़ुव्वत मुराद है मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रह० फ़रमाते हैं,

यानी बाज़ बुर्जुगों ने कहा है के खाने पीने से मुराद इस हदीस में वह क़ुव्वत है जो खाने पीने के लवाज़िम से है पस गोया फ़रमाया मेरा परवरदिगार खाने वाले और पीने वाले की क़ुव्वत मुझे बख़्श देता है और ऐसी चीज़ अता करता है जो खाने पीने के क़ाएम मक़ाम हो और उसकी वजह से ताअत व इबादत की क़ुव्वत पाता हूँ बग़ैर ज़ईफ़ व ख़लल के" ।

चूँ के क़ुतबुल मदार हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मुज़हरातुम और ख़लीफ़ा होता है (फ़सूसुल

हुक्म) उसका क़ल्ब नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक पर होता है (मकतूबात इमामे रब्बानी) लिहाज़ा अगर उसे भी रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम की तबीअत कामिला में अल्लाह तआला की तरफ़ से खिलाया जाए पिलाया जाए और मादी ग़िज़ाओं से बे नियाज़ कर के उसे ऐसी कुव्वत अता कर दी जाए जो खाने पीने के क़ाएम मक़ाम हो तो उसमें कोई ताज्जुब नहीं है । हज़रत क़ुतबुल मदार सैय्यदना बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० को अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़त समदिअत से सरफ़राज़ कर के ऐसी कुव्वत बख़्श दी थी के आप को भूक पियास की तकलीफ़ का भी एहसास नहीं होता था । इस वस्फ़ से मुम्ताज़ हाने के बाद ५५६ साल तक आप को दुनयावी गिज़ा की कोई हाजत नहीं हूई चुनाँचे के हज़रत ईसा जौनपुरी ने आप से दरयाफ़्त किया के सुना है के आप खाना पीना नहीं करते तो आप ने जवाब में फ़रमाया के मैं क़ुर्आन हकीम की तिलावत कराता हूँ और क़ुर्आन नज़्म व मानी के मजमुए का नाम है पस जब मैं नज़्म क़ुर्आन की तिलावत करता हूँ तो मेरे जिस्म को कुव्वत ग़िज़ा मिल जाती है और जब मानी क़ुर्आन की तिलावत करता हूँ तो मेरी रूह को ग़िज़ा मिल जाती है तो जिस के जिस्म व रूह कों क़ुर्आन मजीद से कुव्वत ग़िज़ा मिल जाती हो उसे दुनिया की ग़िज़ा की क्या हाजत ।

(खुतबाते निज़ामी । तारीख़ जौनपुर व सलातैन शरीफ़)

हदीस सोम व साल में तरजुमा रब की तरफ़ से खिलाने पिलाने शराह बाज़ बुर्जुगों ने सैरी व सैराबी से की है । जनाब मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी अलैहि अल रहमतो वरिज़्वान फ़रमाते हैं,

तरजुमा - या खाने पीने से मुराद सैरी व सैराबी है जो बग़ैर खाने पीने के अन हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल होती थी और भूक व पियास की तकलीफ़ महसूस नहीं फ़रमाते थे''।

रसूले काएनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम की तबीअत में हज़रत कुतबुल मदार रज़ि० को भी अल्लाह तआला ने ऐसी

कामिल सैरी व सैराबी अता फ़रमाई के आप को कभी खाने पीने की तकलीफ़ का एहसास नहीं होता था । आप की सीरत की आम किताबों में आप के ना खाने पीने की यह वजह बताई गई है के जब आप हुक्म रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तैय्यबा से हिंन्दुस्तान रवाना हुए तो समुन्दरी रासता अपनाया कशती में सवार लोगों के दरमियान आप ने तबलीग़ दीन फ़रमाई अहले कशती महरूमान अज़ली थे सभी लोगो ने तौहीद व रिसालत से इनकार किया ग़ज़ब इलाही से कशती ग़र्क आब हो गई उसी से एक तख़्ता नमुदार हुआ जिस के सहारे आप साहिल माला बार बन्दरगाह खमबाज गुजरात पर ग्याराह दिन के भूके प्यासे पहूँचे । भूक व प्यास से जिस्म निडाल था। रज़्ज़ाक़े आलम की बारगाह में दुआ की, इलाही ! कुछ ऐसा इन्तिज़ाम फ़रमा दे के मुझे भूक व प्यास का एहसास ना रहे और मेरा मैला व पुराना ना हो । आप की दुआ इस तौर क़ुबूल हुई के नबी रहमत सल्लल्लाहु ताआला अलैहि वआलिही वसल्लम ने आलम मिसाल में जलवाह बार हो कर खुसूसी करम फ़रमाया, ज़ियारत दिदार की नेमत से सरफ़राज़ फ़रमा कर आप रज़ि० को अपने मुबारक हाथ से ६/ लुक़मे खिलाए और एक हला पहनाया और मुबारक होथों को आप के चेहरे पर मल दिया उसकी बरकत से आप को कभी खाने पीने की ख़्वाहिश नहीं हुई और आप का लिबास कभी मैला व पुराना नही हुआ और चेहरा तजल्लियात के नूर से इतन रौशन और ताबनाक हो गया के चेहरे पर सात सात नकाबें डाले रहते थे और अगर कभी कभार रूख़े रौशन से कोई नकाब उठ जाता तो देखने वाले जलवे की ताब ना लाकर बे इख़्तियार सजदा रेज़ हो जाते ।

(दुर्रूल मआरिफ़ सफ़ा १४७/तज़किरातुल किराम सफ़ा ४६३)

गोया नबी ए रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम ने अपने मुबारक हाथें से जो ग़िज़ा खिलाई उसी ने उम्र भर सैरी व सैराबी से नवाज़ दिया और आप से भूक व प्यास की तकलीफ़ का एहसास जाता रहा ।

३- हदीस सोम व साल में बाज़ बुर्जुगों ने फ़रमाया है के रब तबारक वतआला

के खिलाने पिलाने से मुराद ग़िज़ाए रूहानी है । शराह सफ़रूल सआदत में मुहद्दिस देहलवी फ़रमातें हैं अल्लाह ने उम्र भर सैरी व सैराबी से नवाज़ दिया और आप से भूक व प्यास की तकलीफ़ का एहसास जाता रहा ।
तरजुमा- ''के इबने क़ीम से किताब हुदा में और इबने हाजत से लताएफ़ में मनकूल है के उस से माद्दी ग़िज़ा मुराद नहीं है और ना उसके लवाज़िम मुराद हैं अज़ क़बील क़ुव्वत व सैरी बल्कि उस से मुराद ग़िज़ाए रूहानी है । जो मआरूफ़ मुनाजात की लज़्ज़तों और लताएफ़ इलाही के फ़ेज़ से आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम के क़ल्ब पर वारिद होती थी और उसके अहवाल शरफ़िया के मुतालक़ात मुराद हैं यानी नेमते रूह शादी नफ्स, राहते दिल और बिनाई चश्म के उनसे इस क़द्र ताक़त क़ुदरत और मसर्रत हासिल हो जाती थी के जिस्म ग़िज़ाए जिसमानी से बेनियाज़ हो जाता था।''

हज़रत क़ुतबुल मदार सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के इस एजाज़ की मुकम्मल तसवीर और मज़हरातुम थे । आप कसरत से ज़िक्र इलाही में मसरूफ़ रहते दाइमी ज़िक्र इलाही करते थे और जिस दम बहुत ज़्यादाह करते थे जिसकी बरकत से आप से जिसमानी कसाफ़तें दूर हो गई थीं । आप में मलकूती सिफ़ात पैदा हो गई थीं और आप को मुशाहिदाह इलाही और दीदारे ज़ात लाइमतिनाही हासिल हुआ था । तआम मलकूती और रूहानी ग़िज़ा यानी ज़िक्र इलाही आप की ग़िज़ा बन गया था । चुनाँचे कुछ उलमा ज़ाहिर ने आप से दाईमी तौर से ना खाने पीने की वजह दरयाफ़्त की तो आप रज़ि० ने जवाब में इरशाद फ़रमाया ''अय्याम क़हत में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ियारत से छः माह तक भूक की कोई ख़्वाहिश ना होती थी बस अगर मुसतग़रिक़ माअरफ़त कर दिगार मुशाहिदाह परवरदिगार में महू दर महू हो जाए और तवाम मलकूती उसकी ग़िज़ा हो जाए तो क्या ताज्जुब है ।

हज़रत क़ुतबुल मदार की नज़र में दुनिया एक दिन की है :

एक दिन आप के मोअज़्ज़िज़ ख़लीफ़ा हज़रत क़ाज़ी मुतहर क़ल्ला शेर मदारी अलैहि रहमॉ ने आप रज़ि० से सवाल किया के हुज़ूर आप को खाने पीने की रग़बत क्यों नहीं होती तो आप ने जवाब दिया तरजुमा - मेरे नज़दीक दुनिया सिर्फ़ एक दिन की है और मेरे लिये इसमें रोज़ा है ।

इस फ़रमान का मतलब : इस फ़रमान का मतलब यह है के हम ना तो दुनिया से कुछ हासिल करने की ख़्वाहिश करते हैं और ना उसकी बन्दिश में आना चाहते हैं । हमने उसकी आफ़तों को देख लिया है और उसके हिजाबात से बाख़बर हो चुके हैं इस लिये हम उस से अलग थलग हैं ।

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला : ज़हनों में यह सवाल पैदा हो सकता है के हज़रत क़ुतबुल मदार रज़ि० ने पूरी ज़िन्दगी का रोज़ा रखा तो उसमें ईद उल फ़ित्र और ईद उल अज़हा के दिन भी आते हैं जिनमें रोज़ा रखना शरीअत इसलाम में हराम है फिर यह क्यों कर आप से सादर हुआ । तो उसका जवाब यह है के शरीअत के उर्फ़ में रोज़ा का वक़्त फ़ज्र सादिक़ से ग़ुरूब आफ़ताब तक का है जो उन्हीं लोगो के लिये है जो शरीअत ज़ाहिर के मुकल्लिफ़ हैं उनके लिये सहर व इफ़्तार का भी हुक्म है लेकिन अल्लाह तआला के वह बन्दे जिनकी जिसमानीयत की कशाफ़त दाएमी ज़िक्र इलाही की बरकत से दूर हो गई हो और जिसका बातिन नूर यज़दानी से लबरेज़ हो गया हो । जिनके शिकमों को क़ादिर मत्तलक़ ने ग़िज़ाए रूहानी से क़ुव्वत बख़्श कर सैराबी अता फ़रमादी हो जिनहें - अपनी सिफ़त समदिअत से मुतस्सिफ़ कर दिया हो और उनमें फ़रिशतों की ख़सलत पैदा करदी गई हो उनकी नज़र में उनकी ज़िन्दगी के सुबह व शाम और तुलू व ग़ुरूब की कोई हक़ीक़त नहीं होती वह अपनी ज़ात को फ़ानी कर के अल्लाह के साथ इस तरह बाक़ी हो जाते हैं के उन्हें गरदिश लैल व निहार का एहसास नहीं होता । वह अपनी आँखों से पूरी दुनिया को हमेशा इस तरह देखते हैं जैसे हथेली पर राई का दाना के जिस में सूरज डूबता ही नहीं । वह अपनी ज़िन्दगी की दुनिया को सिर्फ़ एक दिन समझते हैं । उनका वह दिन भी ख़ुदा के लिये, ख़ुदा के ज़िक्र के लिये वक़्फ़

होता है । उनके पेशे नज़र रसूल अरबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम का यह फ़रमान होता है:
तरजुमा - तुम अपने शिकमों को भूका, अपने जिगरो को प्यासा और अपने जिसमों को ग़ैर आरासता रखो ता के तुम्हारे दिल अल्लाह तआला को दुनिया में ज़ाहिर तौर पर देख सकें।

वह मुशाहिदाह हक़ से सैराब होता है और दीदारे इलाही की मुसर्रत में महू व महज़ूज़ रहते हैं । यही उनके लिये इफ़्तार है और यही सहरी है वह ज़माने के क़ैद वा बन्द से आज़ाद हैं । शरीअत ज़ाहिर की तक़लीफ़ उनसे हटा ली जाती है । वल्लाह आलम बिल सवाब ।

सरगिरोह दीवानगान
हज़रत सैय्यद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती

मलंगान इज़ाम की जमाअत के इमाम अव्वल शहनशाह तुर्क व तजरीद नाज़िश फ़क्र व तफ़री हुज़ूर सैय्यदना मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती रज़ि० हैं । आप की विलादत बासआदत पाँचवीं सदी हिजरी में हुई । आप का मुवल्लिद मसकन शहर बग़दाद है । आप के वालिद गिरामी हज़रत सैय्यदना सैय्यद महमूद और वालिदाह मोहतर्मा हज़रत सैय्यदाह बीबी नसीबा रज़ि० हैं । आप ताजदारे बग़दाद महबूब सुबहानी हुज़ूर सैय्यदना सरकार ग़ौस आज़म जीलानी क़ुद्दसा सिर्रहु के हक़ीक़ी भांजे हैं । सीरत व सवानेह की बहुत पुरानी किताबों में आप को ज़िक्र ख़ैर मौजूद है । मुरातुल अनसाब, ख़मख़ाना तसव्वुफ़, सीरत क़ुतबे आलम, समरातुल क़ुद्दस वग़ैराह मे तहरीर है के हुज़ूर सैय्यदना मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती रज़ि० शमसुल इफ्लाक मरजेउल अक़ताब ग़ौसुल अग़वास हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार हलबी मकनपुरी क़ुद्दसा सिर्रहु की दुआओं से पैदा हुए । वाक्या की तफ़सील कुछ इस तरह से बयान की गई है के हुज़ूर ग़ौस पाक रज़ि० की हमशीरा सैय्यदाह बी बी नसीबा के यहां कोई

औलाद नहीं थी । आप अपने बिरादर मोहतरम हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म की बारगाह में हाज़िर हुई और औलाद के लिये दुआ की दरख़्वास्त की । हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे पाक ने लौहे महफ़ूज़ का मुशाहिदा फ़रमा कर बताया के बहन ! तेरी किसमत में औलाद तो है मगर वह शहनशाह विलायत मुख़ज़िन इसरार हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार की दुआओं पर मौक़ूफ़ है । अनकरीब आप अरब की सियाहत फ़रमाते हुए बग़दाद पहुँचने वाले हैं । जब हुज़ूर का वरूद मसऊद बग़दाद में हो तो फ़िर तुम इनकी बारगाह में हाज़िर होना और इनसे दुआ की दरख़्वास्त करना । परवरदिगारे आलम सरकार मदार की दुआओं के तुफ़ैल तुम्हें ज़रूर औलाद अता फ़रमाएगा । चुनाँचे हुज़ूर सैय्युदुल अक़ताब सैय्यदना ज़िन्दा शाह मदार क़ुद्दस सिर्रहु पाँचवीं सदी हि० में बिलाद अरबिया की सियाहत फ़रमाते हुए बग़दाद पहुँचे । पूरा बग़दाद एक अरसा से आप की दीद का मुनतज़िर था । कितने ही हाजत मंन्द इसी इन्तिज़ार में बैठे थे के जब शाएकार क़ुदरत क़ुतबे वहदत शहनशाह विलायत हुज़ूर सैय्यदना मदारूल आलमीन का वरूद मसऊद बग़दाद में होगा तो हम भी अपनी अरज़ियाँ बारगाहे मदारियत में पेश कर के शाद काम होंगे । पूरा बग़दाद आप की तशरीफ़ आवरी से झूम रहा था। हर तरफ़ मुसर्रतों का समा छाया हुआ था । लोग आपस में एक दूसरे को शहनशाह विलायत की आमद की इत्तिला दे रहे थे ग़र्ज़ यह के पूरे बग़दाद में आप की आमद की धूम मची हुई थी । येके बाद दीगरे लोग हाज़िर बारगाह होकर फ़य्यूज़ मदारियत से माला माल होते रहे । बाला आख़िर वह वक्त भी आ गया के जब हमशीराह ग़ौसुल वराह सैय्यदाह बीबी नसीबा हुज़ूर मदारियत पनाह में हाज़िर हुई और बा हवाला महबूब सुबहानी हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म जीलानी अपना मद आए दिल बस्द अदब व एहतराम पेश किया। हुज़ूर क़ुतबे वहदत सैय्यदना मदार आज़म क़ुद्दस सिर्रहु ने कमाल शफ़क्कत के साथ बीबी नसीबा की अरज़ी को समाअत फ़रमाया । फ़िर

हज़रत सैय्यदाह बीबी नसीबा से फ़रमाया के अल्लाह अज़ व जल अनकरीब तुम्हें दो फ़रज़न्द सईद अता फ़रमाएगा। एक का नाम "मुहम्मद" और दूसरे का नाम "अहमद" रखना। अल बत्ता आप यह वादा ज़रूर करें के बड़े फ़रज़न्द को आप मुझे दे देगीं। कुदसिल असफ़ात इस मुक़द्दस ख़ातून ने बड़ी ख़न्दाह पेशानी के साथ आप की इस शर्त को कुबूल कर लिया। बग़दाद में चन्द रोज़ क़याम के बाद आप दीगर मुक़ामात की तरफ़ रवाना हो गए। कुछ अरसा गुज़रने के बाद हज़रत बीबी नसीबा के यहाँ एक फ़रज़न्द सईद तौलद हुआ। हसबुल हुक्म वालिदैन नें इस मौलूद का नाम "मुहम्मद" रखा। फिर कुछ अरसा बाद दूसरे फ़रज़न्द की भी विलादत हुई और इनका नाम "अहमद" रखा गया।

कुछ अरसा गुज़रने के बाद हुज़ूर कुतबुल मदार कुद्दस सिर्रहु फिर बग़दाद पहुँचे। पूरा बग़दाद एक बार फिर आप की आमद की खुशियों में झूम उठा। बग़दाद के एतराफ़ से भी लोग जोक़ दर जोक़ आने लगे। जिस क़दर भी लोग आप की बारगाह में हाज़िर हुए आप ने सभो को शाद काम फ़रमाया। हज़रत सैय्यदाह बीबी नसीबा हाज़िर बारगाह हुई और हज़रत मदारे पाक को साहब जादगान की विलादत की ख़बर दी मगर दिल ही दिल में साहब ज़ादे की जुदाई के तसव्वुर से कांप उठीं। बड़े साहब ज़ादे मुहम्मद जमाल उद्दीन अब सिन शऊर को पहुँचने वाले थे। जबके छोटे फ़रज़न्द सैय्यद अहमद अभी इनसे कुछ छोटे थे। सरकार मदारूल आलमीन कुद्दस सिर्रहु ने सैय्यदाह बीबी नसीबा से फ़रमाया के आप अब अपना वादा पूरा करें यानी मुहम्मद जमाल उद्दीन को मेरे हवाले करें। हुज़ूर मदारे आज़म की ज़ुबान फ़ैज़ से यह जुमला सुन कर आप की मम्ता तड़प उठी मगर वादाह तो वादाह वह भी इतने बड़े अज़ीम वली अल्लाह से कोई तदबीर समझ नहीं आई। बेसाफ़्ता सैय्यदा की ज़ुबान से निकला के हुज़ूर ! मुहम्मद जमाल उद्दीन तो इन्तिक़ाल कर गए। आप ख़ूब जानते थे के बीबी नसीबा को शफ़क़्क़त मादरी के जज़्बे ने बेइख़्तियार कर दिया है। मगर आप ने उनसे कुछ नहीं फ़रमाया

। बीबी नसीबा भी इजाज़त मांग कर घर की तरफ़ चल पड़ी। अभी आप घर के करीब ही थीं के इत्तिला मिली के मुहम्मद जमाल उद्दीन ज़ीने से गिर पड़े उस्से पहले के आप इनतक पहुँचती मुहम्मद जमाल उद्दीन की रूह क़फ़्स अनसरी से परवास कर गई। आप कर्ब ग़म से बेकरार हो गई और बिला ताख़ीर अफ़्ताँ व ख़ैज़ाँ हुज़ूर मदार आलम सरकार ज़िन्दा शाह मदार की बारगाह में पहुँची और पूरा किस्सा बयान फ़रमाया। हुज़ूर शहनशाह विलायत मुसकुराए और फ़रमाया के ठीक है जाओ मुहम्मद जमाल उद्दीन को मेरे पास ले आओ। जब हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन की लाश मुबारक आप की ख़िदमत में ला कर रखी गई तो आप ने उनके सर पर अपना दस्ते मुक़द्दस रखा और फ़रमाया, जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती उठो तुम्हें तो दीने रसूल की बड़ी ख़िदमतें करनी हैं। आप की ज़ुबाने फ़ैज़ तरजुमान से यह जुमले निकले ही थे के हज़रत सैय्यदना मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती उठकर बैठ गए। आप की बारगाह से मिला हुआ ख़िताब जाने मन जन्नती आज भी आप के इस्म मुबारक से जुड़ा हुआ है। देहातों में अकसर लोग जुम्मन जन्नती भी कहते है। समरातुल मुक़द्दस में एक रिवायत इस तरह भी है के बाद विलादत सैय्यदना ग़ौसे आज़म कुद्दस सिर्रहु ने अपने दोनों भांजो यानी हज़रत सैय्यद महमूद के साहब ज़ादगान हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन और हज़रत सैय्यद अहमद बादियापा को लेकर ख़ुद बारगाहे मदारियत में हाज़िर हुए और फ़रमाया के यह दोनों मेरी हमशीरा बीबी नसीबा के दिल बन्द हैं। और एक क़ौल के मुताबिक़ हुज़ूर ग़ौस पाक ख़ुद ही बीबी नसीबा के फ़रज़न्दों के लिये बारगाहे कुतबुल मदार में दुआ की दरख़्वास्त फ़रमाई थी आप के कहने पर हुज़ूर मदार पाक ने दुआ फ़रमाई और हज्जे बैतुल्लाह के लिये रवाना हो गए वापसी में जब दोबाराह तशरीफ़ लाए तो बीबी नसीबा हुज़ूर ग़ौस पाक की वसीयत के मुताबिक़ अपने दोनों फ़रज़न्दों को लेकर बारगाहे मदारियत में हाज़िर हुई हुज़ूर मदार पाक ने बीबी नसीबा बे

फ़रज़न्दों को दिल व जान से क़ुबूल फ़रमाया। और उन्हें लेकर इस्तमबोल की तरफ़ रवाना हो गए। उस जगह इन दोनों अज़ीज़ों को इल्म सूरी की तालीम के लिये अब्दुल्लाह रूमी के हवाले फ़रमाया और खुद एक पहाड़ी की घाटी में जिसदम के अशग़ाल में वाहिद हक़ीक़ी के ज़िक्र में मशग़ूल हो गए। उस जगह चन्द साल गुज़ारने के बाद ख़ुरसान की तरफ़ रवाना हो गए। हज़रत सैय्यदना मदारूल आलमीन की इन्हीं नवाज़िशों का सदक़ा है के हज़रत सैय्यदना मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती मदारी क़ुद्दस सिर्रहु का इस्म शरीफ़ भी कामिलान तरीक़त में सर फ़ेहरिस्त है। आप से इतनी सारी करामतें ज़हूर में आई हैं के इन्हें बयान नहीं किया जा सकता। तज़किरातुल मुत्तक़ीन वग़ैराह में तहरीर है के हज़रत जाने मन जन्नती क़ुद्दस सिर्रहु शेर की सवारी और सांप का कोड़ा रखते थे। हज़रत शेख़ सादी शिराज़ी रह० ने आप से मुलाकात की है और आप के फ़ैज़ से ख़ूब ख़ूब मुसतफ़ीज़ हुए हैं। हज़रत शेख़ सादी रह० अपनी मुलाकात का ज़िक्र करते हुए रक़्म तराज़ हैं के

येके दीदम अज़ अरसा रूदबार
के पेश आदम बर पलंग सवार
चुनाँ हूल ज़ान हाल बर मन नशस्त
के तर सैय्यद तुम पाए रफ़्क़तन बा बस्त

आप ने भी तक़रीबन दुनिया के अकसर मुमालिक का सफ़र फ़रमाया है चूँके आप की उमर पाक भी काफ़ी तवील हुई है तज़किरातुल मुत्तक़ीन गुलिसताने मदार वग़ैराह में आप की उम्र शरीफ़ चार सौ साल तहरीर है। आप की उम्र पाक का अकसर हिस्सा हुज़ूर क़ुतबुल मदार क़ुद्दस सिर्रहु की ख़िदमत में गुज़रा है। आप हुज़ूर मदरूल वरा क़ुद्दस सिर्रहु के बड़े चहीते और महबूब नज़र मुरीद व ख़लीफ़ा हैं। हुज़ूर सैय्यदना मदारूल आलमीन क़ुद्दस सिर्रहु के खुलफ़ा में जिस क़द्र तक़र्रूब आप को हासिल है वह औरों को मयस्सर नहीं। आप हुज़ूर मदार पाक क़ुद्दस सिर्रहु के हमराह ज़ियारत हरमैन शरीफ़ैन से भी मुशर्रफ़ हुए हैं। ज़ियारत हरमैन के बाद हुज़ूर मदार आज़म क़ुद्दस सिर्रहु का

ज़मीन बग़दाद और दीगर बिलाद अरबिया का सफ़र फ़रमाते हुए करबलाए मोअल्ला पहुँचे फिर यहाँ से नजफ़ अशरफ़ की ज़ियारत को तशरीफ़ ले गए। नजफ़ अशरफ़ में हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती को एतिकाफ़ का हुक्म दिया और खुद तबलीग़ दीन फ़रमाते हुए हिंन्दुस्तान की तरफ़ रवाना हो गए।

मिस्ल वअलजिबाल औताद पहले हुए तमाम मलंगान इज़ाम के मुसद्दर व मुनबॉ हुज़ूर सैय्यदना मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती ही हैं। आप के सर के बाल बहुत बड़े बड़े थे। आप के बाल ना कटवाने की दो रिवायतें मशहूर हैं। एक तो यह के हुज़ूर मदार पाक ने हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती के अहद तिफ़्ली में अपना दस्त अक़दस इनके सर पर रख कर दुआ फ़रमाई थी और दूसरी रिवायत जो तज़किरातुल मुत्तक़ीन फ़ी अहवाल खुलफ़ाए सैय्यद बदी उद्दीन के हाशिए पर तहरीर है के हुज़ूर सैय्यदना ज़िन्दा शाह मदार ने हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती को अजमेर के एक पहाड़ पर ज़िक्र हक़ व अशग़ाल जिस दम में बैठा दिया चुनाँचे एक सौ पचपन साल तक मुसलसल आप ज़िक्र हक़ व अशग़ाल में बैठे रह गए। यहाँ तक के आप के सर से ख़ून निकलने लगा। जब हुज़ूर सैय्यदना मदारूल आलमीन क़ुद्दस सिराहु को इत्तिला मिली तो आप ने हज़रत जाने मन जन्नती के सर पर अपने दस्त मुबारक से मिट्टी मल दी जिसके सबब ख़ून का निकलना बन्द हो गया। जब हज़रत मुहम्मद ज़ाल उद्दीन क़ुद्दस सिर्रहु पहाड़ की घाटी से बाहर आए तो लोगो ने आप को इस बात की इत्तिला दी के ऐसा ऐसा वाक्या आप के साथ पेश आ गया था। फ़िर हुज़ूर सैय्यदुल अक़्ताब सरकार ज़िन्दा शाह मदार ने आप के सर पर ख़ाक मली। जब हज़रत ने सुना के मेरे सर पर आक़ा हुज़ूर मदारूल वरा ने अपना दस्त हक़ रखा बस इसी के बाद से बाल कटवाना बन्द कर दिया। मलंगान इज़ाम इसी बाईस अपने बाल सर से जुदा नहीं करते हैं दौरे हाज़िर के कुछ दीदाह कोर किस्म के लोग मलंगान इज़ाम के बालों पर फ़तवा

जिहालत नाफ़िज़ कर के अपनी आक़बत बरबाद करते हैं । मुहक़्क़ि ज़मन माहिरे इल्म व फ़न फ़किया उम्मत हज़रत अल्लामा अश्शाह अबुल हम्माद मुफ्ति मुहम्मद इसराफ़ील शाह अलवी मदारी ज़ीद मुजद्दाह का यह मक़ाला, रिसाला ज़िन्दा शाह मदार बाबत मार्च सन दो हज़ार सात ई० में शाया हो कर मंज़रे आप पर आ चुका है । नासिरूल सालिकीन, तज़किरातुल फ़ुक़रा वग़ैराह में है के हुज़ूर जाने मन जन्नती क़ुद्दस सिर्रहु के पीर व दीवानगान कहलाते हैं जबके यह बात भी दिल चसपी से ख़ाली नहीं है के गुजरात और यूपी वग़ैराह के बाज़ इलाको में क़बीला शाह के कुछ लोगो को भी दीवान कहा जाता है । यहाँ पर यह बात ज़हन नशीन रखने से ताल्लुक रखती है के क़बीला शाह के हज़रात को दीवान बाईं वजह ज़्यादा कहा जाता है के अहद क़दीम में ख़ानदान अलविया मुरतज़विया के लोग लशकरे इसलाम में मनसब दीवान पर भी ज़्यादा तर मुत मकन हुए थे इसी मुनासिबत से इनका यह मनसबी लक़ब उनके नसब पर ग़ालिब आ गया अफ़सोस की बात है के अकसर दीवान हज़रात इस बात से वाकिफ़ नहीं हैं के इनका नसबी रिशता शेरे ख़ुदा वारिसे मुसतुफ़ा हुज़ूर सैय्यदना मौला अली करमुल्लाह वजहुल करीम से है । कुछ ना पुख़ता कलम कारों ने इस मोअज़्ज़िज़ क़बीले की तारीख़ को ग़ैर सिम्त में मोड़ कर अपनी कम इल्मी का सुबूत दिया है जो के क़ाबिल मज़म्मत के साथ क़ाबिले तरवीद भी है । उन्हें चाहिये के अपनी इन नाक़िस तहरीरों से तौबा व रूजू कर के इन्दुल्लाह वर्रसूल सरख़रोई के असबाब मोहईया कर लें । अल ग़र्ज़ हुज़ूर सैय्यदना मुहम्मद जमाल उद्दीन क़ुद्दस सिर्रहु से रिश्ता रूशदी रखने वाले हज़रात भी दीवानगान कहलाते हैं जबके आप से दीवान गान की बेहतर शाख़ें निकलीं हैं जो दीवानगान हुसैनी, दीवानगान सुलतानी, दीवानगान रशीदी, दीवानगान दरियाई, दीवानगान सरमोरी, दीवानगान ज़िन्दा वली, दीवानगान आतिशी, दीवानगान कामिली, दीवानगान जमशेदी, दीवानगान क़ुद्दूसी, दीवानगान मदाही, दीवानगान सिध

शाही, वग़ैराह के नामों से मशहूर हैं ।

आप ने पूरी ज़िन्दगी मुजर्दाना तौर पर गुज़ारी है यानी ज़िन्दगी भर शादी नहीं फ़रमाई । आप और आप के ख़ुलफ़ा के ज़रिये सिलसिला मदारिया को काफ़ी फ़रोग़ हासिल हुआ है । बड़े बड़े उमरा व सलातीन ने आप की बारगाह में हाज़री दी है और फ़्यूज़ो बरकात से मालामाल हुए हैं एक मरतबा शेर शाह सूरी आप से मिलने के इरादे से रवाना हुआ । महल से निकलते वक़्त इसने अपने दिल मे सोचा के आप अगर वाकई फ़क़ीर क़ामिल होंगे तो मुझे आम देगे वाज़ेह रहे के उस वक्त आम का मौसम नहीं था । जब बादशाह वक़्त आप की बारगाह में पहूँचा तो देखा के आप के हाथ में आधा आम है चुनाँचे हज़रत सैय्यदना जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती क़ुद्दस सिर्रहु ने वह आधा आम शेर शाह सूरी को दे दिया । शेर शाह सूरी ने आम आप के हाथ से ले लिया और दरवेशी फ़क़ीरी के मौज़ू पर आप से गुफ़तुगू करने लगा । जाने के बाद हज़रत ने फ़रमाया के अगर बादशाह आम खा लेता तो उसके ख़ानदान में नसलन बाद नसली बादशाहत क़ाएम हो जाती मगर क़ुदरत को यह मनज़ूर ना था । हुज़ूर सैय्यदना जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती क़ुद्दस सिर्रहु का मक़ाम व मरतबा दरमियान औलिया बहुत ही बुलन्द व बाला है । जमाअत औलिया अल्लाह में आप के मिस्ल रियाज़त व मुजाहिदा करने वाले बहुत कम नज़र आते हैं । परवर दिगारे आलम ने आप को मजमुअल फ़ज़ाएल बना दिया था । बिल ख़ुसूस जज़्बए ख़लाएक़ आप का ख़ास वुस्फ़ है। अल्लाह की मख़लूक़ देखते ही आप की गरवीदाह हो जाती थी। गुलिसताने मदार वग़ैराह में है के जब आप जंगलों में होते तो चारों तरफ़ से जंगली जानवर आप को घेरे रहते थे आप की अजीब व ग़रीब दासतान है । आप की मशहूर करामत आज भी ज़बान ज़द आम है के एक मरतबा हुज़ूर क़ुतबो वहदत सैय्यदना मदारूल आलमीन क़ुद्दस सिर्रहु और आप एक ऐसी पहाड़ी पर क़याम फ़रम हुए जहाँ तकरीबन नौ सौ साधू महंत भी ठहरे हुए थे । उन साधूओं का भंडारा सुबह व शाम चलता रहता था । एक रोज़ हुज़ूर सैय्यदना

ज़िन्दा शाह मदार कुद्दस सिर्रहु ने फ़रमाया के जाने मन जन्नती ! मेरी कशती लेकर साधुओं के पास जाओ और थोड़ी सी आग ले आओ । आप कशती लेकर रवाना हुए और साधुओं के पास पहुँच कर आग मांगी । सबसे बड़ा साधू बोला आग क्या किजिये गा । आप ने फ़रमाया मेरे मुरशिद गिरामी ने मांगी । एक दूसरे महंत ने कहा के शायद खाना बनाने के लिये ही आग मांगा होगा लिहाज़ा उन्हें बजाए आग देने के दो आदमीयों का खाना दे दिया जाए । हज़रत जाने मन जन्नती ने फ़रमाया के नहीं मेरे मुरशिद तो खाना खाते ही नहीं हैं । अल बत्ता मैं ज़रूर कभी कभार खा लेता हूँ मगर हमे खाने की हाजत नहीं आग ही चाहिये । बड़े साधू ने कहा ठीक है आप आग भी ले लें और कशती में खाना भी ले लें । जब आप ने देखा के साधू इसरार पर असरार किये जा रहे हैं तो फिर आप ने अपनी कशती इनके हवाले कर दी । बावर्चि को हुक्म हुआ के इस कशती में भर कर खाना ले आओ । बावर्ची ने कशती में खाना डालाना शुरू किया मगर क्या किजियेगा कई डेगें ख़त्म हो गई और कशती है के भरने का नाम नहीं ले रही है । यहाँ तक के सारी डेगे ख़त्म हो गई मगर कशती नहीं भरी अबतो तमाम महंत साधू हैरत व इस्तेजाब में डूब गए । एक साधू दूसरे को हैरत भरे अन्दाज़ में देखते रहे मगर मआमला कुछ भी समझ में नहीं आने वाला था । आप के कमालात व करामात उन मुशरिको पर ज़ाहिर हो चुके थे और आप की अज़मत का सिक्का उनके दिल पर बैठ चुका था । हज़रत सैय्यदना जमालुद्दीन रज़ि० ने ऐन उसी मक़ाम पर एक ऐसा वज़ीफ़ा किया के कुछ ही देर के बाद आप के जिस्म के सारे अज़ा अलग अलग हो गए, सर धड़ से जुदा हो गया यह कैफ़िअत और यह मन्ज़र देख कर महंत लोग घबरा गए लेकिन उन में से एक जादूगर जरी निडर महंत ने आवाज़ बुलंन्द की देखते क्या हो । उनको बोटी बोटी कर के खाऔ यह सारे कमालात तुम्हारे अन्दर भी पैदा हो जाएगे और उस मुसलमान की ख़ूबिया तुम्हारे अन्दर सरायत कर जाएंगी । महशों का दिमाग़

फिरा और उन्होंने आप के जिस्म के बिखरे अज़ॉ और टुकड़ो की तिक्का बोटी की और फिर उन ज़ालिमों ने उन्हें खा लिया । उधर हुज़ूर क़ुतबुल मदार कुद्दस सिर्रहु आप का इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे चुनाँचे जब ज़्यादाह ताख़ीर हुई तो आप खुद चलकर पहाड़ी पर पहूँचे और एक पत्थर पर खड़े हो कर फ़रमाया के जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती तुम कहाँ हो? हज़रत ख़्वाजा जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती कुद्दस सिर्रहु ने तमाम साधुओं के पेट से जवाब दिया के हुज़ूर ! मैं महशों के पेट में हूँ । हर महंत के पेट से यह सदा बुलंन्द हुई । हुज़ूर मैं यहाँ हूँ । हुज़ूर सरकार सरकाराँ सैय्यदना ज़िन्दा शाह मदार कुद्दस सिर्रहु ने फ़रमाया के जलदी से आ जाओ । हज़रत जाने मन जन्नती कुद्दस सिर्रहु ने जवाब दिया के हुज़ूर कैसे बाहर आाऊँ तमाम रासते गंन्दे हैं हुज़ूर सैय्यदना ज़िन्दा शाह मदार ने फ़रमाया के तमाम सन्तों के पेटों में से सबसे बड़े साधू के पेट में आ जाओ और फिर उसका सर फाड़ कर बाहर आओ । तमाम सन्त क़ुतबुल मदार की बातें सुन कर सकते में पड़ गए। अभी थोड़ा ही वक़्फ़ा गुज़रा होगा के तमाम सन्तों ने जिन्हें रत्ती रत्ती कर के खा लिया था वही शेख़ तरीक़त हुज़ूर सैय्यदना जमाल उद्दीन कुद्दस सिर्रहु सबसे बड़े महंत का सर फ़ाड़ कर बाहर आ गए जब उन कुफ़्फ़ार मुशरेकीन ने इतनी अज़ीम करामत देखी तो सबके सब नादिम व शरमिन्दाह हो कर क़दम बोस हुए और कलमा तैय्यबा पड़ कर हलक़ा इसलाम में दाख़िल हो गए और दिल व जान से आप के मुरीद व ग़ुलाम बन गए बाद में उनमें से बहुत सारे लोग नेमत व ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ हो कर साहिबे कश्फ़ व करामात भी हुए । उन लोगो से मुताल्लिक़ और भी बहुत सारे अफ़राद थे वह भी नेमत इसलाम से मालामाल हुए यह हैरत नाक वाक़्या गुजरात में जूना गड़ गिरनाम नामी पहाड़ पर वाक़े हुआ । जिस पत्थर पर ख़ड़े हो कर हुज़ूर क़ुतबुल मदार सरकार ने जाने मन जन्नती को आवाज़ दी थी उस पत्थर पर आज भी सरकार ज़िन्दा शाह मदार कुद्दस सिर्रहु के पाए अक़दस के निशान

बने हुए हैं ग़ौर से देखने पर उस आदमी को उस में अपना चेहरा भी नज़र आता है। मदार टेकरी अजमेर शरीफ़ और मदारिया पहाड़ महल बारी नेपाल में भी ऐसा ही वाक़्या मशहूर है। (सीरूल मदार)

हज़रत सैय्यदुल अक़ताब सैय्यदना मदार आज़म क़ुद्दस सिर्रहु की सीरत पाक की मशहूर किताब "मदार आज़म" में हकीम फ़रीद अहमद नक़्शबन्दी रह० ने तहरीर फ़रमाया है के हुज़ूर सैय्यदी ज़िन्दा शाह मदार क़ुद्दस सिर्रहु आख़िरी सफ़र हज से वापसी में जब ख़ुरासान पहुँचे तो वहाँ के एक बुर्ज़ुग हज़रत शेख़ नसीर उद्दीन रह० को आप की तशरीफ़ आवरी का इल्म हुआ मगर वह मिलने नहीं आए। इत्तिफ़ाक़न हुज़ूर मुहम्मद जमाल उद्दीन क़ुद्दस सिर्रहु एक तरफ़ सैर के लिये निकल पड़े वहाँ आप की मुलाक़ात हज़रत शेख़ नसीर उद्दीन से हो गई दौरान गुफ़्तुगु हज़रत जाने मन जन्नती क़ुद्दस सिर्रहु ने उन बुर्ज़ुग से फ़रमाया के आप ने हुज़ूर सैय्यदना मदारूल आलमीन से मुलाक़ात नहीं की हज़रत नसीर उद्दीन ने फ़रमाया मुझे उनसे मिलने की क्या ज़रूरत है वह भी वली हैं और मैं भी वली हूँ। हज़रत जाने मन जन्नती को यह जुमला सख़्त नागवार गुज़रा चुनाँचे आप ने उसी वक़्त उनकी कैफ़िअत को सल्ब कर लिया और वहाँ से चल पड़े। जब सरकार क़ुतबुल मदार की ख़िदमत में पहूँचे तो सरकार मदार पाक ने फ़रमाया जाने मन जन्नती नसीर उद्दीन की बातों ने तुम्हें मलूल कर दिया। आप ने बा वजा अदब कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर बाद नसीर उद्दीन भी बारगाहे मदारियत में हाज़िर हो कर क़दम बोस हुए और फिर ख़ामोशी के साथ एक गोशे में बैठ गए। हुज़ूर सैय्यदना ज़िन्दा शाह मदार ने हज़रत जाने मन जन्नती की तरफ़ इशारा फ़रमाया बादहू हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन क़ुद्दस सिर्रहु ने वह सल्ब की हुई नेमत हज़रत नसीर उद्दीन को वापिस देदी। हुज़ूर ज़िन्दा शाह मदार क़ुद्दस सिर्रहु ने हज़रत यहाँ से दीगर मुमालिक में तबलीग़ दीन फ़रमाते हुए अजमेर पहूँचे। अजमेर पहुँच कर सरकार ज़िन्दा शाह मदार क़ुद्दस सिर्रहु ने हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती क़ुद्दस

सिर्रहु और आप के बिरादर हज़रत सैय्यद अहमद बादियापा को कोकला पहाड़ी पर चिल्ला करने का हुक्म दिया और ख़ुद कालपी की तरफ़ रवान हो गए। आप की दीनी ख़िदमात का दाएरा वसी से वसी तर है। हिंन्दुस्तान कें कई मक़ामात पर आप के चिल्ले बने हुए हैं। अप के ख़ुलफ़ा की तादाद भी बहुत ज़्यादा है। हज़रत फ़ख़रूद्दीन ज़िन्दा दिल हज़रत सिदहन सर मस्त, हज़रत क़ुतुब मुहम्मद अल मारूफ़ ब क़ुतुब ग़ौरी अलैहिम अल रहमा आप के क़ाबिल ज़िक्र ख़ुलफ़ा में हैं। आप का विसाल पुर मलाल १४/मोहर्रमुल हराम ९५१ हि० में हुआ। मज़ार मुबारक रियासत बिहार के ज़िला पटना के क़सबा हैलसा में मरजॉ ख़लाएक़ है।

सरगिरोह दीवानगान

हज़रत सैय्यदना जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती के चन्द ख़ुलफ़ा

इस्से पहले हज़रत सैय्यदना मुहम्मद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती मदारी क़ुद्दस सिर्रहु के मुख़तसर हालात बयान हो चुके हैं। अब आप के ख़ुलफ़ा का भी अजमाली तार्रूफ़ आप की ख़िदमत में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ।

आप के पहले ख़लीफ़ा हज़रत महबूब अली दीवान मदारी रह० हैं। आप हुसनी हुसैनी सैय्यद आले रसूल हैं। वतन मालूफ़ यमन है। बहुत सी करामात का ज़हूर आप से हुआ है। तबलीग़ दीन में बड़े आला हिम्मत आप थे। आप के फ़ियूज़ व बरकात से एक आलम मुसतफ़ीज़ हुआ है हनूज़ यह सिलसिला आज भी आसताना मुबारक से जारी व सारी है आप के भी कई ख़ुलफ़ा हुए हैं मज़ारे पाक गोतरका शरीफ़ मुतसल राधनपूर जिला पाटन में मर जए ख़लाएक है हुज़र सैय्यदना जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती क़ुद्दस सिर्रहु के दूसरे न० के ख़लीफ़ा मुनबअ फ़ैज़ाने मदारियत हुज़ूर सैय्यदना सिद्धन सरमस्त मदारी रह० हैं। आप आले रसूल औलादे अली से हैं आप अपने और अदो वज़ाएफ़ कश्फ़ व करामात तकवा व तक़द्दुस में बड़े यक़ता

थे कभी कभी आप शग़ल रूह परवाज़ भी किया करते थे एक दफ़ा का ज़िक्र है के आप अपने मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत बाबा मान दरियाई को ताक़ीद फ़रमा कर शग़ल रूह परवाज़ में मशगूल हो गए जब वह जिस्म रूह से ज़मीन पर ख़ाली पड़ा रहा तो एक जादूगर ने अपनी शक्ल जादू के ज़ोर से चूहे की बना कर सूराख़ से निकला और आप की ठुड्डी पर काटा उसके काटने से आप को कश्फ़ से मालूम हुआ के एक चुहे ने सुराख़ से निकल कर मेरे जिस्म की ठुड्डी पर काटा है मुख़्तसर आप चूँ के और नसीहतन हज़रत बाबा मान की तरफ़ सोटा लेकर दौड़े और डाँट कर कहा ऐ मान तूने क्यूँ ख़याल नहीं रखा पर बाबा मान को शेख़ के कहने से बिलकुल गुस्सा ना आया और चुपके खड़े रहे और अपने चेहरे को आजिज़ाना ही बना कर सना किये । हज़रत सैय्यद सिद्धधन सरमस्त रह० को आप की नर्म दिली पसंन्द आई । निहायत प्यार से हज़रत बाबा मान को अपने पास बुलाकर बैठाया और ख़िरक़ा ख़िलाफ़त अता फ़रमाया । अलग़र्ज़ आप जिस वक़्त शाने मुरीद से वाक़िफ़ हुए तो सजदा शुकराना जल्ले शाना का अदा किया और आप के चेहरे से एक नूर चमका । रिसाला सैय्यद मीरान अली शाह सितार मे तहरीर है के एक बार आप की इबादत गाह में चिराग़ ना था उस वक़्त आप के चेहरे से एक नूर ज़ाहिर हुआ के आप ने और आप के हम सोहबतों ने उस रौशनी में इबादत की । अल मुख़तसर आप जिस वक़्त शग़ल रूह परवाज़ से होशियार हुए और बाद ख़िलाफ़त देने हज़रत बाबा मान दरियाई से फ़रमाया के ऐ बाबा मान जा फ़लाँ जादूगर को पकड़ ला । आप पकड़ने को गए उस वक़्त उसने बहुत ही हिकमत से जादू चलाया मगर हुक्म ख़ुदा से मुताल्लिक़ असर ना हुआ । आख़िर आप ने उसको पकड़ कर हज़रत के सामने लाकर खड़ा किया। उसने आप के चेहरे की तरफ़ देखा तो आप के रूआब से थर्रा के आप के क़दमों में गिर पड़ा और सच्चे दिल से कलमा तैय्यब अदा कर के आप की ख़िदमत में रहना इख़्तियार किया । अल मुख़तसर अल्लाह जल्ले शाना ने

आप से कई करामत ज़ाहिर कियें और आप से दीवानगान सदा शाही वग़ैराह निकले हैं । मज़ार शरीफ़ आप का गुजरात क़सबा जानपनेर में ज़ियारत गाह ख़ास व आम है ।

आप के एक और जैय्यद ख़लीफ़ा हज़रत मोहब अली दीवानगान में आप का मज़ारे पाक शाह करार बसवा रियासत अलवर राजिस्थान में है मक़ाम मज़कूर आप के ख़लीफ़ा हज़रत शाह करार रह० के नाम से मनसूब है। हज़रत सैय्यदना मोहब अली दीवान रह० से बहुत सारी करामाते वजूद में आई एक कलमी रिसाला जो आप ही की हयाते मुबारका पर मुशतमिल है उसमें तहरीर है के आप एक मरतबा मौज़ा दोशाह की सरहद पर ही थे के ख़ुद्दाम ने नक्कारा बजा दिया के आबादी के लोग हुज़ूर वाला के इस्तक़बाल के लिये आबादी से बाहर आ जाऐं । नक़्क़ारा बहुत देर तक बजता रहा मगर कोई नहीं आया । काफ़ी देर के बाद दो तीन नहीफ़ व लाग़र बूड़े आबादी से निकले और आप की ख़िदमत में पहूँचे । हज़रत सैय्यदना मोहब अली रह० ने उनसे बक़ीया लोगो के ना आने की वजह दरयाफ़्त फ़रमाई वह बेचारे नहीफ़ व लागर बूड़े आप के सवाल पर फूट फूट कर रोने लगे और बताया के सरकार गुस्ताख़ी माफ़ फ़रमाए पूरा गाँओ तिजारी जैसे जान लेवा बुख़ार में मुबतिला है लोगो के अन्दर इतनी भी ताक़त नहीं बची के वह उठ कर बैठ सकें। हम लोग बड़ी दुशवारियों से गिरते पड़ते आप तक पहूँचे हैं ता के आप को आबादी में लेकर चलें हुज़ूर सैय्यदना मोहब अली रह० ने जब उनकी दर्द भरी दासतान सुनी तो आप को काफ़ी तकलीफ़ हुई थोड़ी देर के बाद आप ने अपनी गुदड़ी निकाली और उन लोगो के हवाले किया और फ़रमाया के यह गुदड़ी ले जाकर उन दोनों शाहों को दे दो जो मौज़ा मज़कूर में क़याम पज़ीर हैं और उनसे कहो के अपने अपने चिमटे (दस्त पनाह) लेकर गुदड़ी के पास खड़े रहें । उन हज़रात ने हुक्म की तामील की और दोनों शाहों तक गुदड़ी पहूँचा दी । हज़रत के हुक्म के मुताबिक़ दोनो शाह अपना अनपा चिमटा लेकर गुदड़ी के पास खड़े हो गए अभी थोड़ा ही वक्फ़ा गुज़रा होगा के तमाम

बलाए उस गुदड़ी में आ कर भर गई और आबादी के लोगों को निजात हासिल हुई ।

मशाएख़ा दीवानगान मदारिया

सरगिरोह दीवानगान मदार उमदतुल अख़यार व अल अबरार वाक़िफ़े असरार जली व ख़फ़ी हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती रज़ि० का मुक़ाम खुलफ़ाए क़ुतबुल मदार सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार में ऐसा ही है जैसे चाँद का मक़ाम सितारों में आप हुज़ूर क़ुतबुल मदार रज़ि० के अज़ीज़ तरीन ख़लीफ़ा व महबूब तरीन मुरीद हैं आप मुक़ामाते आलिया व हालाते सुन्निया व रफ़िया पर मुतमकन हैं हिंन्दुस्तान के मुशाहीर औलियाए पाक बाज़ में आप का शुमार है तारीख़ विलायत में अगर आप एक तरफ़ अज़ीज़ तरीन ख़लीफ़ा ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० होने का शर्फ़ हासिल है तो दूसरी तरफ़ शाने इम्तियाज़ी को बड़ाने के लिये निसबत की यह सरफ़राज़ी भी कम नहीं है के आप ग़ौसे समदानी महबूबे सुबहानी हुज़ूर ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी के ख़्वाहर ज़ादाह हैं । हज़रत सैय्यद महमूद का फ़रज़न्द, हज़रत बीबी नसीबा का दिल बन्द और हुज़ूर ग़ौसे आज़म के ख़्वाहर ज़ादाह अर्जमन्द होना अपनी जगह एक सआदत है लेकिन दम मदार से हयाते नौ पाना और मदारूल औलिया क़ुतबुल मदार से निसबत बैत व इजाज़त ख़िलाफ़त मयस्सर होन और क़ुतबुल कुबरा सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० की सोहबत व हमनशीनी से फ़ैज़याब होना बहुत बड़ी सआदत है । मोअन्नसुल अरवा, तज़किरातुल सालिहीन, तज़किरातुल मुत्तक़ीन और सीरत औलिया की मुतअदद किताबों में तहरीर है के आप हुज़ूर मदारे पाक की दुआओं से पैदा हुए । खुर्द साली में इन्तिक़ाल हो गया दम मदार ने ऐसी जान डाली के हयाते मरदा को पैग़ामे ज़िन्दगी मिल गई । मोअन्नसुल अरवाह में है के जब लोग आप का जनाज़ाह लेकर चले तो हुज़ूर मदारे पाक को ख़बर दी गई जनाज़ेह के सिराहने जाकर तीन मरतबा आप ने

जाने मन जन्नती कह कर पुकारा दम मदार ने बेड़ा पार कर दिया आप ने आवाज़ दी और वह उठ कर बैठ गए उस दिन जाने मन जन्नती के लक़ब से मशहूर हो गए आप बहुत बड़े साहिबे करामात व तसव्वुफ़ात थे आप की मुकम्मल सवानेह इन्शा अल्लाह आगे तहरीर की जाएगी सिलसिला आलिया तबक़ातिया मदारिया गिरोह दीवानगान आप ही से जारी हुआ है ।

दीवानगानः दीवानगान कौन लोग हैं ? ...... वह लोग जो जमाल हुस्न आफ़रीं के दीवाना, ख़िलाएक़ ज़मॉ व ज़मीं के शैदा ज़ात अल्लाह अस्समद पर फ़ाएज़ हैं । यह लोग ऐसी दीवानगी रखते हैं के कमाल हो शियारी उस पर निसार है ख़ाकसारी और इनकिसारी का यह आलम है के यह उनकी जिबिल्लत आशकार है हुज़र सैय्यदना क़ुतबुल मदार रज़ि० फ़रमाते हैं के हमारे सिलसिले में दीवाना उसे कहते है

तरजुमा - जो अकसर व बेशतर मुशाहिदाह हक़ तबारक व तआला में रहता हो और उसकी आँखो में खुदा का नूर जलवा नूमा हो उसकी अक़्ल मआश मग़लूब हो गई हो और अक़्ल मआद ज़ाहिर हो गई हो दीवाना वह जो महबूबे हक़ीक़ी के दिलदार अहमदे मुख़तार सल० के इश्क़ व मोहब्बत की फ़रावानी से महफ़ूज़ व मसरूर रहता है और अपने महबूब के दीदार में महूद मगन होने के सबब ख़लाएक़ की निगाह में दीवानावार दिखाई पड़ता है इसी वजह से उसे दीवाना कहते हैं और जिसके पास अक़्ल मआश होती है उसे आरिफ़ कहते हैं।

यानी यह दीवानगान मदार ख़मख़ानए अज़ल के मसताने, बादाह लम यज़ल के दीवाने हैं जिनके दिल का जाम इश्क़े इलाही से लबरेज़ है और जिनका हाल व मक़ाल निहायत ही शौक़ अंगेज़ है हाफ़िज़ शीराज़ी फ़रमाते हैं।

वराई ताअत दीवानगान ज़मॉ मतलब - के शेख़ मज़हब मा आक़ली गुना दांस्त
यानी जो कुछ हमसे रूह पज़ीर हो जाता है वही हम दीवानों की ताअत है कमियों के ऐ शेख़ जी! हम दीवानों के मज़हब में अक़्ल से काम लेना तो गुनाह तसव्वुर किया जाता है इसी लिये तो कहा गया है ।

बेख़तर कूद पड़ा आतिश नमरूद में इश्क़ - अक़्ल है महू तमाशाए लब बाम अभी
शेख़ सआदी फ़रमाते हैं।

(एक शख़्स ने एक शोरीदा हाल के पास लिखा)
(के दोज़ख़ की तमन्ना करते हो या बहिश्त की)
(उसने कहा यह माजरा मुझसे ना पूछो)
(मैने तो उसी को पसन्द किया जो मेरे महबूब ने मेरे लिये पसन्द किया है)

यही सच्चे इश्क़ का ग़लबा है के माशूक़ की रज़ा जो बहर हाल उसको मद नज़र रखता है उन्हीं के हक़ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है ''बेशक नेक लोग अल्लाह की नेमत में हैं'' हक़ीक़त में दीवाना अपने काम में होशियार होता है हर दम अपने माशूक़ के दीदार के इन्तिज़ार में चश्में बराह रहता है मख़लूक़ की नज़र में बज़ाहिर दीवाना लगता है लेकिन **''ली मअ अल्लाह''** की हालत में सबसे जुदा गाना फ़रज़ाना है।

ग़र्ज़ के हुज़ूर जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती मारूफ़ बेजुम्मन जती रज़ि० से जो सिलसिला व गिरोह जारी हुआ वह दीवान या दीवानगान के लक़ब से मशहूर हुआ आपके ख़ुलफ़ा व मुरीदीन की तादाद एशिया के मुमालिक में बहुत कसीर है दीवानगान की बेहतर शाख़े है जिसकी पूरी तफ़सीर इन्शा अल्लाह कभी तहरीर में आएगी हूज़ूर जाने मन जन्नती रज़ि० को अल्ला जलले शाना ने बड़ी तवील उम्र अता फ़रमाई और तमाम हैवानात को आप के ताबे कर दिया चुनानचे आप अकसर व बेशतर शेर पर सवारी फ़रमाते और सांप का कोड़ा हाथ में रखते थे।

जाने मन जन्नती की शेख़ सादी से मुलाक़ात :

एक मरतबा जाने मन जन्नती क़ुद्दस्सिर्रहु शेर पर सवार होकर हाथ में सांप का ताज़ियाना लिये हुए रूदबार के इलाक़ा में सैर फ़रमा रहे थे के हज़रत शेख़ सादी शीराज़ी हैबत के मारे कांपने लगे। हुज़ूर जमाल उद्दीन जान मदार ने तबस्सुम फ़रमाया और शेख़ सादी को तसल्ली व तशफ़ी दी। इरशाद फ़रमाया, ऐ सादी ! इस दरिन्दाह जानवर जो मेरी सवारी में है तुझ

पर हैबत और ताज्जुब तारी है के यह इनसान के क़ाबू में कैसे है ? यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है जो बन्दाह ख़ुलूस के साथ ख़ुदा की रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल कर लेता है तो ख़ुदा तआला की बारगाह से यह रूतबा मिल जाता है के यह शेर क्या सरी ख़ुदाई उसका मती व फ़रमा बरदार हो जाती है और सारी मख़लूक़ उसकी रज़ा जूई करती है।

सलामती सलामती सलामती

दिल समझता था के ख़ुलूत में वह तनहा हों गए - मैंने परदाह जो उठाया तो क़यामत देखी
सलामती सलामती सलामती......उसने यह दिलनवाज़ अलफ़ाज़ सुने थे करते करते संभल गया।
लड़ खड़ाते हुए पैरों को अक़ामत का हौसला मिला और
मुद्दत की दुआओं का असर आज मिलाहै - तारीक थी नूर सहर आज मिला है
के मिसदाक़ उसकी मुशताक़ नज़रें चमक उठीं। ज़िन्दगी भर की तड़प पूरी उम्र का मद आ बस एक झलक से काफ़ी हो गया। पुर नूर हसती की एक झालक से उसके सारे वजूद के अनासिर लरज़ उठे। क़रीब था के सक्र व बेहोशी उसके हवास बाख़ता कर के उसे बेचैन कर दे मगर यह अलफ़ाज़ असर आफ़रीं हुए तो बेहोशी दूर हूई हवास जाग उठे पज़ मर्दिगी को मिसर्दाह जान फ़िज़ा मिला। जब एक आशिक जमाल ने माशूक़ का चेहरा देखा एक दम इसकी फ़िरोज़ बख़ती का सवेरा नमुदार हो गया।
जिसके जिस्म से फूटती हुई शआओं से चाँद सूरज भी तजल्लीयों की ख़ैरात मांगते थे। अरब हो के अजम हर जगह इसकी तजल्लियात के चरचे थे और एक आलिम इसके जमाल के दीदार का मुनतज़िर था क़्यू के वह मर्द नूरानी अपने चेहरे को चिलमन से छुपाए रखता था और पूरा ज़माना ग़ोया के,

कबसे हैं मुशताक़ मेरी मुज़तरिब नज़रें हुज़ूर
किजिये जलवाह नुमाई ऐ शा अली वक़ार

कोई कहता था......

परदाह चेहरे से उठा कर अनजुमन आराई कर
चश्म महरूमाह व अनजुम को तमाशाई कर

और अगर गोशा नक़ाब पलट देते तो आलम यह होता......

बस एक झलक से ही होश व हवास खो बैठते
जिन्हें यह ज़िद थी के तेरा जमाल देखेंगे

और बेहोशियों ना क्यों ना होते................

निगाह शौश जो देखे तो इस तरह देखे
के हुस्न ज़ात है इक जमॉ सिफ़ात लिये

मुनतज़िर मुज़तरिब मुशताक़ बेचैन लोगों का अज़दहाम उसके आगे सिर्फ़ इसी लिये लगा रहता था के काश दिखा दें चेहराह अपना बहुत से लोग तो ताब ज़बत ना लाते और सजदाह रेज़ हो जाते बहुत से लोग इस मुराद को पहूँचे बग़ैर ही आलम जाविदानी को कूच कर गए और जो एक झलक देख लेता ताम उम्र देखने की तमन्ना करता क्यों के जमाल हक़ की तजल्ली की हक़ीक़ी करनें उसके नक़ाबों से अयाँ थीं जैसे देखने वाला और बे बात हो जाता था के आख़िर क्या बात है कौन सा राज़ पोशीदाह है के जो ज़ियाए हक़ की तलाश में निकलता है वह मर्द का चेहराह नहीं बल्कि नक़ाब देख कर ही बेहोश हो जाता है और सुकून व इतमिनान का एक लमहा भी उसे मयस्सर नहीं आता था चुनानचे वह शख़्स अज़राह तजस्सुम उस के आगे पीछे घूमने लगा के किसी तरह भी मौक़ा हाथ आए और उसका चेहराह देख लूँ और कभी उस शख़्स ने हार नहीं मानी चाहे जितनी बार बेमुरव्वती से मुह फेरा गया हो चाहे फटकार लगाई गई हो चाहे चेहराह ही फेर लिया गया हो।

वह शख़्स धुन का पक्का और ज़िद्दी था तलाश पर तलाश कोशिश पर कोशिश जारी थी के कभी एक मौक़ा नसीब हो जाए और उस पुर नूर चेहरे की ज़ियारत कर लूँ शौक़ दीदार जमाल में इतनी कशिश थी के जिसने कभी उसकी हिम्मत को पस्त नहीं होने दिया और एक दिन वह अपने मक़सद में कामियाब हो ही गया। दोपहर का वक़्त था हर जगह ख़ामोशी और सन्नाटों का तसल्लुत था। सूरज आग उगल रहा था। ज़मीन तप रही थी। जर्रात सुर्ख़ हो गए थे। नदीयाँ खौल रहीं थी। पत्ते मुरझाा रहे थे ऐसी बेकली

के आलम में लोग अपने अपने खेमों में महू आराम थे। उस शख़्स ने मौक़ा को ग़नीमत जाना और आहिस्ता आहिस्ता क़दम बड़ाता रहा के कोई सूखा पत्ता भी कड़क ना उठे समाँ इस कदर ख़ामोश था के दिल की धड़कनें गिनी जा सकती थीं आख़िर कार वह धीरे धीरे चुपके चुपके कर उसके हुजरे तक पहुँच गया। उस हुजरे का दरबान अम्मादुल मुल्क था जो क़ौम अजन्ना की सपूत व इक़तिदार का वारिस था बादशाह अजना अपनी दरबानी के फ़राएज़ अनजाम दे रहा था।

आने वाले के ज़ब्त व शकीब का बन्द टूट गया और बे इजाज़त हुजरे के अन्दर दाख़िल हो गया यह मन्ज़र देख कर उसकी आँखे ख़ैराह हो गईं के जैसे हुजरे के अन्दर लाखों सूरज चमक रहे हों जिस शख़्स के दीदार के लिये बेचैन था देखता है के अर्श आज़म से एक नूर का सुतून नाज़िल हो रहा था जो उस मर्द के चेहरे पर मुहीत था उस के पुर नूर चेहरे से उसकी बेताब नज़रें दोचार हुईं।

आँखों को नूर दिल को सुरूर मिलने लगा उस सरापाए नूरी ने कहा "हेच बे अदब बजदाना रसीदाह" कोई बे अदब ख़ुदा तक नहीं पहुँच सका। आने वाला हाज़िर जवाब था कह उठा के "अगर मन अदब कर दमी अज़ जमाल अल्लाह महरूम बू दमी अकनूँ के तर्क अदब कर दम बजदा रसीदम"। अगर मैं अदब करता ख़ुदा तक नहीं पहुँचता और अब जबके मैं ने तर्क अदब किया ख़ुदा तक पहुँच गया फिर उस शख़्स ने उसकी ज़ियारत के शोक़ में कुछ अशआर फ़ी अल बदीहा पड़े जैसे मैं शोक़ दीदार का इज़हार था।

आने वाला शख़्स बे अदब ना था हुस्ने यार का शैदाई था। जब माशूक़ के जमाल हक़ीक़ी पर नज़र पड़ी बे परदाह चेरे से फूटते हुए अनवार व तजल्लियात की मुसला धार बारिश में आने वाले के हो उस बा ख़ता हुए तजल्लियात जमाल इलाही के ज़ोर से आने वाले शख़्स के पाँव को ताक़त रफ़तार ज़बान को याराए गुफ़्तार ही ना रहा क़रीब था के गिर पड़े पैर

लड़खडाए बेहोशी तारी हो गई।

तौर तमसाल काबा मिसाल ने इरशाद फ़रमाया हिसामुद्दीन सलामती सलामती सलामती। यह दिल नवाज़ शीरीं गुफ़तार अलफ़ाज़ हुजूर शम्सुल अफ़लाक फ़रदुल अफ़राद कुतबे वहदत सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दानुल सूफ़ की ज़बान अक़्दस से निकल कर हिसाम उद्दीन सलामती का पैग़ाम दे गए। उस दिन से हुजूर सैय्यदना हिसाम उद्दीन सलामती सलामती के लक़ब से मुलक़्क़िब हुए। मौलाना हिसाम उद्दीन सलामती हुज़ूर सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार रज़ि० के ख़लीफ़ा थे और इस अज़मत व बुलन्दी के रूतबे पर फ़ाएज़ अल मराम थे के सिलसिला मदारिया के सात गिरोहं में एक गिरोह हिसामिया उन्हीं से जारी हुआ जिस में बड़े बड़े ख़ानदानों के अकाबरीन ने शर्फ़ बैत व ख़िलाफ़त हासिल किया जैसे हज़रत हाजी हमीद उद्दीन, हज़रत शेख़ ईसा गोपामवी, हज़रत शाह अमीन उद्दीन अहमद सज्जादाह नशीन, हज़रत याहया मुनीरी, हज़रत शेख़ ईसा, हकीम सैय्यद कुरबान अली इबने सैय्यद शाह औलाद हुसैन अकबर आबादी, हज़रत शेख़ बुरहान उद्दीन मलीहा आबादी अबु अल अलाई, हज़रत सूफ़ी शाह अब्दुल अज़ीज़ क़ादरी चिश्ती वग़ैराह वग़ैराह। आप गिरोह हिसामिया के मनबा व मुसदिर होने के साथ साथ हज़ारो ख़ुलफ़ा की फ़ुहरसत में वह तने तनहा हैं जिसको हुज़ूर कुतबे वहदत शाहकार सग़त हुज़ूर सैय्यदना मदारूल आलमीन का जनाज़ा पड़ाने का शर्फ़ हासिल हुआ। आप ने तमाम ज़िन्दगी दीन मतीन की ख़िदमत अनजाम दी। तबलीग़ व हिदायत का जो अहम कारनामा अनजाम दिया इस से यह बात वाज़ेह होती है के जब हुज़ूरे वाला के ख़ुलफ़ा का आलम यह है तो हुज़ूरे वाला का आलम क्या होगा। आप ने हुज़ूर सैय्यदना मदारूल आलमीन के विसाल के दो साल बाद ६/ रबिउल अव्वल ८४० हि० को विसाल फ़रमाया मज़ार पुर अनवार जौनपुर में मुरज्जा ख़लाए है जहाँ से लाखों अक़ीदत मंन्दान और हाजत मंन्दान इल्म व अमल की भीक मांग रहे हैं। मौलाना हिसाम उद्दीन सलामती

का शुमार उस दौर के अकाबिर उलमा में होता था। आप से जो इल्म व अमल के सूते फूटे हैं इलाउल आलमीन इस से हर ग़ोताज़न को फ़ैज़याब फ़रमाए। आमीन......... मिन्नत सपासी के इन चन्द जुमलो का सरमाया हज़रत मौलाना हिसाम उद्दीन सलामती जौनपूरी की चौखट पर पेश कर रहा हूँ। गर कुबूल अफ़तदज़ है अज़ व शर्फ़

अल उलमा वरसतुल अंम्बिया का मज़हर औलिया किराम अंम्बिया अलैहिस्सलाम के मज़हर हैं

अर्ज़ गैती पर नशूद नुमा पाने वाली मख़लूक़ (इन्सान) की रूश्द व हिदायत और फ़लाह व बहबूत के लिये ख़ालिक़ अर्ज़ व समा ने पैग़मबरान ज़ीशान को मबऊस फ़रमाया, जो आलम में जलवाह गर हो कर गुमशुदा राह और बेसलीका लोगों के ज़ाहिर व बातिन का तज़किया व तसफ़िया करके इन्हें सही मानों में इनसान बनाते रहे इनसानियत का दर्स देने वाले इन मोअल्लमीन यानी अंम्बिया किराम अलैहिस्सलाम की तादाद कम व बेश एक लाख चौबिस हज़ार रही" इनकी तबलीग़ व अशाअत मतईयन वक़्त तक थी जब इन रहनुओं पेशवाओं का सिलसिला मुनक़ता और नुबुवत व रिसालत का दरवाज़ा बन्द हो गया और महबूबे रहमानी नबीए आख़िरूज़्ज़मॉ सल० ने दुनियाए आलम को अना ख़तिमुन नबीयीन और नबी बादी का पैग़ाम दिया यानी मै आख़री नबी हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं। तो जहाँ ख़तमे नबूवत का एलान किया वहीं तशंगान राहे हिदायत के दिलों को तसकीन और मुतलाशियान नूरे माअरफ़त को इतमिनान व सुकून की दौलत बख़्शते हुए ख़ैरूल अनाम हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुसर्रत का पैग़ाम दिया के अल उलमा वरसतुल अंम्बिया उलमा अंम्बिया के वारिस हैं और उलमा उम्मती का नबीया बनी इस्राईल यानी मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के नबीयों की तरह है। यानी जो अमूर अंम्बिया साबक़ीन से सुदूर पाते थे उम्मत मुहम्मदी का एज़ाज़ व इकराम यह है के वह अमूरे करामत की शक्ल में औलिया उम्मते

मुहम्मदीया से सादिर होगें । अंम्बिया किराम की नियाबत व ख़िलाफ़त के फ़राएज़ को सर अनजाम देने वाली वह हसतीया औलिया इज़ाम हैं, उन ख़ासाने ख़ुदा में सर हलक़ा शाहान वाला जाह, विलायत पनाह मरकज़ दाएरा व विलायत, मरजए अरबाब हिदायत, पेशवाए सालकान हक़ीक़त, शहनशाहे औलिये किबार हुज़ूर सैय्यद बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार अल मारूफ़ ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० की एक ऐसी शख़्सिअत है जो मोहताज तार्रुफ़ नहीं आप आफ़ाती शोहरत के मालिक हैं छोटे बड़े अपने पराए अवाम व ख़ास सब आप से वाकिफ़ हैं । हुज़ूर सैय्यदी मौलाई बदी उद्दीन की सीरते तैय्यबा का मुताला करने से यह अम्र आफ़ताब नीम रोज़ से ज़्यदा रौशन व अयां हो जाता है के आप उलमाए उम्मती का नबीए बनी इसराईल के मज़हरतुम और उलमाए वरसा अल अम्बिया के रौशन मिसदाक़ हैं। जौ औसाफ़ बनी इसराईल के नबीयों को अता किये गए थे वह औसाफ़ आप से करामत की शक्ल में ज़हूर पज़ीर हुए ।

मोअजज़ाह हज़रत सुलोन और करामत बदी उद्दीन क़ुतबे ज़मॉ:

बनी इस्राईल के अम्बियाए किराम की मुक़द्दस जमात में नबी रहमान, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम भी है जिनका मोअजज़ा यह है के आप फ़ज़ाए आसमानी में तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ हो कर दुनिया के गोशे गोशे चप्पे चप्पे की सैर व सियाहत फ़रमाते थे और दीने दाऊदी की तबलीग़ व इशाअत फ़रमाते थे (क़सीसुल अम्बिया)

अगर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के इस मोअजज़े को उलमाए उम्मत में यानी औलियाए किराम में तलाश किया जाए तो बाज़ औलिया तारीख़में ऐसे मिलेंगे जो उड़ते परवास करते हैं मगर खुद उड़ते हैं तख़्त पर परवाज नहीं करते हैं पस वह सुलेमान अलैहिस्सलाम के मोअजज़ाह के मिसदाक़ नहीं ठहरे मगर सुलेमान अलैहिस्सलाम के उस वस्फ़ का मुशाहिदाह हुज़ूर मदारूल

आलमीन रज़ि० की ज़ाते वाला सिफ़ात में किया जा सकता है के आप ही इस उम्मते मुहम्मदी में हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम मज़हरे अतम हैं, आप तख़्त पर रौनक अफ़रोज़ होके दुनिया के गोशे गोशे और चप्पे चप्पे में इशाअते दीने मुहम्मदी कर के मख़लूक़े ख़ुदा को कुफ़्र व शिर्क की ज़ुलमत व तारीकी से निकाल कर नूरे ईमान व अज़आन और ज़ियाए इसलाम से रौशन फ़रमाते थे आप की तबलीग़ी सर गरमिया सिर्फ़ इनसानों तक महदूद व महसूर नहीं थी बल्कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की तरह क़ौम जिन्नात में भी आप ने शम्मए इस्लाम फ़िरोज़ा की है । आप के चिल्लाजात अकसर व बेशतर पहाड़ो की फ़लक बोस चोटियों पर है पहाड़ो पर क़याम का मक़सद क़ौम अजन्ना को ख़ुदा उसके रसूल का पैगाम देना था चुनानचे आसार व सैर की कुतुब मोअतबराह में मरक़ूम है, क़ुतबे दो जहाँ, सुलेमान ज़मॉ हुज़ूर बदी उद्दीन मदारूल आलमीन तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ हो के हवा के दोशो पर परवाज़ करते हुए एक ऐसे मक़ाम से गुज़रे जहाँ जिनो की बूदो बाश थी जिनो के बाशाह उम्मादुल मुल्क ने एक तख़्त फ़ज़ाए आसमानी में निहायत तेज़ व शताबी से उड़ते देखा जिसपर एक नूरानी बुज़ुर्ग मसनद नशीन हैं । वह बुज़ुर्गवार की ज़ियारत का मुशताक़ हुआ अपने असहाब व रफ़क़ए से कहा देखो तो यह तख़्त कैसा वहा में सैर करता हुआ आ रहा है जिस पर कोई शख़्स जलवाह बार है ? अभी यह ज़िक्र ही हो रहा था के तख़्त उसके करीब आ पहूँचा उम्मादुल मुल्क फ़ौरन ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और इस मिसरे के मिसदाक़ अर्ज़ किया "शाहाचा अजब गरबनवा ज़िन्द गुदारा" यानी बादशाह हक़ीक़ी के लिये ताज्जुब ख़ेज़ बात नहीं अगर वह महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से किसी बन्दे को नवाज़ दे आप ने कमाल शफ़क़त व मोहब्बत और वफ़ूर राहत से इरशाद फ़रमाया तरजुमा - यानी तुम दुनिया से उलफ़त व मोहब्बत ना करो वरना ख़ासिर व ख़ाएब और नामुराद हो जाओगे इमादुल मुल्क ने ख़ौफ़े ख़ुदा से डरते हुए कहा बेशक आप अल्लाह के वली हैं जो कुछ

आप का इरशाद है व सरापा हिदायत है लेकिन अपने नफ़्स की ख़बासत से मजबूर हूँ ख़्वाहिशात नफ़्सानिया की कमन्दों का असीर हूँ हज़रत बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार ने फ़रमाया तरजुमा - अल्लाह ग़ालिब है हर एक ग़लबा करने वाले पर । इमादुल मुल्क अर्ज़ गुज़ार हुआ मुझे अपने हाल ख़राब पर अफ़सोस व निदामत है के अब तक ख़्वाब ग़फ़लत में रहा और कोई नेक अमल मुझसे ना हो सका, आप ने इरशाद फ़रमाया तरजुमा - यानी अल्लाह की रहमत से मायूस ना हो बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को बख़्श देता है, इमादुल मुल्क ने अर्ज़ किया के हुकूमत और ताज व तख़्त के लाजच में गिरफ़तार हूँ और तमा के गरदाब में घिरा हुआ हूँ इस से रिहाई की क्या सूरत हो सकती है, मेरे शऊर व औराक से मावरा है ।

आप ने फ़रमाया तरजुमा - यानी बेहतरीन मालदारी ख़्वाहिशात नफ़सानिया से बेनियाज़ी है और बेहतरीन ज़ादराहे परहेज़गारी है । आप की हक़ाएक़ से लबरेज़ तक़रीर का इमादुल मुल्क पर ऐसा गहरा असर हुआ के उसी वक़्त जमी ताल्लुक़ात व दुनियावी और लवाहक़ात व लवाज़मात हुकूमत को तर्क कर के अपनी बेटी को तख़्त व ताज का वारिस बना के दुनिया व माफ़िहा से किनारा कश होगया, आप ने इमादुल मुल्क को मुरीदी से सरफ़राज़ फ़रमाय । बाला आख़िर वह तमाम उमर आप की दरबानी करता रहा, आप के इश्क व मोहब्बत में ऐसा सरशार हुआ के आज भी आसताना अक़दस पर ख़िदमत की अज़मत से मुसतफ़ीज़ हो रहा है ।

वस्फ़ ईसवी और कमाल बदीई

बेशक मौत व हयात अल्लाह के इख़्तियार में है लेकिन अल्लाह तआला अपने किसी महबूब बन्दे को मुरदे जिलाने की क़ुदरत बख़्श दे तो इसके लिये कोई मुशकिल बात नहीं है और अल्लाह तआला के सिवा किसी और को हम अल्लाह की दी हुई क़ुदरत से मुरदे ज़िनदा करने वाला तसलीम करें तो इस से हमारे ईमान में कोई ख़राबी नहीं होती, अगर गुमराह बद अक़ीदाह लोगो की बातों में आकर किसी ने अपने दिल में यह ख़याल किया के अल्लाह तअला ने

किसी को मुरदा ज़िनदा करने की ताक़त ही नहीं दी तो इसका यह नज़रया यक़ीनन हुक्म क़ुर्आनी के ख़िलाफ़ है, देखिए क़ुर्आन पाक, हज़रत ईसा रूह अल्लाह अलैहिस्सलाम के मरीज़ों के शिफ़ा देने और मुरदों को ज़िन्दगी देने का साफ़ साफ़ एलान कर रहा है, तरजुमा - यानी मैं मादर ज़ाद अंन्धों को और कोढ़ीयों को शिफ़ा देता हूँ और अल्लाह के हुक्म से मुरदों को ज़िन्दा करता हूँ । (सूराह आले इमरान)

चुनानचे क़ुर्आन से सुबूत वसीक़ मिल रहा है के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने क़दम मुबारक से ठोकर मार कर क़ुमबाज़नुल्लाह फ़रमाते तो जिस मुरदे का गोश्त व पोस्त ख़ात मुल्त हो चुका होता है वह हुक्म सुन कर फ़िल फ़ोर ला इलाहा इल्लल्लाह ईसा रूह अल्लाह पढ़ता हुआ क़ब्र से ख़ड़ा हो जाता था, मरवी है के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक इनसानी सर के क़रीब से गुज़र हुआ आप ने इसे पाँव से ठोकर मार के फ़रमाया बा हुक्म खुदा मुझसे कलाम कर, खोपड़ी बोली, ऐ रूह अल्लाह ! मैं फ़लाँ फ़लाँ ज़माने का बादशाह था, एक मरतबा मैं अपने मुल्क में ताज सर पर रखे लशकर के हलक़ा में तख़्त पर बैठा हुआ था, अचानक मलकुल मौत मेरे सामने आगया, जिसे देख कर मेरा हर अज़ो मोअत्तिल हो गया और मेरी रूह परवाज़ कर गई पस इस इजतमा में क्या रखा था, जुदाई तो सामने खड़ी थी और अन्स व मोहब्बत में क्या था वहशत ही वहशत और तनहाई ही तनहाई थी ।

(मुकाशफ़तुल क़ुलूब)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इस मोअजज़ा का अक्स जमील नाएब ईसा क़ुतबुल वरा हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन की करामत में मौजूद है, आप ने भी मुरदों को ठोकर मार कर हयात बखशी है । क़ुतुब व तवारीख़ में है के आप ने अनवारे मुहम्मद के गौहर लुटाते हुए एक राह गुज़र से अपने क़दूम मेम्नतुल ज़ूम को गुज़ारा, तो रासता में एक मुरदा इनसान की खोपड़ी पड़ी हुई थी तो आप ने वस्फ़ ईसा का मुज़ाहिराह फ़रमाया तरजुमा - यानी ऐ खोपड़ी तू कौन है और अपना क़िस्सा बयान कर, चुनानचे अल्लाह तआला ने इसे

कुव्वत गोयाई अता फ़रमाई, वह अर्ज़ गुज़ार हुआ, या वली अल्लाह मैं फ़लाँ बिन फ़लाँ हूँ और फ़लाँ की मज़दूरी करता था और इसकी तनख़्वा से अहल व अयाल का गुज़र माश हो रहा था और मै कुफ़्र व शिर्क की ज़ुलमत व ज़लालत में रह कर अपने नफ्स पर ज़ुल्म कर रहा था, मेरा यही हाल था के एक आन वाहिद में हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम ने आ के मेरी रूह को शिद्दत व सख़्ती से क़ब्ज़ कर लिया और आज बाराह साल का तवील अरसा हो गया है तरह तरह के क़िस्म क़िस्म के मसाएब व आलाम, तकलीफ़ व शदाएद बरदाश्त कर रहा हूँ। इस बयाने ग़म व अन्दूह से हज़रत बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार का क़ल्ब रक़ीक़ मुज़त्तिर हुआ और रहम व करम का जज़्बा जोश में आया, बारगाहे रब्बुल आलमीन में इल्तिजा व दुआ की, ऐ रब्बे क़दीर ! इस बेजिस्म व बेजान को जिस्म व जान अता फ़रमा दे हज़रत बदी उद्दीन की दुआ मुसतिज़ाब हुई। अल्लाह ने उस खोपढ़ी को ज़िन्दगी की दौलत बख़्श दी, वह कलमा तैय्यबा पढ़ता हुआ ख़ड़ा हो गया। फिर आप ने उस से फ़रमाया अल्लाह तआला ग़फ़ूरूल रहीम ने तुझको नौ साल की उम्र बख़शी है और नौ साल में अपने अहल व अयाल के साथ रह कर आमाले सालिहा कर के आख़िरत की ज़िन्दगी को आरास्ता व पैरास्ता कर।

(अल कवाकुब दरारिय)

मोअजज़ा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और करामत मदारूल महाम:

बनी इस्राईल के मोअज़्ज़ि व मुकर्रम नबीयों और रसूलों में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शान व शौकत बामे फ़ज़ीलत पर है। आप के आहवाल व अक़वाल, पाकीज़ा आमाल, क़ुर्आन नातिक बयान कर रहा है। हद यह है के सारे नबीयों रसूलों में सरकारे काएनात ख़ुलासा मौजूदात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अलहदा कर के हज़रत मूसा कलीम उल्लाह का ज़िक्र कसरत से है। आप के महरूल अक़ूल मोअजज़ात अजीबा, ख़्वार्क़ वा आदात कमालात ग़रीबा में एक यह भी मोअजज़ा व कमाल है के आप का

रोए मुक़द्दस नक़ाब से मसतूर व पनहाँ रहता था क्यों के चेहरा निहायत ही पुर जमाल था, जो आप के रूख़े अनवर का दीदार करता था वह बसारत व बीनाई से महरूम हो जाता था।

आप के चेहरे के हुस्न व जमाल का सबब यह था के आप ने कोहे तूर पर तशरीफ़ अरज़ानी फ़रमाई और कोहेतूर पर ख़ुदा से हम कलामी के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हुए। अल्लाह के लज़्ज़त कलाम से इस दरजा महफ़ूज़ व सरशार हुए के दीदारे ख़ुदा वन्दी का शौक़ व इश्तीयक़ हुआ और जज़्बा शौक़ दीदार में बार गाहे यज़दी में अर्ज़ किया (ऐ रब तू मुझे अपना दीदार करा दे) ख़ुदा वन्द तआला ने जवाब में फ़रमाया **लनतरानी** ऐ मूसा! तुम्हारी आँखे हमारे जमाल व जलाल देखने की ताब व ताक़त नहीं रखतीं हैं, पैग़मबर ज़वुल अज़्म की दिल शिकमी ना हो दिल जूई के लिये हक़ तआला ने इरशाद फ़रमाया यानी ऐ मूसा तुम पहाड़ी की तरफ़ नज़र जमा कर देखो अगर यह पहाड़ अपनी जगाह पर क़ाएम व बरक़रार रहा तो करीब है तुम मेरा दीदार कर सकोगे।

तरजुमा - यानी जब अल्लाह तआला ने कोहेतूर पर आनी तजल्ली फ़रमाई तो कोहेतूर इस तजल्ली की ताब ना लाकर पाश पाश रेज़ाह रेज़ाह कर ज़मीन पर बिखर गया और मूसा अलैहिस्सलाम पर इस तजल्ली के दीदार से ऐसी वालहाना कैफ़िअत तारी हो गई के वह दुनियाए होश व ख़रोश से बेनियाज़ हो कर और अपने कैफ़ व सरवर के हाल वा माहौल में खोकर फ़र्श ख़ाक़ पर आ गए। (सूराह ऐराफ़)

उस तजल्ली नूरे ख़ुदा से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का चेहरा इतना दर्ख़शन्दाह व ताबन्दाह हुआ के सैकड़ों आफ़ताब व महताब आप के चेहरे में जग मगा रहे हों। तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने चेहरा को कपड़े के नकाब में छुपाया, वह नक़ाब नूर से जल गया फिर लकड़ी का नक़ाब बना कर रूए जमाल पर डाला वह भी नूर की सोज़िश से ख़ाक्सतर हो गया फिर लोहे का नक़ाब तैयार करके रूख़े अनवर को मसतूर करना चाहा वह भी

जल गया, तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बारगाहे बारीताला में अर्ज़ गुज़ार हुए, मै किस चीज़ का नक़ाब बनाऊ हुक्म मिला के ऐ मूसा फ़कीरों के ख़ुरक़ा (कपड़े) से अपना नक़ाब बना तब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़कीर के लिबास का बुरक़ा बना के अपने चेहरे अनवर को मसतूर किया।

(कसासुल अंम्बिया बयान मूसा अैहिस्सलाम सफ़ा १३२)

रब्बे ज़ुल जलाल के पैग़मबर जलील, जमील व शकील, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मोअजज़ा है के आप का मुक़द्दस चेहरा नकाबों से छुपा रहता था, उम्मते मुहम्मदी के उलमा यानी औलिया इज़ाम अंम्बिया किराम के वारिस हैं लिहाज़ा इस उम्मत में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मज़हर वमसाल भी होना था जो मूसा अलैहिस्सलाम की नियाबत व विरासत के तौर पर अपने चेहरे की नूरी शआओं को पोशीदाह रखे। अफ़ज़लुल ख़ल्क़, मुबशिशर हक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान बिला शुबा बरहक़ है।

तारीख़ इस्लाम के मुशाहिदे और कुतुब मोअतबराह के मुताला से इस बात का इनकिशाफ़ होता है के सहाबा किराम की मुक़द्दस जमाअत से ज़माना ताबईन और तबा ताबईन के औलिया इज़ाम तक और बाद के औलिया ज़वीउल एहतराम में कोई ऐसा वली नहीं जो इस वस्फ़ मोसवी का हामिल हुआ माशा अल्लाह, मगर एक हसती है जिसकी शर्मो फ़िरोज़ाँ से अक़लीम विलायत के निगार ख़ाने जगमगा रहे हैं, वह ज़ात वल असफ़ात और कोई नहीं हुज़ूर सैय्यद मदारूल आलमीन रज़ि० हैं, जो वारिस सुलेमान व ईसा भी हैं और हामिल एजाज़ मूसा भी, आपके रूख़े अनवर पर नक़ाब पड़े रहते थे और रूए पुर नूर इतना ताबनाक था के शम्स व क़मर की ज़िया व रौशनी मान्द सी और धुंधली धुंधली लगती थी, जो भी आप के जमाल, मुसर्रते आल का नज़ाराह करता था बेइख़्तियार होकर सजदेह में गिर जाता था, आप के रूए आली के रोशन मुनव्वर होने की वजह यह है के दो सदी हि० के निस्फ़ आख़िर यानी २८२ हि० में बार अव्वल दरियाई सफ़र तै कर के ख्म्बात में वरूद फ़रमाया, एक शख़्स बुर्जुग सूरत, फ़रिशता सीरत ने आ

के सलाम किया और साथ चलने को कहा, सरकार बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार बुर्जुग की मआयत में एक ऐसे ख़ुशनुमा बाग़ में पहूँचे जो उम्दाह उम्दाह मेवा जात से लदा हुआ था। उसी हसीन व बेहतरीन बाग़ में एक रफ़ीउश्शान मकान भी है जिसके सात दरवाज़े हैं, हर एक दरवाज़े पर एक बुर्जुग दरबानी कर रहे हैं, बाला आख़िर दरवाज़ों से गुज़र कर आप उस मक़ाम पर पहूँचे जहाँ पर जवाहरात से मुरतसा व मुसजाह तख़्त बिछा हुआ है उस तख़्त मुज़ीन पर हुज़ूरे अकरम बरग़ज़ीदाह नूह बनी आदम जनाब मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तज़्क व एहतिशाम के साथ रौनक अफ़रोज़ हैं आप के रूए ज़िया बार से सारा महल मुनव्वर व मुजल्ला हो रहा है, सरकार बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार, हुज़ूर अहमदे मुख़तार सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही अल अतहार को जलवाह बार देख कर क़दम बोस हुए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप को कमाले शफ़क़्क़त व मोहब्बत, वफ़ूर आतिफ़त से उठा कर पहलू में बैठा लिया, उसी असना में मलाएका अन्सरी के सरदार सतख़ीसा नमूदार हुए जिनके हाथों में तआम बहशती और लिबास बहशती था, सरकारे काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्त अक़दस से इस तआम बहशती को नौ लुक़में हज़रत बदी उद्दीन को खिलाए जिनको तनावुल करते ही चौदाह तबक़ात ज़मीन व आसमान के असरार व हक़ाएक़ वर मौज़ू वक़ाएक़ राई के दाने के मिस्ल आप पर मुनकशिफ़ व रौशन मुनव्वर व मुजल्ला हो गए फिर हुज़र अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्त अक़दस से पैराहन जन्नती आप को मलबूस फ़रमाया जो तमाम उम्र आप के ज़ेब तन रहा कभी परागन्दाह व मैला न हुआ और पुराना न हुआ और फ़िर जिससे आप का चेहरा इतना दरख़शाँ और ताबनाक हो गया के जो भी आप के रूख़े अनवर का दीदार करता बेइख़्तियार सजदा रेज़ हो जाता था, हज़रत बदी उद्दीन अहमद का रूए अनवर रश्क़ सद आफ़ताब व महताब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साहिबे ऐजाज़

दस्त पाक मिस हो ने की बादौलत है । जिसकी बरकत से मदार पाक की आँखो को तजल्ली नूरे ख़ुदा देखने की ताब व ताक़त पैदा हो गई और फिर आप ने जमाले ज़ात ख़ुदा का मुशाहिदाह किया और मुशाहिदाह जमाल उल्लाह से आप का चेहरा पुर नूर हो गया जैसा के साहिबे असूलूल मक़सूद व तुराब अली काकोरी ने मरकूम फ़रमाया है के तरजुमा - यानी जो अल्लाह तबारक व तआला की जमाले ज़ात मुशाहिदाह करता है अल्लाह का नूर इसकी आँखो में नज़र आता है । (तज़किरातुल मुत्तक़ीन)
जिसकी वजह से रूए जमाल पर हमावक़्त सात नक़ाब डाले रहते थे ।

जमाले यूसुफ़ी और जमाले बदीई :

और जहाँ आप का यह वस्फ़ एजाज़ मोसवी के मस्ल है वहीं आप का यह वस्फ़ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मोअजज़ा के मस्ल भी है और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का मोअजज़ा हुस्न व जमाल है के जो भी आप के हुस्न व जमाल के नज़ारे से सरशार हो जाता वह कई कई रोज़ तक के ख़ान पीने से बेनियाज़ हो जाता था, हज़रत बदी उद्दीन अहमद रज़ि० पर तो यूसुफ़ि है के आप के तजल्ली पैकर चेहरे अनवर का मोआएना मुशाहिदाह के बाद खाना पीने की हाजत व ज़रूरत नहीं रहती थी ।

मसलन आप के मशहूर व नामूर ख़लीफ़ा हज़रत क़ाज़ी मतहर कल्ला शेर जिनहे आप की ख़ुलूत नशीनी में ख़िदमत गुज़ारी का शर्फ़ हासिल हुआ है वह आप के जलवों में गुम हो कर खाने पीने से बेनियाज़ हो गए थे । कुत्ब व तवारीख़ में इनका ज़िक्र यूँ मिलता है ''

के सुलतानुल औलिया सैय्यदुल अतक़िया हज़रत क़ाज़ी मुतहर कल्ला शेर क़ुद्दसुल्लाह सराहुल अज़ीज़ बा ग़र्ज़ बाहस वहदतुल वजूद सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन मदारूल आलमीन की ख़िदमत में आए, एक हफ़ता एतराज़ का हंगामा जोश व ख़रोश और दरज़ातुम तक पहुँच गया, हज़रत बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार को इल्म हदीस की ग़ैरत आई, फ़रमाया''

तरजुमा - यानी ऐ नूरे उमर, मेरे ख़ालिक़ मुताल्लिक़ का मकतब एक है और जो नक़ाब आप के चेहरे अनवर पर पड़े थे उठा दिये ।
तरजुमा - यानी क़ाज़ी साहब तजल्ली पैकर रूए अतहर के मुआएना से के जिसके जमाल की ताबिश से महर सपहर करामत नुमायाँ था मअ शागिरदों के सजदा में गिर पड़े और हालते ग़शी तारी हो गई, तीन रोज़ तक लिज़्ज़त बेख़ुदी चकते रहे ।

एक रोज़ मौलाना क़ाज़ी मुतहर हज़रत बदी उद्दीन को वज़ू करा रहे थे के हज़रत वाला ने कराहियत से चेहरा खींच लिया, क़ाज़ी मुतहर ने इलतिमाज़ किया के मुझसे क्या ख़ता हुई? तो आप ने फ़रमाया के तुझसे प्याज़ की बू आ रही है क़ाज़ी मुतहर ने अर्ज़ किया मुझे छः महीनों से खाने पीने से कोई काम नहीं, हा मैं बाज़ार गया था शायद कपड़ों में बू बस गई होगी ।

उसी तरह आपके एक और ख़लीफ़ा हज़रत ताहिर रज़ि० भी हैं वह जबसे हज़रत बदी उद्दीन रज़ि० की सोहबत बा बरकत से मुसतफ़ीज़ हुए तो कभी मुफ़ारक़त नहीं की, एक हफ़ता में नीम की पत्ती एक मुश्त सुखा कर खाते थे जो निहायत तल्ख़ (कड़वी) होती है हज़रत बदी उद्दीन क़ुतबुल मदार तमाम औसाफ़ व कमालात अंम्बियाए साबक़ीन के हामिल जामा हैं यानी सुलेमान व ईसा और एजाज़े मूसा और दीगर अंम्बियाए किराम के मगर इन औसाफ़ कमालात के मुतजमिल होने के बावजूद किसी भी नबी के हम फ़ज़ीलत हमशान नहीं हैं, जैसा के इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी अपने मक़तूब में रक़्म तराज़ हैं, कोई फ़र्द वली कामिल किसी पैग़म्बर के मरतबा तक नहीं पहुँच सकता अगर चे इस पैग़म्बर की किसी ने भी पैरवी ना की हो, और इसकी दावत को किसी ने क़ुबूल ना किया हो

(मकतूब न० ४०हिस्सा दोम)

दम-मदार बेड़ा-पार

हज़रत सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन अहमद कुतबुल मदार

ज़िन्दा शाह मदार रज़ि०

का

उर्स मुबारक

हर साल जमादिउल मदार (चाँद) की

को

ख़ुसूसी एहतिमाम

से मनाया जाता है

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलते

- दुरूदो सलाम पड़ने से गुनाह बख़्शे जाते हैं (कन्जुल उम्माल)
- दुरूदो सलाम पड़ने से भूली हुई चीज़याद आ जाती है (कन्जुल उम्माल)
- दुरूदो सलाम पड़ने वाले की मोहताजी दूर हो जाती है (कन्जुल उम्माल)
- दुरूदो सलाम पड़ने से बदबख़्ती दूर हो जाती है (सआद तुद् दारैन)
- दुरूदो सलाम पड़ने वाला नबीए करीम सल्लल्लाहु
- अलैहि वसल्लम का महबूब हो जाता है (सलातुस सना)
- दुरूदो सलाम पड़ने से दिल ज़िन्दा हो जाता है और
- हिदायत का बाईस बन जात (सलातुस सना)
- दुरूदो सलाम तंगदस्त के लिये सदके का काइम मक़ाम हो जाता है (जवाहिरूल बहार)

नादे अली

नादे अली यम मज़-हरल अजाइबे तजिदहु
औनल लका फ़िन-नवाइबे कूल्ले हमामिन व
ग़म्मिन स यनजली बि नबुव्वतिका या
रसूल-ल्लाह व बि विला यतिका
या अली या अली या अली